## जब्दरारिनी शिवकात जञीत ब्रह्मात जुड़ीक जु निर्मक शब

)) न मश्या	<b>३२</b> ७ गश्या
क्ष्रमगरस्यानमगरम्बद्धमञ्ज्ञाः ১	মেদিনীপরস্থাক্রমাজের বজ্তা 🕟
द्वल्ब	िम्मा
हेशोमक महत्तीय - छन \cdots 😶 🥶 ७	প্রভানীতি
महोत्राहरू - आमिन्सर्थ - ५० असास :	, i
बाक्रधक्त थ्रष्ठ—२ कन्नाय 😬 💠	) ३३६ मन्यानि । १३३ व
३३८ <u>च</u> ्चेत्री	1975
	शर्मनीति ५
क्षणकः श्रेष्ट्राम् बार्कितः सङ्ख्याः । । । ५० ५० ४० ४५ ४५ ४५ ४५ ४५ ४५ ४५ ४५ ४५ ४५ ४५ ४५ ४५	रामार्श्वनमार-अतरकम् … 🔐 💥
	्राक्ष्यम् र इ.३ २१-२३-१८-१६ लगाये २१
জুক্রাপিন বভার নিধ্য · · · · · ১৫	भहा जार छ - भ भिना भे छव अश्वात ५ क
27.2 %(AL)	३३९ भारती 🐩 🦓
	ट्रम्परम्बद्धाः 😽
কলিকাতগুলন্ধনমাজের বজ্ঞা · · · ২১	तर्भनो(७
क्लब्र ८३	यन् क
अभ्यानी वि	३२० मश्चा
, প্ৰাথ্ঞিলা-নাড প্ৰতিষ্ঠ ় • • • ৩৪	श्रम् शिष्ठ
কুল্লেপ্সনিং প্রত্যান্ত লাভ লাভ তার কুল্লের কোন তার ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত কোন তার কান	মেহ
.,	খাজাত
200 人(護行	रामसम् र अव-१० समाप्त १
खरामी लूटख हा प्रभाषीय है। ५५७: •• •• 85	
त्रकामीकि 😬 उड	ऽ२१ मध्या।
छेल्। मक मह्म शिक्ष विकास विकास	প্রকাত। ব্রাক্তমান্ত্র কর্তা — 😽
<b>३२५ मश्ये</b> त	ट्यंमीडि
कविकारानु। क्रमभारक्षेत्र रस्ट्या \cdots 🚾 🕬	विनामितिमा-विकासिक्य ५०
चर्म-मीर्ं ा पर पर पर वस	ইন্ডাল্ডাস্থ্য
জোষারভাটা 🕶 " " " " "	त्रश्व विषयुक्त अनुदि-देश्यवीय जीवाय १००
बाक्सकी-२ गंड ६-७-१-५ अश्रास ७०	' সংবাদ-হাজারিলালের মৃত্
बहास्त्राहरू-वादिशस्त्र-७५ अभागः ७०	३२४ मध्या
, ১২২ সংখ্যা	श्रेटरमञ्दरत र्कामल ७ गहिया · • ১%
क्षिनगतम् गाक्षमगाव्यतं वक्ठा ७৯	স্থানীতি
भर्मानीकि " " " 90	তारलगा महित तालाम-> <b>४७ ३ वशास्त्र</b>
हिमानानिक १८	थि पर भूतक नाकमभारक है राष्ट्रका 📑 🗥 🕍
পদার্থবিদ্যা- মিশুগতি	ने यत विषय अहार-देशत क कार्य
मुक्कार्य-२ थर्ष ५-५०-५५ व्यास १४	उक्दवाधनी महाद नियम - "" ।

## रमें करी नांकिकान क्योंन करें नेता खुकीन जार नत

## নিৰ্বত্য প্ৰ

51					
4		मर्था।	27.5	म <b>े थ</b> ी	প্র
			J1 5	্ৰান্তৰৰ্থত ওল্পায় ১১৮	રેક
A THE WAY		** 5 2 7	2.2×	बि. ले म ले - ३३%	29
14758 5	प्रभाव -हेश्स्ट	4	:06	१६ कुष १०१४। १ कु	33
		3234	: 08	d . 8 515-135 d - 322	96-
MINN REF	ु देश्यः	37.1	15	क्ष अर्थ । २०१५ व्याप्त क	240
1	. i.	- \$2 v	4.8	वे ३ :७ ५००० प्रस्	120
1754		27.5	\$ 55	ন অংশের সাহিত ১৫৩ চা ১২৮	282
समार करें		. 55 ≰	40	(মলফালের রভুল: - বাংগাজ্ঞানুত	- 39
क्षांत्रमें मञ	क्षात्रं 🕶	100	4.3	a	६३
		ş\$ <b>(</b> €	* 50 1	4	cro
		75.8	20	· i : : 4	1,5 @
STATE OF THE PARTY	d - * - ++	\$ 80	27	4 45512 131	'>
***		12~	*/:	2	62
- 1		14	ξ 2.	e grotter pe	5 >
			4.,	B CANAL A SUIZE &	6-3
<b>100</b>		, e .	4	है। विद्वार भूत । अस	300
		52.	3 'ş	Netter to the ment of the second	tu.
-		37.5	5.3	d 59 d *	P 10
3 5 300		.: 0	. 6	18 5 · ·	4.0
1	**	111	, ,,	We have the state of the	103
100		10.9	\$ 50 .	\$2.50 mm 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	333
13		153.	· 8.5	त्रक्षि ।	114
TWIFT WIT		550		N. A. F. C. (2023) 542	3.56
		186	72	15-4 x81 55.15	1.4
	G.	54.8	50	(#515数) 以 :	36
- Jan.		>> 3 .	. 555		*****
रंग्यादहर के	শক্ত কৰিব	\$ 500	285	। । व्यक्त प्रदेश साम्राज्य विकेश स्थान व	: বিভাগত ক্ষেত্ৰ
17	+24	\$58	- 1	रता विवासिक कामा शामिक माना है।	,
रक्षांच		4.0	210	<ul> <li>त्व लिक्साम्म श्राकालिक सम - गेराब मुन्य</li> </ul>	
#44-2 2 to .	# 40.23 ·	323	12.	" 克克斯 (河江下)中 用为人工以及 " 可以时间	13: B2681 c

हिन्द्र सह अक्षात १००१ १६ । रहेब लगामान सर्थर २००० मानावादा ४०००। विक्रम साम स्टेट्ड क्ष्यरराजनी मनाज श्रवि मधा श्रीह स्थान नहें निकाश नाम गर्भ विक्रम श्राप्त स्थान।



# **তত্ত্যরোধিনীপ্র**িকা

কলেব নিজাং জ্ঞানমমন্ত্ৰং শিবং বতমুখ নিজ্যখন্ত্যভাষিতীয়াখ সর্বভাগিলকানিয়পুলকালালাল বিএ সক্ষান্তিয়াখ স্থাপনিষ্ঠিত

क्षान् श्रीविद्यमा श्रियकोशिमाधनक एम्लानमध्यकः

### গত ১৯ চৈত্র ভবানীপুরস্থ ৰাক্ষ সমীক্ষির গৃহে এই প্রস্তাব পঠিত হয়•

মানৰ ভাতিহ জাতীয় ধর্ম দেশ-বিশে-নে, কাল-বিশেষে, ভারস্থা-বিশেষে, ভালের শকার ৰূপ ধারণ করিয়া আসিতেছে। কেহ ব: জ্যোতিশীয় কুর্যা-বিষ্কের পর্মার্থ্যে 📽 🐪 থম দেবতা জ্ঞান করিয়া নমস্কার ও অর্ধ্য-দান করিতেছে। কেছ বা দেদীপ্যস্থান অগি-কুলে ঘতাভতি অর্পণ করিয়া আপনাকে क्रुडार्थ (दाध क्रिडिट्ट) (क्रम् दा म्बाडी, পাৰাৰমন্ত্ৰী, অথবা ধাত্মন্ত্ৰী প্ৰতিমূৰ্ত্তি সমী-পে দপ্তায়মান হইয়া, গল-লগুড়িত বজে, কতাঞ্জলি পুটে, দ্রবীয় পদে পুস্পাঞ্চলি ঞ্ দান করিতেছে। কেহ বা পরমেশ্বরকে হ-ख-अमानि-यूक्क खः काय-काशाब्द-विनिक्के विरवहना कविता, श्राष्ट्रवर त्नवात्र नेयनुकान माता, करीत क्षत्रका लाकादर्ग केश्युक्त इ-रेटकरण् । एकर् का मन्न-निरम्बद्धं रेडकमा-मह शरूरमचरत्र क्रांब्डीत व्यक्तिता, उपी-য় ধ্যান খারণা অর্কনাদি ঘারা: পরিতাণ লাভের ভেড়া পাইভেছে ৷ কোন কোন

জ্ঞান-পৰিজ ভাগাৰান वाकि कंटरक অসীম-পক্তি ज मी भ-स्डान 13. W/18 করুবার আশ্রহ অনির্বাচনীর শ্বণ জানি য়া, ভাষার প্রতি প্রতি ও ছব্লি আঁকা भूक्षक अञ्चलका भतिम्ब कतिरहास्त -क्टि वा गश्माताखारम अविश्विष्ट करियाः বাত্রা মহেণ্ৎসবাদি কিনা কলাপের অনু ষ্ঠান করিতেছে। কেছ ব: সল্লাসংখ্য व्यवनवन पूजाक डीवं त्यता ७ (मन नगाँछ-न कतिया ममुख्य कीदन (क्ष्मन कितिरहरू)। কেই বা ভিপাপ থাকিয়া পুলা-কর্মের জ-**নুষ্ঠান করাকে পরমেশ্বরের প্রধান উপ**া সনা ৰলিয়া বিশাস করে। কেহ বা অপেয় পান ও নরবলি প্রদান করিয়া ভারার তৃতি **লাভের চেম্টা করে। এই ৰূপ কঠ** প্রকার क्ष्म कुछ स्थात उद्याद इट्याट, डाटा नि দেশি বরা সুকঠিন। কিন্তু উল্লিখিত এবং উলিথিতত্বপ সমুদ্র ধর্মই মানব-জাতির **अक्रुक्-भूगकः। मम्**नग्न शर्मारे प्यानात्मस বভার-বিদ্ধান্ধ প্রবৃত্তি হইতে উৎপদ 👯 रेब्राह्य अनुस्थात व्यनामा विवयत 🚑 मब क्ट्रम करम जेमक स्देशादस, श्रमुँख **म्बर्ग करा करा केंग्र** इंदेश आप्त-बारहा । जनहरून अर्थ कृषित कर नगत-अथ-चिक शहर त्यांक दिव स्रोक-धानाम छे-कारे मनुष्ठ कर्नु सिनिक। पूर्व कारतह LIB TEN ARE CHIEF HE HE

२५२७ पेटन खबाबीन्त्र प्रधनशर्मीह नृश्य विशे पट्टा नामान सियन जिल्ल सामा सियान स्वीतिकार ज्ञा अन्य सियान अधिक सुद्धी अस्तरम् (निव्हे नृत्येन द्वाराज्ञ)

নতন তত্ত্ব-পরিপূর্ণ সিদ্ধান্ত-জ্যোতিষ উভয়-हे मनुषा कर्द्धक अनीज। जात्र करवी य शूर्ज-ভন প্রভিদিগের মনংক্ষিত ভূগোল-রুক্তবভূ এবং অধ্নার্তন ইয়ুরোপীয় পণ্ডি-ত গাণের প্রস্তুত প্রত্যক্ষ-মূলক ভূগোল-निमा छे प्रवर्धे अनुगा कर्डुक छेक्ट दिए। ্দট্ৰূপ, বৈদিক-সংহিতা-প্ৰোক্ত চল্ৰ স্থ-ন্যান্দ কাড় বন্ধুর অংবাধন: এবং উপনিষ্যন্ত-লিখিত নিরাকার, নির্বিকার, জ্ঞানময় পর-কেশবের আবাবেনা, এই উভয়ও মনুধা ব ঠক প্রকাশিত। সানব-জাতি প্রথমে স-कल विषयारे साम् हिल्लम, त्रकल विषयः-ই কুসংখ্যার পাশে বন্ধ ছিলেন, সকল বিষয়েই নিরুক্ট অবস্থায় অবস্থিত ছিলে-ন। শিক্ষালভেদি ছাড়া ভাঁছার মানসিক श्रद्धकि উপ্রবোদ্ধর শেষণ নাজিও হইনা-ছে, মেই সঞ্জিলা, ধর্ম, গৃহ কলা এবং সামাজিক ধলা এভতি সম্দন্ন বাংপারই ডত্ত্রের উন্নত ও পরিশোবিত হইয়া জাদিয়াছে :

খাদা-কালীন মনুষ্যের: খনেক বি- ; ংশে অভঃও কুসংস্থার প্রেম বন্ধ ছি-লেন। উ'৮:রা যে কোন ব্স্তুর অসংমানঃ ्रका 🦠 व्यनामाना श्रद्धां व पृष्ठि क्रिक्टन. চাহারই দেবত্ব ও সঞ্জধানত্ব স্থাকার করিয়া প্রজন: করিতে প্রবৃত্ত ≢ইডেন। ভূমপুলের গে ৰস্থ সমধিক প্রভাবশালী, এবং গগন-মণুলের যে পদার্থ সম্বিক ছেজস্থী, डाइडि भत्रम शुक्र**की**त **(प्रत-मखर्ली मर**ध) গল করিছেন। বেযে নদী সমধিক বেগ-বভী, যে যে বৃক্ষ সমধিক উন্নত বা প্রণকারী, বেংখ প্ৰদাৰ্থ সম্বিক প্ৰভাবনালী, নভো-भ छत्र इ. इ.च. इ.स. मि (य स्व श्रमार्थ नमहितः তেজস্বী ও উপকারী, সেই সম্দায়ের অর্জ- श्वा ७ णशास्त्र निक्छे व्यार्थना कतिएक ব্ৰস্ত হইতেন। যে সময়ে বৈদিক সংহিতা মাত্ৰ ্রক্বর্মের শের্মান্ত্র ছিল, সে সময়ে তাঁ-হার। ঐ স**মন্ত দেবতার** ইং. আরাধনা করি-তেন। পূর্বা-কালীন পার্ননীকেরাও পর্বা-ভ-শিখরে অধিৰত হইয়া, ঐ অগ্নি, বায়ু, ভূষ্য ও পৃথিবীর স্তোত্ত পাঠ করিত, এবং নভোমন্তগৰ্পী, रेखरमंब-ममृन, चॅना

এক মনকপিত দেবতার আরাধনা করিত। গ্রীকেরাও সর্ব্ব প্রথমে হুর্যা, চক্ত্র,
নক্ষত্র এবং ভূলোক ও স্বর্গলোকের ও
পাসনা করিত। মিসর দেশীয় লোকেরাও
জ্ঞা ও আয়ি, দিবা ও রাত্রি, এবং ভূলোক ও ত্যালোকের উপাসনায় নিমৃক্ত ছিল।
আরব ও রিছদিদিগেরও পুরার্ত্ত দর্শনে
নির্দ্ধারিত হইয়াছে, ভাহারাও অতি পূর্বের
গ্রহ নক্ষত্রের আরাধনায় প্রবৃত্ত ছিল।

गर्वाध्ययम् मर्वादमभीय लात्कवारे के ক্ৰপ অথবা উহার অনুক্ৰপ ধৰ্ম অবলয়ন ক বিয়া চলিতেম ৷ কিন্তু ভাঁহারা কেবল ভৌ-ভিক পদার্থের আর্থেনা করিয়া প্রধিক কাল ভণ্ড থাকিতে প্রারিলেন না, ও ক'পনা-শক্তি ক্রমে ক্রমে যত বৃদ্ধি চই তে লাগিল, স্বীয় স্বভাবের অনুৰূপ আনেক প্রকার দেব দেবার মূর্ত্তি কল্পের করিতে আরম্ভ করিলেন এবং এক এক দেবভাকে **এक এक शमार्थात व्यक्तिकोती दलिया व्यवध**् রণ করিলেন৷ ধনাধিষ্ঠাতীলক্ষী, জ্ঞানা পিষ্ঠাত্রী সরস্বতীং সেনাধিপতি কার্দ্ধিকের, মর্ণাবিণতি সমরাজ, ইত্যাদি দেব দেবীৰ মুদ্রি ঐ অবস্থাতেই কণ্পিত হইরাছে ৷ (कह वा निवरमत चिंधिणाणि, (कह दा तक-नोत अनिष्ठां । लक्ष्मी स्थमन धनमाजी, अ-লক্ষ্মী সেইৰপ দাৰিত ভংখের অধিকালী ৷ ক্রমে ক্রমে মনুধার মানসিক প্রবৃত্তি ও শারীরিক অবস্থারও শ্বপ কম্পিন্ত হুইল। কাম ও রতি এবং জ্ব ও বসস্তুও দ্বেম-अनो मार्था श्वा इटेशा खामिन ? छेपाम-কদিগের বিশ্বাসানুসারে, ঐ সমস্ত দেব एनरी महारगत मक जम शहन कतिशाहि: লেন, মর্ম্যের মত পিতামাতা কর্তৃক রক্ষিত এঐতিপালিত হইয়াছিলেন, মনুষোর মত জ্রী পুরুষ দ্বিবিধ মূর্ত্তি ধারণ করিয়া পরস্পার প-तिनौठ ७ थन्य-व**क्ष हरे** ब्रा**हित्नन, भ**दः मनू-ব্যের মত কন্যাপুত্র উৎপাদন পূর্বাক তাহা-দিগের ভরণ পোষণার্থ ভারুগ্রন্ত হইরাছিলে में अवस्थ (प्रदेश विशेष क्षेत्र) क्षेत्र क् त्र भौज्ञानूनादत्र खन्याना नमुमग्र विवदम्रहे म-নুব্যের তুল্য, কেবল জরা মরণের বখবজী नरहम। जाशाता वित-मीदी ७ च्रित-रवीदम। কালক্রমে প্রধান প্রধান মনুবাও দেবত্বপুনে অধিকচ হইরা পুক্তিত হইতে লাগিকোন ! ক্ষথেদানুসারে ঋতু নামক দেবতার সক্ষাত্রে মানব ছিলেন, স্বকীর পুণা-বলে

ক্সিক্তি পাইরা অমরত্ব-পদ প্রাথ হইলেন !
গ্রীক ও রোমক শান্তানুসারেও তক্তদ্দেশীর বীর-বিশেষ শোর্যা-প্রভাবে মরণোভর মুরত্ব-পদে অধিকচ হইরাছিলেন ! ভারতব্বী র ইতিহাস ও পুরাণানুসারে, এবং
রিজদি দেশীর বারবল অনুসারে, পরমেশর
নরলোকের ভারমোচন এবং নরগণের
পরিত্রাণ সাধনার্থ অবনি-মন্তলে অবতীণ
চইরা মানব-ক্রম্ম গ্রহণ করিয়াছিলেন !

সর্বা দেশীয় লোকেরাই দেবগণ চ অলৌকিক-শক্তি-সম্পন্ন বলিয়া করিয়া আসিয়াছে, তাহার সন্দেহ নাই. কিন্তু অক্সিন কালে কোন দেশের লোক সমদয় দেবতাকে সম্পূৰ্কপ স্বাধীন ও স্থ-প্রধান বলিয়া গণ্য করে নাই। ভূমণুলে যে-খন প্রচ্যেক রাজ্যের এক এক রাজা, এবং প্রত্যেক দলেরই এক এক দলপতি থাকে. । उम्मरिके रम्बनारान्त्र भरतान्त्र (महेकल এक জনকে সর্ববিপ্রধান ব্রলিয়া স্বীকার করিয়া আসিয়াছে। ভারতব্যী য়ের। ইঞ্চ বা বরুণ দেবকে, গ্রীশ দেশীয়েরা জিউস বা জুণিট-রকে,মিসর দেশীয়েরা এমন বা অসিরিসকে. রিজদীয়েরা জিহোবাকে, এবং পারসাকেরা 'অথণ্ড-মভোমণ্ডল-ৰূপী দেবতা-বিশেষকে স**ব্বদে**বের অধিপতি বলিয়া অঞ্চীকার করি-রা আসিরাছেন। ভারতবর্বে অতিপুর্বেই-ক্রদেব, তৎপরে বেধি হয় ব্রহ্মা, পরিশেষে শিব ও বিষ্ণু সর্বাদেবের অধীশার ও অগ্র-গণা বলিয়া অচিত ত হইয়া আসিয়াছেন ৷ তাঁহারা মানব-জাতির মনংকস্পিত, সুত-রাং মনুষ্যের ন্যায় হস্ত-পদাদি-বিশিষ্ট, যনুষ্যের ন্যায় কাম্পকোধাদি-বিশিষ্ট, এবং मनुरवात नाः त्र महन । উভয়বিধ প্রবৃত্তিরই অনুগত বলিয়া কীর্ত্তিত হইয়াছেন।

দেবজা-বিলেবের উল্লিখিতরূপ প্রাধান্য স্থীকারই একমাত্র অভিনীর পরমেশরের অভিন্ত ভর্তান ও উপাসনা প্রচারের স্থান পাত বলিয়া প্রতীত হইতে পারে। কিন্তু মানব-জাতির বৃদ্ধিবৃদ্ধি ও ধর্মপ্রবৃত্তি যত मार्किठ छे बिर्काट इंडेरेट लागिल, छाहा-দের ধর্মের ভাবও সেই পরিমানে উল্লভ ও পরিশোধিত হইয়া আদিল৷ তাঁহারা নিখিল বিশের সমস্ত অংশ পরস্পার দৃঢ়-তর সম্বন্ধে সমৃদ্ধ দেখিরা এক্মার্ট ভা-নিকাচনীণ-স্বৰূপ চৈতন্যময় পুৰুষকে তা-হার সূজন, পালনও সংহার কারণবলি-য়া স্থির করিলেন। কিন্তু বৃদ্ধিবৃত্তির সমবিক পরিপাক না হইলে নিরাকার, নিন্ধি হার, জ্ঞা নময় প্রমেশবের আরাধনার প্রবৃত্তি ও সামধ্য জয়েন।। এই নিমিত্ত, সঠাদে भीग नर्वश्रधान विष्ठ लाद्यतः यनिष्ठ है। হার বিশুদ্ধ উপাসনায় প্রবৃত্তইয়ারুডা-র্থ কটমাছিলেন, কিন্তু অপর লোকে উচ্চ: দের অনুগামী হইতে সমৰ্ মোসলম:বেরা একমাত্র অভিতীয় প্রমেশ রের উপাসনার নিয়েজিত হইছাও অংশ-বিধ অযুক্তি-মূলক ক্রিয়া কলাগের কপেন করিয়াছে ৷ ভারতব্যা য়েঃ ব্রহ্ম-পাতপ দক শাস্ত্রের অনাদর করিয়া বভাসংখ্য সং কারের উপাসনায় নিযুক্ত রহিলাছে। নি-कीय मन्त्र्य मारीती जाश्रमाधित जोहाउ প্রমেশ্বরে উপাস্ক বলিয়া পরিচয় দেন वटि, किन्छ केंग्डारमा घटमाँ छ करमा रेवन ভারের বিসম্মন আবিভার আছে | কেশ্ব, ভনয়েশ্ব ও কপ্রেড্রেশ্ব, এই ঈ্ শরত্রর শিষ্টানদিগের উপাস্য দেবতা। কিন্দ কোন প্ৰাধান পণ্ডিত বিবেচনা করেন, শ্যা-তানু ধ্থন জনকেশরের অভিপ্রার অব-হেলন কবিয়া প্রায় সকল লোকের জ্ঞান সিংহাসন অধিকার করিয়া বসিগুংছে, তথ্য সেই শয়তান্ও খি্টানদিগের চত্থ দেব তা বলিয়া গণা ছইতে পারে ৷

মানব-জাতির মনোর্জির উন্নতি ও
পরিশুদ্ধি অনুসারে যে ভালালের বংলার ও
জীর্দ্ধি হইয়া আদিয়াছে, প্রকীয় বংলার
উত্তরোত্তর উন্নতি তাহার উদ্ধৃতী দৃষ্টাত্তকল ৷ পুর্কে সুবিশৃত রোমক দেশে কেবল সাকার দেবতার উপাসনা প্রচলিত ছিল.
কিন্তু রোমকদিশের বিদ্যাবৃদ্ধির সমধিক
প্রান্ত্র্ভাব হঙ্গাতে, ঐ কনিত ধর্লা ত্ত-

কা পণ্ডিত বর্গের উদ্ভরোত্তর আন্তর্জা উৎ-পর হইল। তৎকালবন্তী ধর্মের সহিত करकालीन विमान विद्धाप अधिन। धर्मा-बारमाहीमिरगद्रश्र श्रीत श्रम्भ अञ्चला छेल-স্থিত হইল ৷ এমত সময়ে সেউপাল বি্টীয় বর্মের সমাচার লইয়া রোমনগরে উপস্থি- धहेरलन, धवः काजाकृष्क इट्सा अध्यानि পদেশ প্রদান করিতে আর্যু করিলেন। **তিনি যে ধর্ম উপদেশ দিয়াছিলেন, তা**ই! ভ্রান্তি-সংযুক্ত জিল বটে, কিন্তু অংগেকা-কৃত উৎকৃত্তী বলিয়া ক্রমে ক্রমে প্রচারিত **এইতে লাগিল। কয়েক শতাব্দীর মধ্যে** পূৰ্ব্যতন পৌত্তলিক ধৰ্মা তথা চইতে অন্ত-ছিত হইল। রোমকদিগের দেববগ নজারগ নিবাসী সূত্রধর সমীদে পরাভব মানিল। সেই নরলোক-নিবাসী স্থলধর-সন্থার বিশ্বরা-কোর স্থানস্থারক বলিয়া পুঞ্জিত হ*ইল*। ইয়ুরোপীয় লোকের বুদ্ধিরুত্তি বেমন মা জৈত হইতে লাগিল, তদনুসারে থিয়ীয় নশাও ৰূপান্তরিত ও পরিশোধিত ইইয়া ्कर्शनिक, व्यक्तिरहेके, हेयुनिक्रितियन क्ष कृष्टि विविध সম্পূলিয়ে विकक्त करेल। এ ক্ষানে আবার ইয়ুরোপীয় পশ্তিত বর্গের মধ্যে অনেকে বলেবল নাজের ভ্রান্থি প্রমাদ জ-ঞ্চীকার কলিয়া বিশ্বন্ধ ধর্মের **তত্ত্বাধে**বে निश्क इहेनाटइन ।

ঞ্ছলে থিকীয় ধর্ম প্রিবস্তমহ বসিরা সে বঙ্গের নিন্দা করা আমার অভিপ্রেক নতে প্রত্যুক্ত, ইরুরোপীয় লোকে স্বীয় সন্ম সংশোধন করিয়া উত্তরোক্তর উৎক্ষন্ত মত অবলয়ন করিয়া আসিতেছেন ইহা তাহা-নের প্রশাস্থাই বিষয়। সন্ধাদেশীয় সন্ধ-প্রথার প্রচলিত ধর্মাই পরম পরিশুদ্ধ সতা বর্মা কুপ মহামঞ্চ সমারোহণের সোপান সক্ষপ। এতেনারে সেই মনোহর মঞ্চে উপিত ছইবার উপায় নাই। উল্লিখিত সোপান-পরস্পরা আরোহান না করিলে, উক্ত মঞ্চে উপিত হইবার সন্তাবনা নাই।

এই প্রস্তাবে সানব-জাতির ধর্মবিষয়ের পুরার্ত্ত বর্ণন করা আমার অভিপ্রেত নহে? সে বিষয়ের বর্ণন করিতে হইলে, বিজ্-চ পুত্তক প্রস্তুত করিতে হয় ৷ একলে সমু-

দর সভা জাতির মধ্যে যে যে ধর্ম প্রচলিত আছে, তাহা যে তাঁহালের আদিম ধর্ম नत्र, जाहारम्य चामा-काणीम धर्मा कर् ক্রমে পরিবর্জিত ও রূপান্তরিত হইরা বর্জ-মান অবস্থায় উপস্থিত হৃইয়াছে, ইহাই প্রদর্শন করিবার নিমিত্ত তদ্বিধয়ের কয়েক ि कृत क्ल विष्यु উलिथिक इ**हेल । ओ** স-मख वर्षात ले अदका हितकासिनी इहेर्द, অথবা ইতঃপর আরও পরিবর্ত্তিত ও সং-শোধিত হুইতে থাকিবে, একণে ইছাই বি বেছনা করা কর্ত্তবা। যথম পুর্বাকালে মান্তব্ ব গের বুদ্ধিরুত্তি ও ধর্মাপ্রবৃত্তির উন্নতি ও পরি শুদ্ধি সহকারে ভাঁহাদের ধন্মেরও উন্নতি ও পরিশুদ্ধি হইয়া আসিয়াছে, তখন যে উ ন্তর কালে আর তাঁহাদের শ্রীর্দ্ধি হইবে না উহা সুজিপিদ্ধ ধলিব: কদাত প্রতীত হয় না : আমাদের অন্তংকরণ্যত প<u>রিস্</u>দ্ধ ২৪, বাহ৷ বাবছারও ভদমুরূপ পরিত্র হট্যা বাকে। রোমকদিগের অন্তঃকরতের ১১ জ বস্থা হইলে, ভাঁহারা নানাপ্রকার প্রভিমান উপাসনা পরিত্যাগ করিয়া থিটীয় ধন্ম অব-जञ्च करत्व, (भ व्यवखानां इट्टेल, डाहः । র। কথনই সে ধশ্ম গ্রহণ করিছেন ন। 🕻 ইয়ু রোপীয় লোকের বুদ্ধির্ত্তি যত মাজিভ হইলে, তাহারা পোপের প্রভুত্ব **অস্থা**কার ক্রিয়া প্রটেকেন্ট মত অবলম্বন ক্রিয়া ্ছন, তভ নাজিতি না হইলে, ভাষা ক্লাচ গ্রহণ করিতেন না ৷ ভাঁহাদের মধ্যে ক্রতক গুলি লোকের মনোবৃদ্ধি যত পরিশোধিত স্ট্রে, ভারার। অপরাপর বিকীর সম্প্র-মের অবলম্বিত তন্যেশর ও কপোতেশরের অস্তিত্ব অস্থাকার করিয়া একেশ্বরবাদী বি-ফ্রীনের মস্ত অবলম্বন করিয়াছেন, তত পরি-**ल्याधिक ना इट्टल, काश क्यांक श्रीका**त ক্রিভেন না ৷ একণে আবার অবনি-মগুলে ভদপেক্ষায় উৎকৃষ্ট ধর্ম সংস্থাপিত ভ্ইবার পুৰালকণ লকিত হইতেছে ৷

ইদানীং বিদ্যা বুদ্ধির যাদৃশ প্রাছ্রভাব কুইরাছে, ভাহাতে ভুমগুলের প্রচলিত কোন শাস্ত্র ও কোন ধর্ম স্বধুনাভন প্রধান পণ্ডিড-দিগের বিশুদ্ধ ও আন্ধিনক্তি, বলিয়া প্রায় কুইতেছে না । তাঁহারা পুরাধ ওজানুদারে

পর্মেশ্বরকৈ সাকার বলিয়া স্বীকার করিতে পারেন মা ৷ ভাঁহারা বেদ বেদান্ত অনুসারে रेखामि मिरवंत अखिष अवः स्रीदाचात সহিত প্রমান্মার অভিন্ন স্বরূপ অঞ্চীকার করিতে পারেন মা. এবং কোরাণ ও বায়িবস धानुमारत शतरमश्रतक काध-शताम वरः कारशा कीरवंद्र कक्ष बतुक-बारभव विवान-কর্জা বলিয়াও বিশ্বাস করিতে পারেন না। ঐ চুই শান্তের অভিপ্রায় এই যে, যে কোন ব্যক্তি কোরাণ ও বায়িবল শাস্ত্রের প্রামাণ্য বিষয়ে প্রহাণ না পাইয়া পিন্টান ও মোদল-মান ধর্মা অস্বীকার করিবে, পর্মেশর ভা হ'কেই ন্যুক্ত করিয়াচির কাল অসম নরক-গভনার দণধ করিবেন। এই সাজ্য-নর-লাগিবাদের বিষয় সার্ণ ইইলে, দ্যাণীল स्थादकत अञ्चलकत् गाःकृत करेता छे*दे*र । ইদ্যনীণ অবনি মণ্ডলে কড লোকের নিবাস आहर धरे अहितके रुष्य मही विश्वास দেগের মতানুসারে কিবপ মনুধা মুক্তি ল:ভে অধিকারী হইতে গারে, থিলোডোর পাক্র १२ छ रे वियन भवन। ও विद्वहन। कतिया था-দুশন করিরাছেন, যে বি্ষ্টানদিগের অভি-ळात्राचुमात्त्र, लक्ष (लात्कत्र मत्भ) এक कत्न-त व्यक्षिक शति जान लाएक अमर्थ इत मा, का-বশিষ্ট সম্দর বাজি ছঃসহ গত্রণার অনন্ত কাল ছলিত চইতে থাকিবে৷ ভালাদের কৃষ্মিন কালেও পরিতাণ পাইবার আশা ও ভরসা নাই ৷ শাহাদের মতে করুণানয় প त्रसम्बद्ध प्रदेशिधातराषु कल्यागर्थ विम-परः সার সূজন করিয়াছেন, এবং জীবগণ সেই कला। ।- त्रांभान चार्ति। इन कतिनात ममरम য়ং কিঞিৎ ফুঃধ ষাই। প্রাপ্ত হয়, ভাহাও জীবের কল্যাণার্থেই বিধান করিয়াছেন, তাঁহারা উল্লিখিত অক্ষয়-নরকাধিবাস রূপ কঠিন দণ্ড বিধান এবং ঐ দণ্ডদাতার উ**ক্তব্র**প निष्ठं त्र ख्रष्ठाव कमाठ ब्रास्टिविक बनिया ची-কার করিতে পারেননা।

কোন প্রচলিত ধর্মাই যদি নব্য সচ্পু পারী প্রধান পণ্ডিতদিগের সচ্পুন্তপ শ্র-দ্বার বিষয় না হইল, তবে ইতঃপর ধরণী মণ্ডলে কিন্তুপ ধর্ম প্রচলিত ও স্থারী হইবে তাহা বিবেচনা করা কর্মব্যা! তাঁহারা কি

अदक्वादा धर्म-अम्बी अदिखाश कदिएक. ৰা আপনাদের বিশুক্ত বৃদ্ধির উপযুক্ত উ-**ब्रुक्टेंग्र** धर्मा लाटक भूमर्थ हरेरवन, हेरः একবার বিচার করিয়া . দেখা আবশাক। ভূমগুলের পুরারত্ত ও মানব-জ:তির মান সিক প্রকৃতি পর্যাক্ষোচনা করিয়া দেখিলে, প্রতীতি হয়, মানববর্গের সমুদর বিষয়েবই करम करम ऐश्वीं इरेश व्यातिर टट्डा, अ নিরস্তরই উন্নতি ও পরিশ্রমির চটতে থাকি-ति। व्यामानिरात हे.सन-भूत्यह व क्रमण. উন্নতি হইয়া আসিতেতে, বাণিজা ও শি'ত কার্য্যের র ক্রমণাঃ উল্ভিছ্যু হা বাদির্ভাছ, শিক্ষা-প্রানারও ক্রমণ: উন্তি আসিতেতে, সামাজিক ব্যহার ও ব্জো-শাসনেরও ক্রমশঃ উন্নতি হইয়া অগ্নতে **१३ ममस ७७७वनक (वंशा**स्त या ক্রমে ক্রমে শ্রীবৃদ্ধি হইংডাছে ইয়া অনেকানে क मछा खाडीश मिछे (लात्कवा याकात कांट्र য়া থাকেন, কিন্তু নানন্তাভিত্র বার্যাথ বিদ্যাও যে উত্তরোত্তর উন্নত্ত লামবিশোহিত হুইয়া আসিতেতে, ইহু কোন দেশের কোন भन्त्र मारत्रत्र क्यारक श्रीकात करत्रम मा। धिनि নে শাস্ত্র অবলয়ন করিয়া চলেন, ভিনি সেই শাস্ত্রকেই পরমেশ্ব-প্রণীত অন্নাস্ত অ'-প্র-বাক্য বলিয়া অন্ধীকার করেন। সে শাস্ত্রে যে বিষয়ে যে অভিন্তায় প্রকাশিত আছে. ত হার মতে দেই অভিপ্রায়ই য্রাথ ও সর্ব্বোৎকুর**ী। ভাহার অভি**ঞায়ে, সে শ:-**ত্রের আ**র পরিবর্ত্তনেরও সম্ভাবনা নাই. म**्ट्राधटन**ब्रुख अ**ञारकः ना**रेः वयी राप्ता (वम ७ भूतानरक, थिकीरमदा दा রি**বল শান্ত্রকে,** এবং মোসলমানের। কোরাণ नामक व्यतिक शुक्षकरक मर्स्सारकृष्टे बाजा ম্ভ এছ বলিয়া অঞ্চীকার করেন। ঐ ঐ এং रय रव विवरत्रत विवास निर्दर्भ कारह, के के मन्त्र मारात लाक छाहाहे अभितर র্ভদহ সর্কোন্তম বলিয়া গ্রহণ করিয়া পাকে-न। जे नमञ्ज श्राहीन शृञ्जत्क त्य विषय यक पूत्र निक्षिक चाट्ड, 🗗 मगुष्य मन्ने पार्यव মতে, ভাছার আরু অধিক অবধারণ করি-বার সম্ভাবনা নাই। পূর্বেডন পণ্ডিড গণের অপেকায় শতগুণ বিঘান অধ্নাতন প-

গ্রিতেরা অন্যান্য বিষয়ে যেরূপ অভিপ্রায় প্রকাশ করিয়া থাকেন, তাহা কেহই অভা-स्तु विलिशा अञ्चीकात करतन ना, वतः छात्रात-ও সংখোধনাথ সচেটিত হইয়। নিজ বৃদ্ধি निर्याक्षन करतन; किन्धु रच नगरत्र भानव-লাভির বুদ্ধিবৃদ্ধি নিতাপ্ত জড়ীভূত অথব। অভ্যন্ত অসংক্ত ছিল, সে সমধে ধর্ম বি-থয়ে যে কোন ব্যক্তি যে কোন মত নিচ্ছেশ क्षिशाहरून, श्राहिक स्माविनश्ची, नदा-भ-म्भ पान्नी পविक्रिपात भएवाव जारबार ভাষা অপ্রে-বাকা বলিয়া অঞ্চীকার করেন. १४९ दावहाद कारण (प्रष्टे दारकात व्यन् ব্রেটি ছইয়া সমস্ত কর্মা সমাধা করেন : ্ষ প্রস্তু যত প্রাচীন, ভারতবধীয় লেকের নিকট তঃলা তত আন্ধেয়: অতএব তাঁলার। যে স্বকীয় ধন্মশাস্ত্রকে অভ্রান্ত বলিবেন है। (कानकाशके अमझक नहरू किछ रि-ক্রীভ-ধন্যাবলয়ী পুল্ডিক বাক্তিরা অপরা-পর সকল বিদ্যাকে পরিবস্তমহ বলিয়া কে-বল প্রমার্থবিদ্যাকে যে অপরিবর্ত্তসহ অ-ভান্ত বলিখা উলেখ করেন ইছাই আশ্চর্যো-গ্ৰীয়-শাস্ত্ৰাবলয়ী পণ্ডিবৰ্গ নিউটন্ ওলাপলাস নামক ভ্ৰম-বিখ্যাত জ্যোতিবিদ্দিগকে অভ্ৰাস্ত বলিয়া অঙ্গী-তার ক্রেন না . হিউম ও গিবন্ ও না-ইবল নামক জগদিখ্যাত ইতিহাসবেতা-গুরুক টো-প্রদ-দিগুকে ইতিহাসবিদায়ে শ্রু বলিয়া স্বীকার করেন না; বেকন ও কো-মটি এবং মিলও ছারেল নামক অসামান্য क्षेत्र भारताल्या क्षेत्र का अपनि अधिक विश्व कि ভ্রায়ি-শ্রা আও-ভাষা বলিয়া বিশ্বাস করেন ना । अनाना मगमात्र विमातके छेखताखत উন্নতি হইবে ইছা ভাষারা একবাকা হই-त्र। अञ्चीकात करत्र न. किन्दु शत्रमार्थ विषयः নিভাস্ত বিপরীত ভাব প্রকাশ করিয়া থা-কেনা এই অশেষ-দোষাকর কুসংস্কার সমস্থ का उत् अनुःकत्र कित काल वज्र-মুল থাকাতে, একাল পর্যান্ত ধর্মা বিষয়ের व्यनामा वियस्त्रत नाय अहिक इस नाहे। প্রভাত, যে কোন সময়ে যে কোন বিদ্যা थहलिक धर्मां भारत्वत्र विदत्तां वी विवश धर्मा-প্রচারকদিগের প্রজীয়মান ইইরাছে, ত- বনই তাঁহারা সেই বিদ্যা প্রচারের পধ্
ক্রন্ধ করিবার চেকা পাইরাছেন, এবং
সেই বিক্রন্ধ-মতাবলম্বী বিদ্যা-ব্যবসায়ীক্ষক্রান্ত যৎপরোনান্তি নিগ্রহ করিয়া উত্তরকালীন বিদ্যান্ত লাকের নিকট নিন্দনীর
হইয়াছেন ৷ ইটালি-দেশীয় বিক্তীয়-সম্প্রদায়ীরা গালিলিও নামক সুপ্রসিন্ধ পণ্ডিতের
প্রতি অত্যাচার করিয়া স্বায় ধর্ম বেরূপ কলকে কলক্ষিত করিয়াছেন, তাহা কোন কালে
অপনীত হইবার নহে ৷ হতভাগা বি্তীয় ধর্ম
আপনার সংহার-কাল পর্যান্ত ঐ বিষময়
কলক্ষ হুদয়াভান্তরে ধার্ব করিয়া প্রান্ধব্যাগ্য করিবে তাহার সন্দেহ নাই ৷

আমাদের স্বভাব-সিদ্ধ বৃদ্ধি-রুত্তি পরিচাল-ন পূর্ব্বক বিশ্ব-কার্য। পর্য্যালোচনা করিয়া বি ৰপতির স্বৰূপ ও অভিপ্ৰায় বিষয়ে যে কিছু জ্ঞান প্রাপ্ত হওয়া যায়, তাহাই প্রকৃত বিদ্যা ৷ সকল দেশের সকল জাতির প্রচলিত ধ-শুই সেই বিদ্যার সহিত সংগ্রাম করিশে প্রবুত্তরহিয়াছে। তাহাদের পর<sup>ক্ষা</sup>র সন্ধি-বন্ধনের সমাবনা নাই। প্রকৃত ধন্ম বাতি-্রেকে অনা কোন ধন্মের সহিত প্রকৃত বি-দ্যার ঐক্য হইবার উপায় নাই। যত দেশে যত ধর্মা প্রচলিত আছে, সম্দায়ই বিদ্যা পরিধানে পরাভূত হইয়া কালের করাল আ-সে অগ্র পশ্চাৎ প্রবেশ করিবে, এবং তথন পর্ম প্রিশুদ্ধ প্রকৃত ধর্ম বিদাং সহ এক সিংহাসনে অধিকঢ় হইয়া অবনি-মগুলে আধিপত্য করিতে প্রবুত্ত হইবেন। যেৰূপ প্রবালী ক্রমে অপরাপর বিদ্যার শ্রীরদ্ধি হইয়া আদিয়াচে, পিরীমার্থবিদার এর-দ্ধি সম্পাদনাৰ্গ সেইৰূপ প্ৰণালী অবল-হন না করাতেই, ঐ উভয়ের উক্তরণ বি-রোধ উপস্থিত হইয়াছে। সকল প্রকার জ্ঞানই আমাদের প্রকৃতি-মূলক। সমুদয় বিদারেই বীজ আমাদের মানস-ক্ষেত্রে প্র-क्टन त्रहिशाष्ट्र। स्युवस विकारि अक्षरम অপরিশুদ্ধ ভাত্তি-সঙ্গুল থাকিয়া লোকের অন্তঃকরণ কৃসংস্কার-পাশে বন্ধ করিয়া রাথে, সম্দয় বিদ্যাই উত্তরোত্তর উল্লভ ভ'পরিশোধিত হইয়া পরম রমণীয় পবি-অ পরিচ্ছদ পরিধান করে, উত্তর কালে

नमुषत विषात्र थे थे श्राप्त 🎒 दृष्टि ७ म-হোমতি হইবে, যে এক্ষণে ভাষা অনুভবে-७ উপস্থিত एत ना। अनाना विमात्र *ষেমন কোন অলৌকিক কারণে* উৎপত্তি ও **এরিছি হয় নাই, ত্রন্ধবিদ্যারও কোন অ** লৌকিক কারণে উৎপত্তিও উন্নতি চুইবার সম্ভাবনা নাই ৷ অন্যান্য শাস্ত্রকর্তারা যেমন স্বায় শান্ত্রের অনুশীলন ও উন্নতি সাধনার্থ च्यत्रामाना जेभी मंख्यि आश्र इन नारे, ४ मा-শাস্ত্রপ্রয়োজকেরাও সেইরূপ' কোন অলৌ-কিক ঐশী শব্জির আগ্রয় লাভে সমর্থ হন मार्डे । अमाना-भाज-मण्डेको स शूर्व-कालीन পুস্তক সমূদার যেমন ভ্রম প্রমাদে পরিপূর্ণ. পুর্ব্ধ কালার ধর্মশান্ত্রও সেই রূপ অশুদ্ধ ও जान्त्रि-त्रकृतः । অন্যান্য শাস্ত্রেরও যেমন স্মুশীলন দারা ভাম নিবারণ ও 🗐 বৃদ্ধি সাধন হইতেছে, ধন্ম শাস্ত্রেরও সেইরূপ অনুশীলন দার: ভন নিবারণ ও 🗐 ুদ্ধি সাধন করা ভাবশাক। যে সময়ে মনু-ন্য-সাধারণের অন্তঃকরণ অজ্ঞানে আরুত ও কৃসংস্কারে পরিপুরিত ছিল, ভাহাদের সে नगरतत भूखक रा मर्सायक्रेष्ठे उजान्ति-च-জিত হইবে, এবং বর্তমান ও ভবিষ্যংকঃ नीन विश्वक दुक्ति विषान् लाटकत शिकाना (नंत फेंशरयाशी क्ट्रेंद्र, हेटा कनाछ अग्रव নহে৷ কিন্তু সেই সমস্ত পুস্তক নিভাত অকিঞ্ছিৎকর বলিয়া উল্লেখ করা কর্তব্য बरहा (परे प्रमुपत भारता अनुभीलन করিয়া যে আমর। কোন উপকার প্রাপ্ত হ-ইতে পারিনা তাহাও নয়। পূর্ব্বতন পণ্ডি তেরা স্বপ্রণীত পুত্তক মধ্যে গে সমস্ত জ্ঞান-রত্ব ইতন্ততঃ বিক্ষিপ্ত করিয়া রাখিয়াছেন. তাহা সন্থলিত ও এবিত করিয়া অপ্রতিম ধর্ম-বিগ্রহের কণ্ঠ-দেশে লম্বমান করা ক-র্ত্তব্য ৷ বেদ ও কোরাণ পরাংপর পরমে-শবের অদ্বিতীয়-স্কুপ কেমন সুস্পাইক পে নির্বাচন করিতেছে! বারিবল ওম-शाखातक, अदः मटकाष्ट्रिम् ও कान्किश्वयम् প্রণীত পুস্তক সমুদয় করুণামূয় পর্ন পিতার অনুজ্ঞা পরিপালন বিষয়ে কত সু-মধুর উপুদেশই প্রদান করিতেছে! সাদি **७ हात्कक बदर जूलनी ७ क्दौद्र शहम द-**

মুর প্রেমাম্ভ-রসে স্বীর স্বীর কমনীর বাক্যাৰলি কেমন অভিষিক্ত করিয়া রাখি-য়া**ছেন! পুর্বেই উ**ল্লিখিত হইয়াছে, নর-लारकत अन्यान। विषयत्रत नात्र मनुरयात মানসিক স্বভাবেরও উন্নতি হইয়া আসি-য়াছে ৷ অতএব, প্রাচীনদিগের লিখিত সমগ্র শাস্ত্র ইদানীন্তন পণ্ডিতদিগের সর্কা তোভাবে মনঃপুত হইবার সম্ভাবনা নাই ! সেই সমস্ত ধর্মানাক্র যত্ন সহকারে মন্ত্রন করা **আবিশাক। ভাগ হইতে** বে সমস্ত *প*-রম মনোছর প্রমার্থ-রতা উদ্ধাত চুইটো, তাহা সঙ্কলন করিয়া একতা করা কর্ত্তবা,এব ইদানীস্থন বিজ্ঞান ৰূপ বিভাকরের প্রস্তায (महे ममुमाप्त क्षामीश्र कतिश धर्मा क्षण महा-মঞ্চ সুশোভিত করা বিবের । মানব-জাতির জ্ঞান-নেজ যে পরিমাণে পরিষ্ট ছইবে. **নরলোকে ধর্মের বেশ সেই** পরিগাণে সং-ফুত হ্ইতে ধাকিবে ৷ মান্ব-বৰ্গ সহ্তা সইব্র বংসর অব্ধি গে ছবিগাই ভাবি-পাশে বদ্ধহইয়াছিলেন, ইদানীং আনর: অনায়াসেই ভাছাকর্ডন করিছে সমর্থ হুই: তেছি: এক্ষণে আমর: যে নিবি দুচর অস্ত্র কারে অন্ধীভূত হুইয়া রহিয়াছি, উত্তর-ক লীন, বিশুদ্ধ-চিত্ত, মহানুভাব পুড়বের বিজ্ঞান প্রভাবে অনারাদেই ডালার অপ-নমুন করিয়। ক্লভকার্য হউবেন 1

অবনি-মণ্ডলে সমস্ত বিষয়ের উত্তরোভর উন্নতি হ্য, বৃহাই ক্রুণাময় পর্মেশবের অ **जित्या है।** को होतु ३ (प्रते के बीक विवास गरित বার সামর্গ্য নাই ৷ থামরা যে বিষ্ণের উইটি সাধনার্থ যত্ন করি, তাহারই অভিসাধ্র উ-ন্নতি হয়। যে বিষয়ের প্রতিকুলাচরণ করি, **ভাছার সত্ত্ব উন্নতি** ছট্বার ব্যতিক্রম ঘটে <sup>১</sup> আমরণ ধর্ম বিষয়ের - শীর্জি সাধনাথ ঘট পাই নাই, চিৰকালই প্ৰতিকৃত বাৰভাৱ করিয়া আসিয়াছি, এই নিমিত্ত যে বিষয়ে : সত্তর উল্ভি হয় নাই । গ্ৰহান গ্ৰহান ধর্মান্ত প্রচলিত হইবার পর ক্রি-বিদ্যা, **बिल्ल-विला, बार्विक-विला, वालिखा वाविनास**. রাজ্য-শাসন, শিক্ষা-প্রণালী, ইত্যাদি অশেষ विषयात यापृभ अतृष्क इरेग्नाष्ट, फार्श-विद्य-চনা করিয়া দেখিলে বিস্মাপন্ন হইতে হয় !

বেদশাস্ত্র প্রস্তুত এবং ম্যার গ্রন্থ রচিত হই-वात मनत्य. এ मकल विषय त्य क्रम अवस्थात অবস্থিত চিল, একৰে ভাষা নিভান্ত অকি-ঞিংকর বলিয়া প্রতীয়সান লয় ! থিকীয় ধর্ম প্রকৃষ্টিত হুইবার পর, কত অভিনৰ বিদাা-दहें मणि इहेनाएड । शहसारवत नाञ्च था-রাশিত হলের পর, মান্ব-জাতির সুখ পৌভান্য নাধনের কম প্রকাষ হুত্রই বা স্থারিত হুইয়াতে। ভারত্র্যী । পতি মহান্তের। যে সমস্য সম্ভিন্থান। মনপ্ৰের অস্থিত্বও অবগত ছিলেন না, একাণ তাহা আনাদিতোর স্বদেশ্বং সুগম চুষ্ট্রান্তে ৷ বিশুর্থান্ট বে লক্ষা দেশের বাষ্ণা- জানিতেন না ভালায় অনুগানীরা সে গ্রদার অধিবার করিয়া জ্ঞান ও সভাতার অংক্সদ করিয়াতেম : ইদানীং দিগদশন, মন্তাৰন্ধ, ৰাষ্ণীৰ পোত ও ৰাষ্ণীয় র্থ ধে সমল্য প্রমান্ত ব্যাপার সম্পাদন করিয়াছে, ভালা পুর্ব্ধ কালীন ধর্ম-প্রজারকদিণের স্ব-প্রের ও তালের ছিল ্ দুর্বীক্রণ ও অণুবী-ক্রণ-নম্ভ মন্ন্যদিলের জনে-ভূমি এতাদৃশ विश्व ७ कविरव, धवर भणम-विश्वतिनी विश्वा ল্লাডা মানব-জাতির দাস্য-ক্**মে নিযুক্ত হ**ইরা একশত যোজনের সংখ্যাদ এক নিমিষে আ-নয়ন করিবে, ভাছা মধাও মহম্মদ,বাাস ও अक्षत्र, कर्जम्क अ कार्यक्षयुष्यम् हेट्टानत মধ্যে বাহারট বা বিদিত ছিল ?

এইজপে মনুযোর সুখ, সে)ভাগা
বিদ্যা এড্ডি সকল বিষয়েরই উন্তরোত্তর
উয়তি হইয় আসিতেছে, কেবল পরমার্থবিদ্যারই যে আর উয়তি হইবে না, ইহা
কোন রূপে অক্সীকার করা যায় না ৷ বজ্ঞতঃ
মানব-ভাতির সুদ্ধি বিদ্যার ক্রিবৃদ্ধি সহকারে ধর্ম-ভোনেরও বৃদ্ধি হইতেছে, এবং
উত্তরকালে ক্রমাগডই বৃদ্ধি হইতেছে, এবং
উত্তরকালে ক্রমাগডই বৃদ্ধি হইতে থাকিবে ৷ কোন দেশের প্রচলিত ধর্ম নব্য
সম্পুদায়ী প্রধান পণ্ডিভদিগের উপযুক্ত
নহে, এনিমিন্ত অনেকেরই ভাহাতে অক্রদ্যা অন্মিরাছে ৷ পঞ্জম বর্মীর বালকের সহিত কি তিংশত বর্মীর মুবা পুরুবের বয়স্য-ভার উৎপন্ন হইতে পারে? মা সর্বাদান্ত-ক্রম সুপণ্ডিত অমাতোর সহিত্ব অবি-

নীত বৰ্ষার-রাজার প্রক্রত ৰূপ সৌহার্কভার সঞ্চারিত হইতে পারে ? বিদ্যার সহিত ৫-চলিত ধর্মের বিষম বিসয়াদ উপস্থিত হয় য়াছে। বিছানের সহিত প্রাচীন সম্প্রদায়ী ধর্ম-ব্যবসারীর আন্তরিক অপ্রবৃদ্ধ উৎপন্ন হইয়াছে ৷ এতদেশে পিতার মহিত পুত্রের. ভ্রাতার সহিত ভ্রাতার এবং কুটম্বের সহিত कृष्टेटबर विवास ও विरक्षम छेशान्त्रक इकेश-(६) क्वन ७७(५८) य ७३ बुल कामग्र छ। দী বাগে রের ঘটনা হটরাছে এনত নতে। খ্যা-বহীর িদীয় **জা**তির মধ্যেও ঐরপ অন্থ উপস্থিত ইইলেছে। বিষ্টীয় ধর্ম রূপ মহা মঞ বিদ্যার প্রভাবে কল্সমান হইতেছে । থিওড়োর পাকর কোনস্থানে নির্দেশ কলি-बार्डन, (य नभस धारमान कि ही य भने ध-চলিত আছে, তত্ত্বস্থান পণ্ডিছিলগের মধ্যে এক ব্যক্তিও প্রকৃতরূপ সিফীন নতেন !

I do not know a single great philosopher in all Christendom who is, in the technical sees, of the churches, a "Christian" or who would wish to be.

উক্ত মহাত্মা অনা এক ভাবে লেখেন, ''বিদ্যার্থী রা বিদ্যা প্রভাবে থিফীয় মতের নিক্ট হইতে বর্ষে বর্ষে অগিক্তর অন্ত. রিত হুইতেভেন। ভাছাদের মধ্যে কোন ব্যক্তি রেম নগরীয় থিকীর সমাজকে অ-आन्त विलया श्रीकात करत्व ? क्लान वा खिले বা পোপ নামক রোমীয় ধর্মাধিগতিকে সর্কা-প্রধান ধর্ম্মাধ্যক বলিয়া অঞ্চীকার করেন ? বে সমস্থ জনপদে থিকীয় ধর্ম প্রচলিত আছে, তথাকার বিদ্যার্থী পণ্ডিতেরা গণিত, र्रेडिहाम, आञ्चितिमा ও প्रमार्थिब मादिक ख-বজ্ঞা করিয়া ভদ্বিরোধী বাঁয়িবল শাস্ত্রকে কি অভান্ত বলিয়া বিশ্বাস করেন ২ জাঁহার! ধর্ম-ব্যবসায়ীদিগের নিমিত্ত ঐ শাক্ত রা-বিয়া দিয়াছেন। জনকেশ্বর, তনয়েশ্বর ও কণোতেশ্ব এই দেবত্রয়াত্মক মত বিচলিত श्हेशाटक १ कल-সংস্কার দারা উপদেশ গ্রহণ ও ভাদুশ অন্যান্য ক্রিয়ার অনুষ্ঠান করিলে যে মুজি লাভ হয়, এবিষয়েও লো-क्त्र खेखात चैक्छा इंट्रेट्डिश वाहित्रकत

Theism, Atheism, and the Popular Theology,
 p. 84.

मर्था एवं जन्म चरनोकिक कित्रांत ब्रुखांक বিগ্ৰিক আছে, ভাচা ধৰ্ম-ব্যবসাৰী ভিন্ন প্ৰন্য 'লোকের বিশাল-ভূমি হইতে অন্তর্কিভ হ-हेरकटा " विभाव जिल्ल स स अत्यत এইৰূপ বিৰোধ উপস্থিত হইয়াছে, সে সে धर्म चात्र कि छेशास तका शाहेरत? (व সমরে দেউপাল রোম নগরে গমন করিয়া विकीत भन्न जिल्लाम करत्न, तम मगरत छ-থাকার পুরাতন ধর্মের বেরপ অবস্থা উপস্থিত হয়, অধনা ইয়রোপীয় ও ভারতব্যীয় যাবতীয় সভা-জাতীয় ধর্ম সেইৰূপ অবস্থায় উপৰ্বাত হইতেতে ৷ हिन्द्र धनां चाजियातीय करा-कीर्व इटेशा-ছে। **খিষ্টান ধর্মও দিন দিন নিতেজ** ষ্ট্ৰতেছে। তাহাদের ছারা নবলোকের 🎒 রন্ধি হইধার আর সম্ভাবনা নাই ৷ তা-হারা নরলোকের যত দুর উরতি সাধনের নিমিত্ত আবিভিত হইয়াছিল, বোধ হয়, ভাহা এত দিনে সম্পন্ন হইরাছে। ভাহাদের নিকট যত দুর উপদেশ প্রাপ্ত হওয়া বায়. বিদ্যাধী দিগের বৃদ্ধিবৃত্তি তাহা অতিক্রম করিয়া উঠিয়াছে। ভাহাদের নিকট যত সুখ সমদ্ধি লক্ষ হইতে পারে, অনেক জাতির অবস্থা তদপেকার অনেক দূর উরত হইরা-ছে। একণে তাহাদের সেবায় নিযুক্ত থা-কিলে, উমত না হইরা অধোগত চইবারট সম্ভাবনা । এ সকল ধর্ম আমাদিগের ধর্ম বিষয়ক এবৃদ্ধি সাধনের এক এক সোপাম মাত। আমরা সেই সকল সোপান আ রোহণ করিয়াছি, এক্সরে তদুর্কে অভিনব সোপান নিমাণ করা আবশাক।

যে দেশে ঘত প্রকার ধর্ম এটিলিত আহে, যদি তথাপে কোন ধর্মাই সভ্য জাতীর লোকের বর্তমান অবস্থার সম্যক্রপ উপস্কুলানা কলৈ, তবে অধুনা কি কর্ত্তবা লা হইরা ধর্ম বিষয়ে উপেজা ও অঞ্জনা প্রকাশ করিছেছেন।—হে বিছন্। পর্যের আক্রম পত্তি-ভাগে করিয়া বিনার কিপুত্র কোন আরিপুত্র করা উচিত বহে।—বাহা ইউক, ধর্ম ক্লাচ উপ্রেক্ত ও বিলুপ্ত ক্রীরা বিনার নহে।

সংক্ষাই । ঘদিও ছিলু ধর্ম নরলোক হইছে সাক্ষরিত হয়,—ঘদিও বিঞ্জিন ধর্ম একেবারে বিলুপ্ত কইয়া নান—ঘদিও বানজীয় প্রচলিত ধর্ম এককালে সংহার-দশার উপাছত হয়, তথাপি প্রকৃত ধর্ম কলাচ বিনষ্ট কইবার বস্তু নহে । যত দিন মতালোকে মানব-জাতি বিদ্যানা থাকিবে, এবং ঘত দিন ভাঁহাদের মানবিক প্রকৃতির বিকৃতি না হইবে, তত দিন মহীমগুলে প্রকৃত ধর্ম বিদ্যানা থাকিবে তাহার সক্ষেত্র গাই ।

সেই প্রকৃত ধ্রের পরিজ্ঞানার্থ সং कता कर्डवा। विमानिशिके शिके लाकहि-গের বৃদ্ধির্ক্তি ও ধর্মাঞ্চরাত্তির শেরপ উ মতি হইরাছে, ভারাদিণের তদনুরূপ উৎ क्रके भग्र व्यवसम्भ करा कर्छना । বিদ্যা যেমন পরিশুদ্ধ পরিফেদ প্রিধান করিয়া সভ্য-ক্যোতিঃ প্রকাশ করিতেতে, তদনুৰূপ পর্ম প্রিশন্ধ সভা ধর্ম সংস্থা-नम कता कर्छवा। भवरमञ्ज्ञ-धामार्व हे-ভিমধ্যেই এতাদুশ পৰিত্ৰ ধৰ্মা প্ৰস্থিতিত চ हेवांत खूजशांठ इहेशाटह । আমাদিগের जाकाधनांहे अहे धर्मा। त्म धर्मा अहे। " ज টি-স্থিতি-ভঙ্গকর্তা, একমাত্র; অনুষ্ঠ স্থরপ, नर्सक, नर्सनियुष्ठा, नकल-मक्नलांश्व, भ-ব্বাবয়ৰ-বিবৰ্জিত, বিভিত্ৰ-শক্তিমান এবং অপরিজ্ঞের ও অনির্বাচনীয়-প্রকাণ প্রমেশ-রই মান্ব-জাতির পর্ম ডক্তি-ভালন আ-त्रांशा बखा किनि मकरलद श्रक्त, मकरलद केषत, नकत्वत्र भद्रश ७ जकत्वत्र मुक्तर । किनिरे धकाकी आभारमत खेहिक छ शाद-ত্রিক সকল মঞ্চলের বিধানকভা। আমর সকলেই সেই পরাৎপর পরম পুরুষের সন্ধান, এবং সকলেই ভাঁহার তত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ भारत अधिकाती । त्य म्हानत त्य काकित त्य **रकान वालि जाशनात्र सम्मर्गनश्कामत्म कै**ं-ব্যুক দৰ্শন করিয়া প্রীতি ৰূপ প্রিত্র পূকা প্রদান করে ও পরম প্রীত মনে তাঁচার ম-ক্লময় অনুজ্ঞা সমূদর পরিপালন করিতে বন্ধান্ থাকে, তিনি তাহারই অর্চনা গ্রহণ करतन । शतम शतिक श्रीकि-शृष्टा बात्र' छैं:-হার অর্চনাকরা ব্যতিরেকে ভ্রাক্ষিধের आत जना धर्म हारे । छोहात बित कार्या

সাধন বাভিরেকেও ভাঁহাদের আর অনা কার্য্য নাই। ভৃত্তির আর সকল ধল্মই কা-প্রতিক, আরু সকল কার্যাই অকার্যা। স-র্মা-মঞ্চলাকর প্রমেশ্ব যে মঞ্জমর অভি-প্রায়ে অধিল ব্রহ্মাণ্ড স্জন করিয়াছেন, তাহাই সাধন করা ব্রাক্সধন্মের উদ্দেশ্য। তিনি আমাদের মনোরপ রত্ন-থনিতে যে সকল জ্ঞান-রত্ন ও সুগ-রত্ন নিছিত রাখি-য়াছেন, তাহা খনন করিয়া বহিনিংসারণ করা এবং বিচিত্র বাহা বল্পতে যে সকল কল্যা-গ-বীক প্রক্র রাখিয়াছেন, তাতা আহরণ করিয়া অন্ধরিত ও বন্ধিত করাই ব্রাক্ষ-ধন্মের প্রয়োজন। বিশপতির স্বপ্রতিষ্ঠিত শারীরিক, মানসিক, ভৌতিক সর্ব্ধপ্রকার নিয়ম পরিপালিত হইয়া জ্ঞান, ধর্ম, স্বাস্থ্য, সৌভাগ্য এবং ঐহিক ও পারত্রিক আনন্দ উৎপদ্ধ হয় ইছাই এই পর্ম ধর্ম প্রচারের অভিপ্রেড। "

ব্ৰাহ্মধৰ্ম সংক্ৰান্ত সমূদ্য তত্ত্ব নিৰ-পিত হইয়াছে, আর কিছুই নির্দারিত হ-डेवात म्हादम! माहे, आमानित्वत अक्श অভিপ্ৰায় নহে ৷ ধৰ্ম বিষয়ে ইতি পুৰ্বেষ যাহা কিছু নিণাত হইয়াছে, এবং উত্তর কালে यांश किछ निर्शेष्ठ इहेत्त, त्म नम्माग्रहे আনাদের ব্রাক্ষধর্মের অন্তর্গত। সহত্র শতাব্দী পরেও যদি কোন অভিনৰ ধর্ম-ত-ত্ত উদ্ধাবিত হয়, ভাচাও আমাদের ব্রা-প্রধর্ম । আমরা ভারতব্যরি প্রাচীন স-ম্প্রায়ের ন্যায় ইংল-গ্রীয় ভাষা শিক্ষা করিতে ভীত হইনা, এবং ইয়ুরোপীয় খ্রি-ষ্টীয় সম্প্রায়ের ন্যায় কোন অভিনৰ বিদ্যার প্রচার দেখিয়াও কম্পিড হই না ৷ আমরা অবনি-মণ্ডল সচল শুনিয়াও, শক্কিত হই ৰা; এবং তদৰ্থে জুক্ত হট্য়াপিসাৰ-গরার প্রসিদ্ধ পণ্ডিতকে নিগ্রহ করিতেও প্রবৃত্ত হই নাই। আমরা ইতি পূর্বে ভৃতত্ত্ব বিদ্যার উৎপত্তি শুনিরাও সচকিত হই নাই,. এবং অধুনা জর্জ কুয়-প্রণীত অন্তত পুস্তক প্রচার বিষয়েও প্রতিকৃল হই নাই ৷ थिल मरमातरे आमामिरभन्न धर्म-भाज । वि-

एक ब्लागरे आगारमत आधार्या। बाकत ७

जार्या जदर निष्क्रिन छ इट्लिन दर किए य-

পার্থ বিষয় উদ্ভাবন করিয়াছেন, তাহাও
আনাদের দুটারু । গৌতম ও কণাদ এবং
গাল ও বেকন বে কোন তত্ত্ব প্রচার করিরাছেন, তাহাও সামাদের শারা ৷ কঠ ও ভলবকার, মুবা ও মহম্মদ, রিশৃ ও চৈতনা,
এবং পার্কর ও লেহন্ট পরমার্থ বিষয়ে বে
কিছু তত্ত্ব প্রকাশ করিরাছেন, তাহাও আরাদের ব্রাক্ষধর্মা ৷ আনাদের ব্রাক্ষধর্মের
কমে কমে কেবলই জীর্দ্ধি হইবে, এবং
জীর্দ্ধি হইয়া উত্রোত্তর অনির্কাচনীয় কপ
উৎপন্ন হইবে ৷

ध्वरमत धरे मभारक ए करत्रकृषि था-স্থাব পাঠের সংকর্ম্প ছিল, ভাহা সঞ্চল হ-ইল। অদ্যকার পঠিত বিষয় এবারের চরম প্রস্তাব। ত্রাহ্মধর্মের স্বরূপ কি. এরং ব্রাক্ষসমাজ সংস্থাপনেরই বা প্রয়োজন কি, ইহাই অপর সাধারণ সকলকে অব-গত করা ঐ সমস্ত প্রস্তাব পাঠের উদ্দেশ্য ছিল। যদি ঐ সমদায় তাবণকরিয়া তালাধ-র্শের প্রকৃত স্বৰূপ কোন ব্যক্তির প্রতীত হ-ইয়া ধাকে, তাহা হইলেই আমাদের অভি-প্রায় সিন্ধ বলিতে ছইবে ৷ যদি উহা শ্রুভি-গোচর হইয়া কাহারও ব্রাক্ষধর্শে আদ্ধা জ-বিয়া থাকে, তাহা হইলেই আমাদের ম-নোগত অভিলাষ সকল বলিতে হইবে ৷ যদি উহা বিচার করিয়াকেই ব্রাহ্মধর্ম অ ৰলয়ন করিয়া থাকেন, তাহা হইলেই. আ-मार्दित हेम्हा, यञ्ज ७ পतिकाम नव्दर्शां : व मार्श्वक विनय्छ इट्रेट ।

## ধর্মনীতি

১৪০ সংখ্যক পত্রিকার ১৮০ পৃষ্ঠার পর

পরানিইকারী কুক্সী দিগের উপদ্রব নিবারণ ও চরিত্র সংহলাধন পঞ্চম সামা-জিক কার্যা! অধুনা এবিবরের যেরপ রীতি প্রচলিত আহে, তদ্বারা উল্লিখিত আভ-প্রায় সুসিন্ধ হইবার সম্ভাবনা নাই। কেহ কাহার অর্থ হরণ অথবা অনারূপ অনিউা-চরণ করিলে, ঐ কুভানিউ হিংলিত ব্যক্তি ধর্মাধিকরণে ভাহার নামে অভিবোগ

कट्य, धर्माधिकब्रटंबंद्र कर्माठात्रीवन छाहा-ক্ষে ধরিবার নিমিক্ত সচেক্টিড হয়, অনম্ভর বিচার কর্ত্তারা সাক্ষীদিগকে বিচার স্থলে উপস্থিত করিয়া তাহার দোবাদোব বিবেচনা করিতে প্রবৃত্ত হন, অবশেষ অপ-রাধ সপ্রমাণ হইলে, তাহাকে কারাধ্য-ক্ষের অথবা ঘাতকের হতে সমর্পণ করেন। ভাशांत कुथावृण्डित कातर्गक, कि উপारंत त्म कातर्गत निताकत्व इटेट भारत, जा-হার প্রতি কিৰূপ বাবহার কুরিলে, ভাহার চরিত্র-শোধন ও জন সমাজের অনিষ্ট নি-बात्र क्हेट अश्ट्य, व्याप्त कान ताटकाहे এ সকল বিষয় বিবেচনা করিবার প্রথা প্রচলিত নাই, সুতরাং প্রায় কোন রা-ক্ষোর রাজপুরুষেরা অর্শেষমতে শাস্তি বি-ধান করিয়াও কুকর্মের স্রোত উচিত মত ः मोजुरु कतिरु नमर्थ इरेरल्ट्स मा । कात्र ( व विकृष्णि ना इट्रेंट्स जमीत कार्यात নিবৃত্তি হওয়া সম্ভব নছে। অতএব আদে। भागीनिश्वत भाभ-कर्य त्र इहेवात १३७ নিদেশ করা আবশ্যক। পরে তাহাদি- গের প্রতিকিশ্ব ব্যবহার করা উচিত, ভবিষয়ের ব্যবস্থাকর। কর্তব্য ।

মানব জাতির মনোবৃত্তি তিন ভাগে বিভক্ত হইতে পারে; নিক্নফ প্রবৃত্তি, ধর্ম প্রবৃত্তি ও বুজিবৃত্তি।

কোন কোন ব্যক্তির নির্ফ-প্রবৃত্তি অভিমাত্র ডেজস্বিনী থাকে, বুদ্ধির্ত্তি ও ধশ্মপ্রবৃত্তি অপেকাফুত তুর্বল।। তাহাদি-গের সেই অম্দর ছুর্দান্ত নিরুষ্ট প্রবৃত্তি চরিতার্থ হইবার নিমিত্ত সভত ব্যঞ্ ধর্মা-व्यद्रिष अञापृत्र बनवणी नरह, त्य (प्रहे न-মুদারকে নির্ত্ত করিয়া রাখিতে পারে ৷ ভাছারা প্রবল রিপু-বিশেষের বশীভূত হ-हेब्रा व्यम्बर्भ क्षत्र ह्य, मुख्ताः व्यम् পার অবলয়ন করিয়া অর্থোপার্জনে ও ই-क्षियु-मूर्य मन्न्रभामत्व वियुक्त हम्र। वर्गी যেমন অধোগামিনী না হইয়া থাকিতে পারে না, তাহারা সেইকুপ অধর্ম-কুপে निमध ना क्रेबा निवृद्ध क्रेटल পादत ना। ভাহারা এবপ দুধিত-স্ভাব অধিকার করি-রা জন্ম এহণ ক্রিয়াছে, যে তাহাদিগের

অপ্তঃকরণ ছইতে অয়ত্ম-সংখ্য গরল-প্রবাহ আপনাহইতেই নিগত ছইতে থাকে 1

কোন কোন বাজির পবিত্র চরিত ইহার সম্পূর্ণ বিপরীত। তাঁহাদের বুনির্ভিও ধর্মপ্রবৃত্তি বেমন তেজহিনী, নির্ফী-প্রবৃত্তি সেকগ নহে! তাঁহারা অভাবওণে আপন অন্তঃকরণ অকলঙ্কিত রাখিয়া জ্ঞানানুশীলন ও ধর্মানুষ্ঠান বিষয়ে অভিশর আগ্রহ প্রকাশ করিয়া থাকেন, নির্ফী-প্রবৃত্তি সমুদায়কে চরিতার্থ করিতে উৎস্কুক নহেন।

অপর কতক গুলি লোক এই ছুই ক্রেনীর মধ্যবন্তী বিলিয়াগণিত হইতে পারে। ভাহারা প্রথম ক্রেনীর ন্যায় নিহান্ত রিপুণরতক্স নহে, এবং শেযোলিখিত ক্রেনীর মত জ্ঞান-প্রধান ও ধর্ম-প্রধানও নত্ত । ভাহাদিগের নিকৃষী ও উংকৃষী অনেক বৃদ্ধির প্রোত্ত ভারপ বল। ভাহারা যেমন বলবতী নিকৃষী প্ররুজি প্রাপ্ত হইয়াছে, সেইকুপ আবার সেই স্মুদ্যেক

করিবার নিমিত তেজবিনী বুদ্ধিহাত ও ধ অপ্পের্তিত অধিকার করিয়া জন্ম গ্রহণ ক রিয়াছে।

এইরপ উত্তমাধন মধ্যম তিবিধ লোক সর্বা দেশেই দৃষ্ট হইয়া গাকে ৷ যে সমস্ত জনগদের মনুষ্যেরা সুনি । ভ ও সামাজিক বলিয়৷ প্রসিদ্ধ আছে, তথায় জবম লোকের সংখ্যা স্ববাপেকা৷ অংপ ৷ উত্তম ও মধ্যম প্রকার মনুষ্যই অধিক-সংখ্যা উল্লিধিত তিবিধ লোকের যে এইরপ হ্যুনাতিরেক দেখিতে পাওয়া নায় ইহা পরম সৌভাগ্যের বিষয় বলিয়া স্বীকার করিতে । ব অপকৃষ্ট লোকের সংখ্যা অধিক হইলে ছুই দমন ও শিক্ষ পালন করা এক প্রকার অসাধ্য হইয়া উঠিত ৷

থিত রিপু থাবান অলক্ষ রোকেরা আলনাদের গ্রন্থতি-সিদ্ধ গ্রন্থ বিপুর
বশীভূত হইয়া পাল কর্মে গ্রন্থত হয়। তাহারা আলনা হইতেই অধ্যেরি পথ অনুসন্ধান করিয়া লয়, এবং কোন তেজখিনী
নিক্ষী গ্রন্থির বিষয় সমলে উপস্থিত হইলে, অভিমাত্র আগ্রহ গ্রন্থা প্রাক্ষ ভাহা

গদ্ধোগ করিবার নিমিত্ত সম্পুত গদ্ধেতিত হয় ৷ তাহারা একপ দুবিত প্রকৃতি অধিকা-র করিয়া জন্ম এহণ করিয়াছে, যে পাপ-কার্ম্যে লিপ্ত না হইয়া ক্ষায় থাকিতে পারে না ৷

ध्क्षेत्र लाकित्रिश्रं श्रीष्ठ किक्षेत्र वाव-शांत कता छेडिछ, छाहा धकरण विद्वहना कता कर्षता। धार्मिक ब्राव्यविश्रमानुगात्त्रः **जारात्रा किছू कांन कांत्राक्रक बाटक ७ ५**७ ভোগ করে, অনন্তর নিষ্কৃতি পাইলে, পু-खन्द भाभकत्म अबुबहरेश क्रममास्कत श्वमिष्ठे भाषत्मत् रहन्द्री शात्र। होना उ हाजशुक्ररवता आवष्यान काल अवार्धिक-দিগকে অংশবমতে শাস্তি প্রদান করিয়া আসিতেছেন, কিন্তু পাপের প্রবাহ কোন প্রকারে নিবারণ করিতে পারিলেন না ৷ অভএৰ বলিতে হয়, পরীক্ষা স্বারা নিশ্চয় इहेब्राट्ह, खेळुन्बन भास्त्रि विधान यात्रा छ-नगमादक व्यथमा निवादरगद्र महादनः नःहै। ভারাদিণের অভি অন্যন্ত্রণ করি-्ल, **ब**वियरप्र मन्न्र न व्यवता व्याश्मिक छेन-কার দশ্নে সম্ভব কিনা ইহা বিবেচনা করা কর্তব্য।

কুৰুণারি৷ একণে রাজহারে যেৰুপ শান্তি প্রাপ্ত ক্ইয়াধাকে, তাহা আমাদের ক্রোবের কর্ম তাহার সব্দেহনাই। সেৰুপ भार्षि धकथकात देवज्ञनियाञ्च विनया छ-লিখিত হইতে পারে ৷ একণকার রাজ-नियरमञ्ज विषश विद्यहमा क्रिया प्रियल বোধ হয়, কেছ ছেব করিলে ভাছার প্রতি-(इय करा, (कर हिश्मा कितिक छाहात्रध-ভিহিংসা ধরা, কেহ অপকার করিলে ডা-হার প্রভাপকার করা ইদানীস্তন রাজপু-क्षितिशत द्राक्षित्रस्यत् थाधान अकिनिक বলিয়া প্রতীয়মান হয় ৷ উক্ত প্রকার দণ্ড-विधान व्यामारमत कियारमा उ श्रीविधिर-সাপ্রস্থান্তর অভিমত হইতে পারে, কিন্তু দয়া ও ন্যারপরতা- নামুী মহীরদী পার্ভিদিগে-न्न अनुरमापिक नरहा कुरू भौ मिलात श्रवि যেশপ ব্যবহার করিলে, ভাহাদের চরিত্র नः लाधन ७ जूर्य जरमधन वदर लाकन-मारक चनिके निवातन रत्न, लारेबल वाव-

হার করাই কর্ত্তরা। ছুকী কমন ও শিক্ত পালন পূর্ব্বাবধি বিধের বলিয়া চলিয়া জ্বা-সিডেছে, কিন্তু নব্য-সম্প্রার্থী সদর-স্থাব সাধু পণ্ডিতদিগের অভিপ্রার এই বে, ছু-উদিগেরও পালন ও সুখ সাধনের উপার করা কর্ত্তবা।

(यमन, अक्रविरम्दित वाष्ट्राविक (माय: पृतिष्ठ-तायू·गःयुक्त कृषात्म व्यवचान, यथा विधारन मतीत मधानन विष्तु व्यवस्थन ইত্যাকার বিবিধ প্রকার স্বান্ধাবিক কারণে শারীরিক রোগের উৎপত্তি হয়, সেইকপ মনোরতি বিশেষের স্বাভাষিক দেবে, কু-লোকদিগের সহিত কুস্থানে সহবাস, যথা বিধানে ননোর্ভি সঞ্চালনে অবচেলা প্র কাশ ইত্যাকার বৈবিধ প্রকার স্বাভাবিক कातरा भाभ क्षे भागिक (द्वारत्रद्व छे-ৎপত্তি হইয়া থাকে। কেহ পীড়িত হইলে স্থামরা তাহাকে ভ্রমেও কথন শাস্তি দিবার বাসনা করিনা, প্রভাত, ভাষাকে বিচক্ষণ চিকিৎসকের হত্তে সমর্পণ করিয়া, উচিত মত ঔষধ পথ্য প্রদান করত রোগের হত হউতে মুক্ত করিবার যত্ন পাই। কিন্তু কোন ব্যক্তি উক্তৰণ স্বাভাবিক কারণে পাপ ৰ প পীড়ায় পীড়িত হইলে, ভাছাকে ভং ক্ষণাৎ কারার জ করিয়া সুকটিন শান্তি প্র-দান করিবার নিমিত বাথা হই। একাণ আচরণ সকাতোভাবে যুক্তিসিদ্ধ বোধহয় যদি শারীরিক ও মানসিক-রোগ একৰূপ কারণ হইতে উৎপন্ন হইয়া থাকে. তবে এক প্রকার রোগীকে শান্তি দেওয়া বি-হিত হইলে, অনা প্রকার রোগীকেও শান্তি দেওয়া কি নিমিন্ত বিহিত না হয় ? বান্তবিক, কোন ব্যক্তি পাকস্থলীর প্রকৃতি দোবে ও কুস্থানে অবস্থান-দোবে উদরা-ময়-পীড়ায় পীড়িত হইলে, ভাহাকে শান্তি (मञ्जा रामन यूद्धि-विक्रक, त्कर महात्र-**छि विस्थित च छाव-स्माव ७ कूरमास्क्र** महिक मः नर्ग-एमाद्य भाग-कर्ण्य धार्ख इ-লে, ছাহাকে শান্তি দেওয়াও সেইৰপ বু-ক্তি-বিরু**ভ তাহার সলে**হ মাই।

কেহ কেহ কহিতে পারেন, চৌর অধ-বা মন্ত্রা থক বার কাহারও আর্থাপত্রণ ক রিয়া ষ্টিন মন্ত অভি ইইলৈ, শান্ত-ভরে
কিছু দিবল সৈ কর্ম বা করিলেও বা করিভে পারে, কিছু শীড়িত বাজি শান্তি পাইলে, ভাহার উদ্দুদ্ধপ উপকার প্রাপ্তির
নস্তাবনা দেখি না। কিছু বিশেবকণ বিবেচনা করিয়া দেখিলে বোধ হয়, শান্তি বিধানে যদি কিছু উপকার থাকে, ভবে ঐ উভয়
ছলেই ভুলাকপ কল উৎপদ্ধ হইবার সন্তাবনা। যদি কুক্মী দিগের ন্যায় রোগীদিগের প্রতি দণ্ডবিধানের ব্যব্ছা থাকে, ভাহা
হইলে, ভাহারাও রোগোৎ পত্তির আশক্ষা
র শারীরিক নিয়ম শিক্ষা ও পালন করিয়া
সাবধান হইডে পারে 1

কেহ কেহ বলিতে পারেন, যে ব্যক্তি শা-রীরিক নিয়ম লজ্ঞান করিয়া রোগ-এন্ড হয়. সে ব্যক্তি আপনিই ভন্নিবন্ধন যন্ত্রণা ভোগ করে, অপর লোকের ভাহাতে কিছু মাত্র कि वृद्धि गारे, जल्जाद (म विषया वाक-ৰিরৰ প্রচার করা প্রয়োজনীয় বোধ হয় না। किन्ह धर्म विषयक नियम উल्लाम करिया वर्ष इत्रगापि अमाधु कटर्च अनुतुष्ठ इहेटन. তুদ্যারা অন্য লোকের অনিষ্ঠ সাধন হয়. এই নিমিত্ত, রাজনিয়ম খারা সে বিষয়ের শাসন করা সর্কাতোভাবে বিধেয়৷ কিন্তু এ আপত্তি নিভান্ত অমূলক বলিয়া প্রতীয়মান হইতৈছে। ধর্ম বিষয়ক নিয়মের ন্যায় শা-রীরিক নিয়ম লজন ছারাও লোকসমাজের সমধিক অপকার উৎপন্ন হইয়া থাকে। প্রথমতঃ, যে ব্যক্তি শারীরিক নিরম লভ্রম করিয়া স্বীয় শরীর ভগ্ন করিয়া কেলে, সে वंगींक मुख-मंत्रीत शैक्टिल, উপকারী কর্মা সম্পন্ন করিয়া জনসমাজের যেরপ উপকার সাধন করিতে সমর্থ হইত, তাহাতে অসমর্থ হইরাজনসাধারণকে সে বিষয়ে বঞ্চিত করিতে থাকে। বিতীয়তঃ তাহার সভানগণ অখণ্ডনীয় প্রাকৃতিক্রি-রমানুসারে দুবিত প্রকৃতি অধিকার করিয়া জন্ম গ্রহণ করে, তলিবন্ধন অংশব্রিধ ক্লেশ-পরম্পরায় পতিত হইয়াবছতর কর্তে कील किलेन करते, अवर कोहीता मुख थी-किरले, संबन्नभारसंत्र त्य खेनानं मकल-द्रानि সম্পাদন করিতে পারিত, তাঁহাতেও প- क्य हते । छडिंस, त्वरं शीफिंछ इरेटन, शविकासी क्षेत्र किखिक उ केंद्रकिक हरेत्रा छोरांत्र त्या अधीयांवित मिशिष यर महिनामासि करी भाष, त्य व्यव्य भारत वांद्रबर अ व्यानाई व्यानकश्चकात छेशकात হইতে পারিত তাহা তাঁহার চিকিৎসার্থে ব্যয় হইয়া যায়, আর যদি ডিনি কোনপ্রকার সংক্রোমক রোগে আক্রান্ত হন, তাহা চইলে তাঁহার জীপুতা ও বন্ধু বান্ধব প্রভৃতি ত-मोत्र गरखब-मारव मिहे शीफ़ात शीफ़िछ হুইয়া অশেষ্বিষ ক্লেপ ভোগ করিতে ও মত্য-প্রাটেন পতিত হইতে পারে ৷ বাস-विक, भाषीतिक भित्रम शतिशालम निष्ठत व्ययक ७ व्यवसा कदारक, मानव-वर्णत छ প্রয়াম যে প্রমাণ অনিষ্ট-র:শি উৎপর হ-ইয়া আসিতেছে, তাহা এক কালে অ-নভব করিতে পারিলে ধর্মবিষয়ক নিয়মের নায় শারীরিক নিয়ম প্রতিপালন বিষয়েও রাজানজ্ঞ প্রচার করা সর্বতেভিতে বিধেয विनिज्ञा ऋमग्रक्रम क्ट्रेट भारत्।

কেছ কেছ কছিতে পারেন, শারীরিক নিয়ম লঞ্জন করিলে যে অস্বাস্থ্য-জনিত ক্লেশ রাশি উৎপন্ন হয়, তাহাই সে কণ্ডের শাস্তি স্বৰূপ ৷ যে বাজি শারীরিকনিয়মের বিশ্লন্ধ বাবহার করে, সে ব্যক্তি সেই শান্তি ছোগ করিয়া ভাছাতে নিরুত্ত হয়, এবং অপর বা-জি তাহা দেখিয়া তদনুৰূপ অবৈধ আচরণে বিরত হইয়া থাকে। কিন্তু কোন ব্যক্তি ধর্ম-বিষয়ক নিয়ম লক্তন করিলে, আপনা হইতে তাহার সেত্রপ শান্তি পাইবার সন্তঃ-বনা নাই. এই নিমিত্ত তাহাকে শান্তি দিয়া **শে কর্ম্মে নিরন্ত ক**রিবার চে**স্টা** কর<sup>্</sup> কন্তব্য । কিন্ত মানুব-জাতির শারীরিক ও মান্সিক **অক্লভির বিষয় পর্য্যালোচনা** করিয়া দেখিলে উক্তৰপ সাপত্তি নিতান্ত ভ্ৰান্তি মূলক বলি **রা নির্দারিত হয়। স্বাস্থ্য** বিষয়ক বিষয়-নের বিরুদ্ধাচরণ করিলে যেসন অসুথ উৎ-श्रम रुप्ते, यन्त्र विषयक विधारमत विक्रकाहंद्रन क्तिरम् पर्देश चमूच उर्भन्न इहेगा बादक। स्रोत, बाह्मम, जनमार्कनामि मा-রীরিক নিয়ম পরিপালন না করিলে, যেমন অব্যাহত-স্বাস্থ্য জনিত অনির্বাচনীয় সুখ অ-

नूच्य करा यात्र बा, धन्म विषयक विधान छ-জ্ঞান করিলেও সেইরপ ধর্ম নিবন্ধন পর্ম পরিশুদ্ধ আনন্দ-রুদের আস্থাদ-লাভে সমর্থ रुख्या यात्र ना। भातीतिक विधादनत वि-রুদ্ধাচরণ করিতে আরস্ত করিজে, যেমন শারীরিক অসুখ উপস্থিত হুইতে থাকে. ধর্মাবিষয়ক নিয়ম লঙ্কন করিতে আর্ড করিলেও সেইক্প, আন্তরিক গ্লামি উ-পঞ্জিত হইতে থাকে৷ ধেমন শরীর-বি-ষয়ক কোন কোন নিয়মের নিরস্তর বিপ-রীত আচরণ করিলে, উৎকট পীড়া উৎপদ্ন **হটয়া অভিশয় যন্ত্রণা উপস্থিত হয়, সেই** ৰূপ কোন কোন প্ৰকার ধর্ম বিবয়ক নি-ग्रम्ब विक्रकाह्य क्रिक्त, डेमानानि डेश-স্থিত হইয়া অতিশয় কেশ উদ্ভাবিত হয় ৷ কেহ কেহ যেমন রোগ-জনিত ক্লেশ ভোগ করিয়া শারীরিক্মিয়ম পরিপালন বিষয়ে শ্যত্ন হয়, কেহ কেহ দে**ইৰূ**প অধৰ্ম্ম-জনিত যাভনা ভোগ করিয়া ধর্ম বিবরক নির্ম পরিপালনে সচেটিত হয় ৷ স্বাস্থ্য বিষয়ক वित्रम लक्ष्यन हात्रा भद्रीत चत्रुह रहेटल७, যেমন অনেকে অভ্যাচার করিভে বিরভ হয় না, সেইৰূপ, ধৰ্ম বিবয়ক নিয়ম লঞ্চন धादा व्यवःकत्। व्यवक्ष उ व्यवनन रहे-লেও, অনেকে কুকম করিতে নিরস্ত হয় না ৷ কোন ব্যক্তি রোগ-এন্ত হইলে, যেমন প-রিজন বর্গে অথবা অপর লোকে ভাহার শান্তি না করিয়ারোগ শান্তির উপায় করে, সেইৰূপ, কোন ব্যক্তি লোকসমাজের **অ**-নিষ্টজনক কোন কুকর্মে প্রবৃত্ত হইলে, তা-হার শাস্তি না করিয়া চরিত্র শোধনের উ-পায় করা কর্ত্তব্য ৷

কোন ব্যক্তি কোন পাপ কমে প্রবৃত্ত হইলে, তাহাকে কঠিন শান্তি প্রদানকিরা কোধের কমা, নাারানুগত ও দরা-সমত কার্যা
নতে ইচা অবধারিত হইল। তাহার প্রতি
কিন্তুপ ব্যবহার করা উচিত তাহা একণে
প্রদর্মিত হইতেছে। কুক্মী দিগকে রুজ্
করিরা না রাখিলে, তাহারা স্বেছানুসারে
লোকসমাজের অনিকীচরণ করিতে অনুরুজ্
হরু, এবং তাহাদিগের সংসর্গ-দোমে অপর
লোকেও অধর্ম প্র অব্রন্ধ করিতে পারে,

অতএব তাহাহিটোর *অতু*তা**হ**কে স্বভন্ত স্থ **एक स्टाटन अस कतिया द्वाचा सावभाव । का**-रामिरगत (क अधिनी निक्के अवृष्टि निक निक विषय थाश स्टेटनरे छेटलक स्टेश ह-রিতার্থ হইবার নিমিত ব্যগ্রহয় এই নিমিত, যাহাতে সেই সমুদর বিষয় ভাহাদের সম-কে উপস্থিত না হয়, তাহার উপায় করা ক-उंवा। छाशामित्यत अकि कटमेत्र वावशास করা কর্ত্তবা নহে, সর্বতোভাবে সদয় আ-চরণ করাই উচিত। তাহাদিগকে যেৰূপ অবস্থায় রাখিলৈ, তাহারা আরামে থাকি-তে পারে, অংচ আপনার ও অপরের জ নি্টাচরণ করিতে না পারে, সেইকপ জ বভায় রাধাই ভোয়ঃকণ্পা ভাহারাজনুৰ ও ধর্ম যত দূর শিকা করিতে পারে, ভত मृत्र रे मिका मि उरा छेटि छ, धवर आम-माधा कचा अन्यान कन्नान कर्खवा। धरेक्श ह-ইলে, তাহারা যেমন সুধ স্বচ্ছন্দে ধাকিতে পারে, এবং লোকসমাজের যত উপকার-माधन कविष्ठ भारत, ऋक ना रहेशा अन-नमारक राथका व्यवहान ७ शमनाशमन করিলে, দেৰপ থাকিতে ও দেৰপ করিতে কদাচ সমৰ্থ হয় না৷ এইৰূপ হুইলে, অনেকের চরিত্র কালক্রমে সংশোধিত হইতে পারে। কিন্তু ইতিপুর্কের যে সকল ব্যক্তি সর্বাপেক্ষায় অধম বলিয়া পরিগ-ণিত হইয়াছে, তাহাদিগের স্থাব কিমিন্ কালে শোধিত হইতে এমত বোধ হয় না৷ अञ्च ও ববির যেমন একাস্ত অচিকিৎসা, অন্ধতাও ব্ধিরতা রেগে ইইতে কোন अकारबरे मुक्त रहा ना; উলিখিত व्यथम ব্যক্তিদিগের স্বভাবও সেইৰূপ অশক্য-প্রতীকার, কোন মতে মার্কিড ও সংশো-ধিত হয় না৷ কিছু তাহারা বছকাল কা-वाद्याध ७ व्यवित्रक मञ्जादमा धारि वण्डः यम् कनाइ नर्भथ खरनवन कति-য়া অন্তঃকরণকে ধর্মানুগত করিতে সমর্থ इब्र, छद्द जाहानिशक मूहिकिशनि वा রোগ্য-লব্ধ ব্যক্তির সমান বিবেচনা করিয়া निकृष्टि ए अता विद्यंत्र छारात्र न स्मर नारे। কিছ এই ৰূপ অলাকার লইয়া নিছ্তি

দেওয়া আবদাক, বদি ভাষারা পূর্বাবৎ আনিউচিরণে পুনরার অনুরক্ত হয়, তবে পুনর্বার প্রভানীত হইরা পূর্বাবৎ শাসি-ত, পালিত, ও শিকিত হইতে হইবে।

कुक्चो निर्शत थिछ धरेक्प चाहर्ग क्द्रा बााय-निक् अ म्यानूशक। जावानिशटक निवर्षक क्रम पिछता तालगानत्नव छेत्सना হওরা উচিত নহে। তাহারা পাপ-কম্মে विव्रष्ठ श्रेश जानबाता नाज उ मूती शास्त थवः अभव्रत्मात्कत अभिकाठत्रता निवृष्ड रत्र धरे जिल्लाका तारिका, धरु ब्रियरत রাজ-নিয়ম সংস্থাপন করা কর্তব্যা কিন্ত উক্তৰণ আচরণ ছারা তাহাদের ক্ষ সাধন হয় না এমত নহে ৷ পীড়িত ব্যক্তির ক্লেশ দর্শনে দয়াপু হইয়া চিকিৎসারস্ত করি-ल, रामन नित्रस्त्र भागा-भाग, दिचान ঔষধ ভক্ষণও অন্যান্য কার্ণ ছারা ভাহার ক্লেশ উৎপদ্ম হয়, সেইৰূপু সদয়ান্তঃকরণে অসচ্চরিত্র মনুষ্যদিগের চরিত্র শোধনার্থ উক্তৰণ অনুষ্ঠান করিলে, তাহাদিগকেও ষ্মেক প্রকার কন্ট স্বীকার করিতে হয়। তাহারা অবিরভ অবরুদ্ধ থাকে, অসচ্চ-ব্রিতা স্বাভিমত লোকের সহিত আলাপ उ मह्वाम विषया निवातिष्ठ हम्र, धवः বাসনানুত্রপ কুক্ম সাধনে অসমর্থ ছইয়া বাসনা-বিরুদ্ধ শ্রমজনক কার্য্যে নিয়োজিত रत्र। একাতে अवकृत धाका ও (क्र्यान-ৰূপ, কাৰ্য্য সম্পাদনে নিৰাব্ৰিত হইয়া স্বীয় वाननात्र विभवीष कत्य निरम्नाक्षिष्ठ इउ-য়া কিৰূপ ক্লেশকর, ভাহা যাঁহারানা জা-নেন, তাঁহারাই ক্ছেন, পাপীদিগের প্রতি উক্তৰপ বাৰহার করিলে, তাহাদিগের किছूमाज कर्छ वाथ इत्र मा, ध्वर छाड़ा দেখিয়া অন্য লোকের পাপকর্মে শঙ্কা জক্ষেনা। কোন ব্যক্তি মদ্য-পানে অভ্যু-ত অনুরক্ত হওয়াতে,তাহার আত্মীয় বন্ধরা তাহাকে অনেক প্রকার যুক্তি প্রদর্শন পু-र्यक बाबांबरक छेशरमण अमान क्रिएक .थाइक रहेन। जाराज (म धरेबान क्षण)-जत कतिशाहिल, वक् पूर्वि यादा वितरल, শতি যথার্থ, কিন্তু আমি আর লোভ সমরণ क्तिएक नक्ष महि। यनि जामात्र अक निरुक् अक शांक यमा विमामान शांदक, अवश नूशकोत्र नत्रक कृष्धत मुथ चनामित्क थ-नाविष्ठ रहेवा शास्त्र, मात्र यनि आभाव अवस्थितकत्र विकास थाएक, स्व में मना अक शोक शाम कतिया माज के नवक-विरुद्ध **প্রবেশ করিতে হইবে, তথা**পি আমি লোভ সমরণ করিতে সমর্থ হইনা৷ ভোমরা আ-মার শুভাকাজ্ঞী সুক্তন, অতএব, তো मामिरशत निक्छे णामात क्रडळ र ७ वा छे-চিত ৷ কিন্তু আমার চরিত্র শোধনের আর मञ्जादनः मार्टे, चड्य ,तम विवदस रहामतः नित्रस इ**७\*1**" विदाक्ति थिकीत धन्माव-লয়ী। সুভরাং তাহার এইৰূপ বিশাস ছিল, যে পাপাচণ করিলে, চিরকালের মত নরক্বাস ও নরক যন্ত্রণ ভোগ করি-তে হইবে ৷ চিরকাল নিরয়-যক্ত্রণভোগের আশন। যে ব্যক্তিকে পাপানুষ্ঠানে নির্ভি করিতে না পারিল, তাহার আর কিন্দপ শান্তি ভয়ে নিরস্ত হইবার উপায় ভাছে /

থ্রাহার যে রুভি তেজখিনী, সে দেই বৃত্তি চরিতার্থ করিবার জনা উক্তপ্রকার বাজা হইয়া উঠে৷ সেই বৃদ্ধির চরিতা-र्थठा मन्नामन क्रिवात उनाम प्रहिष्ठ ६-ওয়া অপেকা ক্লেশের বিষয় আর কি আছে? **এইৰপ ক্লেশ ভোগতে স্বীয় কন্মের বিল** কণ শান্তি ভোগ বলিয়া শ্বীকার করিতে इरेटवा यनि नश-एकाटशत व्यामकात भा-भानुकारन निरुक्त क्हेबात मखावना थारक. তবে কারাবরোধ ও উক্তর্ম ক্লেন ভোগ षात्रा অবশাই হইতে পারে। যে কশ করিলে যেরপ ক্লেশের উৎপত্তি হওয়া উচিত, সর্ব্বক্ত সর্বানিয়ন্তা পরমেশ্বর তাহা একেবারেই নিয়োজন করিয়া রাখিরাছেন ! সে কর্ম করিলে সেইরূপ বেদনা সভাবতঃ वानना इट्रेंड डेंब्लम इट्रा थारक। **তদতিরিক্ত ফ্লেশ-পরম্পরা** কম্পনা করির मर्जालात्कत्र इःध-धवार धवन कता मनू-বোর পক্ষে কর্ত্তবা নহে ৷ যেমন পীড়িত বাক্তির পীড়া শাক্তির নিমিক্ত চিকিৎসা করান বিধেয়, সেই ৰূপ, পাপ-পীড়ায় **প্রপী**ড়িত ব্যক্তিকে সতুপদেশ প্রদান,

<sup>\*</sup> Simpson's Criminal Jurisprudence. p 59,

লেভকর নামগ্রীর অসলিধান, কুলোকের	विशांति नाम विश्व ग्रमाति
गरिष मधेबाम निवाद्वन, लाटिकत्र छेर्नकांत्र-	नामन हें बीहिके
क्रमक आध्रक्षमक कार्द्य मिरताक्षम देखानि	" विश्ववाद क्षेत्र के किया किया किया किया किया किया किया किया
केशात पाता अथक तथ बहादबान हरेट	" ताका कामीकृषात बांबक द्वाम ० ०
	" हगानानहम् हासद्वा ५
মুক্ত করিবার চেকা করা সর্বতোভাবে	" . ** F34 78
कर्षका ।	'' मिलिनान मक्मनात · · · · · •
कॅनिकाहा खोचा नेभारकत्र ५१५७ नरकत्र	" (बरवल्लुनाथ ठीकुत ১०১
- অঞ্চায়ণ অব্যি চৈত্র মাস পর্যাস্ত	" विक्किन्छनाथ ठाकुत । १
আয় ব্যায় স্থিতির নিৰূপণ	" গলেজনাথ চাক্র ২
चांग्र	' সভোজনাথ চিক্র · ২
ৰাম প্ৰান্ত · · · · · · ৩৯৫৴১৫	" यक्तिम श्रीम भव्मामाश्रीश १
পুনুক বিজেশ্ব ৩৮।৫০	গ কাশিষ্ট নিজ ১০
उष्ट्रताभिनी मका श्रेष्ठ आधि 😬 ১००	" महुष्यकत्र १
গভ মাসের স্থিত · · · › ১১২ গ্রা১০	" ভারকনাথ তত্ত্বত ৫
\$6186	শ্লাব্ত জ্ব শ্র ২
बाग्र	" দ্রালচক্র শিরোমণি … » ১
কর্মদার গণের বেজন · · · · * 8৪৩।০	" শিবচক্র নিজ্ঞ
वितिष्र नाथ 380(50	'' (नाकनाश (घात >
65-5 15 C	" পরমার্থচন্দ্র চট্টোপার্যায় ১
ক্তি :: ৯০০/১০	" মারায়ণচক্র মুখোপাধ্যায় ১
20078	" রামনারায়ণ কর · · · · ৩.
দান প্রান্তির বিবরণ	' লোবিকটাদ ধর ᠁ ৾ ⋯⋯ ৽
ন্মযুক্ত কালাটোৰ বিজ 😶 😶 🦫	' कानाइयान भाइन ह
" (कहात साथ: गृंदशीशीशांस " " >	" जेचेब्रहेक्स १६
" দুর্ঘা চরণ শ্বপ্ত ১০	" नीलम्बि इंटिंग्लीश्राश्च ३.
" রাধা মোহন বৰু ` >	" माध्य नान एउ5
" मूर्शिमिक्द्र 8	" ত্রিপ্রাচরণ বন্দোপাখ্যার
" মুদন মোহন্দেন 🦠	" হরিকজ মুখোপাধ্যায় ১
" टैक्शान ठअई तम् " " >	'- रुमभत दाझ ১
ं त्राणीम साम हानसात >	" इतिर्थोक्संबन्धी ··· - 8
(新美D部 A.2)	" वसलाम रेम् २८
े दिस्त्रद माम व्यक्ति >	र्रामकानाई स्मन ⋯ ••• ••
" भारी सहित वर्ग " " >	ं तीकमीतायन तम् क
" यत्ना स्थापन रम् "" )	" রামসাল পরেলালীয়ার ৬
" আয়েম'লাল মিত্র	" काणीमाधः प्रख … • • • • • • • •
के अपनिवादि क्यानास	" ठक्करनचेत्र (स्व ''' «
" জুবন মোহন নিওগী " ১	", तपनारुमा साम अ
माना साववासका \cdots 🖰	" रेरक्श्रेनाथ वाक्षि ··· ·
'' রাম তনু চক্রবর্তি , ১	" विहातिनाम खुकाराया
" कक्ष नाथ कुछ …	व्यक्त स्रोटनत मधि
" इाहिका नांच क्ष " "" "	भौगोधारत क्षांच १৮/১৫
र किक्ड अधू मन्त्र र र र र र र र र र र र	05e>5e
" मधुद्रा नाथ क्षु रूप " " 3	ক্ষেত্ৰই জ্জাবোধিনী-প্ৰিকা কলিকাছা মধ্যের
" ब्राम क्रम मनूपनाव " " " "	বোড়ালীটোড়িত উজটোটিনী দভার ভাষালয় হই-
" इति नाथ कुषु । >	ए सार्विदेश संस्थित एक।—देश मूँकी असे नेविश
" भवीं कि क क क क क क क क क क क क क क क क क क	> देवणान चक्र वाज्र मध्य २०२२ । क्रमिशकांकः ८०१० ।



চণ্দ্র । নতাং, জ্ঞানমমন্ত্রং শিবং বছরং, নির্বাচনে কমেরালিভীগং মর্ম্বরাপিসক্ষনিবস্থুসর্প্রাত্তান্তর্গত বিং সর্কশক্তিমধ্যু পুবংপুর্মিতি॥

কৰিনে প্ৰীতিস্থদা প্ৰিয়কাৰ্ছ।দাধনঞ্ভদুপাদনলের।

#### বন্ধ স্থোত

ই রাজাধিরকে কর্ণামর মহারাজ আমাদের কেমন রাজা, ভাছা কি রাজাহইয়া অকুতিম ক্লেছ-পূর্ণ পিতার তুলা স্নেহ করে, এমন রাজা কে ধকাথার দেখিয়াছে? রাজা হইরা জ্বরা-धिक बक्कुत नाम श्रीिक कदत, अमन ताकारे ৰা কে কোথায় দৃষ্টি করিয়াছে? ত্মি যে আমাদিগকে ইঞ্জিন-জনিত, বুক্তি জনিত ও ধর্ম-জনিত কত প্রকার সুধে সুখী করি-ब्राष्ट्र जाहा कि वर्गन कतिव? यमि किह जि-ক্র সলিল বিশ্ছ বিশ্ছ করিয়া গণনা করিতে সক্ষ হয়, তথাচ তোমার প্রেম-সিস্কু পরি-मान कतिएक नमर्थ इर्दरना। यमि एकह ममस बक्क शनमा कतिया निःद्यं कतिएड পারে, তথাচ ভোমার করুণার স্থল গণনা করিয়া শেষ করিতে সমর্থ इইবেনা। তুমি বে আমাদিগকে তোমার তত্ত্ব-রুস পানে লধিকারী করিরাছ, আমাদিগের ইহা অ-পেকার সৌভাগ্যের বিষয় আর কিছুই না-ই। বে ব্যক্তি ভোমার তত্ত্ব-বোধে নিভান্ত অসমর্থ, বিশ্ব-সংসার ভাহার পক্ষে অভিযাত্র **শকি (≉ংকর ৷ অবামিক গৃহ ও অরাজক** রাজ্যের বিবন্ধ সনৰ ও আজোলন করিয়া কে ভুক্ত হইতে পারে ? জীবন-গুন্য শরীর ও निज्ञासिक जाजात जनका शर्वारनावना

করিয়াই বা কে প্রসন্ন হইতে পারে? যে ব্যক্তি ভোমার প্রেমামূত-রস পান করে নাই. তোমার এনন অভত বিশ-কার্য্যও ধৎসামানা অসুন্দর ধৃলি-রাশি মাত্র বলিয়া ভাহ'র প্রতীত হয়। শৈকা-প্রণ ঘেমন গহার হেব, এবং গদ্ধ ও মকরন্দ যেমন সুগদ্ধ পুল্পের মাধুর্ঘাদায়ক, দেই ৰূপ, ভোমার প্রেমামু-ত রস বিশ্ব-কাননের মাধুর্যাকারী ৷ যে ব্যক্তি ভোমার প্রেমে মগ্ন হর নাই, এ জগৎ, যে কত মধুর ও কত সুন্দর তাই। সে কি জানি-বে? যে ব্যক্তি ভোমার প্রেম-রুস পান করিয়াছে, তাহার পক্ষে সকলই মধ্ময়, नकलाई मुनायम, नकलाई (मोन्सर्यायम। (म प्तिथिष्ट शांत, **मूशक भूष्म**त (मोत्र मर्थ, ভোমারই প্রীতি-সৌরভ উলিত হইতেছে, সুমন্দ মারুতের সঞ্চরণ মধ্যে তোমারই ঞীতি-সমীরণ সঞ্রিত হইতেছে, নিশাক-রের কিরণ-ধারায় ভোমারই প্রেমানুত-গারা कत्रिक इहेरकरह, मुविधन निसंत-नीदा তোমারই পরম পবিত্র প্রীতি-বারি চলিত হইতেহে, এবং পরিস্তব্ধ প্রত্রবণ মধ্যে ভোমারই প্রীতি ৰূপ বিশুদ্ধ সলিল নিঃসৃত **হইতেছে। যাহার দৃক্-শক্তি আছে, দিব**ি करतत छमत्रास-कानीय अस्व त्रीक्तर्या छ-ৰলোকন করিয়া সে অবশাই মোহিত হয় তাহার সন্দেহ নাই; কিন্তু ভোষার প্রেমে প্ৰেমিক ব্যক্তি দেই শোভার অভ্যন্তরে বে

কিৰূপ অত্যান্চাৰ্য্য অনিবাচনীয় সৌন্দৰ্য্য সন্দর্শন করেন, ভাছা আর কেহই জানে না, কেবল তিনিই বিরলে দৃষ্টি করেন ৷ যাহার আবণ-শক্তি আহে, মধুমাসে মধুর-ভাষী विरुक्ष-कूटलंड भूमधुत धाने खंदन कडिया *र*न অবশ্যই পুলকিত হয় তাহায় সন্দের নাই ; কিছ তোমার প্রেমে প্রেমিক বাতির সেই সঞ্জীত-শব্দ সহকারে যেপ্রকার প<sup>্</sup>যবম্য প্রেমের সংবাদ আবণ করিয়া প্রদান হন তাহ। আরু কেহই ছানে না, কেবল তিনিই বির্লে পাঠ কবিয়া অঞ্চলাত করেন। নি-मायः मगरा मागाना व्याद्य अ सुनक्ष हन्मरन চৰ্চিত হুটুলে প্ৰেমে'দিত হয় তাহায় সন্দেহ নাই, কিন্তু ভাষারা তামার প্রেমে প্রেমিক ব্যক্তির আন্তঃকরণে দে অলোফ-সামান্য আনন্দ-রসের সঞ্জে হয়, ভাষা আ: কেন্ই জানে না, কেবল তিনিই বির্লে অনুভ্য করিয়া ধন্যবাদ করেন ৷ আবাল রুদ্ধ বনিতা **শক্ষেই চর্কা,** চোগ্য, জেহ্ন, পেয়, বিবিধ সামগ্রীর রুমাস্থাদন করিলে, পর্ম গরি-ত্যে। প্রাপ্ত হয় ভাষার সম্পেই মাই, কিন্তু ভোমার প্রেমে এেমিক ব্যক্তির স্থান্য মধ্যে সেই হুসেব উত্তাধ সহকায়ে যে অনিৰ্ব্চনীয় কুতভ্রতা-রুদের উত্তেক হর, তাহা সার কেহ-ই জানে না, কেবল তিনিই বির্লে অনুভব করিল লেখেপিত হন ৷

চ্ প্রেম্নিকু পর্ম **ব্দু! ভো**মার (अरमद्रुष अग्र मारे. কৰুণারও পার ন'টা চল্সন বেগন গল্পসম, নিশাস্ত যে মন শৈজ্যায়, বসন্ত যেমন মাধুর্যাময়, এবং পৌৰ্নাসী যেনৰ সুধান্ত্ৰী হুইয়া প্ৰতীয়-मान इस, विश्व-मः साह तमहेक्य खामाह त्थ-মনয় হইয়াঞাকাশ পাইতেছে। ত্মি আ-পন ইচ্ছায় আমাদিগের এতি অপর্যাপ্ত প্রীতি প্রকাশ করিয়াছ। স্থামরা কিব্রুপে ভাহার পরিশোধ করিব? কিরুপেই বা হোমার প্রীতির **বোগ্য পাত্র হইব** ? আমরা কেনই হতাশ হ্ইতেছি! যত্ন করিলে, অবশ্য ক্রামাত্রও পরিশোধ ক্রিতে সমর্থ হইবা প্রীতিই প্রীক্তিপরিপোধের এক-মাত উপায় ৷ ভোমার শরণ এছণ পুর্বক তোনাতে অনুরক্ত হওয়া ব্যক্তিরেকে আর

কি প্রকারে ভোমাকে প্রীতি করিতে হয়, ভাহা আমরা অবগত নহি৷ কেবল এই অমুল্য কথাটি অবগত আছি; ইহ লোকে ভোমার প্রীত সংসারকে প্রীতি করিলেই, তোমার প্রতি যথার্থ প্রীতি প্রকাশ পার। আমাদের পরিপাটী শরীর ও সুখাবহ মন তোনার প্রেমের ধন, অত্তর à উভয়কে প্রীতি করা উচিত। আমাদের স্নেহাস্পদ কন্যা পুত্ৰ, প্ৰবুয়াস্পদ ভাৰ্য্যা মিত্ৰ, এবং শ্রদ্ধাম্পদ জনক জননী তোমার প্রীতির পাত্র, অতএব এই সম্দায়কে প্রীতি করা উচিত। প্রতিবাসী, স্থদেশীর জন, প ডিতগণ, মানববর্গ ও অপর প্রাণী তোমার প্রীতি-স্থান, অতএব তাহাদিগকে প্রীতি করা া ভয়ার্থ পাঠ-मन्दित, जादवाधा-भाना, छे-ধ্বাগার, পুস্তকাগার, অনাথনিবাস, সভাম- <sub>দ্র</sub> ७%, धर्माधिकत्व, भिन्शनाला ७ वानिका<sub>री</sub> গুণ ভোমার প্রীতির স্থল, অতএব ( দালকে প্রতি করা উচিত। কুর্যাবং হলবজ্ঞ, স্থান্ধরের করপান, চিত্রকরের ভ লিকা, এন্থকারের লেখনী ও আচার্যাদিতোর বিশুক্ত আসন ভোমার প্রীতির বিষয়, অনু তথ্য সে সমুদায়কে জীতি করা উচিত। क्याञ्चितिस्त जूतवीयन्। উद्धिषञ्जात चा-ণ্বাক্ষণ, নাবিকদিগের দিগ্দর্শন, মুদ্রাকরের যন্ত্রালর, বাষ্পীর রবের লৌহ-পথ, এবং তাড়ি-ত বার্ত্তাবহের পরমান্ত্ত কৌশল ত্যেমার প-রম পবিত্র প্রীতি-ভূমি, অতএব, সে সম্দা-য়কে প্রীতি করা উচিত। হা! **অম**নরা **অতি অ**-ক্ষজাব ৷ ভোনার জগতের প্রতি যেত্রপ প্রতিপ্রকাশ করা উচিত, আমরা ভাহার কোটি অংশের একাংশও না পারিয়া সাপরাধ রহিয়াছি ৷ যদি ভবিষয়ে নিভাস্ত ইচ্ছাও একান্ত বন্ধ পাকে, তাহা হইলেও, জীবন সাৰ্থক বোধ হয়। নাবিকগণ বেমন ধুব ন-ক্ষতের শ্রতি দৃষ্টি রাধিরা সমৃত্ররান সঞ্চা-वन करत, (महे क्ल, आमारम्ब अक्षःकत्र । सन তোনার প্রতি স্থির থাকিয়া তোমারই প্রিয় कार्यः माधरम ध्ववृष्ट शास्त्र, देशहे चामारमङ्ग ৰাসনা। " আমি ভোমাকে মনের সহিত গ্রীতি করি " এই কথা যেন মনের সহিত क्टिक भाति देशहे जामादक कामना।

#### ধৰ্মনীতি

১৪১ সংখ্যক পদিকার ১১ পূচার পর

কুক্মী দিগের প্রতি যেরূপ ব্যবহার করা কর্ত্তব্য, তাহা সংক্ষেপে লিখিত হইয়া-ए । ७९ ममुमात मित्रिय वित्वत्रका क-বিয়া দেখিলে, প্রাণ-দণ্ড বিধান করা কোন क्राप्ष्टे मक्रफ (वाध हरू ना। धान न छ करा क्लात्वत कार्या, कलाह भन्नात कार्या भटक । त्य বাল্কি যত গুরুতর কুকর্ম করে, তাহার তত গুরুতর দও করা মাজ ঘাঁহারা দওবিণানের উদ্দেশ্য বলিয়া স্থির করিয়াছেন, ভাঁছারাই পাণ্দণ বিষয়ক বাৰস্থা বিহিত বলিয়া विरायका कार्यास्थ शारतनी विद्यार्थाशीया কুকুম্মীর চরিতা সংশোধন ও জনসনাজের এশিনিষ্ট নিবারণ মাত্র দণ্ডবিধানের অভিস~ 🐔 গ বলিরা স্থির করিয়াছেন, ভাঁহারা আর প্রশাস দত বিষয়ক বিধান বিহিত ব্যায়া বি-(ই-চন: করিটে পারেন না। অপলারী বা-😘 র আণ্দণ্ড করিলে, তাহার কেবলই 🖎 পাকার করা হয়, ভিছুমাত্র উপকার কর। <u>রুর না৷ তাহার আর লোদের উপর উ-</u> পদ্ৰৰ করিবার সম্ভাৰনা ধাকে না ৰটে, কিন্তু ভাহাকে চিরজীবন রুদ্ধা করিলারা-बिटलंख, भ विषत मू त्रिक्ष शहर शादत ; তাহার প্রাণ্যথ করা আবশ্যক করে না।

প্রাণ-দণ্ড নির্দ্দরের কার্যা। প্রাণ দণ্ডের বিধি প্রচলিত থাকিলে, তদর্থে প্রাণ্যাতক নির্মুক্ত রাধিতে হয়। বে ব্যক্তি ঐ ঘৃণিত বাবসার অবলয়ন করে, তাহার দরার অ-দুর পাপায়ি-শিধার ভন্মীভূত হইরা যায়। মনুষ্য হইরা এতাদৃশ কুৎসিত ক্রিয়ার ত্রতী হওরা অবেশকার পশুর গর্কে প্রহণ করা ক্রেয়ক্ষর। অতএব, যে নিয়ন প্রচলিত থাকিলে, এ প্রকার ঘ্ণাকর ব্যবসায় প্রচলিত রাধিতে হয়, তাহা কদাচ বৈধ বলিরা বীকার করা যায় না।

ইভিপুর্বে কুকল্মী দিগের প্রতি ধেরপ বাবহার করিবার বিষয় লিখিত হইরাছে, তাহা প্রচলিত হইলে, প্রাণনও বিধানের ভার ভাদৃশ প্রশ্লোকরও থাকিবে না। যা-হারাঞ্জাণদঞ্জই গুরুতর ছুক্ষর্থে প্রবৃত্ত হয়, ভাষারা অভি অপর্কট-শভাব তাহার সন্দেহ নাই ৷ তাহারা একেবারেই নর-হত্যার প্রস্তু হর এমত বোধ হর না ৷ তাহার পূর্বে অনানা সামান্য কুকর্মে লিপ্ত ইইরা থাকে ৷ লিপ্ত ইইরে সুতরাং বৃত ও রুজ ইইতে পারে ৷ একবার রুজ ইইলে, এই প্রস্তুবিত নিয়নানুসারে যত দিন বিনীত ও সংশোধিত তরিত্র না ইইবে, তত দিন আর নিজ্ত ইইবে না, সুতরাং যে সমস্ত গুরুতর সুন্তর্মান অনুভান করিবল প্রাণ্দত হয়, তাহতে প্রবৃত্ত ইইবার আর অবসর পাইবেন। ৷

অনেকে মনে করেন, প্রাণ-দপ্র বিষয়ক নিরম প্রচলিত থাকিলে, লোকে প্রানের আশক্ষাঃ নরব্য রূপ নহাপাতকের অনুষ্ঠা-নে নির্ভ হুইতে গারে। কিন্তু স্বিন্ধ্র বিবেচনা করিরা সেখিলে, এ অংশক্তি তা-দুশ বলবতী ভোৰ হ্ৰনাঃ আমাদিলের জিঘাংখা নামে একটি রুভি আছে। কর্ম ক্রিবার **বাসনা হ**ওয়া সেই সুভিত্র স্বভাব ৷ যদবধি সেই রুভি বুদ্দির্ভি ও ধর্মগ্রহ ব্ৰির বশীভূত থাকে, ভদবদিভান্। **হইতে** অনেক উপকার প্রান্ত ব্রয়া যায়। কিন্তু ক থন অভিমাত উত্তেলিত হুইয়া বুদ্ধিও ধর্ম প্রায়ুম্ভির শাসন অভিক্রম করির। উঠে, ত-ধনই নরহত্যা ও আগ্রহত্যান উৎকট পাপে প্রবৃত্তি জমিয়া গাকে৷ সেনাগণ হিংসা-রুক্তি অবন্যান করিয়া সভত জিলাং-সা রুম্ভিরই চালনা করে এই নিমিন্ত, আ-খাহত্যা পাপ তাহালিগের মধ্যে যত অনু-ঠিত হয়, অন্য কোন লোকের মধ্যে ভত হর না৷ নরঘাঠীদিগের স্বকীয় প্রাণ্দ **ত্তের আনিকাপ্রবল** থাকিবারও প্রমান পাত या यात्र भी। প্রভাত, ভাষাদের মধ্যে छ-**নেককেই স্বেচ্ছানুসা**রে আত্মবাতী হইচে, **অথবা আত্মহাতী হইবার অভিনাব প্রকা**-**শ করিতে, সভত দেখিতে পাও**য়া যায়। কেছ বা নরছত্যায় প্রবৃত্ত হট্বার পুরের আত্মিক্তারি প্রবিত্ত হয়। কেহ বা কালা-কেও ব্য করিবার পর ক্ষণেই আছা প্রাণ সংখ্যার করে। - কেহ বা নরহ**ত**া করিয়া বেক্ষানুসারে বিচারাগারে উপব্রিভ হইয়া

প্রাণ্দণ্ডের প্রার্থনা করে। কাছাকেও বা
এবপ দেখিতে পাওয়া যায় ঘে, ধরা পড়িবার কিছুমান্ত আশেকা না করিয়া ও
ভাহার প্রতিবিধানের কিছুমান্ত উপায়
চিন্তা না করিয়া, উক্ত পাতকে প্রবৃত্ত হয়।
কোন স্ক্রনশা বিচক্ষণ পণ্ডিত এবিধয়ের
প্রচ্র প্রমাণ সকলন করিয়া প্রতিপন্ন করিয়ায়ের, নরয়াহালিলের তিন ভাগের মধ্যে
অন্যন ভূইভাগকে আয়্রন্থে উদ্যত হইতে দেখিতে পাওয়ায়ায় । অভএব, মনের যে অবস্থা হটলে, আয়হতায় উৎসাহ
জ্বেন, দে অবস্থার প্রাণ্দণ্ড ভ্রেনর-হভারে নিরত্ত হওয়া কোন ক্রমেই সম্ভব
নহে।

প্রাণ-দণ্ড অতি কুংসিত কার্যা। ভাহা मिथिएन, निकृषे लाटकड़ निकृषे श्रद्रांख চরিতার্থ ব্যতিরেকে কদাচ শাসিত হয় না 1 থ্ৰাজ-বিচার।নুসারে কাছারও প্রাণ-দণ্ড উ-প্ৰিত হললে, বিপু-প্ৰধান নিকুট লোকে-য়াই তাহা পরম কৌতকের বিষয় বিবেচনা ক্রিয়া দেখিতে যায়, এবং দেখিতে গিয়া, আজ্ঞাদিত হট্য: প্রফল মনে প্রত্যাগমন करत्। ১৮৩১ थि छोटक्स वहे फिरमबत देश्न छ দেশে বিশাপ ও উইলিয়ম নামক ছুই বা-জির আগি দণ্ড হয়। তাহা দেখিবার নি-মিল্ল, সেই দিবস প্রভাত-কালে স্থানাধিক ৩০০০০ লোক তথায় উপস্থিত হয় ৷ তাহারা ঐ চুই যাঞ্জিয় বধ-ভূমিতে **আনয়ন ও বধ-**মঞ্জ আহোহণ দেখিয়া উৎসাহিত চিত্তে বারস্বার চিৎকার করিতে লাগিল, এবং তা-हारमञ्ज व्यान-प्रश्हात मञ्चलेन ममस्य, करत्रक বার ভয়ক্কর জয়ধুনি ও আনন্দ-ধুনি করিয়া উঠিল৷ ঐ সকল ব্যক্তি নর্যাতীর প্রাণ দুও দেখিয়া আপনাদিগের জিঘাংশা রুত্তির শাসন করিবে ইহা মনোমধ্যে কণ্মাত্ত স্থান দেওয়া ধায় না ৷ প্রত্যুত,

ছুই ব্যক্তি যে প্রকার নরহত্যা করিয়াছিল, তাহাদের প্রাণদণ্ডের পর কিছুদিন পর্যান্ত সেই প্রকার নর-বধের বৃত্তান্তে ইংল্ডীয় সং-বাদপ্র সমুদ্য পরিপূর্ণ হইয়াছিল। এক দা ইওয়ার্চ নামে এক ব্যক্তিইংল্ডে হৌসু আৰ কামান্স নামক রাজকীয় সভার ১৯৭
ব্যক্তির প্রাণ-দণ্ডের বিষয় উপাপন করিয়া
নিংসংশরে প্রমাণ করিয়া দিয়াছিলেন, ভাহাদের মধ্যে ১৬৪ জন জন্যান্য লোকের
প্রাণ-দণ্ড স্থলে উপস্থিত ছিল ৽ ৷ সেই সকল
লোকের প্রাণ-নাশ দেবিয়া ভাহাদিপের
জিঘাংসা-রভি চরিভার্থ ও উভেজিত হইয়াছিল এরপ মীমাংসা করা স্ক্রভোভাবেই
যুক্তিসিদ্ধ বেণ্ড হল ৷

नत्रघाठीत थान वध (मधिता धना ला-কের নরবধে নিরুত্ত হইবার প্রমাণ পাওয়া यायना, किन्ह ध्वद्गुल इट्टेबाর ध्वाइत ध्वमान প্রাপ্ত হওয়া বায়। আমাদের যেমন জিঘাং-সা বৃত্তি আছে, সেই ৰূপ অনুচিকীৰ্যা নামে আর একটি প্রবৃত্তি আছে ৷ প্রাণ্দণ্ড দর্শ-কদিগের ঐ ছুই রুত্তি মিলিত হইয়া মধ্যে মধ্যে ভয়ক্কর ব্যাপার উৎপাদন করে। 🕰 কদা করাশিশ দেশের এক জন সৈনা কে 🌊 দৈনিক-পূচে থাকিয়া আত্ম-ঘাতী হয়। ভাহা দেখিয়া ও শুনিয়া উপুর্যাপরি অনেক ব্যক্তি সেই বাক্তির দৃষ্টাস্থানুসারে সেই গুছের মধ্যে আত্ম প্রাণ সংহার করে ৷ এই বিষম বিভাষিকা দৃষ্টি করিয়া, कड़े शिका इा यथन ঐ গৃহ দক্ষ করিয়া ফেলিলেন, তথন তথায় আত্মহত্যাহওয়া নিরুত্ত হইল ৷ এক ভগ্ন-শ্ব রীর সৈনিক ব্যক্তিকোন চিকিৎসালয়ের দ্বা-রদেশে উৰন্ধন ৰাৱা প্ৰাণ ভ্যাগ করেনা ভাষা দেখিয়া এক পকের মধ্যে অন্য চত্তর্দশ বাজি দেই স্থানে আত্ম-হত্যার-প্রবৃত্ত হয় ৷ পরে যথন চিকিৎসালয়ৈর অধ্যক্ষেরা বিবে-চনা করিয়া, সেই স্থানে প্রাচীর নির্মাণ ক-রিয়া, সেই দ্বার রুদ্ধ করিয়া দিলেন, তথন তথায় আত্মহত্যা রহিত হইল ৷ . এৰপ প্র-বৃত্তিপক্ৰল করাশিশদিগেরই স্বভাব-সিদ্ধ নহে। অন্যান্য দেখেও এইৰপ ভূরি ভূরি ঘটনা ঘটিবার রুক্তান্ত শুনিতে পাওয়াযায় ৷ অভএব, প্রাণ-বধ দেখিরা প্রাণ-বধে আশঙ্কা ও নির্ত্তি হওয়া পুরে থাকুক, প্রবৃত্তি হই-বারই বছতর দুফীস্ত দেখিতে পাওয়া याम् १।

<sup>·</sup> Criminal Jurisprudence by M. B. Sampson p. 105

<sup>†</sup> Criminal Jurisprudence by M. B. Sampson p. 104 & 105

<sup>\*</sup> Criminal Jurisprudence by M. B. Sampson p. 76

ंश्विम रव हार्टमा आलगरेखह विकि **प**र क्षांतिक हरेशांत्र, जर्बन रम ब्रांटका महत्व क्ष महाशारभन्न होत्र वाणितंत्रकं कना हिन्द इस बाहि। हेकांनि बाटका रव नमरत थान-দক্ষের ব্যবস্থা প্রচলিত ছিল না, তথন তথা-র পঁচিশ বংসরের মধ্যে ৪টি মাত্র লোক मनुषा कर्जुक इड इश । किन्छ (न नमरत রোমক রাজে। ঐ নিয়ম প্রচলিত ছিল, এবং তথায় এক বৎসরের মধ্যে তাহার দাদশগুণ "লোক উক্ত ৰূপে হত হইয়াছিল 🛊 । রাজ-পুরুষেরা প্রাণ-দণ্ড বিধান ছারা যেরপ ফল প্রাপ্তির প্রত্যাশা করেন, চিরকাল কারাবাস ৰূপ দণ্ড প্ৰদান দারা তাহা উৎপন্ন হইতে পারে ৷ চিরজীবন কারাগারে রুদ্ধ থাকা অণেক্ষায় ক্লেশকর বিষর আর কিছুই নাই (वाथ इस !

পুর্ব্বে ব্রিটিশ রাজো চৌর্যা, দসুর্বৃত্তি
ও কুট লেখন দোবে দোবী হইলেও প্রাণদিয়া, হইত া দে সময়ে লণ্ডন নগরে এক এক
বার্ক্বার ১০)১২ জনের ব্যবদণ্ড একত্র অনুষ্ঠিত
হইত া কিন্তু ইইলেড ঐ সমস্ত কুক্রিয়ার
িনুর্ত্তি হইল না দেখিয়া, রাজপুরুবেরা তথপরিবর্তে নির্বাচন ক্রপ কঠিন শাল্ডি প্রব্যা

পেক্ষা প্রবাহর ব্রুপে প্রচলিত করিলেন।

কিন্তু নিৰ্বাসন করাও কোন মতে যুক্তি-সিদ্ধ নকে। ভাহাতেও দওদাতার অভি-मिक्क भूमिक रहेवात महायना नाहे। वि-চারকর্জা যাহাদিগকে নির্বাসন করা কর্জবা বলিয়া অবধারিত করেন, তাহারা নির্বাদিত হইবার পুর্ব্বেও পরস্পর একদঙ্গে অব-স্থিতি করে, এবং নির্বাসিত হইয়া সমুদ্র-পোতে আরোহণ করিয়াও, একতা অবস্থান ও একত কথোপকখন করিয়া থাকে। তা-হারা তথায় কোন কমে নিয়োজিত হয় না, এবং কিছু মাত্র শিক্ষা পায় না। তাহালের निक्रके. श्रवृत्ति अनुगाय भूकंपर रच्याचिनी पारक, धर् क्रम्थमञ्जू । व्यमनालाभ बादा केकटत्राक्षत्र बनवाकी रत्र। किक्कू दिन रूरेण, क्षक श्रीन गांकि वण्टलम हरेटड विकानि-ত ব্ইয়া সমুত্রপোতে জেলাকর গমন করি-एक्सिन, भूरवंत्र मर्दा दानारवाचक रहेता

" Official Interestings of M. D. Suppose p. 111

इक्किनिगर्क खंदर के जाशांच मरकास कर्म-চারীদিগকে ৰেশ্বপ হত ও আহত করিয়া-हिन, छाटा जातरकत्र स्वना चत्र जात्र **णागात्र महस्त्र बारे । जनश्म ७ जनश्म-**ত্রণা বারা অসংলোকের থেকা প্রবৃত্তি হওয়া সম্ভব, উক্ত ঘটনা ভাহারই একটি উদাহরণ মাত। ঐ সমস্ত পাপিষ্ঠ নরাধ্য নির্বাসিত হইয়া যে স্থানে প্রেরিড হয়, সে স্থানে উ-পনীত হইয়া ও নিজ্তি পাইয়া লোকের উপর উপদ্রব করিতে আরম্ভ করে, এবং **घटनटक मात्र भित्र अरु कित्रश घालनाटम्**त অনুৰূপ অসৎ সন্তান উৎপাদন করিয়া খাকে। অভএব, দোবীদিগের প্রতি দণ্ড-বিধানের যেরূপ অভিসন্ধি ইতিপুর্বেনির্দিষ্ট হইয়াছে, তাহ। নির্বাসন হারা কদাচ সিদ্ধ হইবার নহে। তক্ষরা তাহাদিগেরও চরিত শোধন হয় না, এবং জনসমাজেরও অনিষ্ট নিবরিণ হয় না। প্রত্যুত, তাহ্দিগের ও জনসমাজের উভয়েরই অনিষ্ট সাধন হয় 1 ভাহারা স্বদেশে থাকিলে, কারাবাস হইতে মুক্ত হইয়া গুরুজনের ছয়ে, আত্মীয় জনের ভরেও কোক-লজ্জার ভরে মনেক প্রকার অসহ কর্মে নিরুক্ত থাকিতে পারে, কিন্তু দে-শাস্ত্রিত হইলে, সেই সমস্ত ভীতি-বৃদ্ধন হইতে মুক্ত হইয়া স্বেচ্ছাচারিবৎ ব্যবহার করিতে প্রবৃত্ত হয়।

পৃথিবী-মগুলে পাপের প্রবাহ মন্দীভূত করা যদি আবশ্যক হয়, এবং দোধীদিগের প্রতি ন্যায়-শিদ্ধ সদয় ব্যবহার করা কর্ত্ব্য হয়, তাহা হইলে প্রাণ্-দগুও নির্বাসন এ-কেবারে রহিত করাই শ্রেয়াকল্প।

একণে পবিষয়ের উপসংহার করা কর্তবা ৷ কুক্র্মণালী বাজিরা বাহাতে আপ্নাদের কুমার্ভি চরিতার্থ করিয়া আপনার ও অনসমাজের অনিটোৎপাদন করিতে সমর্থ না হয়, এবং তাহাদের বৃদ্ধি ও ধর্ম-প্রাক্তি হইয়া কর্মণ্য হয়, তাহার উপায় করা উচিত ৷ তহর্পে তাহাদিগকে য়ড় য়াণা, শিক্ষা দেওয়া এবং প্রমান্যাধ্য ব্যবসায় বিশ্বের নিমুক্ত করা কর্তব্য ৷ কেবল পুত্তক পাঠ য়ায়৷ তাহাবের চিক্রম্ম শোধন হওয়া

महार नदस्य अध्यक्ष छेशरमा । ध्रावशान बुकान बाहा , छाहारमञ्ज सुन्ति ७ धर्मादाहित केंद्रब्रिक ७ क्यांबिक इट्रेंक शास्त्र, (मर्ट-दल छनएमा (१७३। ७ (महेकन अनुकार ক্রান আবশাক। তাহাদের প্রতি নিদর্ম वाबंधात कता काबसालहे खारकत बट्ट, খাহাতে তাহারা স্বস্ত্রেদ ও আরামে থাকি-কে পারে ভাষার উপায় করা কর্মকা। তা-श्राम्य देवत्रियांच्य कता अथवा काश्राम्य জ্ঞতি কোধ প্রকাশ করা যে রাজনিয়মের উদ্দেশ্য নহে, প্রভাত, পীড়িত ব্যক্তিদিগের রোগ্য-শান্তি মাত্র গেমন চিকিৎসালয় সংস্থা-প্रमात এक मान्द्र आरामिस. (महे क्षा, कृष्ण वृद्धि बाल मानमिक ली इति भी दिए वा कि निरंगत ফল্যাণ সাধন মাত্র কারাগার প্রতিষ্ঠার একমা-অ উদ্দেশ্য, ইহা মাহাদিগের দৃত্রপ হাদয়-ঞ্জম করিয়া দেওয়া আবশ্যক। রোগীদি-গকে যেমন চিকিৎসার্থে ক্লেশ স্বীকার ক-গ্রিতে হয়, কারাগারস্থ ব্যক্তিদিগকৈও আ-भवारम् कृष्ण द्वा क्षि मालन दारशब प-मनार्थ (क्रम शाहेटक इस अक्या गर्भार्थ वटते. ক্তি ভাষ্টেদর অধিকচর ছঃখ নিবারণ अभिक कलान मन्त्राह्म है एवं के क्रिम প্রাপ্তির একমাত্র প্রব্যোজন, ইহা ভাছাদিগের প্রভাষধ করা অভাস্ত আবশাক। কুকন্মী-লিংগ্র প্রতি এইক্স ব্যবহারের নিয়ম প্র-प्रति ह हरे**. का तालात असू क्रिके विमा**न शाह इहेटा छेडिटव । अनक अननी कुकर्या-ব্ভি সম্বান্তিগকে তথায় স্থাপিত করিতে কিছুমাত কুঠিত চইবেন না; প্রত্যুত, উeসাহ গুকাক সংগতিত হুইয়া তথায় **ভাহা-**ভিগকে প্রেরণ করিবেন, এবং অনেকৈ আ-পনার ছুপারুভি দমন বিবমে বল্লবান্ হইয়া বেক্সেনে সেইস্থানে উপস্থিত ইইবেন।

## উল্কাপিণ্ড

भूकं कालीन सन्दाताता (स नमक क्लोकिक विस्टात काल सम्बद्ध सामिक निश्च निर्दार वर्ग कविटक नमर्थ हन नाहे, काहात मन्या स्टातक विद्वाद सम्बद्ध सिक्स निर्दाण क विद्यादक मनक्षत सामिकार्य । विद्वादक স্থানার অধ্ব মটনা, উল্লোগাত ও ভূমিকলা शहे तम्मात्रक अच्छ रहत छेरशक वृति-म्रा चित्र कृतिमा भिनाद्यम । किन्नु वास्त्रिक, ঐ বমত ঘটনার সহিত বনুবোর শৃঞ্জাশৃভ लकर्पत किंदूमांज मध्य नाहे। श्रेकुाक, ঐ সমস্ত বিষয় বিশ্বপতির বিশ-রাজ্যের প-इरेम्बर्या-श्रकानक जिन्न जमा किहूरे बरह ! ধূমকেতু সমুদায় পরমেখর-প্রতিষ্ঠিত নি-फिके निवय अवनवन कतिया द्वर्गा-मधरन-র চতুর্কিকে পরিভ্রমণ করে। চঞ্চ ও স্থ-যোর গ্রহণ ঘটনাও তাহারই নিয়মানুসারে নিরূপিত সমরে ঘটিরা থাকে। ভিনি ভু-গৰ্ত্ত-নিহিত পদাৰ্থ বিশেষে যে সমস্ত গুণ প্রদান করিয়াছেন, তাহারই প্রভাবে স্থান বিশেষের কম্পন হওয়াকে ভূমিকম্প কছে। উলকা কি পদার্থ, গুল্চাৎ তাহার সবিশেষ র্ত্তান্ত লিখিত হইতেছে।

रेमानीः अत्मत्क मत्या मत्या अस् হইতে ধাত্পিও-পাতের বৃত্তান্ত পাঠ য 🐠 🕻 য়াবিশায়াপল হইরা থাকিবেন৷ সেই 🗚 -মন্ত ধাতৃপিও এই প্রস্তাবে উক্ষাপিও বলি লিখিত হইল ৷ রাত্রিকালে নভোমগুড়ে मत्या मत्या त्य नक्षय-भाक मृत्ये इहेबा थात्य, ভাছাও বাস্তবিক উল্কাপাত, নক্ষত্ৰ-পাত নহে৷ এক এক টি নক্ষত্ৰ পৃথিবী অপে ক্ষায় কত লক গুণ বুহুৎ তাহা বলা যায় না ৷ সে সমুদায় পৃথিবীর উপর পতিত হইলে, পৃথিবীর প্রলয়াবস্থা উপস্থিত হয় ৷ উ-ৰকাপিও পতিত বাচলিত হইবার সময়ে ৰক্ষত্তবং প্রভীয়নান হয়৷ ১৭৭২ শকের ১৬ই অগ্রহায়ণে দিবা দ্বিপ্রহর তিনি ঘণ্টার ममरत विकृत्रदात निक्रविकी अक आरम একটি উচ্চাপিও পতিত হয়, ভাহা কলিকা-ভার এমিয়াটিক সোসায়িটি নামক সমাজের চিত্রশালায় আনীত হইয়া রকিত হইয়াছে ৷ প্ৰতিবৰ্ষে কচন্থানে এৰণ কড উজাপিও পতিত হয়, ভাছার সংখ্যা করিবার উপায় बाहे। अर अर किम लक लक केम्ब्रानिस আঞ্জা-মঙৰে সাবিস্তুত হইতে দেখা সিং ब्राट्ड ।

के जनक केमानिक शक्कि रेरेशन नगरत मार्केट्स अज्ञेने कुरोग महिलिक ভিন্ন বার ৷ তৎকাৎ একটা মহালক্
উৎপদ্ধ হয় ৷ ক্ষম ক্ষম এপ্রাকার ভয়স্কর
বুমি উৎপাদিত হইরা খাকে বে, বর, বার;
প্রাচীর প্রভৃতি কম্পিত হইরা উঠে ৷ ইতি
পূর্বে বিষ্ণুপুরের নিকটে বে উল্লাপিও
পতিত হইবার বিষর উল্লিথিত হইরাছে,
ভাহা পড়িবার সময়ে কামানের শব্দের নাায়
ভরানক শব্দ প্রত হইরাছিল ৷ কথ্ম কথ্যন নির্দাল নভামগুলে অকম্মাম এক থানি
বোরতর মেঘ উপস্থিত হইরা অতি গভীর
শব্দ-গরস্পরা উৎপন্ন হয়, এবং সেই সক্ষে
বস্ত-সংখ্য উল্লোপিও ব্যক্তি হইতে খাকে ৷
এক এক সমগ্রে ঐকপ্র মেঘ ইত্তে সহ্তে
সহত্র উল্লোপিও প্রতিত হইতে দৃতি কর ৷
গিয়াছে ৷

উল্লোগাতের সময়ে শিখা দেখা যায়
ও শব্দ ভইরা থাকে, ইহা বছকাসাধি প্রশিক্ষ আছে ৷ কিন্তু নভোমণ্ডল হইতে যে
১৯লাপিও পতিত হ্য ইহা দেৱপ প্রমিক্ষ ।
শিক্ষ না ৷ কিন্তু এক্ষণে সে বিষয়ে আর সংশর নাই ৷ উহা পতিত হইবার সময়ে ৷
উষ্ণ বাকে ৷ ১৮৩৫ প্রিউান্দের ১৩ই নবেভবে ক্রাণিশ দেশে ভিকাপাত হইয়া একটি শ্রাগার একেবারে দক্ষ হইয়া গিয়াছিল ৷

রাত্রি কালে অগ্নি-শিখা হইডেট পতিত হউক, আর দিবাভাগে মেঘ হইতেই বা ৰবিত হুইক, সম্দর উল্কাপিওই একৰূপ भमादर्य भतिभून । लोह, डाख, हिन, शक्तक, নিকেল, কোৰাল্ট, সোডা প্ৰভৃতি ভয়ে৷-मन कि भार्थिव वक्क छल्की शिट ए पिक्ट भा-**उन्ना यात्र । भृषिवीटण** य वज्ञ नारे, तम वज्ज উহাতে দুফ হয় না। পৃথিবীতে খনির মধ্যে বিশৃক্ষ লৌহ ও বিশৃক্ষ নিকেল-ধাতু প্রাপ্ত হওয়া বার না, উহাদের সহিত খান্য বস্তু মিজিত থাকে, পরে পরিষ্কৃত করিয়া नहेट रहा किंदु छेन्कानिटल (म लोह ও নিকেল প্রান্ত হওয়া বায়, ভাহা বিশুদ্ধ। তাহার সহিত অন্য কোন প্রমার্থ মিজিড পাকেলা। পলাৰ প্রকশিত হইবে, উচ্চা-णिक पृथिती हरेरक उदनक इस बारे; गु-विनामि वार्गरम्त्रं साम्र सर्वामध्य अवस्थि। করিয়া জনগ করে ৷ পৃথিবীমগুলে যে স্মূরর পদার্থ আছে, উল্লাপিণ্ডও বধন তা-হারই কিয়কংশে পরিপূর্ণ, তথন এই ও উপগ্রহ্পণ্ড পার্থিব পদার্থে প্রস্তৃত হওয়া সম্ভব বলিয়া প্রতীত হইতে পারে ৷

সকল উল্কাপিও সমানৰূপ বৃহৎ নহে ৷ ছোট বড় নানা প্রকার দেখিতে পাওয়া গি-য়াছে। ত্রেজিল রাজ্যের অন্তঃপাতী বে-হিয়া নামক স্থানে একটা উল্ফাপিও পতিত আছে, তাহার ব্যাস ফানাধিক ৫ হস্ত হই-বে৷ লিখিত আছে, এীশ দেশীয় সুপ্রসিদ্ধ পত্তিত সক্রেটিস যে বৎসর জন্ম গ্রহণ ক-রেম, সেই বংসর সে দেশের ঈগস্পোটে-मन नामक नगरत এक दृहर छेन्काशिख श-এত বৃহৎ, যে একথানি শকট ভিত হয় ৷ ভাষাতে সম্পূণ ৰূপ বোঝাই হইতে পারে। বিষ্টীন শাকের দশম শতাব্দীর প্রারন্তে নাশি নামক নগরের নিকটবভিনী নদাতে একটি উল্লাপিও পতিত হয়; উহা এত রুহ্হ, যে জানের উপর ৪ কৃট কাগিরাছিল। মঞ্চল खाडित गर्धा वर्त्तेश कमश्रवाम श्रहलिङ থাছে, চ্নরাজাের পশ্চিম থতে ছরিল্লদীর প্রভ্রবণ সন্মিধালে একটি ক্রমণ্বণ উল্কাপি-ণ্ডের কিয়দংশ প্রতিত আছে, সেইপিন্ড २१ इस छेछ हिन।

উল্লাপিও চঙ্দিকে যে দাল পদার্থে পরিবেউত থাকে. ভালা লইরা পরিমাণ করিলে, অতিকৃত্থ বলিতে হয়। কোন কোন টার বাাস ৫০০ কুট, কোন কোন টার বাাস ভদপে ফারও অধিক দেখা গিরাছে। সর্ চার্ল বাগ্তেন নামক ইরুরোপীয় পণ্ডিত ১৭১৩ খিটান্দের ১৮ই জানুয়ারি একটা উল্লা দৃতি করেন, ভাঁহার বাাস ২৬০০ ফুট হইতে।

শৌরজগতে কত কোটি উল্লাপিও
নিয়ত পরিজ্ঞান করিতেছে, তাহা নিরূপন
করা ভূংসাথা ৷ মধ্যে মধ্যে একেবারে এত
উল্লাপীত হয়, বে তাহা দেখিলেও শুনিলে
নিজাত বিশ্বরাপ্য কৃইয়া থাকিতে হয় ৷ আরহীয়া ইভিহাসবে তারা বর্ণন করিয়াকেন,
বে রাজে ইরাহিদবেন্ আক্রমান নামক নম্নস্কিন্দিনালাগি করেন, সেই রাজে ব্যাক্তা

ৰক্ষত্ৰ পতিত হয়। ঐ নক্ষত্ৰ-পাত অগ্নিহৃতি বলিয়া বৰ্ণিত চইয়াছে। ভারতবৰীপ্প
শান্ত্ৰভারেরা গ্রন্থ বিশেষে মধ্যে মধ্যে যে অধিবর্ষণের প্রদক্ষ করিরাছেন, তাহা ঐ রূপ
কোন উল্ফাপাত দুর্য্বে উরোধিত চইয়াছে
বোধ হয়। এরূপ ইতিহাস আছে, ১০৯৫
খিন্টান্দের ২৫এ এপ্রেল করাশিশদিগের
দেনে শিলা-রুতীর ন্যায় নক্ষত্র-রৃতি চইয়াছিল। এরূপ লিবিড আছে, ১০০২ খিন্টাকোর ১৯এ অক্টোবরে সম্ভ রাত্রি শলভ
বর্ষণের ন্যায় নক্ষত্র বর্ষণ হইয়াছিল। ১৬৬৬
খিন্টান্দের ২১এ অক্টোবরে রাত্রি—শেষে
একেবারে এত নক্ষত্র-পাত হয়, যে কেহই
ডাক্টা গান্ত্রা করিতে সমর্থ হয় নাই।

১৮৩৩ পিষ্টাব্দের ১২ই নবেশ্বরে আমে-রিকা ইইতে যে অহাদুত উল্কাপুঞ্জের আবি-র্ভাব দ্যী হয়, তাহা সর্বাপেক। বিকারজনক। के फिदम दाजि नत बन्छ। अवधि श्रद्रितम সুযোগেরের পরকণ পর্যান্ত 🖫 লিখিত বিশ্ব-রকর ব্যাপার দৃষ্টি-গোচর হইরাছিল ৷ অ-গ্রিক্রীডার নক্ষত্র-বার্কার ন্যায় উক্ষাপিও আবিভ ত হইয়া চকুর্মোচর সমস্ত बङ्ध्यातमा चाक्त्रे क्रियाक्ति । (न त्रमु-দায় বে সমরে সাতিশয় অবিরল দৃষ্ট হই-য়াছিল, সে সমধে কাহারও ভাহা গণনা ক্রিবার সম্ভাবনা ছিল না। অনস্তর যথন किष्ट विवल इहेश जानिन, उथन वासन নাগরস্থ এক পণ্ডিত গণনা করিয়া দেখিলেন, প্রতি ঘন্টায় ৪০০০০ চল্লিশ সহস্র উল্কাপিণ্ড আবিভাত ও চলিত হইতেছে। সাত ঘাটা ঐ ৰূপ ব্যাপার প্রত্যক্ষ হয় 1 অভএব বলিতে হয়, ২৮০০০০ ছুই লক্ষ অ-শীতি সহস্র উল্কাপিণ্ড ঐ রঙ্গনীতে মনুষা-দিগের দৃষ্টি-পথে উপস্থিত হইয়াছিল। কিন্তু रि अभरत छेन्कांद्र अश्वा अस्वक सून हरेगा আসিয়াছিল, তাহার পূর্ব্বে ভদপেক্ষার অ-धिक मःशा मृखि-त्शाम्त्र इत्र । अख्यत, हेश धमात्राद्यहे दनिए शाता वाष्, छेक तब-নীতে সৌরন্ধগতের অন্তর্গত ৩০০০০ তিব লক জড়বর উচ্চালিও আবেরিকার উর্জু-দেশ দিয়া চলিয়া গিয়াছিল । বিশপতির বি-প্রভাগেরে করু প্রতে বস্তু প্রতেও রহিয়াতে,

ভাগ কে বলিভে পারে? কেবল করেনটি এছ, চন্ত্রা ও ধূনকেতু মান্তই দৌর লগতে বি-লামান বলিরা প্রসিদ্ধ ছিল ৷ অসন্ধা উল্লা-পিণ্ড যে ভাগার অন্তর্গত থাকিয়া নিরন্ত প-রিপ্রসণ করিতেছে, ইহা কিছু দিন পুর্বের্মানারে স্বপ্নেরণ্ড গোচর ছিল না ৷

উক্চাপিত্রের গতির বিষয় বিবেচনা করিলেও বিস্ময়াপর হইতে হয় ৷ ভুমগুলস্থ কোন বস্তুর এভাদৃশ সত্তর গতি দেখিতে পাওয়া যায় না। ১৭৯৮ খ্রিষ্টাব্দে ২টি উল্জা-পিতের বেগ নিৰূপিত হয়, তম্বধ্যে একটির গতি প্রতিপলে ২৬৪ ক্রোশ ৷ বিতীয়টির বেগ প্রতি পলে ১৭৯ ক্রোমের ন্যান ও ২১২ ক্রোশের অধিক নহে ৷ আশ্চর্যোর বিষয় এই যে, ঐ ছুটির মধ্যে একটি ভূতলের मिटक व्यवजीनं ना रहेशा छेक् मिटक छैथिछ इरेट मुखे इरेग़ाइल। ১৮२७ निकारम ৩৬টি উল্কাপিণ্ডেৰ গতি ও পথ নিৰূপিত হয়, তমুখ্যে এক একটির বেগ প্রতি প্র ৩৮০ কোশ বলিয়া নির্দারিত হইয়াছিল ১ ১৮৩৮ খ্রিফ্টাব্দের ১০ই আগফ্টে সুইজগ্রু प्रत्म व्यानक श्रीत उक्काशिश পर्यादिकिक হয়। ভাহাদের বেগ প্রতি পলে গড়ে ২৩২৩ ক্রোশ বলিয়া নিনীত হইয়াছে। গ্রহ-গণের গতির সহিত জুলনা করিয়া স্থিরীকুত হইয়াছে, ঐ সকল উল্ফাপি ও বুধগ্ৰহ অপে-গুণ প্রবলতর বেগে পরিভ্রমণ করে ৷ অনে-কানেক ধূমকে হুও উক্তৰূপ সত্তরগামী নহে। মহিমার্ণি পরমেশবের কতই শক্তি ও কতই মহিমা তাহা কে কহিতে পারে! আমরা ভাঁহাকে যত মহৎ মনে করি, তিনি তদপে-কাও মহন্তর ৷

ঐ সমস্ত উল্কাপিও ভূমওল হইতে কত উল্পু উদিত হয় তাহা নির্ণয় করিবার নিমি-ভে, পণ্ডিতেরা অনেক যত্ন ও অনেক আরাস পাইরাছেন, এবং গণনা করিয়া কতকওলির উৎস্থোক নির্দ্ধারণ করিয়াছেন। এবিবরে অভিমাত্র বৈষন্য দেখিতে পাওরা বার। কোনটার উৎস্থেও ক্রোপ, কোনটার বা ৭০ ক্রোপ, কোনটার ১৪০ ক্রোপু, কোনটার বা,২৩০ ক্রোপ, ক্রেনটার ক্রেপ্তের। একতা

44444444444444444444444444444444444444	2	4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4	4 6 6 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4	4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4	2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2
11.1111111	-	: : : ; ;		111111	
	. : : : : :		11111	11:41	11:.
	. : : : : :		::::::	11111	1 : : : :
				. 1 1 . 1	: : å , ?
				11111	* * * * * * * * * * * * * * * * * * *
:::::::::::::::::::::::::::::::::::::::	111	1111	1:::::	11.56.	1 : 1
	: ] . ! ] :	: ' . : : · ະ ໒ ໕ ໕ ໕		: 22: 1	: 11;
			and the description of a sign state		
11111	<b>:</b>	V 14	1 11 1	• • •	1 : :
:::::::	;		*!!! %	.:	: v *
7, 7, 7, 7, 7, 7, 7, 7, 7, 7, 7, 7, 7, 7		× ×	¥ ¶ ···	٧1.	:

বিষ্টাবে সুইন্ধর্গন্ত বেলে যে সমত উন্ধা-পিন্তু পর্যাবেন্দিত হয়, তাহাদের উৎসেধ ২৭৫ ক্রোল বাগরা নির্মিত হইয়াছে।

অনেকানেক উচ্কাপাতের সমরে দেখি-ত্তে পাওয়া ৰাধ, উহার শিধা আবিভূতি হ-ইবা মাত্র অমনি ভিরোহিত হয়৷ কিন্তু কোন কোন উল্কাপিণ্ডের শিখা ১৫, ১৭, ও ৩৭ পল পর্যাস্ত প্রকাশিত থাকিতে দেখা গিয়াছে ৷ কোন রণপোতাধাক অর্থয়ান আরোহণ করিয়া ভূমগুল প্রদক্ষিণ করিতে করিতে একস্থানে একটি উল্লাপিও দৃটি করিয়াছিলের, ভাহার শিখা দেই উল্কাপি-গু তিরোহিত হইবার পর এক ঘণ্টা স্থির হ**ই**াছিল। নভোমগুলের যে অংশে পৃ-বিবীর ছায়া পতিত হয়, যখন সেই অংশে সেই ছায়ার মধ্যেও উল্কার আভা দৃষ্ট হয়, তথন ঐ আলোক উহার নিজের আলোক বই আরু কি বলিতে পারা যার? গ্রহ চন্দ্রা-দি শেমন সুর্যোর তেজ প্রাপ্ত হর বলির। **उत्कामश रम्बाय, উक्कांशिशु रमक्**श (वांव इस्मा ।

উল্কাপিও ক্ষিত্রপে কোথা হইতে পতিত হয়, এই বিষয় লইয়া পদার্থবিং পণ্ডিডদি-श्वित मर्था व्यक्तिक वानामूवान करेश शिहा-ছে ৷ কেছ কহিতেন, উহা বায়ু-মধ্য-স্থিত बख बिट्नारवज्ञ मध्यारण छेर्पा इस् । क्ट् বলিতেন, উহা আগ্নের গিরি হইতে নির্গত इरेग्ना थारक ! किर वो छेरा ह**ळा** जाक रू ইতে পতিত হয় বলিয়া বিবেচনা করিতেন। কিন্তু ইদানীন্তন পণ্ডিতবৰ্গ উল্লিখিত অ-ভিজ্ঞায়-জন্ন নিরাকরণ করিয়া মীমাংসা ক-রিমাট্ছন, গ্রহ ও ধূমকেতু সমুদার যেমন बिर्फिक नित्रमानुगारत स्या मखल अमकिन করে, ঐ সমুদয় উল্কাপিণ্ডও সেইৰপ নিয়ম-बद्ध शाकिया सूर्या मशुरलत हक्षामितक शैतिख-मन कतिया बाटक, धर्वर खंगन कतिएछ कतिएछ यथेन जूमश्रामात्र निकरे वर्जी रहा, ज्ञथन छ-ৎকর্ক সাক্ষত হইরা ভূতলে আসির। উ-**गिष्ठ इत्र । वस्मादब्रह्म मर्सा करू कक म-**. বন্ধে অধিক সংখ্যক উক্ষাগিও দৃটি গোচর यत्र देश व्यक्ति, मिक्टकता विट्यकता कंद्रान, क्रमात्रा नटकामध्यम् । अस्ति वारम्यः निम्ना जन

वन करत. शृश्विती अतह तारे मयस तारे श्वात्मत 'निकंष्ठेवकी' श्वतारक, পृथिबीश् লোকেরা অনায়াসেই তাহাদিগকে দেবিতে পায় ৷ ৭৬৩ বিত্তীক কৰ্মি ১৮৩৭ বিত্তীক পর্যান্ত প্রোয় ১১০০ বৎসরের মধ্যে যে যে সময়ে অভিশয় উক্তাপাত হইয়াছে, ভাষা পশ্যৎ সংগৃহীত হইতেছে ৷ ভাছা পাঠ क्रिया मिश्रित स्नानिष्ठ शाहा याहेर्त, ५३ भागके भविष ३६१ भागके भर्मा छ ८वः ७३ নবৈষর অবধি ১৯এ নবেষুর পর্যান্তই অধিক **उन्का पृथ्ठे** इड्रा थाटक। नटबम्रत मारुगत मरश ) २३ ७ २७३ मरव ब्रह्म हे मकारभ-ক্ষা অধিক সংখ্যক উল্কাপিও দুষ্ট হইয়া षाका विभागित विभिन्त अधिक डेक्का দৈগিতে পাওয়া গিয়াছে পশ্চাল্লিখিত সং-এহ-পতে দে মাদের নিমু দেশে দেই দি-ৰসের ভাক্ক লিখিত হইল।

ইদানীন্তন অনেকানেক প্রধান জ্যোতিবিৎ পণ্ডিত বিবেচনা করেন, চন্দ্র বেমন নির্কাণিত সমরের মধ্যে পৃথিবী এদজিক করে, কতক গুলি উক্ষাপিগু সেইব্রুপ কালনান্ত, কুটার চতুর্দিকে পরিভ্রমণ করিছে আরম্ভ করিয়েছে। করানিশ রাজ্যের অন্তঃপাতি তুলুম নগর ছ মামন্দিরের অন্তঃকানা করের দেখিয়াছেন, ঐবাপ একটি বছতার উক্লাপিগু ধরাতল হইতে ২২০০ জোশ উদ্ধে অবস্থিত আছে। উহা ৮ দণ্ড ২০ পলে পৃথিবার চতুর্দিকে প্রমাণ করে, সুতরাং বালতে হয়, পৃথিবাকে প্রভিদিক প্রায় ৭ বার প্রদ্বিশ করিয়া থাকে।

-

# রুক্তনগরস্থ বাহ্মসমাজের বক্তৃতা ১১ মাঘ ১৭৭৫ শক

যিনি স্বীর অলোকিক শৃক্তি শক্তি প্রভাবে আমালিগকে সৃক্তি করিয়াছেন, যিনি
আমালিগের জীবন-ধারণোপ্রোগী পর্যাপ্ত
আহার প্রাপ্তির উপার করিয়া রাখিরাছেন,
যিনি আমালিগের মঞ্জ সুদর বাবছা।
সমুদার বাছ বছর স্ক্তি সুদরে বাবছা।

করিয়া দিয়াছেম, খাঁহার উদার করণা অবলয়ন পূর্বাক আমরা এই সংগারে সুখে
অবস্থিতি করিতেছি, অদ্য যামিনীতে যধাশক্তি তাঁহারই অপার মহিনা কীর্তান ও বিশুদ্ধ গোঁতি-স্বরূপ চিন্তুন পূর্বাক পরম পরিত্র
আনন্দ লাভের নিমিক্ত সকলে এই সমাজ
মন্দিরে উপস্থিত হইয়াছি ৷

আমরা সেই বিশ্ব-বিধাতা পরম পাতার অনস্ত গুণও অপার মহিমার বিষয় কি বর্ণন করিব? উহার সকলই অনির্বাচনীয় ৷ এই অ-শেষ অদ্ভূত কৌশলগর্ত্ত বিচিত্ত বিশ্ব-কার্য্য তদী-র অচিন্তা জ্ঞান, মহীয়সী শক্তি, অসাম করুণা ও উদার প্রীতির যথোচিত পরিচয় প্রতি নিয়ত প্রদান করিতেছে। যাজার চকুঃ কর্ণ ও বুদ্ধিরুত্তি আছে, সে অনারাসেই দেখি-তে, শুনিতে ও উপলব্ধি করিতে পারে, পর-মেশর আমাদিগের জাবন যৌবন সুখ শৌভাগ্যাদি সকল বিষয়ের মূলাণার, আমরা ভাঁচার আশ্রিত ও পালিত, তাঁহার নিয়মানু-সারে আমরা জন্মগ্রহণ করি ও জীবিত থাকি, এবং ভাঁহারই নির্মানুসারে ইহ-লোক হইতে অবসূত হই ও লোকান্তরে প্রস্থান করি ৷ স্থামরা জাবদ্দশান যে সমস্ত সুখ ড়ংখ ভোগ করি, তাঁহার অথগু নিয়-মই তাহার মূলাভূত, অর্থাৎ ভাঁহার নিরম পালনে যে সুখ ও লক্সনে যে ছ্ঃখোংপত্তি হ্য, সেও তাহারই রিয়মানুগত। তিনি আমা-দের সকলের একমাত্র আশ্রয়, একনাত্র-গতি ও একমাত্র পরম হিতকারি মিত্র। আমা-দের প্রতি তিনি প্রতি প্রকাশের একশেষ করিয়াছেন, আমাদিগকে তাঁহার কিছুই অদের নাই। আমাদের ধারা কিছু পাবশাক, त्म मकलरे अक श्रकांत्र पिशा ताचि । एडन । আমাদিগের মঞ্ল সাধন উদেশে তিনি आमामिशक अहे भद्रोतक्त वसुष्ठ राष्ट्र थी-দান করিয়াছেন ৷ ইহার অভান্তরে অতি সুক্ষ সূক্ষ শিরাসকল সঞ্চারিত আছে। ঐ সকল শিরা হারা জ্বদয়স্থ শোণিত অতি-দূত বেগে অবিসাপ্ত মানা দিকে সঞ্চালিত इहेब्रा कोवनी मक्तिक नजर्बन कविराज्य, অস্থি মেদ মাংস সন্তিক্ক প্রভৃতি উপাকানে এই শরীর বিনির্মিত হুইয়াছে। ইহার

সুস্কার উপর আমাদের ধারতীক্ষ নাংলারিক সুধ নির্ভর করিয়া রহিয়াছে । শরীর মধ্যে र्य नमल अपूर्व-(को नल-नाई-वााभात नि-বেশিত আছে, তাহা বিশেষরূপে আলো-চনা করিয়া **দেখিলে বিশ্ব**রাণ্বে ম**গ্র হইতে** इत । পর্বেশ্বর আমাদিগকে চক্ষু কর্ণ প্রছ-ि एव नमल हे स्मिन्न अनाम कति बारहम, तम সম্দায় তদীয় অলোকিক শিল্প নৈপুণা ও অপার করুণার পরিচয় প্রদান করিতেছে ৷ উহার এক একটি ইন্দ্রি: এক এক প্রকার স্থ-খের ও এক এক প্রকার জ্ঞানের ধার স্বর-প। তিনি উহাদিগকে চরিতার্থ করিবার নিমিত্ত অংশেণ বিধ প্রবণ-মনোহর শব্দ ও भूकुमात भूगंका भूकांन छता अमुनाय मृश्वि করিয়াছেন। যাহা দেখিলে ও শুনিলে ছ-मर्ब औडि ও विश्वा उरमज मक्षात्र हुन, अ ৰূপ কভ শত পদাৰ্থ এই পৃথিবীয় স্থানে স্থানে বিনান্ত করিয়া রাখিয়াছেন। সুশী ভল-বিমল-জ্যোতি-সুধানয় পূৰ্ণ জ্ব, সুঙ্**চা**-নবীন পল্লৰ ও সুগন্ধ-সুকুমার-কুসুম শোভিত ভক্তবাতা ত্বারার্ত অত্যুক্ত শৈল শিখর. ভাষণ-তরঞ্গার-গভীর সমুদ্র প্রভৃতি কত ননোহর ও বিসায়-রসোংপাদক পদার্থ স্টি করিয়াছেন। তিনি আমাদিগকে লো ক্যাত্রা-সাধ্নোপয়ে:গিনী জিজীবিষা ভৃতি কতিপর নিকৃষ্ট প্রবৃত্তি প্রদান করিয়া অসামান্য করুণা প্রকাশ করিয়াছেন। আ-মরা ঐ সকল প্রবৃত্তির বশ্বভা হৈইয়া জাবন রক্ষার্থে অনুগ্রহণ করিয়া পরিতৃপ্ত হই, অপত্যের প্রতি স্নেহ প্রকাশ করিয়া मूर्थानूच्य कति, चलांशीयं की दात नहि-क महताम भूक्षक श्लीक हरे, विभर्भाक ভয়ে সাবধানে চলি, গৃহাদি নির্মাণ পুর্বাক সমাজবন্ধ इहेशा नशरत वा धारम चक्रान বাস করি, পরিবার শ্রতিপালনার্থে অর্থাদি উপাৰ্জন পূৰ্বক আপদাদিগকে কৃত-কাৰ্য্য ৰোধ করি, এবং সাংসারিক আর আর স-मस बालाब मांद्रत चण्हे अबूख हहे जा-মরা যে পরম রমণীয়-ধর্মা প্রবৃত্তির বশ-হৰ হইরা সোলর সদৃশ মানৰ-কাভির হিছ সাধৰে অবৃত্ত হই, শোকাকুলিত চিত্তের শোক সান্তৰা করি, লাক্ত রুধীর সচ্চরিত্ত

লোকের প্রতি সম্ভাব-সম্পদ্ম হই. এবং মানব-জাতির অসুস্থতা ও দরিক্রতা নি-বন্ধনী ছঃসহ ছঃধ ভাব অনুভব করিয়া তন্নিবারণের উপায় চেষ্টা পাই, সে প্রেবৃদ্ধি ও পরমেশরই আমাদিগকে প্রদান করিয়া-ছেনা আমবাণে প্রম্প্রিক ভক্তি র-ত্তির বশবন্তী হইয়া পিতানাত। প্রভৃতি গুরু লোকের প্রতি স্নেচ-সম্পন্ন চট্ট, ভাহাদিগ-क जिल्हा आका कति. ७ और शहर मत मस्याय সাপনাথে যতুশীল হই, বিশেষত যাহার আবিভাব বশতঃ পর্ম এন্ধাস্পদ পর্ম পিডাকে ডক্তি এজ: করিয়া কুতার্থ হট, সে বারও তিনিই আনাদিগতে দিয়াছেন। আলাদের একপ কোন মনোরতি ও পদার্থ নাই যে তিনি লা দিয়াচেল ৷ তিনি আমা-। দর প্রম হিতক:রা প্রেম:স্পদ মিতা। ভাষার অপার প্রেমের সমস্ত বাংপার প-शाहलाहुका वर्गहरू। दर्ग**ाहल अन्दर्भ भत्र** 📸 :ব্যার্থটিভ ন্সের সঞ্জার হণ**্ আমর**া ' মতিদিন মাত্রতের ছিলাম, ভারত ভিনি আ-মার্লের প্রমারখন্য ক্ষান্ত করিলভেনা 🗟 ষ্মবস্থার স্বীয়া অলোকিক কৌশল প্রভাবে মাতার জ্বদয়ত শোণতের কিয়দংশ এক অভিনৰ শিৱাপথে ক্ৰমে ক্ৰমে আমাদেৱ **মুকু**মার শরীরে সঞ্চলিত করিব। কি আ क्ष्याक्राक्ष्य आगारनद की वन द्वया कृतिया-চেনা তিনি আমাদের মাতৃগরের, বালা যৌবন রন্ধাবস্থার, ও মরণ সমরের বন্ধু ৷ কিনি আনুদের ইহকালেরও বজু, পরকা-বেরও বলু । তাহার সদৃশ সূত্রৎ আর শামাদের কেছ নাই! সংসারস্থ যে কোন ৰস্কু আমাদের প্রতি যত স্নেহ-সম্পন্ন হউন मा किन ও আমাদের एउट উপকার করুন না কেন, পরমেশ্বর আমাদিগকে শেরণ স্নেছ করেন ও আমাদের যেৰূপ হিত সাধন ক-রেন, সেৰপ কি কেছ কগন করিতে পারি-(ब ? श्रीं कि कि भनार्थ हेश ध्वनुष्ठव कति-বার বা জানিবার পূর্বেষ যিনি অমাদিগকে यरथ छै थीं करतन अदः आमारमत निकछे প্রতি প্রাপ্ত না হইলে, আমাদের হিত সা-ধনে কর্মন বিরত হয়েন না; তাঁহার সদৃশ পরম প্রীতি ভাজন বন্ধু আর আমাদের কে

আছে ? অতএব তাঁহার প্রতি প্রতি-সম্পন্ন रुष्टता ज्यामादमञ्ज व्यवभा कर्खवा कर्मा । यनि व्यामता विषयानुतादश मृक्ष इट्रेग अनीन औ তিৰূপ সুধা পাৰে উদাসা প্ৰকাশ করি. তাহা হইলে আনাদের জীবন যোবন-বিদ্যা बुष्कि नकल है बना इहेबा फेटर्र । किन्द्र भा-মরা কিবলে ভাহার প্রতি হাতি আনুশ্র করিব। আমাদের এমন কি বন্ধ পাতে যে **তাহাকে** প্রদান করিলে তিনি সম্ভাট হ*া*-অথবা ভাঁচার এমন কি ভাবেরে **অভাব আ**ড়ে, বে আমরা সেই-দ্রবা দিলা ভাঁচাকে সপ্তাট করিব 🖓 🗉 হার কিছুখুই **অভাব নাই।** তিনি পরিপুণ প্রাবারই श्रुविवीष अभक्ष श्रमार्थ के बाद अधुः उत्थः **লব্ধি করা, সু**ৰাকল পুৰ্ডা**ন্দ্ৰ**ৰ বিমাল চোট তিতে তাইৰে অপুন্ধ প্ৰা, ভ, সুৰ্মা, 🔃 বুণ **অবলো**কন করা স্থিবংকারের উদ্ধান কালের একান্ত হাদ্য গ্রেছিন (শাভা মা) क्रमीय (भोन्सना क्षकानिक इहेर्ड (प्रना भ শীতল নিশ্বন জল প্রেতে ভালার নপার করুণ ত্রোভ প্রবর্তিত ভইতে দর্শন সরে: সুশোভম শ্যাসক্ষর প্রতিত **ক্ষেত্রে ভদী**য় মঞ্চল মন্ত্রণণ প্রেক্তীভি জ্ব। केटलन-ब क्रवन অসংখ্যা এজ-নক্ষ্য-পূৰ্ **নভোমগ**লে ভদাৰ অলুম স্বিল্ল ও ১৯৮ য়সী শক্তি সলস্থিত হয়, বিশাল ভর্কলয় **সুগভ**ীর সম্ভ্রান্ত ভাষার অংগার ঔদানে ও অগাপ গাড়ীয়া পদালেরনা কর: বি-**শেষতঃ জাহার প্রানাত্ত** ভাতির বুলি ভময় উপদেশানুরণ প্রধাত প্রাতিভ লার সহকারে ভদায় অনিব্রচনটি স্বরূপ 🕏 ১ন করা, সকল জীবের প্রতি ভাইনে সম্পান 🚈 ইহাতে নিঃসংশয় হওয়া, যে বিষয়ে ছালা, সং**ত্রব আছে ভব্তি** যোগ সহকারে তিতেও **আলোচনা ও অনুধ্যান করা, উপান্ন আন** ব গুণকার্ত্তন কবিতে করিতে প্রেম্মান লাগ **জাত** হওয়া, তিনি যে আমাদের ক্রুল্লয় **পরমা**জ্ঞার ও প্রীভিপুণ গরম বন্ধু এবং বি-😎 সুখ সরিতের প্রস্তবণ স্বরূপ, আমা-দের একমাত্র অবলয়ন, ভাহা ব্যভিরেকে আমাদের যে অন্য কোন গতি নাই, এই সকল বিষয়ে স্থির-নিশ্চয় হওয়া, তাঁহার

অপরিভিন্ন উপকারিতা-গুণ আলোচনা পু-বাক ভাঁলর নিকট অক্রজিম ক্রভন্ততা প্র-কাশ করা। তদায় আশ্চর্যা বিশ্ব-কার্যার প-রুল রমণীয় শোভা সন্দর্শন পূর্বক পরম পরিত্র আনন্দরারে নিময় হওয়, এবং স-কল দেশীয় ও সকল জাতীয় লোকদিলকে পরমারাথ; পরন পিতার প্রির পুক্ত জান করিয়া ভালাদগের হিত সাধন বিদয়ে একা-ছ যত্ন করা ভাছার প্রতিপ্রতি প্রকাশের অধিচার সাধন। ধিনি এইক্লে উ,ভাকে প্রিচি করেন, ভাঁছার অভ্যকরণ বিশুদ্ধ আনন্দ-সভিগে নিয়ন্তর প্রাবিত পাকে। ভাঁছার সৌভাগোর সীশা নাই।

তিনি অতি সাধু ও সহারিত। তাঁহার হু পরমেশ্বর! দে দিন আনর। তোমার প্রী-ডিক্স সুধারস পান করিতে করিতে তো-নার অনাগ প্রেম জলাবিতে নিমগ্ন হুইয়াশা-শুত বিমল আনন্দ সন্তোগ করিব, এক্স গ্রম সৌহাগোর দিম্য করে উপস্থিত হ-

#### রা**ন্ধর্মবাজ**

- वृद्धा २१५कश्विम शश्ववातीषु त्रामार्थः किष्णमाः मीरः ७, नमः भववात्रमुख्यः।
- পুরে কেবল এক পর্ত্তক্ষ মাত ছিলেন ন: অন্য আরে কিছুই ছিল না। তিনি এই সমদায় স্থি করিলেন।
- তদের নিউ)ং জানামনতং শিবং স্বতন্ত্রং নি-রব্যসমেকমেল্ছিতায়ং সর্ক্রোপসর্কান-হক্সর্কাশ্যসর্কাবিংসক্সভিক্রাং পুরং পূর্ব-
- মৈতি:
   ভিনি জ্ঞান স্বৰূপ, খনন্ত স্বৰূপ, 'মকল স্বৰূপ, নিড্য, নিয়ন্তা, সর্বজ্ঞ, সর্বব্যাপী,
- স্বৰূপ, নিড্য, নিষস্তা, সর্ব্যক্ত,সর্ববাণী, সর্ব্যাপ্রার, নিরব্যব, নির্বিকার, একমাত্র, অন্তিতীয়,সর্বাশক্তিমান্ও পরি পূর্ণ-স্বভাব ১ একস্য স্থান্যালাসন্থা পার্ডিকমৈছি-
- ক• ভভয়বতি।

  ত এক মাত্র ভাঁহার উপাসনা হারা এহিক ওপারতিক মঞ্চা হয়।
- < ত্ৰিন্ প্ৰতিষ্ঠা প্ৰিষ্কাৰ্য্সাধনক ভদু-পাদনখেত।

ত তাঁহাকে প্রীতি করা এবং ভাঁহার প্রির কার্য্য নাধন করাই ভাঁহার উপাসন। 1

### কলিকাতা ত্রান্ধ সমাজের ১৭৭৭ শকের বৈশাখ মাদের আয় ব্যয়ের বিবরণ

### পান প্রাপ্ত ... ... ১০ ৩ পুস্তক বিজ্ঞা ... ... .২৭/ কোং কাগড়েজর বৃদ্ধি ... ... ১৯০ গতমানের স্থিত ... ৯০/১৬

			> }	ro die
	₹	1 व		
কর্ম চারিগ	বের বে	ē• ····		#Clo
বিৰিশ্বায়	***	****	****	8010/2
			>	₹6119/€
	f	<b>ভ</b> তি		

স্থিত	••••		***	>6811\c
<u> ज्</u> दूर	िन्ते अप	চায় গঞ্চিত		95

	सामध्याकित विवेधन
1	যুক্ত কিশোরি চাঁদ মিত্র 🕠
44	গৌর গোপলে বস্যুক • · · ·
. 4	क्रियात हत्या वर्गा
٤.	व्यक्तम् कृषात एड · · · ·
61	मिन नान मिहिक ग्राम
£4	<b>मिट्न नाथ ठाकूत</b> व्याज्ञानीक 😘
66	শिव् <b>रक्ष (भव</b> )
ď,	भारतिक प्रस्त मञ्जूभमात्र :
*6	त्मृद्व स्त्र नाथ ठाकूत थानुद्व बाहे।
44	হরনাথ ঠাকুর
86	कालाहाँ म नीहा *
41-	नाषादत्र व्याख ১५
	Profit-ready.

ক্রেএই তজাবোধিনী পাত্রিকা কলিকাতা নগরের বোড়ালাকোদিক ভজাবোধিনী সভার কার্যালয় ছই-ভে:প্রতিহালে প্রকাশিক হর:—ইন্নার মূল্য এক টালা। ৫ জ্যৈষ্ঠ ভল বার সহ্ব ১১২। ফলিগডায়: ৪৯৫৬!

সভা প্রবেশ মাস ছইতে ভক্তবোধিনী সভার প্রভি ৰভা প্রভি খাসে এই পত্রিকার এক বঙ বিনা মুলো প্রাও ২ংলব।



পালের নিভাগ জানমনত্ত্ব পিরও তত্ত্বপুর্গ নির্বদনমেক্রেলাভিটান্থ সকলোপিসকনিত্ত্বকাল লগ । বিমান্ত শক্তিমন পুরুগ পূর্ণবিভিত্ত

শ্রেন প্রীতিদ্বরণ প্রিথকার্যালগণনক ও গুলালনালে।

## ধর্মা-সূত্র

मश्रक मनूरवात श्रकाद अतिरूप शर्गा-्लानन, कृदिश रमश्री गात, एशन आको छ জয়, যে মানের ইছো, পনের ইছা, যশের हेका, क्यान्तत हेका अल्डि समम नमूस-ক্রাজির স্থাসার্শিক্ষ, প্রায়েখ্যের সাক্ষাৎে ক'ব ও অসহতা লগে করিবার ইক্তাও দেইজপ সদস্ত মনুযোগ প্রকৃতি-সিদ্ধ। এনু-শোল মনে গভাবত: এইফা পটমান থা-কাতেই, আৰম্মান কাল মনুগ্ৰন্থাভিয় সংগ্ৰ কোন না কোন প্রকাশ ঘর্ষা প্রচলিত হরীরা আসিতেছে: আম্ন প্রবিটির মে কোন দেশে যেকোন জানে মনুযোর বাস ক वारमह हिङ्क (मृथिट्ट भारे, सिरे खारमरे দেবলেয় দেব-মুডি এছতি ধর্মানুভানেব बिमर्गन नमुमाय अलाक कदिशो थानि । कि वक्ट-कनाकीर्गे मूळाच्य व्यवनिश्व ६ कि इ-স্তর-সাগর-পরিবেটিত ক্ত ক্ত উপদ্বীপ मधूह, कि मुरमङ निकरें वर्डी लि ्ष ध (मन), कि छात्रं ध्वधीं स हिम्आित-शस्त्रक् শ্বিদিগের তপোভূমি, সর্বতেই প্রমেশ্রের থাম্পনিক বা অকাপেনিক আরাধনার বছ-ভর নিদর্শন প্রাপ্ত হওয়া যায় ৷ অভি পূর্বর कारण यथन मनुरात तृष्टि-कलिक। किছू-माज अक्षिक इस नारे, यथन मनूया-जा-তির সম্ভাতাও ভদ্রতার কোন চিহ্ন প্রকাশ

পার নাই, সগন ভাহারে আপনাদিয়ের व्यावनाक मण केम्ब्राम अश्वतः विद्वार र মৰ্থ হইত না, যথন বঞ্জাভাৱে ভূগোৰ বল কল পরিধান করিয়া এক্টা নিবারের করিছে, মখন প্রয়োজন মত আব্দেগ্র গাড়েত করিতেন। পারিয়া পর্বেচ-গুল্ম ন। তক-সংক্রাহরিক কর**ত জ**ীবন ক্রেপ্থ করিছে, न-कारन छ। म. रिफ्डारमन भाषा छेलाति छ হয়নাই, গংলে নায়েত্ত সুক্তি সিদ্ধান্তের প্রমন্তর জিল না, ভইবালের ছার্ন্না স্থ ভার সিদ্ধ ন্যাপ্রকৃতির ভামুরন্তী ১ইনা এড়াক এবনর ধর্মানুত্রনে প্রকৃত্র ছিল চু ভালার ভাষার পরাম্যার প্রয়োধারের প্রান্ত স্বৰূপে নৰুপ্ৰি, কাৰুৱেছ সমধ্য না কণ্ড, নাকা वियं मुख्ये शक्षां एक खेनी-मुख्य-मण्याः एकः তা জ্ঞান করিয়ে ভক্তি ও আক্ সংলাবে जाहारमा अफ्रमास नियुक्त हिंग : দল, বায়ু, তেজ, মৃত্তিকা শ্রন্থ ে বিক পদার্গে প্রমেশরের অনুগম অন্যুদ্ধ আরোপ করিয়া তদুগত (জে তিত্র নার্লেন तरे जाताथना कात्रताहर । किर्योधन असी, কটি, পতক্ষানি ক্ষুদ্র জাবে তাহান আবি-ভাৰ অনুখান করিলা সেই সমস্ত প্রানীর व्यक्तना क्षिए अवृत्र इहेग्राह्य। क्रम म्हे अक्षे श्वरमध्यद्भ क्षे कल्पना क-রিয়া আপুনাদিগের মুনোমত তাঁহার নান প্রকার প্রতিমূর্ত্তি নির্মাণ করিয়াছে। কেহ্ রা

তাহাতেও তথ্য না হইব। অপাপ বিদ্ধা পবি-ত প্রমাত্মাকে আগনাদিগের নারে মনুধা-,ভাব-স পান্ন বোধ করিয়া তাঁহার ভবির জনা ননা প্রকার কৎসিত কর্মের অন্তান করি-अहरू । (करवा धार्याह मुह्हा हिन नर्स-াপী সমতেন ঈশবাক কোন পরিমিত প্র-मार्थित गाव वकतम् नाभी विद्यान क्रिन য়া কম কৰু ভাৰাম্বানের কুপুনা ক**িয়া** গি-भागक । इसे समस्य धर्मा जान्य-कारिस मन्दर-শাশত ভাত্ত বর্ষা বটে, কিন্তু পর্য পিতা ার্থেপর মনুষ্টিলাকে ভাঁহার সাক্ষাকোর ও প্রদর্ম লাভ কবিবার যে প্রবায় ইক্সা প্রদা-ন ক্রিণা, হন, সেই ইজাকে চবিতার্থ ক্রি पण पण्डलएधरी स्व छोताहा। या गुज इक्टेस লা একরে নামারিধ প্রশের ক্রপ্তা করিব: ছেন্ড ছাত্ৰ এনেন্ত নাই ৷ ঐ ঐড়াপ্তারের पाद्याद्य, आवादक भवाभवाद डेशामबाद প্রভূত হইয়া অনিবিনেন সুখ প্রাপ্ত হট্-शास्त्रक, अध्यक्षि भाषा घर्ष्यक छ।य अध्यक्षेत्र প্রিশুস্তা কল্লাড়ে, এবং মনুষ্টেট স্থিত বিষয়ক কৰে এতাদশ উচ্চল হট্টাটে 🕻 যদিও আমারে দিনের জ্ঞান-প্রদাণ উক্সন ল হইছে, এৰ আম্বা (ৰাশ্যৱতে মত্ত্ৰ মা করিলে, পরামধ্রকে ক্রন্তি স্থার্থ রূপে আমিতে গান্ত্ৰা, এবং বি শুন্ধৰূপে ভাইরে উ-শাসনা কারতে সমর্থ হটানা, দংগালি ভারার জনেলাড ও অসলতালাতের ইকো যে আ-মংদের গণমা√ সাধনে প্রবৃত্ত ইইবারে সুস কারণ ভাষণ্ডে সংখ্যা আই ৷ যেমন ভূকা या पाकित्म, त्यम करणद अरख्य कविक नां, धवर क्या ना पंकित्त, त्कृ अदात अ-য়েমণ কবিত না, সেই ৰুগ মনোমধ্যে প্রমান গা-প্রিচ্ছাসা ন। গাকিলে, কেই ভাঁহাকে লাভ করিবার চেষ্টা করিত না। ঐ স্বভাব-সিদ্ধ ইচ্ছাই স**ক্স ধর্মের মু**ল,বার ৷ যদি মনুযোর মনে সেই ইচ্ছানা থাকিড, তবে লোগায় বা ঈশবোপাসনা, কোখ্যে বা ঈশর-প্রীতি, কোণায় বা ভক্তি-রুস পান ও কোণায় বা মনুধ্য জাতির ভজ্জনিত বিমলানন্দ সম্ভোগ शकि ह ? के हेष्हा ना शकितन, मनुषा अकन-কার অপেকায় সহস্রগুণে বৃদ্ধিমান্ হইলেও कथन मि दुक्ति देशदा विवास शतिहालन

कदिङ ना, नर्दमा वाक् विषय मत्नानित्वन করিরাই কাল হরণ করিত। সামরা যে করুণাময় পর্বেশবের জ্ঞান লাভ করিয়া ও তাঁহার প্রতি ভক্তি প্রদা প্রকাশ করিয়া मूर्थी व्हेंब, जिनि आमामिशाक मृक्ति कतिवात नमर्शे टार्टीत छेशात्र कतिशा ताथिताटहर ! তিনি আমাদিগকে নানাবিগ ইচ্ছা প্রদান করিমা ভতুপবোগী নানাপ্রকার বিষয় সন্ধি कतिशाद्यम, अवः छाहा आश्व इटेवात क्रम, জামাদিগের বৃদ্ধি প্রভৃতি নানাপ্রকার উপা-য় াদান করিয়াছেন। তিনি কুখা সৃষ্টি করি রা অরেও সৃষ্টি করিয়াছেন, এবং গিপাস। দিবা তালার শান্তি জন্য জল সৃষ্টি করিয়ার: িখালেন। তিনি স্বেচ্ দিয়া সেহপাত প্রদান করিখনত্ব, দয়া প্রদান করিয়া ভাহার বি-গা সুজৰ কৰিয়াছেন, এবং আল বিচাৰ মাৰ প্ৰমাণ-জি**জানা প্ৰদান ক**রিয়া আং-প্রতি স্থাং তাহার বিষয় হইয়াছেন। এই প্র- তের তিনি আমাদিগের প্রত্যেক ইছেরেই ষাটা ঘোগা নিয়র সৃষ্টি করিয়া রাখিয়াছেন। ণে কমর আনো**দিগের ঐ সমস্ত ই**তোর স-चिए हेर। पिरनंत **यथार्याना वि**स्ट्राय अन-েল ইল ভথনি আমার। ভজ্জনিত সুধ लाख करिया आधानित्वत हेक्का मा शाकित्व, লংকারের কো**ন বিষয়েতেই** আমাদিগতে সুখী করিতে পারিতনা, এবং ইচ্ছা ঘাকিয়া कामात्र विवासी शाकित्यक, भून अत्यान ছওয়া দুরে থাকুক, আনাদিদের ভুংবের পরিসাম: থাকিত না: ষ্থোপযুক্ত বিষ-য় ডারা ইচ্চা চরিতার্থ হওয়ার নামই মুধ। অতএব, যথন সামানা ইচ্ছা চরি-তার্গ হইলে, আমরা সুধ লাভ করিভেছি, ভগ্ন আমাদিগের यत्व शत्राम्द्रत् জানলাভ ও প্রাসম্বতা লাভের যে প্রবল रेकः वर्जमान चारह, छाहा भूनं हरेटन रह আমরা কীদুশ সুখ প্রাপ্ত হইতে পারি, তাহ. কে বর্ণন করিয়া শেষ করিতে পারে ১ বে ভাগাৰান্বাক্তি আপন মানস-মনিদরে সেই প্রীতি-ভাজন পরম প্রার্থনীয় পর্মেশ-রকে স্থাপন করিতে সমর্থ হইরাছেন,ভিনিই দে সুখের অনুভব করিতে পারিয়াছেন। জ-शरीयत (यक्षे चार्चा कोमन श्रकाम क-

রিয়া আমাদিগকে অসংখ্য প্রকার অন্যান্য সুখ বিভরণকরিভেছেন, সেইরণ অন্ত কৌ-শলে ভিনি আমাদিগের নিকট তাঁহার अ-লক্ষা অদুশ্য ভাব বাক্ত করিয়া রাগিয়াছেন। যাহা আমরা নেত্রে দেখিতে পাই না, কর্ণে ছ-ব্ৰক্রিতে পাইনা, এবং হস্ত ছাড়া স্পার্শ ক-রিতেও পারিনা, যাহা আমারদিংগর খাণে ক্রিয়েরও বিষয় নতে, এবং রসনেক্রিয়েরও প্রায় নহে, তাহা বে আমর। প্রতাক্তবং প্রতীতি করিয়া ভাষার প্রতি হীতি প্রকাশ ক্রিতে সমর্থ হইব ইছা কে সহলা সমূব মনে क्रिक्ट शास्त्र ? किन्न कि आमामी जेन-রের দয়া! এবংকি আমত্ত ভালার শক্তি! ভিনি ইচ্ছামাত্র জনাগানে ভাছার ঐশবিক জ্ঞা আমাদিলের মনে প্রেরণকরিয়া সং কল লোকের নিকট সুস্পার্টনপ প্রকাশিত কইয়াছেন। তিনি অসাম ব্রজারেওর প্রেটোক প্রমাণ্ডে আপেনার জোন শ্ভি ওমএল প্রকণ প্রকাশ **ক**রিয়া রাখিলানেন, এবং লাতি মনুষ্টার মনে সে সম্দারের *দ*রনে লাভ ক্রিবার প্রবল স্পূতা প্রদান করিয়াছেন। আমর। সেই স্পৃহ। পুণ করিবার জন্য যে সমরে বেক উন্মাশন করিয়। গাঁহার বিশ্ব-ব্রজ্ঞান্তর কোন বিষয় সক্ষমিন করি, ভগতি ঠাহাকে দেখিতে পাই। কিন্তু তাহার হয়েম লাভ করা স্থান বা ক'ল বিশেষ সা-(अक्क बर**र । आगता अर्कना मका आब** ३२) তেই ভাঁচাকে জানিতে পারি, এক আ भाषिरंशत चीत दुक्तिरे सामामिशरता रत বিষয়ের সুবিশেষ উপদেশ প্রদান করিতে পারে। অতএব, তিনি যথন দরা করিয়া আমাদিলের নিক্ট প্রকাশ হইবার জনা আমাদিগের মনেতে ভাহার সাক্ষাৎ কার লা-ভের স্পৃহা প্রদান করিয়াছেন, এবং অন্তর বাছ সমস্ত বজাতে আপনার অনির্বাচনীয় মহিমা ব্যক্ত করিয়া রাখিয়াছেন, ও আমরা তাঁহাকে প্রতীতি করিয়া পরিত্পু হইব এই বিবেচনায় আমার্দিগকে জ্ঞান-নেত্র প্রদান করিয়াছেন, তথন মহীমগুল ধ-র্ম রূপ ভূষণে যে ক্রমে ক্রমে অধিকতর ভূ-ষিত হইয়া আসিতেছে, ইহাতে আশ্ৰ্যা কি? সনুষ্যের জ্ঞান-নেত যত পরিষ্কৃত

হইতেহে, ধর্মের বেশও তত পরিশুক্ক হইরা আসিতেহে। একাল প্যাও ভূমগুলে
যাবতীয় বর্মা প্রচারিত হইলাছে, সমুদায়ই
আমাদের প্রকৃতি মূলক। চরুমে যে প্রম ধর্মের উদয় হইবে, এ মুদ্দায় ভালরে
সোপান হরপ।

-

#### ধর্মানীতি

281 शरण 2 (अ) क्षात्र १२ वर्ष त शहर अ

ঘন্ন সাজ স্থান ক্ষাব্যা বিশ্ব কর্মার করি নি কলো দেনের উপাণা বিশ্ব চলা করিছে। এবং চলার্থ লিছিছ ও ক্ষান্ত নাকের প্রতি বিশ্ব করিব। করিব। তাংশাও নির্কাশন করিছে। বাংলার করিব। তাংশাও নির্কাশন করিব। তাংশাও নির্কাশন করিব। বাংলার করিব। বাংলার করিব। করিব। করিব। করিব। করিব। তাংশার করিব। তাংশার করিব। তাংলার বির্বাহনা করেব। করিব।

সক্ষান্ত্রা ব ধনা আথাদিধের শ্রুত্ব तिक, अनर समस्य मार अवण का वाहिसावात च्या महर्गे । किक्रीहरू देवाने महन्य गासको ন কৰিলে, তাজায় লোভ অনুনাগ সঞ্চায় এয় এবং অনুমাগ-সদার স্থীলেই, ভাষার দহি-ত সহবাস করিবার বাসনা উৎপত্ন ৮১ ( এচা প্রকারে এক জনের শুভি সাম লালের শ্রন্থ ও এীতির উদ্দেক হইতে পাটা, কিন্তু জ ভয়ের সমান ভাব না হটছে, প্রর্চক্প বন্ধুত্ব-ভাবের উৎপত্তি হয় নায় সমান লাব ও সমান অবস্থ: সম্ভাব-সঞ্চরের ফুলাভুত ৷ धरे रहकू, बालदक्त महिक पानदक्त, सू-বার সহিত যুবার, এবং প্রাচানের সহিত **প্রাচীন ব্যক্তি**র সৌল্লাভাব সহজে সঞ্চা রিত হইরা থাকে: এই হেতু, পভিতের সহিত পণ্ডিত লোকের, অজের সহিত অজ্ঞ লোকের, সাধুর সহিত সাধু লোকের, এবং অসাধুর সহতি অসাধু লোকের মিজজা-ভাব আন্ত্রেশ্নে উৎপন্ন হইবা খাকে! এই হেতু, ধনীৰ সালিচ ধনা লোকের, ছালীর সহিত ভূজা নেত্রেক, এবং সধাবজ্ঞীর সহিত ন ব্যবস্থা কৈ কেব অলেকাক্তে অধিক দৌ-ক্ষা সংলাদিত হইবা পালে: বিশেষতা, মানসিক লাকাতর মানা ভাবই বন্ধান্ত্রেশিং পাজির অধান করেন। যে সমস্ত স্থাসরির মাজির সন্মানুজি একজপ হয়, মাতরাং এক বিশ্বে জার্মিত এক কার্মের অনুমান্ত থাকে, উল্লেম্বর্ক প্রক্রার জক্তর্মপ্রমিত থাকে,

বিভ্ৰেম্প্নীল ে জুট ব্যক্তিল সংক भियत्। १ म.ल. १७३) मधुद नद्द । याकाद्रन्द জ্ঞান সমান, ভাষাদের অবাছা প্রান নহে। याङ्ग्रिक्त व्यवस्य अयान, छ। हार्यस्य अया-स करण । नाजारभव राष्ट्री समास, खाजारमत व्यवू-छि भगान नहत । ए'यहमत श्रद्धि भगान, ভাহাদের সমস্থি স্থান নহে। খনেকা ঘট-নার এছকাণ অংশ শ্রিণ ছেড্বিদামনে থাকা-তে, এক বাজির শাহত অমা বাজির সমস্তবি-ৰয়েলজন হয় না, সুভিত্তাং সম্পূৰ্ণৰূপ দৌজ্জ a, ভাবেও উৎপান্ত য় **ন**া। যে বিশয়ে যাই। দের ভাস্কারবেলা একা স্থা, ভাসাদি**গের** ভ (রবয় অবলখন করিন। সভাব ভ্রতম পারে, এবং বে পদাস্থ অন্যানেষ্ট্রে বৈধন্য-ভাষ্ট্রে উ-প্তিচ ন হয়, সে প্রায় সে শহ'ব স্থায়া ম্মূতে পারে। যালের সহিত কিয়দ্বিদরে। ঐক্ হয়, অলেনা এ সংসারে তাঙাকেই ব ধুরু গ্রেদ প্রতিষ্ঠিত করিয়া মনের ক্ষেভে নিষারণ করি ৷ ১৭% বরুতে অতি জুল 😇 ৷ আস্থা যাদুখ বন্ধু লাভের নিমিত্ত ব্যাকুল कहे, राज्यि छाहुना वकु धत्नी-मशुला नि-डांख छन ७, छशाह वक्क वाहित्वत्क की-বিত থাকা দুঃসহ ক্লেশের বিষয় ৷ কোন জগদ্বিয়াত পণ্ডিত-শিরোমণি + উল্লেখ ক রিরাছেন, বন্ধু ব্যতিরেকে এসংসার একটি অর্ণামাত্র ৷ অপর এক মহাত্মা ১ নিদেশ করিয়াছেন, বন্ধুছীন জীবন আর স্ব্যহীন জগৎ উভয়ই তুল্য। তৃতীয় এক ব্যক্তি : লিখিয়া গিয়াছেন, সংসার ৰূপ বিষ-বৃক্ষে \* १८कना § निनिद्दा। ‡ क्टिनाम्यक्ता।

্তুইটি সুরস কল বিদামান আছে; কাব্য ৰূপ অমৃত-রদের আস্বাদন ও সজ্জানের সহিত সমাগম। বিনি ভূংখের হক্তে পতিত হই লাও বন্ধারনের দশন পান দৃংথ কি ক-সোর পদার্থ, ভিনি অবগত নহেন। বন্ধুগণে পরিবেটিত হট্যা সম্পথ-সুখ স-ভোগ করেন, বন্ধু বাতিরেলে বিষয়-সম্প-ত্তি কেমন অকিঞ্জিংকর, তাহাও তাঁহার প্র-তীত হয় নাই। বজু শব্দ বেলন সুমধ্র, বস্তুর রূপ তেমনি মনোখর ৷ বজুর সচিত সাকাৎ হইলে. তাপিত চিত্ত সুশ্তল হয়, এবং বিষয় বদন প্রসন্ন হয়। প্রণয়-পবিত্র সচ্চরিত্র মিতের স্কিচ সহবাস, ও সদালাপ্ ক্রিয়া গেলন প্রিতোধ ক্সন্মে, তেমন আর কিছুকেই থালে না। ভাঁচার সহিভ সহ-সা সাকাংকাৰ হুইবো, কি জানি কি নিনি ভ, শোর-সম্ভন্ত সুচুর্নিত ব্যক্তিরও আ ধর-যুগলে মধ্র হাস্যের উদরক্ষা দি র্যকাল অন্ধ্রের পর ক্ষম ভোজন নায়তা যেৰণ ভুতি জনে, পিপানায় শুদ্ধকুত

মুগানুছৰ হয়, এবং তপন-তাতে
পিত হটবা সুবিনল সুবিগ্ৰ স্নার্থ
সেবন কবিলে, অজ-সভাগ দুরাক্ত হইযা বেনাগ প্রেমান লাভ হয়, সেইনাপ, প্রিয়
বাজুর সুম্পুর সাভ্না-বাকা থার: ভ্রালিব
জনের মনের সভাগ অন্তরিত হইয়া সভোগত হবাব-সুবার সঞার হয়।

বলু অ-গুণের প্রশাসা করিয় শেষ করা
যার না ৷ উহা এবন মনোহর বিষয় যে,
শত শত প্রত্কার উদার মানুষ্যিও মনোহারিত্ব বণনার প্রবুজ্ঞ হইরাছেন, কিছ কেইই তিবিয়ে ননের কোভ নিবারণ করিতে সমর্থ হন নাই ৷ কলজঃ, এছলে জামাদিগের মিত্রতা ঘটিত কর্জব্য কর্মের বিবরণ করা যত আবশাক নহে ৷ কাহারও সহিভ মিত্রতা-স্ত্রে বন্ধ হইবার সময়ে কির্কুপ
আনুষ্ঠান করা উচিত; তৎপরে যতকাল ভাহার সহিত মিত্রতা থাকে ত্ত কাল ক্রিপ
আচরণ করা বিধের; পরিশেষে যদি বিজ্ঞেদ্যটে, তাহা হইলেই বা ক্রিপ ব্যবহার করা কর্ত্তবা! এই ত্রিবিধ কর্ত্তব্যের সংক্ষিপ্ত রুপ্তান্ত ক্রেমে ক্রমে লিখিত চইতেছে।

প্রথমতঃ। অতানবান্সচেরিত ব্যক্তি ভিন্ন অনোর সচিত মিজং: াণ কর্ত্তব্য নহে। সাধু-সঞ্ধেমন গুলকারী, অসাধু-সঙ্গ তেমনি অপ্তণকারী ইহা প্রসিদ্ধই আছে ৷ ব্যার দোষে আমাদের চরিত্র দৃষিত হয়, এবং বন্ধর সাধ প্রণে আমাদের চরিত্র সালু হয় বিমার লে হাজিক পান্ত ভাল-বানি, ও ঘাঁচার সভিত ম্বা, নহ্বাস করি, ভাঁছার দোষ সম্দায়কে মেখ বলিয়া বিবে-চনা করিনা; প্রত্যুত, ভারার অনু 🦠 হ-हेग्न: कन्नुक्र अमनाहत्व क्रिटक क्रम इंडिं। তাঁতের দোব সমুদার আমাদিলের এমন অ-ক্লেশে অভ্যাস পায় মে, জানিতেও পা না কিবলে অভাস হইল। অভএব বেখন व्यामान्तितत सेनासन उनुश कृत्यं मिर्जा গুণ্ভাগের এক সাপেক, তথ্ন যে ব্যক্তিকে अळ्टिट ५ महिद्दहक दिनशा निम्हत्र मा छान। যাগ, ভাঁচার সহিত মিত্রতা করা কোন কপে-ই ত্রেণ্ডর নহে। যাছার বুল্লি ও পর্যা-প্রসূতি উভর্ট বলবারী, বাঁহারই সঞ্চি মিলভা করা কর্ব্য।

गिर्छेत (मार्म वित्रकीयम कुःश शाहेश व সম্বাৰনা, এবং মিতের গুৰে চিরক্সীবন যুগা इडेवान मधावना । (व क्रुक्स्मनानी कुःमी-ল ব্রিপুর সভিত কিছু দিন মিরভা পাচি-য়: বিনেছদ হুইয়া যায়, ভাঁহারও সেই অ-*'প্রকালের সংসর্গ-দোবে আমানের চরিত* এমন দুগিত কইতে পারে যে, জন্মের মত দোষী থাকিয়া, অংশ্ববিধ ক্লেশ ভোগ ক-রিয়া, কাল সরণ করিতে হয়। যদি কিলং ক্ষণ হাস্য কৌতুক ও প্রেটন সম্ভোগ 😳 বন্ধুত্ব করণের উদ্দেশ্য ছউত, তবে দেবন পরিহাস-পটু সুরসিক ব্যক্তি শেশ্যি, হা-হারত সহিত বন্ধু বু করিতাম 🔻 🖖 কাহা-রও নিকট কিছু সাংসারিক উপকার প্রা-প্তির ইন্দেশে শিষ্টতাও সৌজন্য প্রকংশ মাত্র বন্ধুত্ব করণের প্রয়োজন হইত, তাহা इहेटल, क्वित छेमात्र-श्रष्ठांव अवर्था-मानी অ⊲বা**ক্ষতাপল্পদৃস্ব্যক্তি** দে**বি**য়া হারই সহিত বন্ধুত্ব করিতাম। গদি লোক-

সমাজে মানা লোকের মিত্র বলিয়া গণ্য ছওয়া বন্ধত্ব করণের অভিসন্ধি হ**ই**ভ, **ভা**হা চইলে, কোন লোক-মানা বিখ্যাত ব্যক্তির সহিত বস্তুত্ব করিবার জন্য, অথবা কংঞিৎ লোকের নিকট ভাঁহার বন্ধু বলিয়া প্রি-চিত হইবারু নিনিত্ত, অশেষ মতে চেণ্টা 🤲 কৈশ্য: কিন্তু জি মিত্রের স্থিত মিত্রের ২নোমিলনের নাম মিলতা হয়, যদি মিতে-র ক্লেশে ক্লিট ও মিনের বিপদে বিপন হত য়া বিশেদ সম, ঘদি মিতের দেখে গোপন ক-রিয়া **সুস্প**ট প্রক্লাভ-দোষে দুয়িত ছওয় আ াদের বভাব-সিক্ত হয় বুদি পাপিছ নিত্রের সংবাগ বশতং পাপকর্মে প্রবৃত্তি ও অনুরক্তি ছঙ্যা মন্ত্রিছ হণ, ঘ্লিবস্থ সার-জনিত কলক শুনিয়া লড়িয়ত ७ **मन्द**ः ३७मा थक्ष**े -क्रान्य मुक**न् रात्त् প্রকৃতি-সিদ্ধ ইয়, তারে কালার'ও স্কিত মিত্তা-গুণে বন্ধ হইবার সময়ে ডাইটো ১০৭ ও চরিত্র মৃত্র পূর্বকে নিরূপণ করা কন্তন। ভাহার সন্দেহ নাই। গিনি ভোমার সহিত আত্মীয়তা করিবার ২০০০ করেন, আপনি আপন্ত ক্ষুড়িকি নাবিচাৰ ক विना (क्श)

ণী-সংগ্ৰে ধশ্ম ব্যানি ক্ষেত্ৰাই কিছুটা ভারী নতে ৷ পর্যা া মেত্রভারে মু-लोकुष नरह, जाहा उन्ना वृहारी इस मा 1 वक्षा (समन निश्वान-४३), उपम जातु (कर्ड् কিন্ত অপ্যান বিশ্বাস করিছে, অ-প্রতিকল পাইতে হয় : যে গ্রাস্থ সাথ-গাড় প্রত্যাশার কাহারও স্হিত্মি লন বেঃ, যদি কোন গুছাকণা ব্যক্ত করি-লে বার্থ-লাভ হয়, ভবে সে কথা সে নেননা প্রকাশ করিবে ? যে ব্যক্তি অধন্মচির্ভ করিয়া-অর্থোপাজন করিতে কুণ্ডিত হয় না, म वाङ्गितक्षक्रम मभीत्रक्ष का दिखात যাতকতা করিছে কেন কুঠিত ছটকে ? যে বাজি আমাদের আক্ষিক দারিদ্রা-দশা উপস্থিত দেখিয়া, আমান্দের নিকট উপ-কার প্রত্যাশা রহিত হইল বলিয়া, চিন্তিত ও উৎকঠিত হয়, সে ব্যক্তি আমাদের ছুংথ-শিখায় সন্থানা-সলিল সেচন করিতে কেন ব্যগ্ৰ হুইবে ? এমন ব্যক্তি যদি আমা

ब्रिट्शंब: क्षेत्रयम. (धावना कवित्रा चार्च लाफ ক্ষকিতে পাৰে, তবে আমাদিগের চরিত্রে অসলা কলম্ভ আরোপণ পূর্বক সুখ্যাতি লোপ করিতেই বা কেন পরাড্মধ হইবে ? আনেক ব্যক্তি বিশাস-ঘাতক বন্ধার বিষয় অত্যাচাব-জনিত ছুংদহ ক্লেশে কাতর হইয়া शाहकत धकवा यथार्थ वहारे, किस के क्रिम क-दल (पर्वे र जुन (पार्य नहरू, निक पार्यः উৎপদ হইটা পাকে ৷ অপাত্রে **বিশাস** স্থাসন ক্রাতেই, ভাঁহাকে ঐপ্রতিফল প্রাপ্ত ৬টাতে হয় ৷ বন্দু ঘটনার আবে**ন্তু সময়ে** গে শেষ কযুৱা কব সম্পাদন হুৱা উচিত, ভাগ্ন: ক্রাডেই, উক্তরণ ক্লেশ-পর্ফারা ভোগ করিতে হয় ৷ অতএব, অসাগ লো-কের সহিত বস্তাত করা কোন বাণেত ্রাণ্ডার নহে ৷ স্থিদ্যাশালা সক্রিত দে-थिया वक्त कविरव।

ছিতীয়তঃ। যে সময়ে কোন ব্যক্তিকে মিত বলিয়া অবধারণ করা লায়, সেই সময় অব্ধি ভৎসংক্রান্ত কভক গুলি অভিমনে: বম অভিনৱ ব্ৰতে আমাদিগকে ব্ৰতী হই-ভেল্যাসেল সমদ্য পৰিতাৰতেই বাকি. এবং কিবপেই বা পালন করিতে হয়, পা-শ্চাৎ তাহার সংক্ষিপ্ত বিবরণ লিখিত হই লেছে। যতকাল জীহার সহিত মিজতা াকে, ভাবহ ভাঁহার প্রতি কিরপ ব্যবহার সম্পাদন করিতে হয়, ভাষা অথ্রে নির্দিষ্ট হটতেরে । ভারার বিচ্ছেদ বা প্রাণত্যাগ্র-জনিত সুদাকুণ শোক-সম্ভাপ যদি আমাদি-থের ভাগে। ঘটে, তাহা ছইলে. তৎপরে যাবংকাল জাবিত থাকিতে হয়, ভারৎকাল তদায় সন্তাব সংক্রান্ত যে যে নিরম পালন ক্ৰা কন্তব্য ভাষা প্ৰচাৎ প্ৰদৰ্শিত ইইবে 1

আমরা খাঁহার সহিত যথা নিরমে বফ্লক্র-বন্ধনে বন্ধ হই, তাঁহাকে অসম্কৃতিত
চিত্তে অব্যাহত ভাবে বিখাস করা প্রথম কক্রবা কর্মা যথম আমরা তাঁহাকে নিতান্ত
বিখাস-ভাজন বিবেচনা করিয়া তাঁহার সহিত পৌক্লা ক্লপ বিশুদ্ধ ব্রত অবলয়ন
করিয়াছি, তথম তাঁহার নিকট অক্পট
হৃদরে ক্লম-ক্রাট উদ্যাটন ক্রা স্ক্রতোভাবে ক্রেয়া (রামক দেশীর ক্লোন নী-

कि धावर्णक + निटर्मन कवित्राद्या, " एकि যাঁহাকে আভাৰ**ং বিশাস**ু বা করু, ভাঁচাকে যদি বন্ধু ৰলিয়া বিবেচনা করিয়া থাক, ভবে তুমি বন্ধুত্ব-গুণের প্রকৃত প্রভাব প্রভীতি ক-রিতে সমর্থ হও নাই। তুমি ঘাঁচার প্রতি অনুরক্ত হও, তিনি তোমার হাদ্র-নিল্যে প্রবেশ করিবার উপযুক্ত কিনা, গার্ঘকাল িবেচনা করিবে ৷ কিন্তু যথন বিচার করি-যা ভাষাকে মধাৰ্যৰূপ উপযুক্ত লোৱা স্থিৱ করিলে, তথন তাঁছাকে অস্থান্ত্রে আ-ভাষরে স্থান প্রদান করিবে। " ५ प्रितिक, মিত্র সদৃশ প্রতায়-স্থল আর কেইট মতে। প্রকৃত মিত্রের অকপট হৃদ্য বিশ্বাস ৰূপ পর্ম পদার্গেরে জনাভূমি বলিয়া উল্পিভি হরতে পারে। তাঁহার হস্তেধন প্রাণাদি भगनाग्रहे विकास कविशा व्यर्भन कहा गाया কৌন বিষয়ণ ভাঁছার নিকট গোণন গাখি वात विषय नटहा । या विषय शिकाव निक्छे বাক্ত করিতে শঙ্কা উপস্থিত হয়, ভ্রাভার निक**ট প্রকাশ** করিতে সংশ্র*ারে* এবং ভাষ্যা সমীপেও সম্ধ-বিশেষে গোপন রা-থিতে হয়, মিত্র সল্লিধানে তাহা অসস্কচিত চিত্তে অক্লেশে ব্যক্ত করা যায়।

ষে ব্যক্তি একান্ত প্রতিভাজন ও নি-ভাস্ক বিশ্বাস-পাত্র, জঁহার কল্যাণ সাধন বিষয়ে সহজেই অনুৱাণ হট্যা থাকে, এব वित्वहन। कतिया (मिनिटल, छम्दर्श यञ्च कत्। প্রতেভাবে কর্ত্তব্য বলিয়া অব্যারিত হয়। তীহার যদি কোন বিষয়ের অঞ্জল উপ-क्रिक इह, छाइ। इहेटन, तम अक्षाइन शांत-नातार्थ माधानुमारत (हथे) कता कछवा । যদি তিনি শোক-সন্তাপে সম্বপ্ত হন, তাহা व्हेटल, व्योटि-रहन ७ स्त्रह विख्ता दाता দেই সন্তাপের শাস্তি করিতে সহত্র হওয়া উচিত ৷ যদিও আমরা ভাহার শোকভঃখে-র ঐকান্তিক নিরুত্তি করিতে সমর্থ না হই, তথাচ কিছু না কিছু শমতা করিতে পারি काहात मत्नह नाहै। कथन कथन धानम-পবিত প্রবোধ-বচন ধারা, ভাঁহার ছুংখের উপর সুথের ছায়া পাতিত করিয়া, ভাঁছার শোকের বিষয় কিয়ৎক্ষণ বিষয়ত রাখিতে

<sup>\* . (</sup>P(AB) :

পারি । বহি ভিমি নিরপরাধে লোকের মিকট নিন্দিত হন, ভাষা ছইলে, আমরা ভাষাকে নির্দেশিক জানিয়া প্রবোধ দিতে, ও জাঁহার মিধ্যাপবাদ-জনিত মানসিক পুনির শমতা করিতে, সমর্থ চট, এবং জন সম্লিধানে তলীয় নির্দেশিতা সপ্রমাণ করিবার নিশিত্ত সাধ্যানুসারে চেতা পাইতে পারি । ভাঁহার উল্লিখিতরূপ অসেধ প্রকার উপকার সম্পোদন করঃ আমানের উচিত কর্মা। তাঁহার উপ্কার সাধ্যে সন্ত্র ও সমর্থ হওয়া আমানের মুথের কার্যাও সৌভাগ্যের বিষয় বলিয়া বিবেচনা করা কর্ম।

বলুর গাপাপ্পুর উৎপাটন করা সর্বা-পেকা অন্তর করবা কর্ম। আমরা ভাষা-ধ যাত একরে উপকার সাধন করিতে পারি. ভন্মের কোন প্রকার উহার ভূলা কল্যাণ काती नटा मन्यात गरक कान भार्थ বর্ম অপেকার হিতকারী নচে ৷ অতএব, স্থাপিক সুহাক্তনের হত-খায় ধর্ম-রত্ন উদ্ধায় করিয়া দেওৱা অপেক্ষায় অন্য কোন প্রকারে ভাঁহার অধিকতর উপদার করিতে मधर्थ १७३। यात्र मा । (व नगरत ग्रहारक व-ক্ষত্ম-প্রদেবরূণ করা যার, সে সময়ে ভিনি যথার্গ সচারত্র গাকিনেও, পরে অসজরিত্র হওয়া অসম্ভব নচে ৷ মনুষ্টোর মন নিরন্তর अकबार थाका महक बटह, भूल-शहरी एट छ-मन करिएक अदिएड, देववार अप-यानन इ-ইয়া, বিপথগামী হটবার সততই সমাবনা আহে ! • বন্ধ জনের এতাদৃশ অকলাান্কর বিজ্যনা ঘটিলে, ভাঁহাকে পুল-পথে পুনরা-নয়ন করিবার নিমিত্ত সাধ্যানুসারে যত্ন করা কুর্ত্তব্য ৷ পাপানুরক্ত ব্যক্তিকে হিত-বাক্য কহিলে, কি জানি সে বিপরীত ভারিয়া রুষ্ট **७ अप्रकृष्टे इहा, এই ि.दिन्नाः। अस्तरक** মিত্রগণের দোষ সংশোধন করিতে প্রবৃত্ত হন না৷ কিন্তু তাঁহাদের একাণ ব্যবহার উচিত ব্যবহার নহে। পীড়িঙ ব্যক্তি কটু ও ডিক্ত ঔষধ ভক্ষণ করিতে সম্মত না হইলেও, ডা-হাকে ঐ শম্দায় রোগনাশক সামগ্রী সে-ৰন করান যেমন অবশ্যই কৰ্ডব্য, অধৰ্ম ৰূপ मामनिक-रत्नारण कृष वाक्तिरुक छेनरान्ध

द्भाग खेवध एमर्स क्यान (महेन्स अव्या-कर्षवा भूना कर्षा। त्म विष्या भवाष्याध हरेता. बक्क खाल मध्यम कता हरा। छी-हात चनास्त्राच क्षकान उ त्रारगश्यक्ति নিবারণ উল্লেখ্যে মৃত্ব চনে সুমধ্র ভাবে উপদেশ প্রদান করা কর্ত্বাঃ যদি ইছা-তেও তিনি অধর্মাণ্ডণ পরিত্যাগ না করিয়া क् के ७ यमस्के कन लोग बहेता, सानित्क ছইবে, তিনি খার খাষাদিখার নৈত্র-পদেব অধিকারী নতেন। তথ্য আপনা হইতেই -এইরুণ উরোপ হইবে, আমন্ত্রা একাল পর্যা-স্ত তাঁছার উপর যে সমস্ত প্রেমামভাবারি বর্ষণ করিয়াছি, ভালা উপৰ ভানিতেই ব্যবণ করা হইরাছে ৷ কিন্তু যদি তিনি আমাদের বজুর-গদের উপযুক্ত হন, ভাষা হইলে, क्रिके मा बहेशा समितिक सम्बद्धि है है (तम । আমেরা ভাষার ধর্ম রূপ অমুলারত্ব উল্ল-রার্থ প্রবন্ত চইয়াটি বলিয়া, তিনি আম -দিগের প্রতি অধিকত। অনুরাধ প্রকাদ করিবেন, এবং প্রপারের সহিত ক্রচদাতা র**স নিলিত করিয়া অপুর্বা মা**ধ্যা-ভাব প্র-দর্শন করিবেন।

যুঁছোরা সর্লাভংকরণে প্রিয় বচনে মিতাগ-ণের দোনোল্লেখ করিরা সত্তপদেশ প্রদান ক রিটে পরাং মুখ হন, ভাঁচরা প্রক্রত মিত্র-পা-**रम**त वाहा मर्टन (भाडात) कान मिर्जात कुटा বুজি সম্দার ব্লিত হইতে দেখিয়া, ভাঁহার রোধেংপভির অংশগ্রায়, বাকা মাত ধ্র कटब्रम था, म्लालेनामी भव्य अथन के हाटमत অপেক্ষায় হিতকগ্নী সুক্ষ্য বলিয়া গণ্য হই-তে পারে 1 রোমক রাজ্যের এক পণ্ডিত ক হিয়া গিয়াত্তেন, অনেক ব্যক্তি গ্রিয়য়দ মিত্র অপেকার এক বৈর শক্ত সমীপে অধিক উ-পকার প্রাপ্ত হলীয়াছেন ৷ কাণ্ড ভাঁচারা উ ক্তৰণ শক্তৰ নিকট সভত যথাৰ্থ কৰা ছাৰ-করিয়াহেন, কিন্তু উক্তৰণ মিত্র গণের নি-किं किश्वम् काटल अ अपनेन नारे । ग्रॅंकाटनत **বিরাগ ও অনু**ধাগ উভয়ই বিপনীত, কেননা তাহারা অধয়ে অনুরক্তিও সতুপদেশ এ-হণে বিরক্তি প্রকাশ করেন। ধনাটাদিগের मध्य कटनटकरे, अथवा ध्यात मकटनरे, डेख्न ৰূপ মিত্ৰ-মণ্ডলীতে পরি বেন্টিত থাকেন। ীছাল আপ্ৰান্ধ ভৃতিকর ভিত্র অন্য বাক্য अत्र कतिएक होका करत्व मा, अवर कांश्राह्म যে সমস্ত পদানত ৰক্ষুকে বন্ধু বলিয়া স-বোধন করেন, ভালারাও ভালাদের ভোষ-हाबक वालीड धाबा नाका डेरहाथ कनिएड সাহণী হয় ন। । ধনী মহাণরেরা চত্তিকিক্ হইতে আগন ধুনির প্রতিধুনি শুনিতেই ভালবাদেন, এবং ত্রীণ আজ্ঞাবছ মির মলাপায়ের। প্রতি ব্যক্তেট ভালাদের সে বাসনা সুসিদ্ধ করিতে থাকেন। পুলা ও পুত্রক উভয় ধন্ধুর সংখ্য একজন অর্থবাভ ও অনা ক্র প্রিচারণা প্রাথনা করিয়া থা-কেন। ভাঁচারা যদি পর স্পর মিল শক্তের বাচা কইতে পারেন, ভবে জীত লাম ও ফ্রেডা স্থানীই বা সেই শক্ষের প্রতিপাদ্য কেন না চটবে <sup>০</sup> অকপট জনয়ে অক্তিত ভাবে সং জগদেশ এদান করা, এবং সাতিশয় আগত প্রকাশ পূর্বাক সেই উপদেশ এছণ করা বদ্ধারে একত লক্ষণ। সে স্থলে বনি চাটুকারিতা নোষ উপস্থিত হয়, ভবে সে <u>डाउँकादिडा (यस्न चनिष्ठेकत इटेशा छेट्टेस</u> बिट्डये)मिन्धत मुल्ल है विट्डय-वाका कमात्र সেৰূপ অনিষ্টকর নতে ৷

## বায়ুদেবন ও গৃহ পরিমার্জন

প্রাচান পণ্ডিতেরা বায়ুকে জগৎপ্রাণ বলিয়া বৰ্ণন কবিয়াছেল। বাস্তবিক, উভা প্থিৰী স্ব জাৰগণের জীবন স্বৰূপ ভাষার সন্ধেষ্ নাই। অল্জল বাতিরেকে ছুই এক দিবস অভিক্রম করিতে সমর্থ হওয়া যায়, কিন্তু বায়ু ব্যতিরেকে কণ্ মাত প্রাণ পারণ করা যার না৷ ভারতবধীর ধর্ম-নিষ্ঠ ব্রতধারী ব্যক্তিদিগের মধ্যে খাঁনেকে নৰ বাত করিয়া, অৰ্থাৎ নয় দিবস নির্শন থাকিলা, জীবিত ছিলেন শুনা গিয়াছে, কিন্তু নির্মাত স্থানে ন্যা পল নাতা অবস্থিতি করি-তে হইলে, মৃত্যু-ম্**থে পতিত হইতে হ**র ৷ र्घ ममस श्रिके ७ वेशिक् वाल्कामत्र मझजूनि ণ্যটিন করে, ভাহারা **জলপান ব্যতি**রেকে ১০)১৫ জেশে অনায়ামেই জ্বন্ করিতে গারে, কিন্তু নি**র্বাড স্থানে অবস্থিত হইলে,** 

১০15৫ পাৰত গৰন করিছৈ নকৰ হুল না ]
অভন্তৰ, বারু আমাদিগের ভীবন রক্ষার্থ
বেষন আংশ্যক, আনা কোন বস্তু স্বেত্তপ নতে ! আন, জল, ও ক্যোতি আবশ্যক বটে, কিন্তু বায়ুর তুলা নহে ! বায়ু পৃথি-বীর সাক্ষাং প্রাণ স্বরূপ !

কিন্তু সকল স্থানের বায়ু সমানকণ উ-পকারী নরে**া বিশুদ্ধ বায়ুই একু**তরূপ উপকারী৷ যেমন, তুর্গন্ধ জল পান করি-লেও গলিত ফুল ভক্ষণ করিলে, হোগ জন্মে, সেইৰূপ, অবিশুদ্ধ দুট বায়ুসেইন করিলেও রেনেগাংপ 🗽 হইয়া থাকে ৷ বিনি কলিকাতা নগরীর পথ-প্রান্ত-বর্ত্তিনী জল-প্রণালীর নিকট-স্থিত সুর্যন্ত বায়ু নিসা-সহকারে শরীরস্করিয়াছের এই নগরীর लाक कि कमा रूप 🎻 🖖 🗘 🗷 छै। ए। हा ভাষার অবারাসেই অনুভূত হটতে পারে ৷ প্রত্যহ, যে থাজিক প্রাতংকগেনি সুনিস ি শ্রন্ধ লম রণ সেবন করিয়া আদেশ-খন বিভ শিত করিয়াছেন, জৌরহাী-নিবাগী উউরো-পীয় লোক কি নিমিত্ত হৃতিপুষ্ট ও বলিষ্ঠ, ভালাও ভালার প্রতীত হঠতে পারে 1

মধ্যে অবিশ্রান্ত রক্ত চলিতেছে ৷ সেই রক্ত চলিতে চলিতে শ্রীরক
অন্যান নত গদার্থের মহিত মিলিও হইরা
দুখিত করতেছে ৷ পরে অপন্যাপ্ত বারু
নিশান সহলারে দেহ মধ্যে নীত হইরা সেই
রক্ত সংক্ত করিতেছে ৷ যদি ঐ বারু
সমতিবাহারে কোন অহিতকারী পদার্থ
শরীর মধ্যে সতত প্রবেশ করে, তাহা হইলে, আশুবা বিলম্বে রোগ এন্ম তাহার
সন্দেহ নাই ৷

বারু নানা কারণে ও নানা প্রকারে দুবিত হইতে পারে ৷ মনুবোর মাদ প্রমাস
উলার এক প্রধান কারণ। আনরা বে বার্
নাসিকা দারা আক্রণ করিয়া শরীরক্ত করি,
উহা শরীর মধ্যে প্রবেশ করিয়া, বিকাব
প্রাপ্ত হইয়া, বহির্গত হয়। উহা নাসিকা
রক্ষে প্রবিষ্ঠ হইবার সময়ে আমাদিশের
প্রাণ বারণের উপযোগী থাকে, পরে প্রাণ
কংহারের উপযোগী হইয়া বাহির হইয়া
মাইকে ৷ উহার প্রাণধারণ গুণ নাই হইয়া

আন্তর্গ শুণ উৎপর হব : ঐ বিক্তুলা বিশ্লত বায়ু শরীর ছইতে বাহির ছইরা বে বায়ুর সভিত মিজিত হর, তাহা আমাদিগের পর্যে অভাস্ত অহিতকারী। তাহা সেবন করা কর্ত্তব্য নহে !

বিশুদ্ধ বারু খাস প্রখাস দারা উজ্ঞাক পা বিকার প্রাপ্ত হয়, ইহা অক্রেশে পরীকা করিয়া সপ্রমাণ করিতে সমর্থ হওয়া যায় ৷
চুণের জলে সামান্য বারু বাজন করিলে,
সে জলের কিছু মাত্র মাণান্তর হয় না, ধেমন
তেমনিই থাকে ৷ কিন্তু ক্ংকার দিলে,
উহা অবিলয়ে মলিন হইয়া উঠে ৷ যে
অহিতকারী পদার্থ নিখাস সহকারে শারীর
হইতে বহির্গত হয়, তাহা চুর্গ-জলে মিলিত
হইলে. সে জল উরপ আবিল হইয়া থাকে ৷

আমরা যে গুলে ভারস্থিতি করি, সে গুটের বায়ু স্থাস প্রমাস ভারা অনবরত ই উক্তৰণ দুগিত হইতে থাকে৷ খদি বাহি-রের বারু প্রবাহিত হইয়া ঐ দুখিত নায়ুকে অপসারিত করিয়া না দের, তাহা হইলে. ঐ বালুক্দমশং বিষ-তুলা হইয়া উঠে ৷ উহা \*সেবন করিলে, অবিলয়েই মৃত্যু-প্রাচেন থা-বেশ করিবার সম্ভাবনা। নবাৰ সেরাজ-ন্দৌলরে সেনাপতি ফানিক চাঁদ কলিকাভার कुर्गमत्था देनर्र्था ३२ व्या ७ १० १८ व्या ५ व्या व्यमान अक हि व्यक्तार 585 कन है? রেজকে সমস্ত বাত্রি রুদ্ধ করিলা লাখাতে, যে ভরক্ষর ব্যাপার উপস্থিত হইয়াছিল, তাহা অনেকৈরই বিদিত আছে। এ প্রকোষ্ঠের এক দিকে একটি মাত্র বা-তারন ছিল, সুতরাং আবশ্যক্ষত বায়ু স-ঞ্চরণের উপায় ছিল না। উল্লিখিত বন্দী সকলের নিম্বাসে উক্ত গৃহের সমস্ত বায়ু অতিশীঘুত্রই হইরাগেল৷ তালারা অ-विलक्ष्य मिलामाय अध्यक्त रहेल, भाजमा-रह मक्क इहेल, अवर वाशु विवरह अखित इहेट लातिल। अकलाई किक्षिर वासूना ভের প্রত্যাশায় ব্যাকুল হইরা, বাতারনের निक्छे इ हरेवात बना, कि छ। भारे क नाशिन, এবং শ বক্তক করিয়া আমাদের যন্ত্রণার প-र्यान कत " विलिश त्रक्किशिता विक्रि बांबाडी महकारत आर्थना क्रीतर नामिन।

পরিশেষ এক এক করিয়া, চত-চেতন ছইরা, বর্মীতকে পড়িত ক্রইলা, এবং অবশিক স্কেলে তাহাদের দৃত্তপরীরোপরি মন্তারমান হইরা কিঞ্জিং কিঞ্জিং বারু প্রাপ্ত ইইতে লাগিল। পর দিন প্রাতঃ কালে খারোদ্যাচন হইনে দৃত হইল, ১৪৬ জনের মধ্যে ২৬ জন মাত্র তর্ম পর্যান্ত করিয়াছে।

নাসিকার নাায় লোস-কুপ ভারাও শরীরন্থ মনিউকারী পদার্থ-সমূহ নিয়ত বহিগঁচ চর ৷ অতএব, তন্দারাও গৃহের বাষু
ক্রমাগত দূষিত ও অবিশুদ্ধ হইরা থাকে ৷
কর্থন কথন এমন দূষিত চয় যে, তন্দারা
এক প্রকার স্থাসক দুর্গল্প উৎপন্ন চইরা
থাকে ৷ শিশির-কালে উধা-কালীন বিশুদ্ধ
বায়ু সেবন পূর্বক, কোন ব্যক্তির শরনগৃহের কবাট উল্ঘাটন করিয়া, তাহার
শ্যার নিকট গমন করিলো, এরপ ভুগ্রি
মনুভূত হয় যে, তৎক্রণাৎ তথা হইতে বহিগৃত হইবার ক্ষন্য বাস্ত হইতে হয় ৷

এই ৰূপ নিশাস-ফ্রিয়, শ্বেদ-নিঃসরণ, রঞ্জন-ধূম, জ্বন্ধ বন্ধর বালেশাকান ইত্যাদি অনেক কারণ দ্বারা গৃহের বারু অবিব্রুত দূষিত হটায়া গৃহ-বাসীদিগের পক্ষে অত্যন্ত অথান্থ। কর হইতে থাকে। অত্যার মঞ্জার থাকে, অর্থান বালিরের বিমল বারু গৃহের মধ্যে সর্কনা সঞ্জার হইয়া তথাকার দুব্যত বারু বিল্পিক করিবা দেয়, ভাছার উপা্র করা কর্জবা।

ভাহার উপায় করা কঠিন কর্ম নহে ।
বায়ু আমাদের পক্ষে নিতান্ত আবশাক বি
বেচনা করিয়া,করুণানর পরমেশ্বর উহা সকাজ প্রচুর রাখিয়া দিয়াছেন ৷ উহা সকল
ছানে, সকল গৃহে, ও সকল রক্ষেই সর্বাকণ
বিদামান রহিয়াছে ৷ পথ, ঘাট, গৃহ, কানন,
নদী, সমুত্র, প্রভূতি যে কোন স্থানে আমাদের অবস্থিতি করা আবশাক হয়, তাহাই
বায়ু-রাশিতে পরিশূর্ণ ৷ মৎসা, কুত্রীর,
হাল্পর প্রভৃতি জলজভ্র যেমন জলাশায়
মধ্যে নিমাধ থাকে, আমলাও সেইবাপ সুগাভার নালু-রাশিতে ময় কুইয়া রিরয়াছি ৷

অভএব, বারু বেষমা অবিশেকা আবশ্যক, তেমনি সর্বাদেকা সুলভ। কিন্তু কেমন ভূজাগোর বিষয়! প্রমেশরের করণামর অভিপ্রায় অবছেলন করা আমানের অভান্য পাইবা গিড়াছে! আমরা প্রযক্ত পূর্বক বায়ু প্রবাহ প্রভিরোধ করিয়া বাঁকি। বাসম্ভানে অপ্রভিহত বিশুদ্ধ বায়ুর সঞ্চার পাল। নিতান্ত আবশ্যক ইছা এতদেশীয় লোকেরা বিজ্ঞান বিবেচনা করে না, সুতরাং গৃহ নির্দ্ধানের সমণে ভাছার উপায় করিয়াও রাপে না।

এতদেশীয় লোকের গৃহ নির্মাণের প্র-नानी भर्गाालाहमा कत्रिया पश्चिल, विश्वित ও দ্রুংখিত হইতে হয় ৷ গৃহ মধ্যে জ্যোতি ও বায়ু সঞ্রণের শুতিবিধান করা যেন ঐ এথালীর প্রধান উদ্দেশ্য বলিরা প্রতীয়-মান হয়। এতদেশীয় পূর্বতন গৃহ সম্-দায়ের এক একটি প্রকোষ্ঠ এক একটি সি-ৡক ব: লয়া উল্লিখিত হইতে গারে। বাস্কan, मिन्हरकत **এक शार्ट्स हु**हेरि क्**फ** हिस. ১.- অন্য এক পাৰ্ষে **তদপে**ফা বৃহত্তর্ আর ান্ট চতুক্ষোৎ ছিদ্র কর্ত্তন করিলে যেমন इत, शृक्षकारमञ्ज अरकाछ अमुमाग्न अविकत পেই**রপ ছিল, এবং অদ্যাপি গলি**গ্রামে অ-নেক স্থা**নে সেইৰূপ গৃহ প্ৰস্তুত** হইয়া থাকে। ভদীয় ভি**ন্তির উজ্**দেশে ছুই একটি এক ইন্ত প্ৰমাণ গৰাক বা বাভায়ন থাকে, ভদ্যা-্ৰ যে প্ৰমাণ বায়ু গৃহ মধ্যে প্ৰবিষ্ট হইতে পারে, গৃহবাসীরা তাছাই সেবন করিয়া সজীব থাকেন! অনেকানেক তৃণাচ্ছাদিত शृंदर छेन्द्रन्त भवाक्ष थाक ना : (कदन এक मिरक, व्यथना उँक् मध्या कृशेनिरक, এক বা ছুইটি মাত্রকুদ্র ভার বিদ্যমান থাকে ৷ আপাতভঃ বোধ হয়, উল্লিখিত গৃহ ও প্রকো-. ঠ প্রস্তুত হইবার সময়ে তালার মধ্যে দং-কিঞ্ছিৎ বায়ু বাহা রুক্ত হইরা থাকে, তাহা বুঝি তথা হইতে কোন কালেই নিংশেষে নিঃসারিত হর না। অনেক মহাদার শীত খ-ভ্তে গৃহহর ৰাভায়ন উদ্ঘাটন কর। একে-বারে বিশ্বত হবর। বার্ক্ত্র ভবাকার বিষ-পূরিত দুষিত বাস্কু বন্ধ পূর্বক সভ করির৷ बार्यन। जेवन अक अकृषि श्रारकार नरवा

বন্ধ-বংগা লোক শর্ক শ্রেমির মান্ত প্রকাশ বারু বিবাজ বারু বিবাজ করিয়া রামে গ্রাহার করিয়া রামে গ্রাহার করিয়া কেই বিবাজ বারু মধ্যে সক্ষম্ভ রাক্রি ক্রম্ভ থাকিয়া বে প্রাভঃকালে সজীব শরীরে গারোপান করে, ইহা আশ্বর্যের বিব্যার বিলিয়া গণ্য করিছে হইবে। ভাগ্যে আমরা উজ্জবল গৃহের উজ্জবল বাভারনে সাসী ব্যবহার করিছে শিক্ষা করি নাই। বাভায়নের ছিদ্র দিয়া অপ্প অপ্প বারু প্রবেশ করিয়া গৃহ-বাসীদিগের প্রাণরক্ষা করে। সাসী ব্যবহার করিলে, সমুদ্র রক্ত্র ক্ষম্ভ হইয়া ভাঁয়দিগকে এক রজনীতেই সুভ্যাসে প্রবেশ করিতে হইত।

**এই महानश्रत्रत, এবং ইहात शार्श्वकी** গ্রাম সমূহের, অধুনাতন লোকেবা ইংরেজ-निरंशत मुखासानूनारत श्रहत हात ७ वा-তায়নাদি প্রশস্ত করিতে আরম্ভ করিয়াছেন, কিন্তু ভাষাদের গৃহ নির্মাদের সমগ্র-প্রণাল বিবেচনা করিয়া দেখিলে বোধ হয়, গৃহ মধ্যে অতিগ্রুর বায়ু সঞ্চার থাকা যে নি-७१७ यावनाक, हेडा ठाँशासत कनाठ क्रमा-क्रम इत्र मार्थे। हेलिशुर्स्स अक धकाँ छ কোষ্ঠ নিৰ্মাণের যেৰূপ রীতি নির্দিষ্ট হই-য়ाट्ड, এতদেশীয় সমগ্র গৃহই সেই**র**প त्रीरिक करम अञ्चल करेशा थारक। **এত** स्मि-শীয় লোক আবাদ-গৃহ চক্বন্দি করা যে-यन ভागवारमन, अमा रकाम अवाली रमन्त्र মূতন গৃহের স্থ্রপাত ভালবাদেন না ৷ করিবার সময়ে, অত্রে চকের ঘরের স্থান রাখিয়া, ভবে অন্যান্য কার্যা আরম্ভ করেন। ठक्विम कतात श्रेश करे (य, ममश्र शृह हरू-ৰ্দিকে প্ৰকোষ্ঠ-শ্ৰেণিতে বেষ্টিত থাকিয়া **ष्ट्रिक्टिकड़ वाश्च द्वाथ क्रिड्ड शाटक। वि-**শেষতঃ, রাজধানীর মধ্যে উক্তরণ চক্বনি कत्रा निवाम-गृह ज्यानिय जनार्थत मून १ श-नियात्म साम मूलर्छ, गृह ममुनास अटलका-কৃত প্রশস্ত, বাস্তবাটীর চতুর্দ্ধিকে প্রায়ই উ-ছাক্ত থাকে, অতএব তথায় চক্বনিদ হইলেও, शृंश मत्या किसर धामान विशुक्त वाशू कथिकर मक्षत्रिक इरेटक भारत । किस क्लिकाकात বিবর ইহার নিভাত বিপরীত। এখানে ভূমি অভি ছবঁড। গৃহ অতি স্ট্রীণী।

**हक्ष्मिक् हक्विम हरेला अक्रम अधि अण्य** शास्त्र । (मरे ममल हरकत यत विका धदर जिल्ल इहेश थाटक। बाह्रीय शास्त्र किइ-মাত্র উদ্বাস্ত্র পাকেনা। প্রতিবাসীর বাস-গৃহ এরপ সন্নিহিত ও সংলগ্ন, যে সেদিকে একটি বাতায়ন রাখিবারও উপায় হয় না ৷ উক্তৰণ এক একটি গৃহ এক একটি কৃপ বলিয়া অনায়াদেই উল্লিখিত হইতে পারে। আবার যথ্ন ক্রিয়া-কাণ্ডের সময়ে চ**ন্তা-**তপে আক্ষাদিত হয়, তথন দারুময় সিশ্ত-কের সহিত্র উহার কিছুমাত্র বিশেষ থাকে না৷ উহার মধ্যে নিশাস-বিধ নির্গত হই-তেছে, স্বেদ বিল্ডু সঞ্জিত হইতেছে, রক্ষান-ধম বিচরিত হট্ডেছে, 'এবং শভপ্রকার গলিত বজার বিষময় বাষ্পা সঞ্চরণ করিতে-ছো করুণামল প্রমেশ্ব গৃহ নথ্য অপ-র্যাপ্ত বিশ্বদ বায়ুর সভত সঞ্চার পাকা আ-বশ্যক বিবেড়না করিয়া যে মঞ্জল গ**র্ত্ত মনো**-হর নিধুন সংস্থাপন ক্রিয়াছেন**, এতক্ষে**শীয় লোকে সে নিয়ন অগ্রাহ্য করিয়া সম্চিত •শান্তি ভোগ করিতেছেন।

আমরা ভাত্তিজনে বাহা সুখের বিষয় বিবেচনা করি, আমাদিপের বৃদ্ধি-দোষে তাহা ততান্ত অসুপের কারণ ছইয়া উঠে। ক্রিয়া-কাণ্ডের সময়ে গৃহস্থের গৃহস্থেরপ আনিষ্টকারী ও বীভৎসজনক হয়, তাহা এই মাত উল্লিখিত হইল। রাতি-কালে নৃত্য গীতাদি হইলে, ততোধিক অহিতকারী ই-हेगा छठ । উहा हर्जाब्दक आहीत अ अ-কোষ্ঠ-শ্রেণীতে পরিবৈটিত, উপরিভাগে চক্রাতপে আচ্চাদিত, এবং অভাস্তরে লোক करम পরিপূর্ণ। বাস্তবিক, উহা উর্জাধঃ मञ्चलिक मन मिक्टे क्रक दिनशा वर्गमा क-রিলে, অসক্ত হয় না বহিবরি উদ্ঘা-টিভ থাকে ৰটে, কিন্তু কৌত্কাৰিউ অনা-হত লোকের সমাগমে নিভান্ত নিরবকার্শ হইয়া যায় ৷ কোন দিক্ হইতে ৰায়ু সঞ্-बर्ग्ब भथ बारक ना। लारकुत विवारम उ বেদ নিঃসরণে তথাকার রুদ্ধ বারু অতি भीषु पृथिक रहा, जबर कित्ररक्त भटत थमन कुर्शक्त रह . (व, क्रालक् रहेता : केटर्ड । **कावहरू-धादीः भाव्यकातीः** क्वा श्रन∞रनरे সমস্ক ফুর্গন্ধমন্ন ঘনীকৃত গরল বারবার সঞ্চালন করিয়া, নিয়োগকর্জাদিগের ও তদীর বান্ধবিদিগের ও তদীর বান্ধবিদিগের দুরিত বান্ধ্ব পরিসেরন ঘারা তত্ত্বসমস্ত লোকের শরীক্র অবিলক্ষে ক্লিউ ও পীড়িত হুইয়া পড়ে হ বাহারা নিশার্ক সময়ে অথবা কিঞ্জিৎ পুর্কের সত্তেজ শরীরে ও সরস বদনে সঞ্চীত-ভূমি আরোহণ করেন, প্রাত্যকালে তাঁহাদিগকে বিবর্ণ-বদন ও ক্লিউ-লোচন অবলোকন করিয়া ক্লুখিত হুইতে হয় হ তদির মুক্সীতে ক্লীয় অভ্যাচারের লক্ষণ, সুস্পান্ট লক্ষিত হুইতে থাকে হ

যাঁহার। আপনাদিনের আবাসগৃত উ লিখিতকশ বিধি-বিরুদ্ধ করিয়া প্রস্তুত ক রেন, তাঁহারা দেবগৃহও জদনুৰাণ করিবেন हेड़ा मर्काटडाइडाटवरे मध्यव । वद्रश् विदय চনা করিয়া দৈখিলে বলিতে হয়, ভাঁছায়, দেবালয় নির্মাণ বিষয়ে শারীরিক, স্বাস্থ্য বিধান বিধনক নিয়মের বিরুদ্ধাচরণের এক শেষ করিয়া থাকেন: ভারত ব্যায় দেব-मिनिद्वत भएका व्यवनक मनिद्वत है अक हात: য**দিবা ছু**ই স্বার থাকে, তঃছার একটি চির-দিন রুজা। অভ্যাব, ভারতে বিশুর বায়-সঞ্জার ও অব্যাহত জ্যোতিঃ সমাধ্যমের সন্তঃ বনা থাকে না। প্ৰন্তগাল প্ৰবেশ করিছে স্থান পান না, এবং সূদা ও স্বীয় রন্মি বিকীর্ণ করিতে পথ পান না। সু প্রশস্ত উ্রত নন্দি **रहत मर**धा द्रांजि मिनाताक निदास करव, धवः উহা প্রস্তুত হুইবার সমরে যে বায়ু উদার মধ্যে প্রবিষ্ট হয়, তাহা চির-কার্য়েক্স ছুই **लारकत** गाप्त प्रिड **फा**रव जित्रक

অবন্ধিতি করে। কোন কোন প্রথম তার্কের প্রথম মান্দরে দিবা ভাগেও দিশালোক বাতিরেকেদেব-সেরা সম্পান হর না। ঐপমন্ত বেবারার মধ্যে দিপাশার মুম উপিত হয়, বিলুদল ও কুসুম-পুঞ্জ গলিত হইনা ছুর্গন্ধ হয়, বাত্রী গণের নিম্মাস-বায়ু বিশ্বস্থত হইরা বাজে হয়, এবং বে মন্দিরে পাক্তি-মূর্তি প্রাক্তিভ থাকে; ভাহার অক্তর ও বাহির পশ্বক্তি-বিনির্গত পুতি-গল্পিক শোণিতে দুবিত হইরা অক্তিরা অক্তিরা ক্রমন্য হইরা প্রতিক্তি

এইদেশীয় লোকের গৃহ-নির্মিনের প্রনালী বিষরে গৃহ-কিঞ্চি ঘালা লিখিত জইল. ভালা পাঠ করিবা দেখিলে, ঐ প্রণালী গে অভান্ত অনিউকরী, ইলা অক্লেকেই
প্রতীত লইতে পারে ৷ বাস-গৃহের স্থার
পাত করিবার সময়ে সর্বাত্তো অপর্যাপ্ত
বায়ু-সঞ্চারের সন্তুপার নির্দ্ধারণ করা সর্বাত্তারে করিবা।

द्रफाटनत ध्रम, शलिक वस्त्रत वाष्ट्रा, क्रुर्ज-ক্ষম আবর্জন, লোমকুপ-বিনির্গত ক্ষেদ-বিশ্ব ইডানি অনেক বস্তু বারা গৃহের বায়ু नियं ह निक इहेशा थात्क, हेहा हे किशुद्ध উলিবিও হটয়াছে। যে সমস্ত ছুংখা লোক Aक कुणित वा এक अटकाटकेत मार्था हे अ-শন, শ্রন, রক্সনাদি সমস্ত নিতাক্রিয়া সং স্পাদন করিয়া থাকে, ভাছাদিগের গুছের वाशु के जबला धनिष्ठकाती अमार्ट्यत नहि-ত মিগ্রিত হট্য। অনবর্ত্ই দোবাগ্রিত इता (य भृत्य के नमन्त्र वन्न विमामान शेटक, সত্ত বায়ুসক্ষার থাকিলেও, তথাকার বায়ু বিশুদ্ধ গাকিতে পারে না৷ প্রহাত, নি-तकत विवादक स्ट्रेश शृह्यामी पिरशत नता-রের তেজ ও মনের বীর্যাবিনাশ করিতে গাকে। অভএব, বাস-গৃহ সতত পরিস্কৃত রাখা, গলিত ও তুর্গন্ধ বস্তু দৃষ্টমাত্র অপ-সারিত করিয়া দেওরা, **এবং রক্ষনের ধুম** গুহু মধ্যে রুজানা হইয়া ঘাছাতে ভৎকাণাৎ উপিত ওবহিগত হুই**য়া যায় তাহার উপায়** কর: কপ্তব্য।

শরীবের স্বেণাদি ছারা শ্যার আন্তরণ মলিন হচলে, অভ্যন্ত অপাস্থান্তনক হয় ৷
তাহা হহতে যে এক প্রকার ছংসহ ছুর্গন্ধ
নির্গত হইরা থাকে, তাহা নাসিকা-রন্ধে প্রবিষ্ট হইবা মাত্র রোগাবহ বলিয়া প্রতীরমান হইতে থাকে ৷ অনেক বাজ্জির শ্রা।
এরণ মলিন ও ছুর্গন্ধ, যে উহা কল্মিন্ কালে
রহুকের হস্ত স্পার্ক বিরাহিল এমত বাধি
বর না ৷ উহা প্রতিতে স্বেদ স্বর্ণ
গরল সংযুক্ত হইয়া ভাহাদিকের স্থায়াসুধ হরণ করে, ইহা ভাহারা ভানিতে
লারে না ৷ অভ্যন্ধ, শ্রা পরিষ্কৃত
রাধা, বিশেষতঃ ভাহার ভাত্রিক

এইদেশীয় লোকের গৃষ্ট নির্মিটেনর প্র- কিন্তালন ও শরিবর্তন করা, সন্ধাতেভিবে বিবরে গৃহকিভিছ যাতা লিখিত ছ- কর্মবা।

> नयो इरेट भार्याश्रीन कतिवात शरत. উহার আন্তরণাদি তুলিয়া বায়ু সেবিত করা এবং শরন-পুত্রের ছার ও বাতায়ন উদ্ঘাটন পুৰ্বক ভন্নধ্যে বাসু-প্ৰবাহ প্ৰবাহিত হইছে দেওয়া সমাক্রপেই বিধেয়। রাত্রিকালে যাস প্রশাস ও স্বেদ-নিঃসর্ণ লারা গুছের ৰায়ু দূৰিত হইনা খাকে, তাহা উল্লিখিত ৰায়ু-প্ৰবাহ দারা অপসারিত হটয়া তৎ-পরিবর্জে বিশুদ্ধ বায়ু সমাগত হুইতে পারে, এবং শধ্যাতে যে সমস্ত স্বেদ-বিশ্ব বিলিপ্ত থাকে, তাহাও ঐ বায়ু-প্রবাহ দারা বিচলিত ও উত্তান হইয়া বৃহিগত হইতে পারে ৷ যাহাদের শরীর সুপটু নহে, তাহাদিগের শয়াও শয়ন-গৃহ উক্তৰণ ৰায়ু-দেবিত করা নিতান্ত আবশ্যক ও সর্ববেডাভাবে বিধেয়। এক বংক্তি রাত্রিকালে অভিশয় হর্মান্ত ह-বিস্তর ঔষধ সেবন করিয়াছিল, কিছুতেই প্রতীকার হয় নাই ৷ কিছু দিন পরে দৃষ্ট হইল, ভাষার শধার আন্তর্ পরিবর্ত্তন করিয়া মূতন আন্তর্ণ পাতিয়া मिटन, २१७ मिर्देश अर्था स्ट किन्नू गांज चर्चा हर् না. এবং নিদ্রারও ব্যাঘাত ঘটে না। ইচা দেখিয়া তাহার সম্বয় শয়নবস্ত ভুই দি-বসান্তর প্রফালন করিতে আরম্ভ করিলে, ভাহার সে রোগের আশু প্রজীকার হুইল, এবং উত্তরোক্তর বলাধান হইতে লাগিল ৷

ভোজনাবশিষ্ট ভবা, বিশেষতঃ সামিব বাঞ্চন, কিন্ন কৰা থাকিলেই পদিয়া উঠে ।
উহা হইতে বে ছুৰ্গন্ধমন্ন বাষ্পা উপিত হয়,
তাহা আমাদিগের পক্ষে বিববৎ অনিউকারী ৷ তাহার খাণ লইলে, শারীরিক স্বাস্থ্য
সাধনের অতি শীঘু বাতিক্রম ঘটে ৷ অতএব, উহা গৃহ হইতে অবিলম্নে অপসারিত
করা কর্মবা ৷ বিশেষতঃ, পীড়িত বান্ধির
গৃহহ ঐ সকল সামগ্রী ক্ষণ মাত্রও রক্ষাকর।
বিধের মহে ৷

মিখাৰ সহকারে শরীর হইতে যে বিধ-তুল্য অনিউকারী পদার্থ নির্মান্ত হর, রাজি-কাইল কুক লভাদি হইতেও সেই প্রাথ নিঃসূত হইয়া সমীপত্ন সমত বায়ু জুক্তি করে ৷ অতএব, শরন-গৃহহ সঞ্জীব বৃক্ষ ও জলাভিবিক্ত পুষ্প স্থাপিত করা কোন কপেই শ্রেমক্ষর নহে ৷ যে গৃহহ ঐ সমস্ত বস্তু স্থাপিত হর, তাহাতে শরন করিয়া অনকে ব্যক্তি এক রজনীর মধ্যে মৃত্যু-মৃধে পতিত হইরাছে ৷

এতদেশীয় অনেক লোকে প্রস্তাবিত **विषया पात এकिए कृष्टर्म क**विश: शास्क्रम, তাহার তুলনায়, উল্লিখিত সমুদর দোষ সা-মানা দোষ বলিয়া বোধ হয় ৷ ভাঁহার৷ স্বীয় স্বীর শৌচাগার পার্য্যমাণে পরিষ্কু ত রাঝিতে চাহেন না। কোম্পানির লোক তদর্যে তাঁ-হাদিগকে উত্তেজনা করিলে, তাহাকে উৎ-কোচ দিয়া বিদায় কবিয়া দ্লিবেন, এবং আ-প্নারা স্থারিবারে ছংস্কুছুর্গন্ধ সন্থা ক-রয়া থাকিবেন, তথাচ উহার প্রতীকারার্থে বৎ কিঞ্জিৎ ব্যয় অঞ্চীকার করিবেন না ৷ मत्न करत्रम, यथ किलिय छेथरकाङ निया वा-বের লাঘ্ব করিলাম, কিন্তু শৌলাগার-জ-নিত সাংঘাতিক বিধ নিয়ত শরীরস্থ করি-য়া প্রাণ-ধন বিসর্জন দিতেছেন, ইলা ভ্রমেও <sup>9</sup>একবার ভাবেন না। প্রজারা গখন নিজ ভবনে, এবং ভাজপুরুবেরা মধন রাজপ-থের প্রান্তবর্তিনী ফলপ্রবালীতে, উক্তরপ সাংঘাতিক বিধ সঞ্চ করিয়া রাপেন, ত থন যে কলিকাতা একটি প্ৰকৃতৰূপ প্ৰধান নরক হইয়া উঠিবে ইলতে আশ্চর্যাকি 🥍

গৃহের থারু অভ্যন্তর্ভ অনিউকর
পদার্থ ছারা বেমন দূষিত হয়, সমাপত্
অত্বাজ্ঞাকর বস্তু ছারাও সেইকপ হইয়
থাকে ৷ কলিকাভার সর্ব্ধ হানেরই বায়ু দোবাক্রিড, অভএব ভবিষরের রভাক্ত আর কি
লিখিব ? রাজপুরুবেরা অনুকূল হইয়
উলিখিত জলপ্রণালী সমুদায়ের প্রভীকার
না করিলে, মহানাগর কলিকাভা কিজীবিলু
ব্যক্তির বাসবোগ্য হওয়া সন্তব নহে ৷ পলিপ্রামে বাজ্লর চতুর্দ্ধিকে অনেক উলাজ্য
থাকাতে, অপর্যান্ত বিশুদ্ধ বায়ু প্রাপ্ত ইইন্রের উপায় আছে বটে, কিন্তু গৃহের পার্মদেশ অভ্যন্ত অপ্রিক্ষ্ ত করিয়া রাখাতে,
সেই বিশুক্ষ বায়ু অবিশুক্ষ না হইয়া গৃহ
মধ্যে প্রবিক্ত হইতে পায় না ৷ ছার-সঙ্কি-

হিত আবর্জনা-রাশি, ছুর্গন্ধময় কুদ্র জলা-শর, বাঁশ বাসকাদির নিবিড় জঙ্গল ইত্যাদি **অহিত**কারী বস্তু দারা গ্রামস্থ লোকের অতি সুলভ স্থাস্থা লাভের বিলক্ষণ ব্যতিক্রম घटि । शृह मत्या मन मूजानि यठ काकात छ।-বর্জনা উপস্থিত হয়, সমুদাধট বহিষ্ঠার অথবা গুপু বারের সমীপে রাশীকৃত পা-কিয়া গৃহ-বাদীদিগের সতেজ শ্রীরকে নিক্তেজ ও সুস্থ দেহকে অসুস্থ করিতে বাং-কে৷ উলিখিত অপরিষ্ক ত পুক্ষবিনী যে সমরে ও লপুণ হয়, সে সমসে তটস্ক ভৃণাদি ভন্নৰো পৃতিত হুইয়া প্তিতে আরম্ভ হ্যু, এবং জীয়া কালে সেই কল ঘত শ্রূ হয়, ত-তই বিষ-ভূলা বাজ্পরাশি হাহা হলতে নি-প্ত হইয়া চতুদ্ধিকে রেখে ও মালী বিকাশ कतिएक धारक । शृह-भारम त्य कारन नि বিজ অঙ্গল থাকে, তথাকার বায়ু কোন ক-লেওপরিশুয়ক ওপরিশুভাহনন। দেখা-ति यथन शयन कता गांशे. उथनहें अकक्षाता ছ্রাঘ্রে গন্ধ নাদিকারকো প্রবিত্ত হ্টতে ধাকে। বিশেষতঃ, বর্ণাকালে গলিত পঞা-দি গৃচিয়া এমন অহিতকারী হয় যে, বাধ হয়, অনেক স্থান কলিকাতা অপেক্ষাও অ-স্বাস্থ।জনক হউন্না উচ্চে ।

বাস্ত্র ও উরাজ্ঞ: এইরণ অপরিষ্কৃত অবস্থা ধেরেনেগংগতির প্রধান কার্ণই-হার শত শত প্রমানসম্ভার প্রাপ্ত হওব। যার। পুর্বের এডিন্বরা নগরের ভিন ক্রোশ প-শ্চিমে কতক স্থান এপ্রকার অস্বাস্থ্যকর ছিল যে, প্রতি বৎসরই বসস্ত কালে তথাকার কু-যকদিপের কম্প-জ্র হইত। ভাষারা মনে করিত, গরমেশ্বরের বিভ্রনাতেই এই জু-র্ঘটনা ঘটিয়া থাকে। পরে যথন ভথাকার প্ৰবাহ-শূন্য প্ৰীড়াদায়ক জলাশয় সকল শো-**थिए रहेन, मूनियमानुगादत क्र**वि-कार्या मन्त्रीत হ**ইতে লাগিল, গৃহ সমুদায় প্রশন্ত** ও পরি-**क छ रहेल, এवः** हात निश्चात्न एव नकल ছুৰ্গন্ধময় রাশীক্ত আবর্জনা থাকিত ভাষা দুরীক্ত হইল, তথন পূর্বাকার সমুদার রোক তথা হইতে অন্তৰ্হিত হইয়া সে স্থান অভি-শর স্বাস্থ্যকর হইরা উঠিল। এই রূপ নিয়ম অবলয়ন কুরা আবশাক বলিয়া এত কেশীর লোকের বাবং ছালয়য়য়য় ন। হইবে, ভাবর ভালারা প্রমেশ্ব-প্রতিষ্ঠিত শারীরিক নায়ম লজান-জানিত বিবিধ শান্তি ভোগ করিয়া অকানে কাল-গ্রাসে পতিত হইতে ।াকিবেন।

### সত্য-জ্ঞান-সঞ্চারিণী সভা ভ্যানীপুর

हुई वरमत खडी इ इहेल, এই मछ। ध्यामाध्यस औयुक्त वाद श्रीमाथ वरन्त्रा-গাধার দ বারু উমেশচন্দ্র মিত্র প্রভৃতি গায়েক এন উৎসাহী ব্রাহ্ম কর্তৃক নংস্থাপি-ও চইব ১ছ। তাঁছার। ব্রাহ্মবর্মা প্রচার উদ্দে-শে এই সভা সংস্থাপন করিয়া, একান্ত গত্ন ও লাবিচলিত উৎসাহ প্রকাশ পূর্বাক, দেই मञ्जल माथानुमात्त मन्त्रीवन कतिया आ-সিভেছেন: গত ৬ বৈশাখ উহায় বিভীয় 🗆 নায়-স্থিক সভা হইয়া গিয়াছে। সেই সভাতে ত্যীয় সম্পাদক 🕮 যুক্ত বাবু উ-নেশাং মূল নিয়া যে প্রস্তাধ পাঠ করেন ভাহা পশ্যাৎ প্রকৃতিত হুটাতেছে ৷ ভালা পঠে ন-রিচন, প্রফর-বর্গ সত্য-জ্ঞান-সঞ্চরিনীর নভাদিনের যতু, পরিশ্রম, ও অধাবদায়ের দুস্পান্ত পরিচয় প্রাপ্ত ইইবেন।

ভাল আমাদিলের কি আনকেব দিন!

তাল আমাদের বিতায় সামৎসারক সভা।

তাল আমাদের বিতায় সামৎসারক সভা।

তাল আমান মহিমার পরিচয় এই বিশ্ব রূপ

চারাজের সর্বস্থানে প্রাপ্তর পরীর প্রতি

অবিশেশে আশেষ-সুগ্রবিধায়িনী হইয়াছে,
আদ আন্যান সেই পর্যাৎসর পরেয় পুরুষের

প্রতি ভক্তি একা প্রকাশ করিয়, তাঁহার
উপাসনা করিছে একত উপানিয় ইইয়াছি।

চলতে ইহার তুলা মনোহর দৃশ্য আর

কিছুই নাই। সেই রূপানিধান পরমেশ্বের রূপাখলে এই সত্য-জ্ঞান-স্থারিনী সভা

সুইবংসর ব্যাংজ্ঞান-স্থাতিক্রম করিয়া অদ্য

ভতীয় ব্ধনরে পদ্সঞ্জারণ করিয়া অদ্য

এই সভা প্রথম বৎসত্তে বছ বিঘু বার। ব্যাহত হইয়া ভগ্ন হইবার উপক্রম হইয়া-ছিল, কিন্তু প্রমেশ্র-প্রসাদে বিভীয় বৎ- সরে বে সেই সকল ছুর্নিবার্য প্রতিবন্ধক
নিবারণ করিয়া চক্র-কলার নাায় দিন দিন
সুবিদল জ্ঞানালোক বিস্তার করিয়া আসিরাছেন ইহা আমাদের পরম সৌভাগ্যেরবিষয় ৷ প্রথম বৎসরে যাঁহারা এ সভার
শুভকর উদ্দেশ অনুধাবন করিতে না পারিরা, আপনাদের সভাব-সিক্ত বিদেষের বশদদ হইয়া, ইহার সমূলোমূলনার্থে যত্ত্ব করিতে কিছুমাত্র জটি করেন নাই, বিভীয়
বৎসরে যে ভাঁহারা তদনুক্রপ প্রতিকৃগতঃ
প্রকাশ করেন নাই, ইহা অবশ্য শুভ-সূচক
বলিতে হুইবেক ৷

এ সভা কেবল সনাতন ব্রাহ্মধর্মের উল্ল-তি সাধন উদ্দেশে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। य वाङ्कि कमाह व छे दुक्क मुच्छि करत मारे. সে উহার বালুকা-কণাবৎ কৃদ্রবীঞ্চ দৃষ্টি ক্ষিলে ক্থান্ট্ মনে ক্রিটে পারে না যে, ঐ বীক প্রকাণ্ড রুফ কপে পরিণ্ড হইডে পারে। কিন্তু উচার অভান্তরে যে পর্মা-দ্ত শক্তি প্রক্ষর থাকে, সেই শক্তি প্রভা-বে. ঐ বীজ অফুরিত হইয়া, কালক্রমে শার্থা প্রশারা বিস্তার করত, বিস্তৃত স্থান অধিকার করে, এব° প্রচন্ত-রবি-কিরণ-সম্ভপ্ত প্ৰাণীগণকে স্নিষ্ক ক্ষায়া প্ৰদান দ্বারা শীতল ও প্রকৃতিস্থ করে। তজপ ধে সকল মঙ্গুলোৎ পাদক সক্ষপ এই সভার অভ্যস্তরে প্রচ্ছন্ন রহিরছে, সময় সহযোগে যে তাছা শৃভকল উৎপाদন করিবে তাহাতে সলেহ নাই।

ভবানীপুরস্থ তাক্ষসমাজ ত্রাক্ষদিগের উপাসনা স্থান । তৃথার কেবলৈ ঈশরের আরাধনা সম্পর্কীয় স্থোতাদি ভিন্ন অন্য প্র-কার প্রসঞ্জ উপাপন করিবার নিয়ম নাই। সুতরং ভবানীপুরস্থ ত্রাক্ষ মহাশরেরা অ-ভিলাবানুরূপ ত্রাক্ষধর্ম বিস্তার এবং কাম্পানিক ধর্ম সকলের অগীকত্ব প্রদর্শন করিবার সুন্দর উপায় স্থরপ এই সভাকে আক্রয় করিরা স্থায় স্থাভিলায সকল করিতে বস্তুক্ত রহিয়াছেন। এই সভাতে প্রতি রবিবার বৈকালে নিয়মিত ক্রপে পরত্রক্ষের উপাসনা হইয়া থাকে।

বিভীয় বংশরে এ সভাতে যে সমস্ত বিষয়ের অনুষ্ঠান হইয়াছে, ভাহা আপনা- দিগকে অবগত করিবার নিষ্কিত ক্রমানুসা-বে নিবেদন করিতেছি ৷

প্রথমত:। ব্রাক্ষধর্মের পরম পরিশুক্ষ
মধুরময় ভাব সকল অবগত চইরা কভিপ্র
মুবা প্রকা, ভক্তি, ও আগ্রহাতিশর সহকারে
ব্রাক্ষধর্ম গ্রহণ করিয়া মানব জীবনের সাফল্য সাধনের গোপান অবলমন করিয়াচেন।

বিভারত:। বেহালাও কালীবাটস্থ ব্ৰাহ্ম মহোদয়গণ এস্থানে নিয়মিত ৰূপে আ সিয়া উপাসনা করিতে অসমর্থ,এপ্রযুক্ত ডা-হাদিগের নিমিত্তে, এবং তদঞ্চলে ব্রাহ্মণর্ম প্রচারার্থে, এই সভার শাখা স্বৰূপ ছুইটা সভা তত্তৎস্থানে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে ৷ তথ্যধ্যে একটির নাম ' বেহাল। বিত্যক্তানসঞ্চারিণী সভা "। ইহাতে এতি শ্নিবার অপরায়ে ধা ঘটিক, সময়ে নিয়মিত ৰূপে পরত্র-ट्यात सेशानमा ७ (अ.ज शाक्रीमि इडेग) থাকে । এ সভার সত্ত্রে >১ ব্যক্তি কাংপ-নিক পৌশুলিক গ্রম পরিহার পুরুক সনা-তন আক্ষধৰ্মে দী ক্ষত হুইয়াছেন। উক্ত সভার সভা শ্রীযুক্ত বেচারান চটোগাধ্যায় ও এীযুক্ত শ্রীরাম চট্টোগোধ্যায় নামত তাগি-ব্য কড়ক উহার সমস্ত কাষা সদশম হইও। थार्क। ভাষাদিবের আক্ষা ও মত্র হার। তদক্ষলে ব্রাকাশম ক্রমশঃ বিস্তারিত হই-তেছে। আর একটি সভার নাম ' কাণা-ঘাটস্থ ব্ৰাহ্মধৰ্মালোচনা সভা৷ " ইহা थ তি শনিবার সন্ধারে পর 🧿 ঘটার সময়ে আরক হুইয়া ঈশ্বরের উপাসনা ও ব্রাক্তর্ম পাঠ এবং বস্তুতা ইত,ানি কান্য নির্মিত ৰূপে সম্পন্ন হইয়া থাকে! অধাক্ষকর 🕮-যুক্ত প্রদর্মার দেন কর্তৃক ইছার সমস্ত कार्या निकार रहा। भूटकां क जाना महश-দর্দিগের হেত্রপ পরিশ্রম ও যতু, তাহা-র পরিচয় উক্ত সভাষয় কর্তৃক প্রকাশিত इट्रेड्ड १

তৃতীয়তঃ 1 এদেশের সর্বসাধারণ লোকের অন্তঃকরণ অযুক্তি-মূলক পৌরা-ণিক ইতিহাস প্রবণ করিয়া কুত্রিম সংক্ষারে আছের হইয়া রহিয়াছে 1 অলীক সংক্ষার সন্ধল উহাদের মনোভূমিতে এমত দৃঢ় ৰূপ বর্ষসূল হইয়াছে, বেং ভাষা সহক উপারে

অপনীত হইবার নছে। পৃথিবীতে সভাধর্ম নানা প্রকার : পুথিবী সচেতন পদার্থ, ত্রি কোনাকুতি, কুর্ম-পুষ্ঠে স্থিতা, সচেতন সুর্য। ইহাকে বেষ্টন করিতেছে; তিথি বিশেধে দ্রব্য বিশেষ ভোজন করিলে পুত্র হতারে পাতক হয়: মনুষ্য বিশেষের উপাসনা ক-রিলেমুক্তি লাভ হয়; অভিসম্পাত দার। কুল দক্ষ হয়, গ্রহ নক্ষর লোকের প্রতি কু-পিত হইয়া রোগবা ভালুণ ফনা কোন অমঞ্ল উৎপাদন করে, রাজ কেতৃ অসুর-ष्वत हुन स्थारक आम करव. ७३९ आम की লে পৃথিবীর সম্দর পদার্গ খশুচি হয়. পশুপক্ষী ইত্যাদি জীব সমস্ত মনুখোল না'ব কথোপকথন করে এবং ভবিষাদ বিষয় সকল बास्करतः मनूरमातं मृज्यकारण सममृज्याः। निया, कोवटक यम मन्दित बनेशा गांत. राम-**যোর জন্ম ,গ্রহণ** করিব'র পর এই দিবনে রজনী বোজে বিধ'তা পুরুষ মসাত্রের এন ভৃতির আগ্রয় দানা মনুখ্য-লন্টে আগু লিপি বন্ধ করেন, এবসিধ অম্লক ম<sup>া</sup> ক্ষার সকল লোকের স্মন্তঃকরণ এই তে জা-ন্ত্রি না হইলে। দেশের সমধিক উপকার नाधिक करेवात असादना नाके १ (१९४१) छ जमरक जम दलिया छत्त्र मा अद्भा, रहेरे श्री স্থ্য সে ভ্রম বিদ্যাসনে পার্কিটে পারে, এত এব शृत्कांक ভार भक्त अभग्नक हैक मात्र दिन **উদ্বোধনার্থে এসভার ভান্যক মহাশ্রোরা** ক তিপয় প্ৰশুমুদ্রিঃ করিয়াএ হাসশীৰ অবাং भक् म खुली घटवा विष्ठत व कविकाटक व, १३६ खे সকল প্রশের সহুত্র প্রাথ হইলে, ১০০ মন্ত্র পারিতোষিক প্রদানে সম্মত হইখাছেন।

চতুৰ্গতঃ ৷ ভারতবন্ধ লেগনে কি
কারণে বিজ্ঞীর ধর্ম অবলয়ন করে, এই
বিষয়ের একটি প্রকাষ ১৬৪ সাল্পান তত্ত্ব
বোধনী পত্তিকায় প্রকাষ চত্ত্বান্ত হ
ইয়া সাধারণের প্রেটিরতে প্রচায়িত হ
ইয়া সাধারণের প্রেটিরতা প্রকাশ ও তথসংযুক্ত অন্যানা বিষয় এবা ' মাপনার
প্রতি উপদেশ ' নামক পুরক্তিন পুত্তক
সভ্যক্তানস্কারিণী যত্তে প্রক্তিত হ
ইয়া
হানে স্থানে বিতরণ করা ইইয়াছে ৷

পঞ্চমতঃ । ত্রাদ্ধধর্মের বিধরে শনেকর সকলে একার আদ্ধিছিল এই নিমিত্ত, সংস্কাধাবনের, বিশেষতঃ ইংরেজি ভাষার সুনিক্ষিত কৃষ্ণ কিছিলেরের, প্রবোধনার্থে এবংসর কলে পুরস্ক ত্রাদ্ধসমাজ্যের মন্দির ত্রাদ্ধ ধর্মের স্বরূপ বিষয়ে যে করেকটা প্রস্তাব প্রসিত ইইয়াছে, তাহা এই সভঃ ইইতেই অবধারিক ইইয়াছে।

মততঃ । এই সভা বংস্থাপনাবধি এপর্যাত ১২ জন, এবং ইহার শাখা সভাষর ছায়া ১১ জন, সকা সমষ্টি ৫৬ জন পৌরাধিক মত পরিহারপূর্ককৈ জ্ঞান ও আগ্রহাতিশার সত্তরে সনাতন আজ্বর্ণা গ্রহণ করিয়া, এন পুরুষার্থ লাভের প্রথম সোপানে পদ নিজেশ করিয়া, মানব জ্ঞান সাকলা স-জ্পানান করিয়াভেন।

এই সকল মঞ্জ জনক ব্যাগার সম্পন্ন ১৬গাতে অভ্যকরণে এমত বিশ্বাস জ-গ্রিটিটেছ, যেয়ত্ব বারি সেচন ধারা উত্তরে।-তিন এ সভা অন্যের প্রকার উপকারজনক ফল উৎপাদন করিতে থাকিবে। হেপর-মার্ন্ তুমি প্রস্ত্র হইছা এই সভাকে চিয় ক্রিনী কর এই আন্যাদগের বাসনা।"

### বিজ্ঞাপন।

ক্তজ্জার সাহিত স্বীকার করিতেছি যে জ্রু১ জ কালু শামোচিতে দেন মহাশাল প্রতি মাসে
কেনেন সাহেত কৃত "ইলস্টেটেড ফেমেলি
পেপ্ত " নামক মানিক পত্রিকার এক এক শশু
এই সভাগ প্রসান করিতেছেন।

জ্বাক বাবু হাইশ্রেজ নন্দি কর্ত্ক বাজলা ভাশায় অনুবাধিত চাতার দরনেশ এছ, যাহার দ্বা পূর্মের ১॥০ ছিল, এইজন অবধি ভাহা এক টাকা মূল্যে বিজয় করা যাইবেক, যাহার প্র-

যোজন হয় মূল্য প্রেরণ করিলে প্রাপ্ত হইবেন।

বার্ন্দরির রথারোহীদিশের প্রতি উপদেশ। এই পুরুকের মূল্য ৮ দুইন্দানা মারা। মাহার প্র ংয়াকন হয়, মূল্যংপ্রবণ করিলে প্রাপ্ত স্করেন।

### মেদিনীপুরস্থ ব্রাহ্ম সমাজের সায়ৎসরিক আয় ব্যয় বিবরণ

. দান আহাত্ত · · · · · · · · ·	2361970
গভশবের স্থিতি	25 A7 o
-	>> 110i
ব্যস	
	o g
গারকের সেডন ··· ··	<b>€</b> ≥.
জাল্যেক ব্যয়	४॥७/
श्रृदक्षम् ं	311/3°
সেজ কেয়	8120
ঠে,কি ক্রয়	21190
তান প্র। মরামত · · · · ·	<b>b</b> g **
जात्कह साम्रहः 😁	150
· magas som	4. O. S. M. J.
্ হিভি -	24240
	1 2811,74
मान आखित विवह	
জীবু করফে(গোলোকেক্সনারায়ণ রায় ০০৩০	
இद् क राद एसरव स्थाप केवित	÷ @
4.	·· \$2
" शिरुष्ठक (एड	50
े राजगाहात्वव वभू	hen sho
<b>'</b> २.पुमुक्त काम	25
f. Ku v man man and about and	\$
'' अन्तरकाश्चन विक ··· ·	>.
" शाहित्याङ्ग <b>४ हिला</b> धाय	6116
	#11.5
" क्यांत नातास्य भीन …	مائم بن
' লোকনাথ সরস্বতী …	২116
	ž
" यमूनाश मिन्	\$110 .
	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
' मूर्गानादायम् तम् ··· ·	· > > > > - > - > - >
" নীলাম্ব্র নাগ	र <b>ग</b> ् २॥०
" वार्यानसम्बद्धः	
" নবানচক্ত ম্ৰোপাখ্যায়	۶. د د د
" ভোলানাথ ঘোষ …	> M, o
" বিক্ষুচরণ মিত্র	\$10
" হারাণচক্ষ চক্ষোপাধ্যায়	. 10
" দুর্বাস্থিত সাম	
" দুর্গাগতি রায় ···	. 110
	>90111>0

७ आषाइ गति वात मञ्६ >>>। क्लिश्वामः ४>६७।

নত। প্রবেশ নাম হইতে রজারোধিনী নভার প্রতি মতা প্রতি হানে এই পরিকার এক এও ছিনা মূলো প্রাও হয়েন।



ভলের নিতাও জানমনত্ত শিবও সত্ত্রও, নির্ব্যবহেক্ত্রেরাছিড়ীয়াও মুক্তরাপিলকানিরস্থাকীত্রাসকল বিশ্ব সঞ্চলান্ত্রিক মুক্তত্ত্বিভিত

, खिलान् श्री विख्या श्रियकारीकाश्रमक उपुणामनायय।

#### ৰন্ধত্যেত্ৰ

ह नियंगाथ! काथाय वा जूम वि-দামান নাই? কোনুবজাই বা তোমার খ-পার মহিমার সভত সাক্ষা দান না করিছে-ছে? এই প্রত্যক্ষ পরিদুশামান পদার্থ সমুদায তোমার অন্তুত নহিমান এতাদুশ প রিপূর্ণ যে, পূর্বকালীন মনুষ্যাগণ সেই সকজ পদার্থকেই তোমার স্বৰূপ বলিয়া অঞ্চন कतिशाहित्यम, धद९ घटमटक छाडाटमह **अनुवर्डी** इट्रेश अमालि कविट्डाइन । ভূমি তোমার পরম প্রেমাস্পদ বিশ্-ম-ন্দির্কত সুন্দর করিয়াই স্জন করি-রাছ, কিছু বলিতে পারি না। উল্ य किर्म मत्नावत, मीर्घकाल अरशक्तिक কোন অভিনক বস্তু দর্শন করিলেই, তাহা অনুভব করিতে সমাক্ ৰূপে পুষ্ণতরুর প্রথম-বিক্ষিত সুদৃ-मा भून्न (कमन मत्नाइत्र! कल-दूरकत अधम-পরিপক সুখাদ্য কলই বা কেমন সু-न्तर! वर्षाक्षञ्चर थात्रस्य चश्रुकग अति-পুরিত প্রথমোদিত ঘ্লাবলিই বা কেনন **जुश्चिकत! स्य विक्ल-चत्र वनस्य-म**र्माग-মের সুধামর সমাচার স্কাঞে প্রচা-র করে, ভাহা বে কড বধুর, বাবতীয় ভা-नःत वावजीत सूमधुत मचन्यकत हरेलाउ, ভাছা বৰ্ণন করিছে সমর্থ হয় না। তো-मात्र अधिक समझ बन्नारे अहे कथ (नोल्पर्य)-

নর। দল্প বিভট্ এইকপে মণুচ্ছাত প্রিপুণ্

যাহা আনমরা বারবার দশন ও জবিল করি, ভারা অভিমনোহর হইলেও, সভা श्रद्धाक्त वांत्रशा (वाश क्य वा घटाँ), किन्द ভোমার কার্যোর নিরুপম সৌন্দর্যা আয়ায় হৃদের। নিরস্তর যুদ্রিত রহিয়াছে। আনো-র মেন সেই সৌন্দর্যারস পান করিবার নিণিত্ত অধিহত উৎস্কুক ও ব্যাকুল কট-তেছে ৷ হা ৷ আমরা কনাতীর্ণ নগর সংখ্য চির্দিন অবস্থান করিয়। তেমোর মহিমা বিক্ত ছইতেছি। তথানে সকলয় বি-कात । क्वन हे कुछिमछा । ध्यारन मक्ष মৃত্তিকার রুক বভাব নয়নের ভেজ হরণ করিতেছে। জন-পুঞ্জের নীরসধূনি অবগ শক্তি বিকল করিভেছে। শত শত বি-राष भनार्थ विकृष्ट इरेशा घाटनीत्न सकी করিতেছে। জ্ঞানাধ্য কুলিম শোভা ভো-मात्र मुखे युक्तार्क भीनम् । मर्क्तकः। বিশারণ করাইতেছে। এখানে মন ভূঞ হয় এথানে শেচ্ছানুসারে তোমার সাক্ষ'-ৎকার প্রাপ্ত হওয়া যায় না।

যে স্থানে ভোষার রচনা ব্যতিরেকে
আন্য কিছুই প্রতাক হয় না, এবং যে স্থানের কোন বিবরেই মনুবোর আন-জনিত, কপোল-বিগলিত, যেদ-বিক্ সরণ হয় না,
আলার মন সেই স্থানে স্বস্থান করিবার

নিমিত্র প্রতিক্ষণ উৎসুক হইতেছে। জানের সমস্ভ বজাই তোমার কৃশলময় ভাব প্রকাশ করিতেছে, এবং প্রতিনিমেবে তো-মার পরিচয় প্রদান করিয়া ক্লভার্য হইতে-(६) ाक अकि नेदीन शहर शहरार्थ-इ-ন্ম পরিপুরিত ছহিয়াছে। এক একটি প্রস্তু কলল প্রমার্থ ভাবের অভাবনীয় মাধুল প্রচার করিতেছে। এক একটি নিকার রুক্ত পরা**ৎপার পরমার্থ-জ্ঞান বিতর**ণ ক্রিন্ডেটে : পুণচন্দ্রের প্রত্যেক রশ্মি গ-নে সারগুদ্ধ পরমার্থ-পথ প্রদর্শন করিছে-(৮) ১৯ দান বিশ্ব একতান হইয়া মে প-রঃ সুখনয় ব্রহ্মসঞ্চীত গাল করিতেছে, মেহাবলির গভীব গজন ও কঞ্কাবাচের **जग्रहा भक्ष (भड़े प्रक्रीटक्ट्डे अग्रर्गक)** সে সঞ্জীত ভাষণ করিলে, পাণ, ভাপ, শো-ক, ছুংগ সকলই প্লায়িত ও দুরহিত হয়। যথন সংসারানলে সম্ভঞ্জইয়া জ স্তিত-চিত্ত হই, ওপন নগৰ ও রাজধানীর হু-ত্রিম ন্যোভ্য 😘 নগরীয় লোকের কৃত্রিম ব্য-বহার পরিজ্ঞাগ পৃঞ্জক প্রান্তরে, বা পুস্প-কাননে, অথবা দুর্কাদল-প্রিশোভিত ন-দ্বিভাবে প্রস্থান করি, এবং তথায় ভোষার শঙিত দাক্ষাৎ করিয়া, পরম পরিতোধ প্রাপ্ত ম্ইয়া, একবারে চরিভার্থ ম্ইয়া ধাই 1 সে-খাবে আমার মন আপনা হ্ইতেই কহিতে থাকে, প্রভাক শ্যামল পত্র **পরমেশ্বরের** মহিমায় গারিশোভিত, এবং প্রতোক অযু-করা পরমার্থ-রূপে পরিপুরিত। হেপ্রে-মাক্র পরমেশ্র! ভুমি এই মনোহর বি-কের ভ্রম্বটা বলিয়া, তোমার **প্রেমে মগ্র হই**। এ জগৎ তোমার সৃষ্ট বলিয়া, ই**হাকে মনের** সহিত প্রীতি করি। হে হৃদয়েশর! সমগ্র বিশ্ব ভোমার গুণের পরিচয় দিয়া কুতার্থ হ-ইতেছে; অতএব, আমিও যেন সেই রমণীয় ক্রের অধিকার হইতে প্রচাত না হই।

## ধর্মনীতি

১৪৩ সংখ্যক পরিকার ৩৬ পৃষ্ঠার পর

তৃতীয়ত: ৷ কাহারও সহিত বন্ধুত্ব-হুৱে বন্ধ হইতে হুইলে, সে সমুদ্রে কিন্দুপ আচরণ করিতে হয়, এবং বন্ধ হইবার পরেই বা ভাঁহার প্রতি কিন্ধুপ বাবহার করিতে হয়, পূর্বা মাসের পত্রিকার এই ছুই নিবরের সংক্ষিপ্ত রুপ্তান্ত লিখিত হইরাছে !
এক্ষণে, বন্ধুত্ব-ঘটিত চরম ক্রিয়ার বিষয় অতিসংক্ষেপে নিদ্দেশ করা ঘাইতেছে !

সংপাত্তে প্রণয় সংস্থাপন করিলে, ক শ্মিন্কালে সে প্রণয়ের বিচ্ছেদ হওয়া সম্ভব बट्टा याँहाता **भूक-निर्कित** পविज निस्नान् मादत প्रकात वक्षात्र-खण व्यवसम् करतम, তাঁহাদের মধ্যে একজনের অস্তিম দশা উ-পস্থিত না হইলে, তদীয় বন্ধুদ্বেরও অস্থিম দশা উপস্থিত হয় না৷ কিন্তু ছুর্ভাগ্যের বিষর এই যে, মিত্র পরিগ্রহ সময়ে যিনি ৰত বিবেচনা করুন না কেন, ও যত সাব-ধান হউন না কেন, লক্ষণাক্রান্ত সজ্জন मिख निर्वाष्ठ कतिया लख्या मूलिकेन कर्य। অবনিমণ্ডলে জান-পবিত্র সুচরিত্র মিজ সদৃশ সুতুর্ভ পদার্থ আর কিছুই নাই। আমর৷ এক সমরে ঘাঁহাকে নিভান্ত নিছ-लक्ष जानिशा मुक्त् विता शहर कतिशाहि, খনা সমধে তাঁহার এমন কলক প্রকাশিত হইরা পড়ে যে, তাঁহার সহিত সৌজ্বা রাখি-বার আর পথ পাকে না। যদিও চিনি কোন গুরুতর দৃষ্ট দোবে দুবিত নাখ্ন, তথাচ এৰপ সন্দিন্ধ, সারলাগীন, ও কোপন-স্বভাব হইতে পারেন যে, ভাঁহার প্রণয়-পাত্র ও বিশাস-ভাজন ইওয়া একেবারে অসম্ভব হ-ইয়া উঠে। অতএব, ধাঁহার। পরস্পরের গুণাগুণ বুঝিতে অসমর্থ হইয়া বন্ধুত্ব-বন্ধনে वक रन, कान ना कान कारल छाहारमञ সেই বন্ধন একবারেই ছিন্ন হওয়া সম্ভব ৷ যদি ভাগ্য-দোষ বশতঃ এতাদৃশ নিদারুণ খ-हेना निकास है यहिशा छेळे, ज्थान काहानि-গের বন্ধুত্ব ঘটিত কর্ত্তব্য কর্ম সাধনের স-মাপ্তি হয় না। আমরা জন্মাব্ধি কৃতিমন্ কালে যাহার মুখাবলোকন করি নাই, আর যাহার সহিত সহবাস ও সদালাপ করিয়া পুলকিত চিত্তে কিয়ৎকাল অভিপাত ক-त्रिशाहि, এই উভয়ই आमारमत नमान य-জুর পাত্র বা সমান অব্যার বিষয় বলিয়া कथनरे भग रूरेटक शास्त्र मा। यहिछ जे

भ्यां मुक्त यहां मेश आभारत प्रहिठ নিতান্ত নার-বিরুদ্ধ ব্যবহার করিয়া আ-মাদিগের অনুরাগ লাভের একান্তই অযো-গ্য হন. তথাচ তিনি সন্তাবের সময়ে বিশাস করিয়া আমাদিগকে বে কোন গোপনীয় বি-ষর অবগত করিয়াছিলেন, সেই সদ্ভাবের অসদ্যাব হইলেও, তাহা কদাচ ব্যক্ত করা উচিত নহে। যে সমগে কাহারও সহিত সৌক্ষা থাকে, সে সম্য়ে তিনি আপনার मत्नत कवा छे प्रचा छैन कतिया । आभारमत নিকট এতাদৃশ ৰুছ বিষয় প্রকাশ করিতে शाद्वम. (ध, जाहा ता क इंहेटल, काहात अ-ৰেণ অনবৰ্ণর উৎপত্তি হইকে পারে । যদি ভাহার উক্তরপ অনুর্গণাত অথবা কিছু মাত্র অনিষ্ট ঘটনার সম্ভাবন। নাও থাকে, ত্রাচ ব্যুন আমবা ভাঁহার নিকট স্থাকার ক্রিন্ট্ছি, ভাষুক বিষয় অপ্রকাশ রাখিব, ভখন ভাষা প্রাণসভের প্রকাশ করা বিধেয় নহে ৷ খণি ভাহার সমীপে উক্তৰণ বাচ-নিক অঞ্চাকার নাই করিয়া থাকি, তথাচ মাত্র সভিত প্রণয়-পালে বন্ধ থাকিতে হয়, ভাষার নিকট উক্তৰপ অঞ্চীকার করা প্র-থমাব্রিই সিদ্ধ হুইয়া থাকে। বন্ধুজনের গুঞ্বিষয় ব্যক্ত করা বিহিত ময়, ইহা বন্ধু-ত্ব বন্ধন বিষয়ক এক প্রধান নিয়ন বলিয়া নিনিষ্ট আছে। অতএব, তিনি সদ্ভাব সত্তে বিশ্বাস করিয়া সংগোপনে যে বিষয় জামা-দিগকে অবগত করিয়াছেন, সম্ভাবের অস-দ্ধার হইলেও, ভাহা চির কালই হৃদয় মধ্যে যত্ন পূর্বক নিহিত রাখা বিধেয়।

প্রায় সকল বিধিরই ভুল বিশেষে সংলাচ করিতে হয় ৷ সৌজ্নের বিজেন হই-লেও, সুজ্জ্জনের গুড় বিষয় প্রকাশ করা নিতান্ত নিবিদ্ধ তাহার সন্দেহ নাই, কিন্তু একটি ভ্লে উহা নিবিদ্ধ বলির। উলেই করা বায় না ৷ যদি তিনি দ্বে-পরবশ হইয়া, মিথ্যাপবাদ দিয়া, আমাদের নির্দোষ চরিত্রকে দূষিত বলিরা প্রচার করিতে প্রস্তুত্ত হন, আর তাহার পূর্মাক্ষিত কোন গোপনীয় বিষয় বাজ্ক না করিলে, সে দোবের উদ্ধার হইবার সন্তাবনা না বাকে, তাহা হইলে, সেবিষয় প্রকাশ করা করাচ জবৈষ

বলিয়া অক্সীকার করা যায় না। তিনি য-ধন অনর্থক অপনাদ দিয়া আমাদের অ-কলব্লিড চরিত্রকে কলব্লিডবৎ প্রতীয়ধান করিতে উদ্যত হইলেন, তথন বলিতে হ-ইবে, আমরা যে ভাঁহার পূর্ব্ব-ক্ষিত ঔপ্ত বিষয় গোপন রাখিব, তিনি আর এব্বপ প্র-ভাাশা করেন না।

এতাদৃশ সুক্তেদ সমধিক যন্ত্রণার বি-यश। किन्दु अरमरकत वक्षु हेहा अर्थ-कात इसी ७ मूर्यकत इहेता धारक। जी-वनाम् वाण्टित्रदक् छाहारमत् रत्रोक्ष्मा-ভाद्यत कम्छ इत्र मा। भूक्ष्माभानी छेख्य মিত্রের মধ্যে এক জন যদি ভূর্বিপাক বশতঃ প্রাণত্যাগ করেন, ভাহা হইলে, খন্য ক্সন ত-খনও একেবারে নিন্ধতি পাইতে পারেন না, এবং নিক্তি পাইতে বাসনাও করেন ন। তিনি নিজ নিজের মৃত শরীরোপরি অঞ্জল ব্যণ করিলেও, সে জলে তাঁহার হৃদয়-স্থিত প্রীতির চিহু প্রকালিত হয় না। তিনি ৰন্ধার দেহ দীপ্র চিতায় দয়া হইতে দেখিলেও, সে বন্ধুর কথনে। মৃথ মনোহর মুর্জি তাহার চিত্তপট হইতে অপনীত হয় ন। জিনি অতি ছঃসহ শোক-সন্থাপে সন্তুপ্ত হইলেও, তাঁহার অন্তঃকরণের প্রেমের অঙ্কর क्नार पश्च रहेशा खर्चा इक रहा गा। वस्तु नाम. বন্ধুর যশ, ও বন্ধুর পার্ডান তথনও জা-হার প্রীতি ও ঙ্গেছ অধিকার কবিরা খাকে। তিনি মৃত বন্ধুর পার্বার ও দেশান্তর নি-বাসী অক্তাত-কুল-শীল বাক্তির পরিবার এই উভয়ের প্রতি কদাচ সমান ভাব প্র-কাশ করিতে পারেন নাঃ তিনি অপরি চিত ব্যক্তির ছ্রবস্থার বিষয় শুণিয়া যেমন উদাসীন থাকেন, মৃত বন্ধুর সন্তানের বি-পৎ পত্তবের সমাচার শুণিরা সেরুপ উদা **শীন খাকিতে** কদাচ সমৰ্থ হন না ৷ মৃত বস্কু-কে করণ রাখা, ভাঁহার সদ্ওণ সমূহ কী-র্ত্তন করিয়া ভদীর যশঃশশধর বিমল রাখি-তে চেষ্টা পাওয়া, এবং ভাছার পরিজ্ঞন বর্ণের প্রতি অনুরক্ত থাকিয়াঁ তাহাদের প্রতি সৌজনা ও কারুণ-ভাব প্রকাশ কর: नर्बरणां चारव विरथमा

### চরিতদশীর কথিত উপাখ্যান।

"লোকে মান্য হত বলে কি কথী পেচেছ"

অয়ক পল্লির মুখোপাধ্যায় বস্তু দিব্দের পর গৃহ প্রত্যাগমন করিয়াছেন राश्चित्र!, धाना कुड़े, मित्र म इडेल, फाँहात न-হিত সাক্ষাৎ করিতে গিয়াছিলাম ৷ প্রাণন লোকের মন্ত্রার ও আপনিও বিলক্ষ-ণ ক্রড়ী। বিংশতি বৎসর ব্যুদ্র বিষয়-কালে প্রবৃদ্ধ হইয়াছেন, আর এখন প্রায় চলিশ বংসর ব্যাক্ষম হইল, ইয়ার মধ্যে এক দিবসের মিমিজেও পদচাত হন নাই। বিস্তর অর্থ উপাজনি করিয়াছেন; কিন্ত যেমন সায় তেমনি ব্যয়। দাতা, ভোক্তা, मयानिकः, नर्वतिरागेषे উত্তম। मुख्यस्ख भु-ক্লব। দোল জুগোঁৎস্বাদি নিতা বৈমি-ত্তিক ক্রিয়। ক্লাপের বাধ নাই। ক্রি-লাৰাৰ ধৰাতা লে'কেৱ **মধ্যে গ**ণা ছইব এই প্রাস্থান। করিয়াই চিরকাল *চলি*য়াছেন। বাস্তবিক, প্রামের মধ্যে কেছ্ট ভাঁচাকে ছাতিক্রম ক্রিয়া ক্রিয়া ক্রিভে সমর্থ হয় बाह । खाक्क शर्व यथेब के हातू क्वरब हुआ, চোহা, লেছ, পেয় বিবিধ সামগ্রী ভোজন কৰিয়া, ভোজনাবশিষ্ট মিষ্টাল সমুদ্য হল্পে লইয়া, 'মুখোপাধারে মহাশয়ের শ্রীরুদ্ধি ই-উক' বলিয়া প্রস্থান করে, তথন ভাঁহার पाक्कारणद जात शतिशीमा शास्क ना 1 এইক্রেপ উপার্ফিত অর্থ অপেক্ষা অধিক-তর বাগু হওয়াতে, সংপ্রতি লায়গ্রস্ত হইয়া প্তিয়াছেন। কথাস্থানে কিঞ্ছিৎ ভূমি-স-म्लांड चारह, जाहारे वस्तक निशा कित्रथ দিবস মান সম্ভম বৃক্ষা করিয়া আসিরাছেন। ভাষার যে বেকন নিক্ষিত আছে, সুদপ-বিশোধ করিতেই, তাহার সমুদায়াংশ নিঃ-শেষিত হয়। যে কিছু ঔপাধিক আর আছে, তাহাতে বাসার বার নির্বাহ হওরাও সুক্তিম ৷ ওণিতে পাই, তথায় ছুই বে-লায় সানসংখ্যা শভাষিক পাত পাতিত হ-हेश शादका छडिन, जादमान, अदमान, वाजा, मरहारमय थार्च खाँकिनिवरे चारह। চিবকাল অকাডবে ব্যন্ত বাসন করিয়া আ-

निवादबन: अधन चात्र क्षांत्र करशह चन्नी-কার করিতে পারেম না । রুভরাং প্রতি मार्गरे सुख्य नृष्य सन खर्न मा क्रिया निखात भान ना । नवानिराम मर्था (कह কেং কছেন, 'বিদি উল্লিখিত ভুসম্পত্তির কিয়দংশ বিক্রয় করিয়া ঋণ পরিশোধ করি-ट्टन, ও निजा निमिल्कि वारात किश्चि-ৎ লাখন করিয়া চলিতেন, তবে অক্লে-শেই খণ-পাশ হইতে মুক্ত হইয়া স্বচ্ছন হইতে পারিতেন। " কিন্তু তাছা হইলে, স স্তুমের সাঘ্য হয়। একথা একবার ভাঁহার নিকট প্রস্তাবিত হইরাছিল, তাহাতে, তি-নি কৃছিয়াছিলেন, "বিজ্ঞান করিতে হই-त्तरे अविवयं प्रस्तादकतं मुर्गाहत रहेद्व, किंख लाक मभीट्य निर्वत रामशा श्रीवृद्धि र व्हेबात कार्यका गानी वास्क्रित ज्ञानादमत বিব্যু আরু কিছুই নাই ৷ অত্তব্যু বিজ্ঞা करा विक्थि हर ना। " याहा इन्हेक, एश्वर ে পথ একৰাৱেই **ৰুদ্ধ** হইৱাছে 1 নিজ ব:-টিতে এক বংসরাবধি কপদ্দিক মাত্রও প্রে: রণ করিতে না পারাতে, এখানে সমূহ আ প্রতাউপস্থিত। ঐ এক বংসর পরিজন-দিগের আহার ব্যবহার ও নিত্য নৈমিত্তিক ক্রিয়া কাও সমুদায়ই ঋণ করিয়া নির্বাছিত করিতে হইয়াছে। কিন্তু এবংপ আরু ম-ভূম রক্ষা করা সম্ভব পায় না দেখিয়া, এবং মহাজন গণ কর্তৃক বারম্বার উত্তেজিত হ-ইরা, রাজকোষ হইতে কর সহস্র মুদ্রা গ্র-रुग भूकीक छारात कित्रमः भ निक वाष्टीत्छ व्यत्र कतिरानन, धवर कित्रमः महाक-লিকাভার অহিকেণ ক্রম করিয়া চীন-রাজ্যে भागिहेश फिटलन। निटब बक खनात्र क्लायाशक, मुख्दाः (म ममदा चाक्रामह वाक्रकार हरेट अधिनावानुक्त अर्थ अ-হণ করিতে সমর্থ হইয়াছেন। কিন্তু এখন विषय विखाउँ छेशिष्ट । अहिरकव वाद-সারে কত শত জন হত-সর্বায় হইয়াছে; रेबिअ, व्यविष्ठिहि, कोहारमत्हे मर्या श्रेग हरेलन । हेर्रात के वावनारत क्षम जल-চর হইয়াছে যে, তাহার আর প্রতীকার হ-हेवात छेभात्र नाहे। अम्रिक अहे विशक्ति. अम्बद्ध जानदकारमञ्जू माणाज आहाज हरे-

বার উপক্রম হইরা উঠিয়াছে ৷ কিন্তু ব্রথোপাধ্যায় মহানম সুচভুর ও কর্ম-কুশল;
উক্ত বিষয় প্রকাশ হইবার পূর্ম লক্ষণ দেবিয়া, পিতাঠাকুর তীরস্থা বালি৷ অবিয়াক্রের নিকট বিদার লইয়া বালি৷ আসিয়াচেন ৷

তিনি এইৰপ বিপদ্গান্ত শ্নিয়া আমি ভাঁচার সহিত সাকাৎ করিতে গিরাছিলাম। কিন্ত ভাঁচার ভাব ভব্তি দর্শন করিলে, কে कृष्टिक भारत. शैनि विश्रम् अन्त रहेता हिन ? দেখিলাম, সৌরভ-সংযুক্ত সুচিক্কণ-বস্ত্র-প বিহিত, সহচর ও প্রতিবেশীগণে পরিবে-ষ্টিত, এবং অশেষ-কর্মকারী পরিচারক স-মুহ দ্বারা পরিসেবিত কইয়া বল্ল-মূল্য উ**eकुछ बाउ**त्रा डेलविके तहिसाहहर। লক্ষী জনার্দ্দের প্রমান ভোগ এবং সত্য माबायर्गन भी निमित्रात भहाममा इरेट्डर्इ, এবং রথমাত্রার উদ্যোগার্থে লোকজন ও साम मानी गर्न बालाममल इहेता है 5-স্ততঃ ধাৰমান হইতেছে। মুখোপাধায় মহাশ্র আমাকে যথেষ্ট সমাদর করিয়া ু আপুনার দক্ষিণ পার্মে উপবেশন করাই-লেন। পরস্পর নমস্কার, আলিঞ্ন, কু-শল-জিজ্ঞাসা, এবং মিন্টালাপ ও শিটা-চার সম্পন্ন হউলে পর, আমাকে সংঘা-ধন করিয়া কহিলেন, " বৈবাহিক! 🤏 নিলাম, গ্রামের পশ্চিম প্রামেধন প্রা-মাণিকের দরুণ ৫০০ বিঘা উৎকৃট ভূমি. এবং দক্ষিণ প্রাক্তে কবিরাজদিগের দরুণ ভিন খাৰু অভিবৃহৎ আত্ৰ-বাগিচা, বিক্ৰেয় ষ্ণাছে। স্থার ঘোষেরাও নাকি নিজবাটীর সমাধবতী সমুদর রায়তি-ভূমি পুন্ধরিণী সম্বাদত বিজেয় করিবে ৷ আপনি অনুগ্রহ क्रिया यमि এবিষয়ের তত্ত্বানুসন্ধান করেন, তত্ত্বে ৰথেষ্ট উপকার হয়। হয় যদি তো, अक्रमाद्वर कथा थाउँ। ও मुना निर्धार्थ। क्रि য়া আসিকেন ৷ আর শীলামের সময়ে আমাকে একবার কালেক্টরিতে গমন করি-তে হইবে। যদি আপনার স্বাবকাশ থাকে, ক্সই বৈৰাহিকে একজেই যাত্ৰা করিব।

এই সমস্ত অসক্ষত কথা আৰু করিয়া বিক্ষরণের হইলাম ৷ আমি তাহাকে মৌ- शिक कहिलाय, এवियद्वतः अवनाहे छात्रान-मञ्चान कत्रिव, धदश दाश अवशादिक इत्, সপ্তাহ মধ্যেই অবগত করিব ৷ কিন্ত মনে गत्न विविष्ठमा क्रिक्टि नाशिनाम, हेर्हात সর্ববান্ত হইবার পূর্বাবস্থা হইয়াছে 1 কোনু দিন ২ত হইয়া কারারুদ্ধ হইবেন তা-हात निकास नाही। किছू पिन शहर हिन-পাত হওয়া সুকঠিন হইবে! অথচ কি প্রত্যাশায় এই সমস্ত আকাশভেদী শভিপা য় প্রকটন করিলেন, কিছু বুঝিতে পারিনা ৷ कलङः, विरमय विरवहमा कविया राजिस्त, তিনি অক্তন্মনেও সহজ শ্রীরে আছে-न धमन (वाथ हरा मा। त्य कथा भूष्ठ ऋत्त्र हे লেখ করা উচিত, তাহা মত্ম প্রকাক উদ্ধৈংম-রে কহিতেছেন। যে স্থলে সহজ ভাবে ঈ-বদ্হাস্করা উচিত, সে স্থাল উৎকট ভাবে অটুট্ট হাস্য করিছেছেন। যে সময়ে যে বিষয় উল্লেখ করিবার কিছু মাত্র প্রয়ে জন নাই, সে সময়ে সেই অপ্রাক্রণিক বি ষয় উপস্থিত করিয়া পারিষদবর্গকে বিশ্ব-য়াপন করিতেছেন। কখন কখন যথম বস্থু বান্ধবের। কোন মনোরঞ্জন উপাথ্যান উত্থাপন করিয়া হাস্য পরিহাস করিতেছে, তিনি তথন ললাটের চর্ম কুঞ্জিত করিয়া, অন্যানক হইয়া, অন্য বিষয়ের চিস্তন করি তেছেন। আমি এই সমস্ত বিধয় বিশে-वबार्श नित्रिकन कतिया, छथा इहेटछ क्षान्त পূর্বক, ভবনাভিমুখে আগমন করিছেছি. পণ মধ্যে দিংহদিগের দিংহদার সহীপে দুক্তি করিলাম, রাম**সুন্দ**র ভায়া ছত্তা মাথায় মসত্র বেগে আগমন করিতেছেন। আ-यादक दश्याहा क्षेत्र कामा कतिहा। क्रिटलन. এই যে ঘোষাল দাদা। অনেক দিবলের পর সার্কাৎ হইল; একটা কথা জিজাসা আছে ৷ ভোমার বৈবাছিকের ভবনে নাকি রথযাতার বড়ধ্ম ? আমি তাঁহার মূখের ভঙ্গীতে অন্তরের ভাব বুঝিতে পারিয়া চিন্তা করিলাস, রামসুন্দরের অগোচর কি-ছুই নাই। আর ইহার নিকট গোপন कतिताहे वा कन कि? अहे विद्वहमा क-तिशा कहिलाम, छाहे, जामहेरका मद 1 यात (य द्रीक, मात्र कमाठिय। (क्वन तथ-

যাত্ৰা মহে ৷ আৰার সংপ্রতি বিষয় বুদ্ধি করিবেন বলিয়া আমাকে কতক গুলি বি-ক্রের ভূমির ভত্ত্বানুসন্ধান করিতে অনুরো-थ क्রिलেন। এই कथा अभिशा রামসুন্দর कहिएक नाशिरमञ्ज, श्वायांम मामा ! क्वरन ভোনাকে নছে, এখন উনি সকলকেই এই-ৰূপ তত্তানুসন্ধান করিবার নিমিত্ত অনু-রোধ করেন ৷ ইহার কিছু নিগৃড় ভাৎপর্যা আছে প্রবণ কর। 'এদিকে অদ্য ভক্ষ্য ध्यु र्श्वन ' इड्डात श्रुव्यक्तक ब्रेशाट्ड, अभिरक দেখ, সহাজন গণ অত্যস্ত উত্তেজিত হইয়া উঠিয়াছে, বিষয় বিভব দুরে থাকুক, বাস-गृह भर्यास विकीठ इहेवात उभक्तम इहेश উঠিতেছে, এখনও জনসনাজে সম্ভূম র-কার নিমিত্ত সধত্ব হইয়া, ভূসম্পত্তি বৃদ্ধি করিব বলিয়া, সকলের সমীপে পরিচয় দি তেছেন। অনেকেই একথা আছ করেন:। যাহারা প্রত্যয় যায়, তাহারা উহাঁকে র'জ-কোষাপহারক বলিরা স্কির করিয়াছে ৷ ব-খন উহার ফুতন নিকেতন প্রস্ত হয় তথ-ন কহিয়াছিলাম, "মুখোপাধ্যায় ভায়া! সর্ব বিষয়ে ব্যয় সক্ষোচ করিয়া কিছু সঞ্চয় করি-বার হেন্টা পাও। বাসগৃহের এতাদুশ পরি-পাটিই বা কেন? অন্তঃপুরের প্রকোঠ সমুদায় এৰূপ প্ৰশস্ত করিবারই বা প্রয়ো-জন কি? **আহার বাবহার** পরিচ্ছদাদিরই বা এত বাহুলা কি নিমিত্ত? গৃহস্থ লো-কের দাস দাসী লোক জনেরই বা এত আধিকা কি জনা? আমি ভাইাকে সু-इत् भाविता या हिलाभाषा मिलान. তিনি তাহার একটি কথারও কণ্ণাত ক-রিলেন না৷ এখন তালার সমূচিত থা-তিফল ভোগ করিতেছেন। "

রামসুক্ষর ভারার নিকট এই সমস্ত জ্ঞাবণ করিয়া একেবারে হতজ্ঞান হইলান।
মনুষ্যেরা জ্ঞাপন দোবে জনর্থক ক্ষেশ পার
ইহা বিলক্ষণ বুঝিতে পারিলাম, এবং লোকের টরিত্র চিন্তুন করিতে করিতে নিজ
নিকেতনে প্রভ্যাগ্যন করিছাম ৷ মুবোপাধাার যেমন বায়খীল, রামসুক্ষর তেমনি
বারাকুও ৷ ভারার পরিক্ষে দেখিলে কে
কহিতে পারে, ইনি এক জন সার সক্ষান

गनुषा? विलक्ष त्रक्रकिशन, व्यवह क-चिन् काल चुन वरे स्का वज्र शतिशान क-त्व ना, अशक्ष वह उदक्ष रह फक्ष করেন না, এবং কদাচ ভূতা অথবা অন্য-ৰূপ পরিচারক রাগিবার প্রদক্ষও করেন না৷ ক্রয়, বিক্রয়, দ্রব্য বহনাদি সমুদায় कर्ष्यरे चुरार मध्यम करत्व, এदर मस्राब-গণকেও সেই সমস্ত সুচারুকপে শিক্ষা দিয়া शांकन। शांना शतिरधन्न क्या कविवान न-मरस फरवात कुषार्थन विरवहना करतन नाः, যে বস্তু সর্বাপেকা অস্মুল্য তাহাই ক্রয় করিবার নিমিত্ত সকল আপণ পর্যাটন ক-রে**ন৷** গুরুমহাশর নিযুক্ত করি**বার** স-ময়ে ভাহার বিদ্যার বিষয় বিচার করেন না; যে ব্যক্তি সর্বাপেক। অপ্প বেতন স্বীকার করে, ভাগাকেই সুপগুত বিবেচনা করিয়া সম্ভট মনে নিযুক্ত করেন।

রামসুক্র ও মুখোপাধায় উভয়েই উভয়কে ঘূণা করেন। মুধেশিপাধ্যার রা-পাধ্যায়কে অতিব্যয়শীল বলিয়া প**ংখ ঘাটে** সর্বত্র সকলের সমীপে নিন্দা করিয়া থা-কেনঃ ভাষাদের উভয়ের ধে ৰূপ চরিত বৰ্ণিত হইল, এতদ্ধেশে অনেক ৰাজ্ঞিরই সেইৰূপ। ভাঁহারা তুইজন সেই সকল ব্যক্তির আদর্শ স্বাপ বলিয়া উল্লিখিত হইতে পারে-ন ৷ অবনিমণ্ডলের অধিক লোকেই উক্ত-ৰূপ দ্বিবিধ সম্প্ৰায়ে বিভক্ত হইতে, পাৱে। তাঁহাদের অন্যান্য বিষয়ে যত বিভিন্নতা থা-कुक, निर्धन श्रेवात छत्र ७ धनाएन 'श्रेवात প্রত্যাশা উভয় সম্প্রদারেরই অভিশয় প্র-এक अण्लां मात्र मात्रिक मगारक **च**-তিমাত হুঃখ-ছেতু জানিয়া ভাছার প্রতি-বিধানার্থ চির জীবনই সঞ্চয় করিতে প্রবুত্ত থাকে, অন্য সম্পূদার ঐ দশাকে অভিশয় धानस्मानक विद्यानन कतिता यज्ञश्रुक्तक অপ্রকাশ রাখিতে চেষ্টা পার ৷ **এক সম্প্র** দায় উত্তর কালে যোত্রহীন হইবার আশঙ্কার স-তত সঙ্কিত। অন্য সম্পূদায় বর্ত্তমামে বো-অহীন বলিয়া পরিচিত হইবার **ভরে নির্ভ**-ই চিন্তিত। এক সম্পুদার, উত্তর কালে দীনতাবস্থার উৎপত্তি হইবার শঙ্কার, বর্ত্ত-

নানে দীনতা-সম্ভব সমুদদ্ধ ক্লেশই ভোগ कारत । अन्य जन्म नाम, वर्षमादम नित्रक विला विधाण हरेवात आगकास, छेखत-কাল-সম্ভাবিত দরিদ্র-দশায় অভিসত্তর প্র-বেশ করিতে থাকে। এক সম্প দায় উত্তর কালের ক্লেশ ঘটনার প্রতিবিধানার্থ পরি-জন বর্গের কন্টসাধন ও নিয়মাতিরিক্ত বৃদ্ধি-कीविका अवलयन धक्छ अमञ्जासित अ-नुष्ठीन करता अना मन्त्री मात्र अमनुम नि-वात्रं, मञ्जूम वर्षन, ও हेस्मिरशानाङ्ग जञ्जानन छेटकरम व्यत्मवर्वित लाकत्रश्चन বিষয়ে অভিবিক্ত অনর্থক ব্যয় করিয়া ঋ-ণগ্রস্ত ও ব্যতিবাস্ত হয়। শাঁহারা পূর্ব্ব ব-ৎসর পিড়-কুতো বামাতৃ-**আছে সর্ববান্ত** করিয়া পর বৎসর ঋণের দায়ে কারারুদ্ধ হন, ভাঁহারা ঐ শেষোক্ত সম্পূদায়ের গণনীয় লোক। মাঁহারা পূর্বে নিশায় তনয়ের বিবা-্ব হে হস্ত গভ সমস্ত অর্থ ধৃংস করিয়া পরদিন প্রাতে বাঙ্গগৃহ নাস্ত করিবার নিনিত্ত ব্যা-कूल इस, छाँहाता जे ब्लिट्सा क मन्ने माद्यत পূজনীয় লোক ৷ খাঁহারা ইঞ্জিয়-লাল দার ু তৃত্যি সাধনের জন্য সপ্ত-পুরুষ-সঞ্চিত প্রচুর সাপ্রত্তি এক রঙ্গনীতে বিন্ত করেন, তা-হারা ঐ শেষোক্ত সম্পূদায়ের সর্ব-প্রধান লোক ৷

সমধিক অর্থাগম না হইলে, স্বেচ্ছানু-গত অতিরিক্ত ব্যয় করা সম্ভব হয় না. এ-निमित्र, अप्तरक अकित्रक निर्धन लाकिक्श-কে ঘৎপরোনান্তি নিগ্রহ করিয়া প্রচুর অ-र्थ इन्नर करत्न, अनामित्क नथन लाटकत মনোরঞ্জনার্থ, ও তাহাদিগের নিকট খ্যাতি লাভার্থ, অনেক প্রকার অনর্থক বিষয়ে সেই অর্থ অফ্লেশেই ব্যয় করিয়া থাকেন। অনেকে আত্ম কর্ত্তক নিগৃহীত প্রজার উ-চতর আর্ত্তনাদ পুনংপুনং প্রবণ করিয়াও তাহাতে কর্ণপাত ক্রেন না, অথচ তাহা-**(मत्रेड)** भागिक-विन्छ अन्तर मक्षिक धन इत-ণ পূর্বাক অকাতরে অপাত্তে নিকেপ করি-তে থাকেন ৷ তাঁহাদের অসকত যশো-বাসনা ও সম্ভবাতীত প্ৰমোদ-স্পৃহাই এৰণ विधि-विक्रक वावहादतत भूगीकृष्ट। लारकत्र मध्य जातक वाल्कि शतिकत च- গকে সম্বংসর কট দিয়াও যে নির্দ্ধিত স-ময়ে বন্ধ-বায়-সাধ্য অনাবশ্যক উৎসব-কন্দে প্রায়ন্ত হন, ঐ ফুই প্রবল বাসনা ভাষার ব-লবৎ কারণ ভাষার সন্দেহ যাই।

পুর্বোলিখিত উভর সম্প দায়ের উভর প্র-কার আচরণের এক প্রকারও যুক্তিসিদ্ধ নতে কুপণ্ডা বেমন দোষ, অতিবায়শীলতা তা-হার অপেক্ষা অধিক বই অস্প দোষ নচে। যে পথ এই উভয়ের মধ্যবন্তী, তাহাই স ৎপথ জানিবে। যাহাতে আমরা গর-মেশরের নিয়মানুদারে নিয়মিত ৰূপ আ-হার ব্যবহার করিয়া সুখ স্বজনেদ জীবন-যাত্র। নির্বাহ করিতে পানি, ন্যারানুগত চেষ্টা ছার। ভাহার উপায় কর। কর্ত্তব্যা সাধা সত্ত্বে ভাহতে ত্টি কৰা উভিত নচে ৷ কিন্তু আপনার আয় ব্যয় ভিডি বিবেচন: ন। করিয়া ইচ্ছানুরপ অভিডিজ বার কর: বিহিত নয়, এবং ঘশোবাদনা ও এমো দ-কামনা চরিতার্থ করিবার নিমিত্ত প্রদান করিয়া উপার্জন করাও কর্ডব্য হয় না। অ **র্থলোভী ওয়শোলোভী হইয়** কর্মা করি-লে, ধর্ম-পথের বহিভূতি হইয়া আকেন প্র-কারে ক্লেশ পাইতেহয় ৷ মনের স্বস্থি-লাভ অপেকা প্রার্থনীয় আর কিছুই নাই ৷ যশোলোভ বা অর্থ-লোভের বশীভৃত হই য়াসে স্বস্থি বিসজন দেওয়ামুখোপ লো কের কাষ্য নহে। আপন্তর আয় ব্যস্ত আশে। ভরসা পদ-মর্ন্যাদাদি বিবেতনা করিয়। किक्षण निश्रम कीवन-यांजा निर्देशक कराः যুক্তি-সিকা হইতে পারে, ভাহা মনে মনে সকলেরই একরূপ অবধারণ করা উচিত, **এবং অবধারণ** করিয়া ন্যায়।নুগত উ পায় ছারা ভাছা সম্পাদম করিবার নিমি-**ত্ব যত্ন করা সর্বাতোভাবে** কর্ত্তব্য 1. সেই রূপ **নিম্নে সংসার-যাত্রা নিব্নাহ্ করিরা যাহ্য কিছে উদ্ত হয়, তাহা লোকের চুঃথ** হরণ ও ক न्यान नाधनार्थ वात्र कता विदयस इरेल, इताकाक्क धनाशी लात्कत अशी-शम (मिथिता अ अर्था) इहा मा, अदर अूप-**চিন্ত সামান্য লোকের সামান্য অবস্থা** দে-ধিয়াও অনাদর প্রকাশ করিতে প্রবৃত্তি इत्र मा , अ थ्याष्टि लास्क्त अनुदर्शाध-करम- সমুক্তি-নিদ্ধ অবৈধ কার্য্যেও অনুরাগ হয় না। প্রত্যুত, লোভাদি রিপুর হস্ত হই-তে মুক্ত হইয়া সফ্লদ মনে শাস্তভাবে পরম নুধে কাল হরণ করিতে সমর্থ হও-য়াবায়।

केलि-कृशम शुक्रामत मध्केलित चन्-খীলন করিলে ভাঁচার প্রতি ঘেরপ শ্রন্ধা-র উদ্রেক হয়, ভাঁছাকে কেবল শ্বরণ করি-লে, অথবাভাঁচার নাম মাত্র উচ্চারণ করি-লে, সেরণ আদ্ধার সঞ্চার হওয়া সুক্ঠিন। পর্মেশ্র-পরায়ণ প্রদাবান ব্যক্তিরা পরমে-খবকে মার্ণ ও মনন করিয়া ভক্তিও প্রী-ভি-রলে আড়ে চন বটে, কিন্তু সেই পরম দেবভার মহীমুদী শক্তি, অপরিসীম জ্ঞান, অপার বরুণা, ও অনিব্রুনীর মহিমার এক একটি চমংকারজনক নিদর্শন দর্শন ক-রিলে, ভাঁচাদের সেই অন্ধাও সেই প্রীতি শক গুলে প্রবল হইনা উঠে। কিন্তু আমাদি-গের কেমন কুৎসিত স্বভাব, বি**শপতি**র विश-लार्गात व्यक्तिंड (व कार्या अश्राम व-তিনাত বিশারজনক বলিয়া হৃদরক্ষম হয়, ভালা প্রতিদিন পুনং পুনং দর্শন, জাবণ, ও পর্যালোচন করিলে, আর সেরপ বিশ্ব-ন্ত্রনক বেধি হয় নাঃ পৃথিবীর অপেকায় চত্তর্মণ লক্ষ গুণুরুত্তর বছিময় সুর্যাম-ঞ্লোল উদয় ও অস্ত গম**ন ধেমন চম<কার**-গ্রন্ম কগতে ভদগেকা চনৎকার-জনক অনাকোম ব্যাপার প্রতাক্ষ হয় না; কিন্তু বালা-আলাৰ্ধি বারমার ঐ ব্যাপার অব-লোকন জরাতে, উচা আর দর্শন-যোগা অসামান, বিষয় বলিয়া বোধ হয় না 1 অ-নেকেই উষাকালের অন্তত শোভা সন্দর্শন করিবার নিমিত্ত উৎসুক নহে। স্মানেকে ऋर्याप्तरात्र शत्रभाक्षा भोक्या प्रभविना ক্রিয়া বছতর বৎসর অতিক্রম ক্রিতেছে. তাহাতে কিছু মাত কুৱ হয় না ৷ যে বনা-कीर्ग इतिछ-वर्ग शितिअऋ मृष्टि कतिबात वि-মিত আমাদিলের অতঃকরণ মধ্যে মধ্যে वााकृत दरेश छेटी, शक्क - विवासी नायाना লোকেরা ভাহা অকিঞ্ছিৎকর সামান্য স্থান জ্ঞান করিয়া থাকে। বে অসীমরৎ প্র-

**छीत्रमानः बील-वर्ष नमुद्धा शबद कविवाद** নিমিত্ত আমাদিগের অতিশয় ঔৎসুকা উ-পৃষ্ঠি হয়, বৃণিকু পোডের নাবিক সমুদ্য তথা হইতে গৃহ প্রত্যাগমন করিবার নিমি-ত ব্যস্ত হইয়া খাকে। এইৰূপ, অভিনৰ বিষয় শিক্ষা করিবার নিমিত্ত যত আগ্রহ হয়- শিক্ষিত বিষয়ের পর্যালোচনায় তত আ-গ্ৰহ উপস্থিত হয় বা। একটি অবিদিত পদাৰ্থ विकि इहेरल यह धास्त्राप इत, छ। छ पूर्व সহস্র পদার্ম মরণার্চ থাকিলেও, তভ আহল দ হর না। কখন কখন বিশ্বপতির বিশ্বকার্যা মধ্যে কোন অতিমনোহর অভি-নব কৌশল অবলোকন করিলে, ভাহার প্রতি গেরপ শ্রদ্ধা, ভক্তি, ও প্রীতির উলে-ক হয় শিক্ষিত পূর্বে সহস্র কৌশল জ্ঞাত থাকিলেও, সেরপ হয় না৷ অতএব, পর-মেমরের নহিমাও করুণা-স্থাক নানা প্র-কার নূতন পদার্থ ও নূতন কৌশল শিক্ষা করিবার উপায় থাকা গরমেশ্র-প্রায়ণ বুদ্ধিমান্ ব্যক্তিদিগের পক্ষে প্রম সৌভ:-গোর বিষয় 1

এক্ষণে উক্তৰণ জভিনব্ বিষয় অবগত হওয়। নিতাভ ছুক্ত্নছে। করুণাময় প্-রমেশ্র স্থি-প্রক্রিয়ার সময়ে আমাদের কল্যাণার্থে যে সমস্ত সুচারু ব্যবস্থা সং স্থাপন করিধা রাখিয়াছেন, তাহা মানব-জাতির অন্তঃকরণে উত্তরোত্র জাবিভাত হইতেছে ৷ যে সমস্ত পরমাজুত মহোপ-কারী বিষয় কম্মিন্ কালে মনুষ্যবর্গের জ্ঞাত-সার ছিল নাঃ এক্ষণে সেই সমুদায়,দিন দিন ন্দাবিদ্ধ হইয়া অথিল-বিশ্ব-পতির অপার মহিমা প্রচার করিতেছে। অনভিজ্ঞ জ-নেরা সে সমুদর বিষয় সত্ত্ব অবগত হন बा बटाउँ, किन्तु विकानविष् विषया छली मरधा সতত তাহার প্রসঞ্চ ও পর্যালোচনা হইয়া शास्त्र । नामा विध चा छिनव विषय छेहा वन করা বর্জমান সময়ের অসাধারণ ধর্ম হইয়া উঠিয়াছে। এতাদৃশ শুভকর সময়ে জন্ম-গ্রহণ করিয়াও, ঐশিক মহিমার প্রভাক প্রেমাণ স্বৰূপ ঐ সমস্ত নব-নিরুপিত বিষয়ে মিতার অমভিজ থাকিয়া অস্তাবৎ দিন বা-शब कड़िटन, बहे अथाव काटनत कट्यागा

ৰলিয়া গণ্য হইতে হয়৷ এই নিমিল্ত, এ-**ক্ষণে যে সমন্ত্র অভিনব তত্ত্ব ও ইতকর ব্যা** পার সম্পন্ন হইতেছে, তাহার অন্তর্গত ক-তক কতক বিষয় উপস্থিত মতে সঙ্গলন করিয়া প্রকটন করা কর্ডব্য বেংব হইতে-হে । প্রাকৃতিক পদার্থ ও প্রাকৃতিক পদা-র্থ ঘটিত কার্যোর বিষয় যে সকল বিদায় বিরুত ও বর্ণিত হয়, তাহা বিজ্ঞান বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে, এই নিমিন্ত, ঐ প্রস্তাব বি-জ্ঞানবার্ত্তা বলিয়া উল্লিখিত হইল। নমস্ত বিষয় কিবদ্বৎসর পূরের প্রকটিত হইয়া বছদশী পণ্ডিতগণের নিকট এক-প্রকার পুরাতনব্ধ গণ্য হইগ্রাছে, কিন্তু এ-एक्ट्रिक कर्यमाधात्रावत मुख्यां हत हत मारे, ভাহারও অন্তর্গত কোন কোন বিধয় ঐ প্রস্তাবে নিবেশিত হইবে। অনেক অনেক এমন তুর্ক বিষয় সভত আবিক্ষ ত কইয়া থাকে যে, তাহা ব্যৱসামী পণ্ডিত ভিন্ন অ-না লেকের বোধগম্য হইবার সম্ভাবনা নাই; সে সমুদায় উক্ত প্রস্তাবে প্রকৃতিত হুইবে না। যাহা সকা সাধারণ পাঠকবগের বোধগামা ইইতে পারে, তাহাই উহাতে লিখিত **হ**-हेरव ।

## বিজ্ঞানবার্ত্ত।

জ্যোতিষ

> — ভারতব্যার পূর্বতন জ্যোতিবিদ্রো মঞ্চল, বুধ, বুংস্পতি, শুক্র, ও
শনি এই পাঁচটি মাতে∗ এহের বিষর
অবগতছিলেন। দূরবীকণ ব্যতিরেকে বে
সমস্ত এই দেখিতে পাওয়া বায় না, তাহার
বিষয় কিছুই জানিতেন না। ইদানীং ইয়ুরোপীয় পণ্ডিতেরা এ ষস্ত ছায়া মতন নৃতম এই দৃষ্টি করিয়া এপর্যান্ত ন্যানংখ্যা

8১ একচাজিশটা গ্রহের শক্তিং নিরূপণ করিয়াছেন। প্রায়ই, ছুই এক মাস খা-ভর ছুই একটি গ্রহনূত্র প্রকাশিত চই-বার সমাচার শুনিতে গাওয়া বায় ৷ গত ইংরেজি শাকে, অর্থাৎ ১৮৫৪ থিনীজে, ৬ ছর টা গ্রহ আবিষ্কৃত হইবার রস্তান্ত অবগত হওয়া গিয়াছে ৷

ভারতব্যার পাড়িতেরা ব্যক্তের বভাব ও গতিবিধির বিধর কিছুই অবগত ছিলেন না দুরবীক্ষণ ব্যতিরেকে যে সমস্ত ব্যলাকার ধুলকেতু দোরতে পাওরা নার, তাহাই ভাঁছারা লখ্যে সংধা উদ্ধা হাইতে দেখিরা, আনক্ষণ-হচক বলিখা, লোক্দিগকে ভর প্রদান করিতেন ৷ ধুলকেতু সমুদারও গ্রহ গণের নায়া পূর্বায়-ওলের চতুর্দিকে পরিভ্রমণ করে, এবা দুর্বায়-ওলের চতুর্দিকে পরিভ্রমণ করে, এবা দুর্বায়-ওলার প্রতিবাধিক পরিভ্রমণ করে, এবা দুর্বায়-কর্মার প্রতি ব্যক্তির কত-সংখ্যা দুর্বা হইরা থাকে। গৌরজগতে উন্তর্জন কত লক্ষ্ মাকেতু আছে, কিছু বলা যার না। গত ইংরেজি শাকে, অর্থাং ১৮৫৪ বিন্ধাকে, দুর্নাসংখ্যা চারিটা ধূমকেতু ন্তন আবিক্ষ্ ত হইয়াছে।

### প্রাণিবিদা। ও ভূতজ্ববিদা।

১ — হিমালরের অখ্যুপার্গী শিবালিক গর্কতে এক প্রকার অভিবৃহৎ কচ্ছপের অস্থি-সমূহ প্রাপ্ত হওরা থিরাছে ৷ সেই কচ্ছপের পরিমানের বিষয় প্রবণ করিলে, বিশারাপম হইতে হয় ৷ তাহার শরীর ১২ হাত দীর্ঘ ও প্রায় হেইতে উচ্চ ৷ মুথ অনুনান ২ ফুট দীর্ঘ ৷ কমু অর্থাৎ পৃষ্ঠ দেশের অস্থি ৮ হাত দীর্ঘ ও ৪ হাত উচ্চ ৷ উহার করেক থণ্ড অস্থি দেখিয়া জানিতে পারা গিয়াছে, উহার পাগ্রুগো হলে।

এৰপ বৃহৎকায় কচ্চপ কলিন্ কালে কাহারও দৃষ্টিগোচর হয় নাই, এবং অধুনা অবনিমগুলে কুরাণি সজীব বিদ্যানান নাই। এ কচ্চপ-জাতি পূর্বা কালে বিদ্যানা ছিল, পরে একবারে বিল্পু হইয়া গিল্যাছে। উহাদের অস্থি সমুদার পর্বতের মধ্যে প্রস্তরীভূত হইয়া ইতস্ততঃ বিক্লিপ্ত

ইছ রোপীয় পণিত দিগের মতে সুর্যাও চন্দ্র গ্রান্থ করে প্রার্থিত পরি ভূমণ করে তাহারাই গ্রহ। আর বাহারা গ্রহের চতুর্দিকে পরি ভূমণ করে তাহারাই গ্রহ। আর বাহারা গ্রহের তেতুর্দিকে কুছণ করে ভাহারা চল্ল। পৃথিবী গ্রহের ঘেষন এই এক চল্ল আছে, অনা কোন প্রহের দেইরপ অবেক চল্ল আছে। দুরবীক্ষণ দিয়াদে সমুবার দেখিতে পাওয়া যায়। রাছ ও কেছু বাছথিক পরার্থ বছে।

রহিরাছে । বছ-পরিশ্রমী পণ্ডিতেরা প্রার্ক্ত চল্লিশ জোশ স্থানে অনুসন্ধান করিয়া উজকপ কতক গুলি অস্থি সন্ধান করিয়া ছেন । এ বিষয় প্রায় বিংশতি বৎসর পূর্বের পণ্ডিত-সমাজে প্রচারিত হইয়াছে, কিছ অন্য লোকের গোচর ছিল না ৷ ৫৬৬ মাস হইল, কালক্ষর সাহের প্রসিয়টিক সোসাইটি নামক এতদ্দেশীয় সমাজে প্রবিষয়ে ভানিফ উপদেশ প্রদান করেন, তাহাতেই প্রতিশাল কচ্চপের বিবরণ অপর সাধারণ সকল লোকের সুগোচর হইবার সুবিধা হইয়াতে ।

াবাধ হয়, পুরাণান্তগত কৃশ্মাবভারের বুয়ান্ত ও মহাভারত-প্রোক্ত গজ কচ্চপের युक्त-चित्रत्व केन्द्र काम दृश्य-काप्त कष्क्रप দুষ্টে কণ্পিত হুইয়া থাকিবে। প্রথম উ-পাখ্যান 🕫 যে, সমুদ্র মন্ত্রের সমরে ভ-গ্রাম বিষয় কর্মা-রূপ পরিগ্রহ করিয়াম-ত্বান-সভ স্বৰূপ মনদর পরাত পৃষ্ঠ-দেশে ধা-রণ করেন। দ্বিটায় উপাধ্যান এই যে, করুড় সপ্রধানের আদেশানুসারে অমৃত **আ**-হরণে গমন করিডেছিলেন, প্রমধ্যে এক সন্মোবরে পরস্পার বৈর-বন্ধ **প্রকাণ্ড-কা**য় গ'ক ও কৃত্ৰপ অবলোকন পূৰ্বক এক নগে গুজ ও অন্য নথে কজপ গ্রহণ করিয়া উ-সূর্ণগ্রমান হইলেন, ও কিয়দ্র গমন করি-া উভয়কেই ভক্ষণ করিয়া কেলিলেন। ইনিখিত এজ কছপের উপাধ্যা**ন নিতান্ত** গ্ৰন-ক্ৰিপ্ড কটলেও, এক্ষণে যেৰূপ বুহুৎ-কায় কজ্প-জাতি অব্নিমণ্ডলে বিদামান আছে, ভালার সভিত ক্স্তীর যুক্ত কম্পনা করা কোনৰূপে সঞ্চ বেখে হয় না। বাক্তি আখ্যাযিকা রচনা করিতে প্রবৃত্ত হয়, (मं इन्हीं अ कक्ष्रिक ममकक विनशा व-ৰ্নাকরিতে পারে না। যদি কোন কাথা-লেথক মুবিকের সহিত গণ্ডারের তুমুল সং-গ্রাম হইতেছে বলিয়া বর্ণন করে, ভাহা হইলে পণ্ডিত গণের হাস্যাস্পদ হয় তাহার गत्मर नारे । देशएक (वाथ रहा, शूर्वकन গ্রন্থকারের। উক্তরপ বৃহৎ-কার কচ্চপ দে-থিয়া, গজ কচ্চপের সংগ্রাম ঘটনা সম্ভব বিবেচনা করিয়া, কপেনা করিয়াছেন ৷

পূর্বের বৃহৎ-কার কচ্ছপ-জাতি বিদ্যমান থাকিবার উক্তৰণ অনেক নিগর্শন অন্যান্য দেশের শাস্ত্রেও প্রাপ্ত হওয়া যায় ৷ দেশীর পিথাগোরস নামক প্রাচীন পণ্ডি-ত পৃথিবী হস্তীর উপরে, এবং দেই হস্তী এক বৃহৎ-কাষ কুর্মের উপরে, অধিষ্ঠিত ব-লিয়া উল্লেখ করিয়াছেন। ভারতব্যীয় দি-গের পৌরাণিক মতের সহিত উক্ত মতের বিশেষ বিভিন্নতা নাই ৷ পুরাণের মত এ-हे यि, विक्यू हमयाचा मक्ष-कन मर्ल-क्रम भ-রিঞ্ছ করিয়া পৃথিবীকে মস্তকোপরি ধারণ করিতেছেন, এবং কুর্মা-রূপ গ্রহণ করিয়া ঐ সর্পরাজকে পুষ্টোপরি ধারণ ক-রিয়া আছেন•় পিথাগোরস হস্তাকে কু-র্ম্মের উপরে অধিষ্ঠিত বলিয়া বর্ণন করি-রাছেন। পুরাণের মত এই যে, অফট দি-গৃহস্তী অফীদিক ধারণ করিয়া রক্ষা করি-

খামেরিকার আদিম নিবাসী লোক-দিগের মধ্যেও বিশাল-কায় কচ্চপের বি-यसে এক উপাখ্যান প্রচলিত আছে। হাদের মত এই যে, সহা প্রথমে যে সমরে পৃথিবীর সৃষ্টি হয় নাই, দে সময়ে বায়ুর मर्था करत्रकृषि भूक्ष मात्र किल, এक्षि उ জীছিল না। স্বৰ্গলোকে একটি বিদ্যমান আছে শুনিয়া, ভাহাদের এক জন এক বি-হঙ্গ-পৃষ্ঠে আরোহণ করিয়া, সেই স্ত্রীকে হরণ করিবার নিমিত্ত গমন করিল, এবং অনেক কৌশলে ভাহার অন্তঃকরণ আকর্যণ করি-য়া অধ্য-পথে প্রবৃত্ত ক্রিল৷ ইহাজা-নিতে পারিয়া, পরমেশ্বর ঐ জ্রীকে স্বর্গ হ-ইতে বহিওঁত করিয়া দিলেনী সে বহি-इं छ रहेरल, अक कव्क् भ जाहारक भू केरमरण ধারণ করিয়া লইল। তাছা দেখিয়া, জল মার্জার ও মংসাগণ সমুদ্র হইতে পঙ্ক-রা-শি উদ্ধৃত করিয়া কচ্ছপের চতুর্দ্ধিকৈ স্থা-

শ সকু নীর্ষতনুত্তায়ে যদানভান চালকং। কুর্মারপী তদা কুকানভকায়য়য়ায়য়য়। অথ ব্রজাওরওৎ সপছে-রাক্রয়া কর্মপং। গ্রীবাৎ বিভত্তা বায়য়াৎ প্রক্রমন ধায়ছং। ক্রমপুত্ত কুরবভিবে উইনভনুত। বি-ধায় পৃথিবীৎ সুধ্যে সুবেশনর মহাছলুঃ। ক্রানিভাগুরাণ ২৫ অধ্যায়।

পন পূৰ্বাক একটি কুত্ৰ ৰীপ প্ৰস্তুক্ত করিল! সেই ৰীপ ক্ৰমণঃ বৃদ্ধি পাইয়া এই
পূথিবী হইয়াছে! এইৰূপ নানা দেশের
শাল্ত মধ্যে কছ্প বিষয়ে যে সমস্ত উপাথ্যান নিবিকী আছে, ভাহা যদি কোন বৃহৎকায় সজীব কছ্প শৰ্মান নিশিত হইয়া
থাকে, ভাহা হইলে বলিতে হইবে, মানক
জাতি উৎপন্ন হইবার অনেক কাল পরে

ঐ কছ্প-জাতি বিল্পু হইয়াছে!

#### উদ্ভিৰিদ্যা

১1--- আমেরিকার অন্তঃপাতী কালিকোর্নির নামক প্রদেশে এক পর্বতের উপর এক প্রকার প্রকাণ্ড বৃক্ষ নুতন প্রাপ্ত হওয়া গিরাছে ৷ উচার বেড় ৭৩ চাত ও দৈর্ঘ্য ১৮০ হাত পর্যান্ত হইয়া থাকে ৷ একটা বৃক্ষের ব্যাংক্রম ৩০০০ বৃৎসর বলিয়া নি-ক্ষপিত হইয়াছে ৷

এতদেশের কোন বৃক্ উহার তুলা দীগ নহে। উহার সহিত তুলনা করিয় দেথিলে. এদেশের তাল, নারিকেয়. গর্জার,
দেবদায়ক প্রতৃতি উচ্চ উচ্চ বৃক্ষ কৃত্র ব
লিয়া অঞ্চীকার করিতে হয় ৷

২1-- সংপ্রতি নির্কাপত হইয়াছে, রঙ-করা কাচ-পাত্র দিয়া আবরণ করিয়া রা থিলে, রুক্ষ লভাদি অতি শীঘ বৃদ্ধি পাই-या शास्त्र । ब्रक्तानित तीक वशन कतिया, **নীলবৰ্ণ কাচ পাত্ৰ দিয়া, আফাদন ক**বিয়া রাথিলে, তাহ। অবিলয়ে অন্ধৃরিত হয়। এডিন্বরা নগরের লাসন কম্পানি নাসক বাদিকের। বীজের গুণাগুণ পরীক্ষা করিয়া দেখিবার নিমিত্ত একটি স্থান প্রস্তুত ক-রিয়াছেন। ঐ স্থান নীলবর্ণ কাচে আচ্ছা-দিত। যে বীজের গুণ-দোষ পরীকা করি-বার প্রয়োজন হয়, তাহা সেই স্থানে বপন করিয়া দেখেন, কত দিনে তাহার অন্ধ্রোং-পত্তি হয় ৷ বে বীজ বত শীঘু অঙ্কিত रुष्ठ, ठाई। ७७ উৎकृष्ठे वलिश निर्फिष्ठे इहेशा शास्त्र। शृद्धं य दीख এक शक्क অথবা দশাহে অন্তব্নিত হুইত, একণে নীল-বর্ণ কাচ দিয়া স্থাবরণ করিয়া রাখাতে, ছুই তিন দিবদের সধ্যেই ভাহার অঙ্কুর হয় ৷

ইহাতে সমর ও ব্যরের লাঘর হইয়া লা-ভের আধিক্য হইবার সম্ভাবনা ৷

৩৷— এছাদির যত বাছলা চইতেছে, কাগজের ততই অপ্রত্বল হইয়া উঠিতেছে, এবং ইয়ুরোপীয় পশ্তিতেরা ঐ অপ্রত্বল পরিহার করিবার নিমিন্ত ততই যত্ন প্রকাশ করিতেছেন ৷ সংপ্রতি ভাজের রয়ল ঘাদশ প্রকার ক্রব্যের নামোল্লেখ করিয়া লিখিরাছেন, ভাহার প্রত্যেকে এক এক প্রকার কাগজ প্রস্তুত হইতে পারিবে ৷ তল্পখো কদলী প্রভৃতি কয়েক প্রকার রুক্ষে অপ্রব্যুত্র ছইতে পারিব ব অধিক কাগজ প্রস্তুত হইতে পারিব ব ব

#### রসায়ণ ও ধাতুবিদ্যা

১!-- সর্ব্ধ প্রকার রত্ম সনুষ্টের যান্ত্র বার্চিরাণে,
মনুষ্টের ক্রের পরি ক্রের করিয়া সক্ষান করিয়া পাকেন ৷ সংপ্রতি দোবার নামে এক করাশিশ পণ্ডিত ক্রবা বিশেষ সংযোগ করিয়া ক্যাটিক, চক্রকান্ত মণি, সর্পনিধি ও অন্যানা করেক প্রকার সুদৃশ্য রত্ম প্রস্তুত করিয়াছেন ৷ কিছু দিন প্রবার্ষি দেশ্লো নামক করাশিশ পণ্ডিত করেকবার ক্যালা গলাইয়া হীরক প্রস্তুত করিয়াছেন ৷

### বেহালা আমস্থ নিত্যজ্ঞা-নসগারিণী সভা

ছই বংসর অতীত হইল, বেহালা আমন্থ কতিপয় তক্ষণবয়ক আক্ষ পর আক্ষ পর আক্ষ পর কালের উপাসনার্থ নিজ্ঞামে নিছাজানস্থারি সভা নামে একটি সভা সংস্থাপন করিয়াছেন ৷ ভাঁছারা ল সভা স্থাপিত করিয়া অবধি প্রামন্থ লোকের বিশ্বেলানলে দক্ষ ইইতেছেন ৷ ভাগারা নামতে নিগৃহীত হইয়াও পরাও মুখ হন নাই; প্রভাত, উৎসাহিত চিত্তে স্বীয় সক্ষণ সাধন করিতে নিযুক্ত রহিয়াছেন ৷ সংপ্রতি ঐ সভার বিতীয় সাহংস্রিক সভা হইয়া গিয়াছে ৷ তদীয় সক্ষাদক ঐ সভাতে যে প্রভাব পাঠ করেন, তাহা পশ্যাৎ প্রকৃতিত হ

ইতেছে ৷ তাহা দৃষ্টি করিলে, নিতাজ্ঞান-দঞ্চারিনীর সভাদিগের বন্ধ, উৎসাহ, ও অধ্যবসাহের স্পত্ত পারচয় প্রাপ্ত ইওয়া ঘাইবে ৷

 আলু আমাদিগের বেছালান্থিত নি-চ্যভ্যানস্থারিণা সভার দ্বিতীয় সায়ৎস-রিক সভা। অদ্য ভাষার অন্তংকরণে কি अनुभग जानम-मुधावरे मक्षात इरेट्डि ! পুরি এমত আনন্দমর দিনের আনন্দ এই নধর দেহ আর কথনই উপভোগ করিতে সমর্থ চয় নাই। अमाকার সভা ভত্ত ও ব-ন(চ) এবং মানাবর মহাশয়দিগের শুভা-গ্ৰমনে বেৰূপ অনিষ্ঠানীয় শোভায় শোভি-ত হইয়াছে, ভাষা দৃটি করিয়া আমরা भटनत पाइनाम अवः भा ना कतिता का छ था কিতে পারিনা, এবং ইছা একবৎসর কাল অতিশয় মান ভাবে অবস্থান করিয়া বে অদ্য একপ শুভাবস্থায় অবস্থিত হইয়াছে পর্মেশবের আগণ্য **े** क्रमा नक-म् ७ द्र গনাবাদ না করিয়া চিত্তপ্রসাদ লাভ ক-রিতে সমর্থ হটন।। ছুই বৎসর অতীত হুইল, এই নিত্যজ্ঞানস্থারিণী সভা স্থা-শিত হুইবাছে; কিন্তু আকেপের বিষয় এই নে, ইছা <u>ক্রমাগতই এতং-পল্লি-নিবাসী</u> ভদ্র মহাশ্রদিপের ক্রোধের আস্পদ এবং বিলেধের বিষয় হইয়া স্থিতি করিতেছে। প্রথম বহুসর এই সভার সভামহাশবের) ্যান্প অসম ভাড়নাও বিষবং কটুক্তি সকল সভ করিয়াছিলেন, তালা প্রথম শাস্থ্যারিক সভার বিবরণপতে বিশে-ধ কপে বর্ণন কর। গিয়াছে। তাঁহার। সেই সভার দিবস অবনি আদা পর্যাস্ত বে কিৰূপ ছংসহ ভাড়ৰাও ঘূণাকর কটুক্তি সকল সহাকরিতেছেন, এবং তদৰ্ধি থা:-মাদিগের সভা কিৰুপ ছুরবস্থায় পতিত ই-ইয়া রহিয়াছেন, তাহার বিশেষ ৰূপ ব-্ন করিতে হইলে, স্বামার চিক্ত অভিগ-ভীর শোক-সাগরে নিমগ্ন হয়, ইন্দ্রির সকল অবশ হয়, এবং রেখনী লেখনে অ-শক্ত হইরা পড়ে। অতএব একণে আর সেই পাবাণভেদী সমাচার বিভারিত কপে প্রচার করিরা জন্মকার সভাকে মলিন ক-तिबात धारतामन मारे। किछ वधन धरे সভার গত ছুরবছার বিবর উল্লিখিত হুইল, তখন ইহার সভাপতি এীযুক্ত ব্যাচারাম চট্টোপাধ্যার মহাশহের ধনাবাদ না করিয়া নিরক্ত হওয়া যায় নাং তিনি যদি বিদ্য-মান না থাকিতেন, তবে আমাদিগের প্র-থম সায়ৎসরিক সভার পর্দিবস হইতে কোথায় বা এই নিত্যজ্ঞানসঞ্চারিণী সভা থাকিত ? কোথায়ই বা ইহার সভোৱা থা-কিতেন ? কেবা এতৎ-পল্লি-স্থিত বালক গণ-কে নিভ্য নিভ্য জ্ঞান প্রদান করিত ? কোথায় বা অদ্যকার সাম্বংসরিক সভার শোভা থাকিত ? এবং কেইবা ষত্ন পূৰ্মাক এমজ खनगानी ७ अवस्यंभानी मानावत महाग्र দিগকে আনরন করিয়া এই বেছাল। গ্রামের শোষ্টা বৃদ্ধি করিত ? তিনি এই সভা চির-স্থারিনী করি**বার জ**ন্য যে কত শারীরিক ও মানসিক ক্লেশ সম্ছ করিয়াছেন, এবং এসভার যে সমুদয় সভা মহোদর আমস্থ লোকের ভাড়না ভৱে সাহসহীন ও উং-ভাহ-বিহী**ন হ্ইয়াছিলেন, তিনি কিব**প প্ৰ-কার উপদেশ ছারা এবং কিব্রুপ প্রকার কৌশল দারা ভাঁহাদিগকে সভায় আন-য়ন করিয়াছেন, তাহা আমি বাজু করিছে সক্ষ হইলামনা। আমি পরম পিতাপ-র্মেশ্বরের সন্নিধানে কায়ননোবাক্যে প্রচুর ভক্তি সহকারে একাগ্র চিন্তে প্রার্থণা করিতেছি, আমাদিগের স্বদেশ-হিতৈষী স-ভাপতি মহাশয় দীর্ঘলীবী হইয়া নর<del>হলা</del>ণ কের উপকার সাধন পূর্বেক, মানব-জন্ম স-কল ক্রুন 1

যে ব্যক্তি ধর্ম-প্রথের যথার্থ পথিক হর, তাহার চরিত্র এইৰপ হওরাই সম্ভব। কে পরমান্ত্রন্থ ইহা কেবল ভোমার তত্ত্বন্রসের গুণ। যে একবার মাত্রও সে রস প্রস্কৃতব্ধপে আয়াদন করিরাছে, সে কি লোক্তরে তাহা হইতে বিরত হইতে পারে? যদি সমস্ত জীকাতাহার সহিত প্রতিকৃপাচনরণ করিতে প্রবৃদ্ধ হর তথাচ সে তোমার প্রসাধালাভ বিবরে কৃত-মিশ্চর হইরা সতত

আমুন্দি ত বাঁকে। ভাহার সাংসারিক সুখের আসক্তি একেবারে পরিত্যক্ত হয়। তোমার নিয়সিত কর্মানুষ্ঠান করিলে যে বিশুদ্ধ সুখে-व उर्णाख रम, जाहारे जाहात शक्क मधार्थ দুৰ ৷ একবার মাত্র যে তোমার নামের মাছাল্ম জাত হইয়াছে, সে কি ভাড়না-ভরে শেই নাম উচ্চারণ করিতে ত্টি করে ? যাঁছারা তোমার উদার করুণার বিষয় এক-বার জ্ঞাত হইরাছেন, এবং তোমার মত্ত जमम छेलामा याँशमितात वर्ग-कृत्त थ-विधे इदेश क्रमशक्तम इदेशाटक, जीवाता गमदिथि (प्रहे मूर्य अनाटक नूर्य) कदिएक a: शाद्यम, जनवृधि ভाँशात्र! मुखु छ हत्यम মা। এই প্রকার মঞ্লকর সভাবের বশ-বন্তী হইয়া পুর্বাকালে কত পত মহায়াট দেশান্ত রিভ হইয়াছিলেন , কুত গোকেই तः कादाकृष्क इरेग्रा काद्राभारत कीवन निः-শেবিত করিয়াছেন, কত মহাছাট বা বুধ মঞ্চ উপরে আগনার সুকোমল কলেবর ব-রিভাগে করিয়াছেন, কভ লোকেই বা জনক জননীর ক্রোধের পাত্র হইয়াও স্বীয় অভিলাধ পূর্ণ করিয়াছেন। লোক-ভয়ে কি ভোমাকে বিশ্ত হওয়া যায় ? যে ব্যক্তি তোমাকে আপনার পরন গতি প-বমাশ্রয় বলিয়া বিশাস করিয়াছে, সে কোন কালে তোমা হইতে অস্তরে থাকিতে সমর্থ হয় না 1 সে সভত তোমাকে জন্ম-মন্দিরে বিরাজ করিতে দেখিয়া পরম আনন্ উ-পচ্ছাগ করিতে থাকে। সে যদি লোক কউঞ্জনিপ্রীত হইয়া তোমাকে সমাজ-ম-क्रिट्र श्रकामा नेट्र डेमामना क्रिट्ड भिवादिक रहा. **उंथा**ठ मस्मामिक्स व्यक्तना क-রিতে কে নিবারণ করিতে পারে? যাঁহারা ভোমার উপাসমা করিতে নিবারণ করেন, छाँहाता अधि अख्वान। छाँहाता निवातन क-রিলেও, কি কাভ হওরা যায় ? ভাঁহারা ঈশ্ব-প্রতিপাদক গ্রন্ত অধায়ন করিতে নিবারণ করিতে পারেন বটে, কিন্তু বিশাল বিস্তারিত অথও বিশ-বেদান্ত পাঠ করিতে কে নিবারণ করিতে সমর্থ হয়? নিশীর্থ ममरत बक्कं शहरक्षिक निभाकरत्त्र थ-তি নয়ন নিক্ষেপ করিলে, বধন অন্তঃকরণ

তোষার অচিন্তা মহিমার অনুশীলন পূর্বাক भव्रमान<del>ण</del>-वर्ग चार्ज हरेवा खामारक श्री-তি-পুষ্প প্রদান করিতে বাকে, তথন কে তাহা নিবারণ করিবার নিমিত্ত তথাণ উ পস্থিত থাকে? যখন সুগন্ধীর সাগর-ভটে দণ্ডার্মান হইয়া জল-তর্জ সক্লের মানো-হর ভাষ সন্দর্শনে সাতিশায় আন্দিত ছওয়া যার, তথ্ন ভথার মে আনন্দ উপ্ভোগ করিতে নিবারণ করিবার জন্য কে দ্রায়-মান থাকে? যগন প্রভাত সময়ে প্রবণ-নুপকর বিহঞ্জ-দল সুমধর স্থারে গান কর্ত गरनागरर। विश्वक्ष मुरुशत मक्षात कविषा रहा: মাবে স্বরণ করাইতে থাকে, তথন জাহা मियातम कतिवास जन्म छवान दक सेश कि উপস্থিত থাকিলেই বা কে 🥙 বারণ করিতে সমধ হয় ৷ ক্তির চিত্তে চিন্তা করিলে অনুশাই প্রচীত হইবেক, ঈশ্বরের উপাসমা উপ্যাল্য मुद्राहित कामा महरा। छेहा छ। एका फर्छ। নিবারিত হথবারও বিষয় মচে। ঋজএব এ कर्ण जनगरमह निकृष्टे अछाक्रनमिर्गह दुःछा-अनि भू रहे এই आर्थना (य. क्रेश्वरत्व छेनाः मना छ। हामिशटक मुर्थकत (बार हामेक व। न। ইউক, তাঁহারা যেনউচা নিযেধ করিয়া দীন হীৰদিগকৈ দুখা মৰাপীতা প্ৰদান করিছে পার্ভ না হন। প্রমেশ্রের উপাদনা করা মৰুধাজাতির হভাব-াসদ্ভাষাল কোন স-**(सहसाहै।** धक अक्र स्मात हाल्या छहा বিরত হইতে প্রবৃত্তি হৃহলেও, স্বভাব-সিদ্ধ বলিয়াই ক্ষাপ্ত হওরা যার নাং আহ!! र्याम এতদ্রামন্ত সদ্তাণ-বিশিকী अन्धन আমাদিগের প্রতি অনুকূল হইতেন, ভাহা হ-रेल, जामता बक्रनकात जालका वह छन् वल-**थात्रव शूर्व्यक व्यनाप्तारम** हे कुछकार्या इ*हेटल अ* মর্থ হইতাম ৷ কেবল আমাদিলের দার! **एएटमंत्र मञ्जन इरे**वात मञ्जावना कि? এएक আমরা অস্প-বয়ক, তাহাতে জ্বার অ জান ও অস্বাধীন ৷ এমত দকল ব্যক্তি দারা খদেশের হিত সাধন কথনই হইতে পারে ना । अवश्विध जनश् क्रममगारक क्शनहे আদরণীয় হইতে সমর্থ হয় না। সুভরাং व्यामामित्यत कियो निकल इट्वात महादेना ।

किस यमि धामक कानी, श्राधीन, ও विवान মনুধ্যগণ এমত শৃভ কর্মে প্রবৃত্ত হন, তবে অনায়াসেই কুতকার্য্য হইতে পারেন। আমতা অস্বাধীন বলিয়াই সাৰ্থসরিক স-ভার জন্য নিয়নিত দিবসে স্থান প্রাপ্ত इड़े '≂(डें। স্থীন হইলে অনায়াসে আখ হইতাম। অহামানাবর জীযুক্ত বাবু ভারকনাথ মুখেপিধানে ও শ্রীমৃক্ত বাবু তা-वार्षाम नारक्षभावात नश्भविष्ठात यर् ं अनु श्रंटर जामा आर्मता এই द्वान आश्र মুর্নাছি। তাহারা এই অভাজন্দিগের প্রতি অনুকাপা প্রকাশ না করিলে, আমরা অদা এভা করিবাব নিমিত্ত সামও প্রাপ্ত হইজাল লা। হেজগদীশা ভুলি বেমন গত বৰেঁ এই ৰূপ সনুদয় উপস্থিত বিবু বি-নাশ করিয়াছ, সেন্ন আগামী বর্গে জা-মাদিগকৈ নিহিদ বর। কে বিখু বিদাশক! আমরা অভিক্তির বইয়া ভোনার নিকট এই প্রাথনা করিতেগি, ভূমি আমাদিগের आर्थना अस्व क्षाः

> त्। व्यथमध्यः श्रथमथ्यः असम्बद्धः

সভাদের জ্বতে নান্তং । স-ভোন লভাস্তপদা হোষআআা স-ব্যক্ জ্ঞানেন । ধেনাক্রমন্ত্যুষ-যোহ্যাপ্তকান্যির তৎ সভাস্য প্রমং নিধানং ।

' সভাগ, 'এব' ' এবং ত না, হ'ল আনু হং । সং তোন ' আনু হঙা গোল মুগাবচনতা গোন ' নামাই 'প্রাপবাঃ ভেলসা ' মন্দ্রএনিভূতিকা ' হি 'এবং' 'আছা। ' একা ছা সমাস্কু আনেন ' আনুভূত অসাদ শনেন ! ' গোন' সতো-ভূপনা ভানেন ' আনুভূতি আনুক্ত ( একং শন্তিকা নামা ' হি ' আপ্তিকাছা। বিগত সুক্ষা। ' ব্যু ভং সভাগ। 'ব্যুম' ' নিধানং ' আন্ত্ৰ্যা প্ৰজ্ঞা।

নভোরই জয হয়, মিথারে জয় হয় না।

সত্য কথন দার), মনের একাগ্রতা দারা, সম্যা
ক্ষান দারা এই প্রমান্ধাকে প্রাপ্ত হওয়া

ব্য: কবি সকল এই সমস্ত দানুষ্ঠান দারা

ভূথ চিত হইয়া সড়োর পারম আশুর স্বরূপ পার্বজনে প্রাপ্ত হয়েম।

পর্মেশ্বর সত্যনিক্পণার্থে আমাদিগ-কে বুদ্ধিবৃতি প্রদান করিয়াছেন, আমরা সেই বৃদ্ধি যত মাজিত করিতে পারিব. সভানিৰপণে ততই সমৰ্থ হুইব। সভা-নিরূপণের আর অন্য পথ নাই। যাহা প্রকৃত পদার্থ তাহাই সতা, সূতরাং তাহাই স্থারী। সভা পদার্থ আমাদিগের বৃদ্ধির গোচর হউক বা না इউক, তাহা कमालि বা-স্তবিক অসত্য হইতে পারে না। অনেক সত্য নিষয় বজ্নাল পর্যন্ত প্রক্লম খাকিতে পারে, বিস্তু বৃদ্ধির প্রকাশ হইলেই সে সকলের প্রকাশ হয়। অতএব সভাই স্থায়ী এবং পরিণামে পতাই জবযুক্ত হয়৷ যদি পর-মেশরকে লাভ করিবে, তবে সভ্যের শার্ণ গ্রহণ কর। সত্যের অবলয়ন ছারা, মনের একাঞাত। ভারা, সমাক্ ভ**ান হার। ভাহাকে** লাভ করা নায়। পুরের পূর্বে থে সকল ঋ-विता रमन्रे मक्रल-चन्नशरक विश्व तुक्ति-स्म् দ্বার। নির্বাক্ষণ করিয়া আত্মাকে পবিত্র ও পরিত্র করিয়া**ছিলেন, ভাহারা কেবল এই** সকল উপায় অবলয়ন স্বারাই সংসিদ্ধ হ-' ইয়াছেলেন।

मिट्याहामूर्जः शुक्रमः नवाहानि छाउट्याहाटकाश्याद्याद्याहाम्याः । य९ श्रमां खि युज्यः कीन्द्रमायाः । १ मित्राः द्यालकान् १६ १ अपुर्वः १ नकामूर्क्यक्रकः १ भूत्रमः १ भूतं मह वालाकास्यद्यः १ वेकक्षकः अवतम्यानः यदः १ १६ १ न नायद्य कृडण्डिनः १ १६ १ अवतम्यानः १०० यावाय्या द्यार्वः १ अवनः १ वक्षमीनाः भीवद्यायाः १ १०० गाहि अन्यक्रदः १ व्यवः १ वक्षमीनाः भीवद्यायाः १ क्षेत्रमाः ।

প্রকাশবান, নিরবর্ব পূর্ণ স্ক্রপ সকলের বাহিরেও আছেন এবং সকলের অস্তরেও আং ছেন এবং জয়রহিত তাহার প্রাণ্ড নাই এবং মন্ড নাই; যতুলীল নিক্পাপ জানি সকল যাঁ হাকে দৃষ্টি করেন।

তিনি প্রকাশবান, তিনি সর্বাত্ত প্রকাশত রহিয়াছেন, এই অপরিসীম বিশের

প্রত্যেক পদার্ঘ তাহার জার শক্তি ও ম-হিমা সুস্পতি প্রকাশ করিতেছে। তাঁহা-র কোন মুর্জি নাই, তিনি পূর্ণ স্বরূপ; সক-ल वस्तुत वाहिर्दुष चार्टिन धवः नकत व-স্তুর অভাস্তরেও স্থিতি করিতেছেন। ভিনি জন্ম রহিত, তিনি সর্বকালে বিদ্যুন!ন ও অবিনশ্বর শভাব; তিমি মন্য্যাদির নাায় श्रान व्यवसम्बद्ध कित्र भारतम् मा, তিনি প্রাণের প্রাণ। তিনি সর্বান্তর ও স-র্মসাকী। তাঁহার প্রমান্তত জ্ঞান আমাদের জ্ঞানের ন্যায় মনোরুত্তি ছারা উৎপন্ন হয় ना। मन छोराकर्क्क मृक्षे क्छ शनार्थ वि-শেষ, অতএব ভাঁহার এতাদৃশ মন থাকি-বার সভাবনা কি? শাঁহারা পাপ কর্ম ক-রিতে বিরত থাকিয়া যত্ন পূর্বাক তাঁহাকে অনুসন্ধান করেন, ভাঁহারাই এই প্রকাশবান্ নিরবয়ব পুর্ণ স্বৰূপকে সর্বাত্র প্রত্যক্ষ করি-য়া অপার আনন্দ ও অভ্ন প্রাপ্ত হয়েন।

বোদেবানাম্থিপোয্সিন্লো-কাঅ্ধিপ্রিতাং ৷ মৃদ্রুশস্য দিপ-দুশ্চতুষ্পদঃ ৷ স্বাএষমহানজ্ঞা-আ ৷

' যঃ' প্রমেখনে' দেবানাং ' 'জাবিপ: ' স্বামী ' যাঝি-ন্' প্রমেখনে স্থাকারণে ' লোকা:' 'জাবিশিকা: আপ্রিচা: ' যঃ' প্রমেখন : 'জাসা ' ' দিপদ: মনুচাদা ' চতুকপুদ্ধ' গ্রাদে: ' লৈ" ' ইকৌ ' দবৈ এবং মচান অক্স: "'আ্বা' একাঝা।

্যিনি দেবতাদিগের অধিণতি ধাঁচাতে লোক সকল আশিত হুইয়া রহিষ্যাছে, যিনি এই দ্বিপদ ও চতুষ্পার তাবং ক্রদিগকে শাসনে রাথেন তিনি এই জনারহিত মহান্ আহা।

তিনি চকুর অগোচর কীটাও অবধি লোকান্তর নিবাসী দেবগন পর্ব্যন্ত দকল জীবের একমাত্র অবলম্বন ও অনিপতি, যাহার বিধানানুসারে স্থা, চন্দ্র, গ্রহ, নক্ষত্র, ধুমকেতু স্বীয় স্বীয় নির্দ্ধিক পথে অবিআন্ত ভ্রমণ কলিতেছে, যাহার লাসনের অধীন থাকিয়া কি মনুষ্য কি পশু সকলেই 
চির কাল প্রতিপালিত চ্ইতেছে, তিনি এই ক্ষম রহিত মহানামা।

8

## অদ্যৌদ্রফীংশুতঃ শ্রোতাই মতোমস্তাংবিজ্ঞাতোবিজ্ঞাতা ৷

'অনুষ্ঠা' ব দুকা চকুলোচেরজ্ঞমনাপাল কলাচি থ কাল ুদুষ্ঠা' তথা অজ্ঞ হঃ' লোমেলোচরজ্ঞমনাপাল খলন্দ 'শোডা' তথা' অমুক্তঃ মনবিষ্ঠানাপ্যা স্থাক 'দুঝা' যাত মোডা, কালিক বিষ্ঠান কালিক বিষ্ঠান বিজ্ঞাত ।

এই প্রমাণাকে কেল্ দর্ম করে নাই.
কিছ ডিনি সকলট দর্শন করেন, কেল্ডালাকে
ফাতিগোচর করে মাই, কিছে তিনি সকলই শু
বৰ করেন কেল্ডালাকে মনন করিতে সমথ
হয় নাই. কিজ ডিনি সকলই গ্রমন করেন; কেল্ডালাকে এটা করেন।
ভালাকে এটাত হল নাই. কিছে ডিনি সকনাই
ভালাকে

পূর্ণ-ছাত্রপ অশ্বনি প্রনেশ্বের চল কর্ণাদি কোন ইন্দ্রির নাই, কিন্তু আদর! চল্পক্ণাদি ইন্দ্রির বারা বাহা কিন্তু জানিতে পারি, সেই স্বয়য়ু অনাদি পুরুষ ভাষার স্থানাই তানেন এবং আমরা বাহা কিন্তু মা জানিতে পারি ভাষাও তিনি লোনেন 1 তিনি সর্বাস্থানী সর্বাধ্যক্ষরণে ভারতের অং দান্ত স্থানি বন্তু সর্বজ্য একোরের অব-লোকন করিভিছেন, তিনি সকসকেই জা-নেন, কিন্তু কেহু ভাষার স্থাব্য অবগত নহেছা

æ

## সএষনেতি নেত্যাত্মাংগৃহেয়ান হি গৃহতে ।

া নাএমঃ 'আক্ 'সাক্ 'র অসত ইন্মিরমনোগোধন কুজন নিশ্বিক কন্ধ হণ্ডম বুজেতি 'ন ইতি ন ইতি কা ব্রজ্ঞা বরুপদের নিন্দিন্দিক্ষক ক্ষরতি নির্ভ্তন্থবিধেক ব্যাহন কি নেতাতি প্রতিষ্ঠেক্ষাব্যুতি ন শকাতে কো নহিদ্যলি প্রকারেক নির্দ্ধিকীয় 'আকৃষ্টা নহি গুলতে ' কুর্থাবিষ্যাক্ষাধান

ইছানংহ, ইং, নতে, এই একার দেই এই প্রমায়ার নির্দেশি তিনি ইঞ্জির ও সালন গ্রাহা নহেন, স্তরং কেহতাহাকে গ্রহ ক রিতে পারেমাই

সৃষ্টি স্থিতি উন্নতির কারণ যে পরেমে বার তিনি সৃষ্টির অতীত বস্তু, এই মাত্র তাঁহার নির্দেশ। যাহা কিছু চক্ষারা দেখা যায় তাহা তিনি নহেন, মন ধারা যাহাকে মনন করিতে পারা যায় তাহা তিনি নহেন,

তিনি ইঞ্জিয় ও মৰের অগ্রাহা তিনি অতি নিগ্ড তত্ত্বা

à

### म्बरमबंदमागानः मर्बमाधि-প্रकार मर्वभिष्य श्रमाखि यिष्पर किथा।

প্র এমঃ 'ব্জাজা' মাইস্য উলানা লাসস্থ জ্ঞাধিপ্তিঃ' 'মাইম' ' পদ্ধ' লগুং 'হছ উল্ছ' কিঞ্জ' আনহালিকীঃ 'প্রশাস্থি নিব্যস্তিষ

্লেট এই প্রমায়। দকলো নির্ভা ও দ কলের লাগণালিঃ ডিনি এই অগতে যে কিছ্ সন্ধারাতাতে, মলভাগ্যেই শাসন করেন।

বাহাবান্ সূত্য অবধি প্ৰক্ষা কীটাং প্ৰাত্ত ভয়নৰ বজ অবধি এক অভি মনোৰৰ কুমুখ প্ৰাস্ত, অগীন সাধার অবধি একবিদু নিশিত্ত প্ৰত ও সহয়েই বিচ্ছ নিশ্মাভার
শাসনে বহিয়াছে, তাঁবার শাসন কেহজাইক্ষম করিতে সমর্থ হয় না !

ন্মতং পিনকৌ সুক্তস্য লোকে গুল্ং প্রক্রিকৌ পরঙ্গে পরার্চ্চি। ছায়াতপৌ বুক্ষবিদোবদন্দি প গু:গ্রেটেষ চ ত্রিণাচিকেতঃঃ।

ি গ্রহণ, সভাত্র অকলায়। লিজাও কর্মান্সক। "পিতেওঁ।
তাৰ্য ভাইলেক বিভান্ত মুখ্যান নেত্র জ্বালি পা
দুক্যান্ত্র পিশ হাত্তিলুচাতে "মুক্তমান ইয়াই অকলা মহান ভালাক "দ্বীরে 'প্রচাই প্রচাইই ইয়াই প্রচাই মহান ভালাক "দ্বীরে 'প্রচাইইলে। তৌ চ'ছারা-হলে। 'বি ভিত্তিল সংসারিজ্ঞান মার্ক্তিল বিল ক্ষিপ্রতি 'বালাক প্রচাই নি ক্ষেত্র জ্মানিক ইয়াই ক্ষিপ্রতি ভাইলেই বিল্ডিলাক বিল্ডিলাক ভাইলিক বিল্তিলাক ক্ষিপ্রতি নি ক্ষেত্র স্থিতিল ভাইলিক বিল্ জ্যোলাক্তিলক ক্ষিপ্রতিলাক বিল্ডিলাক বিল্ডিলাক

শানীকের পারম চংক্ট ফ্রানেবৃত্তি মধ্যে দুই জন\* প্রনিট ইইনার হৈনাচেনা তমাল্লে এক জন দু কুড কর্ম কর ভাগ করেন। বুকাংং বাজি করেন টিনি করেন। বুকাংং বাজি সকল তারাদিককে ছবাও আতপের ন্যার প্রস্তুর তির করিয়া বলেন, আর পঞালি ও জালাচকেত তার্মিরাও এই প্রকার করিয়া আকে

॰ लद्रभाक्षां कांद्र कीवाका। ई जीवाक्षा। ई लद्रमान्ता।

জীবাদ্ধা এবং ভাষার আজার সর্ক্ষাপী পরমাদ্ধা উভরেই গরীরের অভ্যতরে
অবস্থিতি করিতেছেন। ছারা এবং আতপ যেকপ পরস্পার বিলক্ষণ ও ভিন্ন পদার্থ, জীবাদ্ধাও পরমান্ধা সেইকপ পরস্পার
ভিন্ন পদার্থ। বেমন আভপ বাতীত ছারা
থাকিতে পারে না, সেইকপ পরসাদ্ধার আত্রার ব্যতীত জীবাদ্ধার সন্তার সন্তব হয়
না। পরমাদ্ধা জীবের কর্মানুক্রপ কল
প্রদান করেন, জীবাদ্ধা সেই কল ভোগ
করিয়া বন্ধিত হইতে থাকেন। কেবল
তত্ত্বসনী ব্রহ্মবিদেরা এই উভরকে এক
প বিলক্ষণস্থভাব বলিয়া নিশ্চয় করিয়া
ছেন, এবজ নছে, অগ্রিছোত্রী কর্ম্মিরাও এইকপ বলিয়া থাকেন।

ইতি প্রথমখন্ডে ত্রয়োদশোংখ্যায়ঃ

### বিজ্ঞাপন

#### তত্ত্ববোধিনী মভা।

অধ্যক্ষদিগের অনুমতানুসারে অবগত করিতে তি বে গত ৩০ বৈশাথ দিবসীয় সাল- ক্রেরিতে তি বে গত ৩০ বৈশাথ দিবসীয় সাল- ক্রেরিক সভায় প্রজ্ঞাবিত বিষয়ের পুনর্বিচার জন্য আগামী ৭ প্রাবেণ রবিবরে অপরাক্রিণা হাটার সময়ে ব্রাক্ষ সমাজের দ্বিতীয় তল গৃহে বিশেষ সভা ফ্রেরেল সভা ফর্লিয়ের। তৎকালে সভাস্থ্ হ্টবেন ইতি ।

প্রীর্নাপ্রসাদ রায়

मन्त्रीपुत्र ।

### পুস্তক বিক্ৰয়

ব্যক্ত এই তক্ষবোধিনী পত্ৰিকা, কলিকাজা নগরের বোড়াসাঁকোছিত ভক্তবোধিনী সভার ভার্য্যসহ খই-তে প্রতিযানে প্রকাশিত হয়-—ইহার মূল্য এক টাজা। ১ আবণ সোম বার সন্ত্



ভদেব নিতাং ভানমনভং শিবং বৃত্তমং নিব্রুগতােক্তমেকমেবাছিটামং স্কাব্যাপিধকনিম্পলম্প্রাধ্যমন্ত্রী বিশ্বনাশক্তিমং ধ্বং পূর্ণমিতি চ

ত্রিকা প্রতিক্ষা প্রিদকার্যালাখনত ত্রপ্রান্ত্রের।

#### বন্ধতে ত

(इस्रामीयत ! कि ज्यान्धर्य। (छानात মহিমা! কি অভুত তোমার শক্তি! তুমি যে কি অপুর্ব্ধ কৌশল প্রকাশ পূর্বাক বি-শ রাদ্ধাও রচনা করিয়াছ এবং কি ভাভা-বনীয় উপায় ছারা আমাদিগতে মুখী করি-তেছ, ভাহা কি বলিব ? আমরা ভোমা-র মহিমার বিষয় যথন আলোচনা করি-য়া দেখি তথনই বিস্ময়াপর হট্, তোগার দরা প্রতি ক্ষণেই মূতন মূর্ত্তি ধারণ করিয়া আ-মাদিগুকে মুঙ্ন মুঙ্ক মুখ প্রদান করিতে-ছে। উষার শোভা এক রূপ, সন্ধ্যার সৌন্দ-**ব্যান অন্যরূপ, নিশার** শোভা আবার অনারু-প ধারণ করিয়া আমাদের জ্বল্যে আনন্দ সু-ধার সঞ্চার করে। বিভিন্ন ঋতু বিভিন্ন ৰাপ **भारत करिया अर्थाय क्रांस क्रांस** कामानितरक वि-**डिम मूर्य मूथी** कतिट्या । वन छ का-লের বৃক্ষ লতাদির পুল্প শোভাও আমা-দিশের নিকট প্রতিবৎসর মনোচর রূপ ধারণ করিয়া প্রকাশ পাইতেছে, এবং নি-দাঘ নিশার সুরিঞ্জ সমীরণ সেবন করিয়া-**७ भामता दर्स दर्स अत्मव मू**थ मरहान করিতেছি ৷ আমরা প্রতি বারই গ্রীয় ঋতু **অভিক্রম করি**রা প্রথম বর্ষার নরন তৃথিকর मृष्य कल्यरत्र कल्याता आश्र रहेता न- ব সুখ ভোগ করিতেছি এবং প্রতি বর্ষা অ-তীত হইলেই আমরা পুনর্বার সুনিমল স রং কালের নবানুরাগে অনুরাগী ছইতেছি ১ এটক্রপে তোমার বিশ চক্র অনবরত তে:মা-র নিয়নানুসারে ভামালাব ইইয়া প্রতি কণে ই মৃতন ৰূপ ধরিন করিতেছে এবং প্রতি ক্ষ-(१३ व्यामिन)दक गृहस मूत्र मुन्नो कः রিতেছে। ঘটনার প্রতিকানেই ভোমার দ্রা মারণ করিয়া ভোমাকে নমস্কার করা আমাদিগের নিতার করেন। মাদিপের প্রতি তিরকাল সমান দয়া প্র-কাশ করিতেই। আমাদিগের প্রতিতে:-মার পিতৃভাব, মুক্তাব ওরাজ বাবহার ক-माठ जनाया इहेव द नहह । भूक्व ६ महत्र ज्या আমাদিগকে যে প্রকার পিতার ন্যায় পা-লন করিয়াছ, বন্ধুর ন্যার প্রীতি করিয়াছ এবং রাজার ন্যায় রক্ষা করিয়াছ বর্ত্তমান ববেওঁ ডুমি আমাণিগকে সেই প্রকার প্র লন কারতেছ, সেইবল প্রীতি করিতেছ এবং সেইৰূপে রক্ষা করিতেছ, ভঃহার বিক্ মাত্র অনাধ। হইতেছে না। **এक दर्खन्न मर्सा एक**ई शूख्य मध्यक्ति दिहीन হইতেছি, কেহ নুতন বিভব উপাৰ্জন ক-রিতেহি, কেই পূর্বাস্তায় বিহীন হইভেছিএবং নুতন আত্রর লাভ করিতেছি, কেহবা প্রাপ্ত বন্ধু হীন হইতেছি এবং কেহ মূতন বন্ধু প্ৰাঞ্ চইতেছি, এই প্রকারে আমাদিগের সাং-সারিক সমক্ষের কত ইতর বিশেষ হইতেছে কিন্তু তোমার সহিত আমাদের যে **অথগ্র** সম্বন্ধ নিবন্ধ রহিয়াছে, কম্মিন্কালেও তা-হার অন্যথা হইচেছে না। কৌমারাবস্থার য-খন আনর। মাতৃজোত্যে শ্রান থাকিয়া বা-্দলা ভাবে লানিত পালিত হুই, তথ্ৰও ভূমি আমাদিগের সহায় এবং বৌৰমকালে যে আমনা সুক্রন্গনের পৌহাক ভাবে আমো-দিত হইয়া সুবেধতে কাল হরণ করি, ভূমিই ত্রিংগ্রিমূল, এবং বৃদ্ধবিস্থায় পুত্রীদির ভব্লিভার অবলয়ন করিয়া যে অনায়াদে জাবন আপন করি, ভোমারই অসীম প্রেম ভাহার নিদান ভূত। আনি যথন কেন গহী ব্যক্তিকে স্ত্রীপুল পরিবার লইয়া সাং-সারিক সুখ সভোগ করিতে সন্দর্শন করি. ভর্মত আমার মনোস্ধ্যে তোমার দয়া আবিভ্তা ২ইয় আমাকে আত্ত করিতে খাঁকে এবং যথম কোন অপনিচিত দূর দেশ গত শুরুষার্ত্ত ব্যক্তিকে জলদান ছারা কোন দশ্য লাজিকে ভাষার প্রাণ রক্ষা করিতে দেখিতে পাই, তথ্নও তেমোর দ্য়া চিন্ত। করিতে করিতে আমার শ্রীর লোমা-ক্ষিত হ্ব। ভোমার নিকট রাজা প্রজার বিশেষ নাই, গুনী দ্বিজের বিচার নাই, তো-মাৰ নিকট দাস প্ৰভুৱ ভেদ নাই, পিতা পু-জের জিন্ত। নাই তোমার নিকট গুরু শি-যে: প্রভেদ নাই, সুরূপ কুর্নপের,বিভিন্ন-ভাষাই । पुं अकनाद्यके **अधमृत्रिक नि**-রীক্ষাকর। ভূমি আমাদের সকলের সাধ্যার সম্পত্তি। তোমাতে সকলেরই অধিকার অংখো বে তোমাকে প্রার্থনা করে সেই ভোমাকে প্রাপ্ত হয়৷ বে ইফাকরে, সেই ভোমাতে প্রীতি করিয়া সুখা হইতে পারে ৷ তুমি সকল মনুষ্যকে শুভকর মা-ধারণ নিয়মে বন্ধ করিয়া কি অসাধারণ অপক্ষপাতিতা ভাব বিস্তার করিরাছ। সং-নারে বত জুংখ বিদ্যমান আছে, তোমার ८४:घटमरे अञ्चलारहत् स्ट स्टोवथ **स्ट त**्री चामात मन रथन जश्मात्रांबदल नख्थ इत, তথন তোমার প্রেমামৃত সেচন ছারা তা-हारक भी वल कति। जुमि अनुभारत्रत्र छे-

পায়, प्रतिराज्य धन, प्रवालात वल, धवर भ-নাখের নাথ ৷ তুমি পিতৃহীনের পিতা, তুমি বকুহীনের বন্ধু, তুমি নিরাশ্ররে আক্রয় 1 जुनिरे जीरवत जीवन, जुनिरे जीरवत मर्सन ধন ৷ ভৃষণহীৰ ব্যক্তিয়দি তোমার অনু-রাগে অনুরাগী হয়, তবে তাহার আর অন্য ভূষণের আব্দ্যক থাকে না। তোমার প্রে-মই ভাষার অমুলা হেমময় হার স্বরূপ হই-য়া শোভাপায়। আর যে শরীরে তো-নার অনুরাগ নাই, শত শত স্বর্ণাভরণেইবা তাহার কত দৌন্দর্য্য রুদ্ধি করিবেক ? সজ্জিত কাঠ পুত্তলিকার সহিত তাহার বি-শেষ কি ? যে অভাজন তোমার তত্ত্বসের রসিক না হইল, তাহার অন্তঃকরণ পরিশ্ব বুফ সদৃশ নীরস, তাহার সন্দেহ নাই ৷ জগতে ভোমার তত্তানুশীলন অপেকা অধিক সুখের বিষয় আর কি আছে? কাৰ্য রুসের বিনোদ কি তোমার তত্ত্বরস চইতে অধিক মধুর?। হে আদি কবি অখিল নাথ! ভোমার কবিত্ব-শব্দির কথা কি বলিব? সেই অনির্বাচনীয় মহিমার ভাব কি বুঝিব? ৷ তুমিই সরোবর শারী সু-কোনল কমল ফ্লের সৃষ্টি করিয়াছ এবং জু-মিই গগ্ৰন্থ তেজঃপুঞ্জ তপৰ শরীর স্-জন করিয়াছ ৷ ভুর্ম গহ্নবাসী যে ভয়ানক সিংহ; সেও তোমার সৃষ্ট এবং চিত্ত-প্রজ্বার সুদৃশ্য মনুষ্যের মুখ মণ্ডলঙ রচিত, ভূমিই ময়ুরকে বিচিত তোমার বর্ণে চিত্রিভ করিয়াছ এবং ভুমিই রুক্ষণ-ংকে শ্যামল বর্ণে সুশোভিত করিয়াছ। শর্ৎকালের বিচিত্র-বর্ণ-বর্ণিত জলদজালও তোমার হস্তের কার্যা, এবং নয়ন-ভৃথি-कत्र, त्मोन्हर्स्यात्र माश्रज्ञ, पूर्व मामधत्र अ তোমার সৃষ্ট। উজ্জুল নীল বর্ণে সাগ-র জলকে শোভিত করাও ভোমার কার্য্য এবং বিস্তীর্ণ শাস্য কেতেরে মনোহর হ-রিত বর্ণও তোমার কীর্ত্তি, তুমিই কো-किलापि मूत्रव विश्व भगतक मत्नाहत चत्र थ-দান করিয়াছ, এবং তুমিই মধুপানোদাত মধুকর নিকরের মনো মোহন ভাব উদ্ভা-বিভ করিয়াছ। বন উপবন, গিরি গছরর, সিকু সরোবর, পশু পক্যাদির ন্যায়-মানব-

জাতিও ভোমার পরমান্তকর প্রীতিময় ক-বিত্ব-গুণের পরিচয় দিতেছে। তুমিই মা-ভার চফে স্নেহ ভাব প্রদান করিয়াছ এবং जुमिहे क्रुक्षरशांचा वालरकत मूर्ण मुक्ककत শোভা অপণ করিয়াছ। তুমিই সধা ভা-বের সম্মোহিনী শক্তির রচনা কর্তা, এবং প্রীতিরদের সঞ্চীবনী শক্তির রচয়িতা। ত্মি স্বাং প্রেম রাজ্যের রাজা এবং সকল ভাবের স্টিকর্ন্তা। তোমার গ্রেম্মণ ভা বের সীমা কোথার? আমাত মন বেন নির্ভুত তোমার্ট ভাবে মগ্ন খাকে, এবং তোমারই প্রীতির্স আস্বাদন করে। হে জ্য তরণ! আমি তোমার শরণাপর হইতেছি, আমার সকল ভার হরণ করে ৷ আমারে নিমল শালি প্রদান কর। আলি এখানে অতি প্রমে প্রান্ত হইলাছি, গুরুভারে আক্রা-ন্মু হইয়াছি, এবং বিষয় বিষে জর্জারীয়ত হ-ইয়াছি ৷ অতএর আমার মন এখন উলৈ -স্বরে কেবল এই বলিতেছে যে, তে নাথ! একবার তুমি আমার হৃদরে ভাসিয়া উ-দর হও, আমি সেই শোভা সফ্রন করি-आ जूशी करे।

# भ**मार्थ** विमा

#### বাবি-বিজ্ঞান

১০৮ সংখ্যক পত্রিকার ১৪৯ পৃদার পর

ধে জলাধার যত গভীর, এবং লে জলাধারের তলা যত প্রশাস্ত, ভাহার সেই তলা উপরি-ছিত জলার উরে তত আক্রান্ত হয়, এই বিষয়ের করেকটি উদাহরণ ইতিপুর্বের প্রদর্শন করা গিরাছে ৷ কোন বস্তু জল মধ্যে নগ্ন করিবার সময়ে জাহা ক্রমে ক্রমে বত করা হয়, উপরি-ছিত জল-রাশির ভারে ততই আক্রান্ত হইতে থাকে ৷ কিন্তু পাশ-ছিত জল-রাশি লারা সেরপ আক্রান্ত ও নিগীড়িত হয় না ৷ জলাশারের জলের মধ্যে কোন বস্তু এক হস্ত ময় করিলে, সেই বস্তু কি সমুদ্র, কি সরেবর, কি নদ, কি কলস, সর্ব্বের সমান নিপীড়িত হয় ৷ অর্থাৎ সেই বস্তু সমুদ্রের ক্রিথা এক হস্ত ময় ছইলেও, উপরিছিত জন্ধা এক হস্ত ময় ছইলেও, উপরিছিত জন্ধা

লের ভার ভারা থেকপ আক্রান্ত হয়, ক্ত্রতর তড়াগের মধ্যে এক হস্ত নিমগ্ন হইলেও,
সেইকপ আক্রান্ত হইরা থাচে, কদাচ অপ্প
হয় না ৷ যদি উহার পার্মান্ত জল ভারা নিগাড়িত হইবার সন্তাবনা থাকিত, তাহা
হইলে ঐ বস্তু কলসের অপেক্রা সরোবর
মধ্যে, সরোবর অপেক্রা নদার মধ্যে, এবং
নদা অপেক্রা সমুন্ত মধ্যে পার্মান্ত জলের
নিপাড়ন-বলে অধিক নিপাড়িত হলত।
কিন্তু ঘণন ভাষা না হটায়া, পুলে রহম্ম সকল
জলামধ্যে সমান নিপাড়িত হল, তথন ভবিযারে পার্মান্ত জলের কিছুমান্ত কাম্যাকারিছে
নাই ইছা অবস্যাই জান্ত্রির করিছে ং
ইবে।

নমুদ্রের নিকটে কবাট প্রস্তুত কবি ন,
নমুদ্রের জল সেই কবাটের বত দুর উবি হ
হা নদীর নিকট কবাটের হত দুব প্রয়ান্ত
ভাগত বদি সেই কবাটের তত দুব প্রয়ান্ত
ভাগত হর, তাঙ্গ হউলে, ঐ উভয় কবাটে
ই সনিহিত জলের নিপীড়ন বলে সমান নিপীড়িত হলয় থাকে 1 বদি কবাটের নিপাড়ন বিবয়ে পাম্দিকের জলের কার্যাকাবিত্র প্রাক্ত, ভাগ্ হইলে, সমুদ্রের বিজ্ঞার
নদার বিস্থারের যত গুণ, সমুদ্রেনানিহত
কবাট নদী সনিহিত কবাট অপেকা তত
নিপ্রিত হইরা ভাগ হইরাযান্ত 1

লোহিত সালারের সহিত ভুমধ্যক্ত সা-গতের খোগ করিয়া দিবার নিমিত্ত একটি কুত্রিম নদী খনন করিবার প্রস্থার উত্থাপি-ভ হইলে, প্ৰথমে অনেকে এইৰূপ আপত্তি উপাপন করিয়াছিলেন যে, লোভিত সংগ্র ভূমধাস্থ সাগর অপেকা ১৩ হস্ত উচ্চ, মত-अब के देखत मग्राप्तत मनाचाल रन कनारे ধাকি**বে, তাহা লোহিত সমুদ্রে**র জলের বনে ভগ্ন হইয়া তীরস্থ জনপদ সমুদায় প্লাবিত হ-ইয়া **যাইবে। তাঁহা**রা ভাবিয়াছিলেন, লো-হিত সমুদ্রের সমুদ্য জলের ঠেল করাটের উপর পড়িয়া উহ'কে ভগ্ন করিয়া কেলি-বে। কিন্তু ঐ কবটে সরোবর-ভীরস্ত ছ-ইলেও যেমন নিপীড়িত হইত, সমুদ্র-জল ৰারাও তেমনিই নিপ্ডিত হইবে ইহা তাঁ-राता विद्वाना करत्व नारे।

যে জলাধার যত উচ্চ বা যত গভীর, ও যে জলাধারের তলা হত প্রশস্ত, ভাহার সেই তলা জলের ভরে তত আক্রান্ত হর, এই নিয়ম দ্বারা ভাবনিমপ্তলে এক এক সমরে এক এক, প্রদাতর ব্যাপার সম্পার হইয়া থাকে । এই স্থাল এ বিংরের স্থাই একটি উদাহরণ এদর্শন অং, বাইতেতে, ভাহা পাঠ করিয়া দেখিলে, পাঠকবর্গ চমৎকৃত হইবেন।

ক গ ওকটি দাক্তমৰ পাত্র গ্রহ চিক্লিছ নল উহার মধ্যে দুচ্চকপে নি-বেশিত ব্রহিলাছে। ঐ নল ১৬ অথবা ২০ হত্ত দীর্ঘা ঐ পাত্র ও নল ক অবধি য চিক্ল পর্যন্ত জ্বাল ল-পূর্ণ করিলে, সেই জ্বাল র নিশীত্র-বলে এমন



আক্রাভুত্র যে, তয়তে৷ তৎক্ষণাং, বিদীর্ণ হ**ীয়া নায়। জলগাতের উৎসেধ ও তাহা**-র তলার বিস্তার যে প্রদান, ঐ তলা উপবি-স্থ জলের ভারে সেই প্রমাণ আক্রাস্ত হয় ৷ খণ চিক্লিত নল কগ িক্লিত দার-পাত্রের ন্যায় প্রশাস্ত ইইলে, ঐদায়স্পরের তলা উপ-বিস্থ জল-পুঞ্জের ভরে যেকপ ভাক্রাস্ত হ-ইচ, উপ্তনলের ছিদ্র অভি ফুশ্ম হইলেও. এ তলা সেইৰাগ আক্রান্ত হয়। পুরের প্র-ভিগল ক্যা খিয়াছে, জল-পূর্ণ পাত্রের একাং-শ একদিকে নিপ\ড়িত হইলে, ভাহার স मूक्त अक्ष नकत नित्क निशी कि इस। অতএব, ঐ কণ চিক্লিত দাক্তময় পাত্ৰের তলা যেমন উপরিস্ফ জলের ভারে আক্রান্ত হয়, তাহার পাশ দেশও দেইবুপ হইয়া থাকে ৷ থগ চিহ্নিত নল কণ চিহ্নিত দার্পাতের माप्त धनेल हहेता. ते पाक्नारका भाष দেশ ভত্তস্থ জলের নিপীড়ন-বলে ঘেমন নি-পীড়িত হইত, উক্ত নলের ছিদ্র অতিফুক্স হইলেও, ঐ পাত্তের পার্ম দেশ সেইৰূপ নি-পীড়িত হয়। এই নিমিত্ত ঐ পাত্ত বল खल-पूर्न इहेरल, भिहे **कर**लत निशीएन-हरल शार्य रहरणत तकाम प्रमुहायू मिथिल इहेश, के পाक विमीन इहेशा यात्री के अञ्चल ह নলের অভ্যন্তর্ত্ব অভ্যতপ জলের শক্তিতে যে এভাদৃশ রহৎ ব্যাপারের ঘটনা হইরা থাকে, ইহা আশ্চর্যের বিষয় বলিয়া স্থী-কার করিতে হইবে ৷



পর্বভাদিও কথন কথন উক্তরপে বিদীন ইহা যায়। এই চিত্র কেতে কথ একটি পর্বাত, গথ একটি হিন্দ, চছ একটি জল-কুণ্ডর সাহত মিলিত ইইলাহে। রাটি ইইলে, এইজে ওকুণ্ড উভাই জল-পূর্ণ ইইলে পারে। তাহা ইইলে, পূর্ব্বোক্ত দারুমর পাত্র যেমন তত্ত পরিস্থ নলের জলের তেজে বিদীন ইয়া, কথ চিত্রিত পর্বাত চাহাই কল কুণ্ডের, ও গয় চিত্রিত পর্বাত, অভাগত জলের নিপীড়ন-বালে সেইরপ বিদীন ইয়াযায়। এইরূপে পৃথিবীর কত স্থানের কত বিযরের কত প্রাক্তর পরিবর্ত্তন ইংতেছে, তাহা কে নিক্ত পরিবর্ত্তন ইংতেছে, তাহা কে নিক্ত পরিবর্ত্তন ইংতেছে, তাহা কে নিক্ত পর্বাত পারে ?

জলের জালা সম্পূর্ণরূপে পূণ করিয়। রাখিলে যে ভগ্ন হইবার আশস্কা থাকে, ইহা অপর সাধারণ সকলেই অবগত আছে। অনেকে এই নিমিত্ত উহা সন্যক্রপে পূর্ণ ক-রিয়া রাথে না, কিয়দংশ শূন্য রাথে।

বে প্রাচীরের পার্শনেশে মৃত্তিকা-রাশি থাকে, আর জল নিঃসরণের পথ না থাকে, সে প্রাচীরও কথন কখন ঐকপে বিদীর্ণ হ-ইতে দৃটি করা যায়।

সমুদ্রের জল তাহার তীরে যত হাত উঠে, নদার জলও যদি তাহার তটে তত দুর উপিত হয়, তাহা হইলে, ঐ উভয় ত-টই সমিহিত জল দ্বারা সমান নিপীড়িত হয় ৷ সমুদ্রে অধিক জল আছে বলিয়া তাহার তট যে অধিক আহত হইবে তাহা নয় ৷ ভরক্স ও বেগাদি দারা যে তীরস্থ ভূমি ভয় হয়, সে স্বতন্ত কথা।

জলাশয়ের যে স্থান তাহার জল-সীমা হইতে যত নিম্,সে স্থান উপরি∙স্থিত জ**∗** লের ভারে তত আক্রান্ত হর, ও সেই জলা-• শয়ের পার্ম দেশের ঘে স্থান সেই স্থানের সন্নিহিত, ভাষাও তত নিপাড়িত হট্যা থাকে. এই নিয়ম ইতি পুরের উদাহরণ সমূলিত প্রতিপন্ন করা গিরাছে। অঙ্এব জলপ্র নিবারণার্থ আলিবদা অথবা ভেড়ীবন্ধ ক-तिर**ण** इहेरनः छ!हात चरवाछात केंद्र्य जान **षरभक्तात्र पृष्ट ७ किंटिन कहा कर्छवा ।** छे-জিখিত নির্মের বিষর বিবেচনা করিয়া দে-**থিলে জানিতে** পারা যাব, যে জ্ঞাশয় যত গভীর, তদীয় জলের নিপীড়ন শক্তিতে ভাহার তট ভগ্ন হইবার তত সম্ভাবন: । অ-ভএব, সমুদ্য কলাশয় আবেশাক মত গভী-র করাই উচিত, প্রয়োজনাতিরিক গভীর করা বিহিত নহে।

### পরমেশ্বরের মহিমা

ক্কপামর পরমেশর এই বিশাল ব্রহ্মা-প্রের সৃষ্টি করিয়া অনুগ্রহ পূর্বক আমাদিগে-র নিকট তাঁহার অনির্বচনীয় মহিমা প্রকা-শ ক্রিয়া রাখিরাছেন, এবং চরাচরত্ব সমস্ত ক্ষাই অনুর্নিশ্ তাঁহার ক্ষান, শক্তিও মঞ্চল

স্বৰূপের বিষয় উদ্যোগদের ঘোষণা করিতে-ছে। किन्नु विशेष इटेटन, श्यम अ-मा बंद मह्या भू मत्र शनार्थ (कार मुश्र श-मान कतिएक भारत ना, कर्न विद्यान हारेल र्यम भूमधुब मध्य ७ ऋब काम कार्र्याब হয় না, এবং লু গেলেরেলাজি রহিত হই-লে পেনন সুগ্রন্ধ পুষ্পের কিছুমত্রে সৌরভ অনুচুত হয় না, সেইজুপ জ্ঞান নেত্ৰ দক্ষিত श्<sup>के</sup>रमेख व्यक्तिय ने विश्व (क्रोशल क्रमफोश्चरत-র কোন পরিচয় জেদান ক্রিচে পারে না। ত ব্ৰদৰ্শী পণ্ডিত থাজি অগদী স্বার্ত এতি বেৰ্দ্ৰপ প্ৰগাঢ় লক্ষ্য ও নিৰ্মাণ প্ৰাতি কৰি ।। मुची हरेट १ रहन, धामानी क अविद्यंकी ব্যাক্টর কথনএ পর্যোশ্বরে সে একরে প্রাভি ও ভব্তি উদ্ভব হইবার স্থাবনানাই। হয়:-নির লক্ষ্ড ভঙ্গনির লক্ষা সম্পূর্ণ পূথ-তত্ত্ত ভূমাদশী যে নমস্ত বাংপা-रतत भरवा ज्ञान भरतत जनिकामीय काम छ অপার করুণা সন্দর্শন পূর্বাক আহ্রাদিত হ-ইয়া আছে ও ভতিরেসে প্লাবিত হহতে থা त्कन, खडानी मनुषा (प्रशे मकल द्वांशाहरक भाषा अक्र अर्थ कांद्रश महास्त्र की कहाश न 1 स्थान, बन्या त्य भकल श्रमादर्थ स्थाकी খরের অনুমে সৌন্দর্যা অবলোকন করিয়া থেনেতে প্ৰকৃত কয়েন, অন্তঃনী মনুষঃ रममम्ख देखा**उ जगनोस्टा**त काम स्थापन हे मन्द्रभान कतिहरू मक्त्र क्रायन मा ।

ফলতঃ জ্ঞান কি ? **ংপ্তর স্বৰূপ অ**ব-গতির নামত জ্ঞান: ঈশ্বরের বাজামধ্য থিনি যে বন্ধর যত দূর পর্যান্ত তত্ত্বনিদেন করিতে পায়েন, ডাঁহ্রে মনে তত দূর প্য ন্ধ ঈশবের মহিম। প্রতিভাত হইতে থাকে : ভাঁহার অনস্ত সন্তির মধ্যে কোন একটি বি ষর প্রধানোচনা করিরা দেখিলেই তংক্ষণাং আমাদিগের মনে তাঁহার জ্ঞান, শক্তি ও ম-अ**ल** ভाব দেদীপামান গ্রাকাশিত হইয়া উঠে। যথৰ আনরা তাঁচার সৃষ্টি-শক্তি ও পালন-শক্তির প্রতি একবার গাঢ়ৰূপে মনোযোগ করি, তথন স্থার কি আমরা তাঁহাকে মনের সহিত জ্ঞানের আকরও দলার সাগর না বলিয়া কোনমতেই নিরস্ত থাকিতে পারি।

ভিনিকোন্ছানে বেকত জীবলাকের দৃটি করিয়াকেন, এবং কোন্লোকে যে কত অসংখ্য প্রকার জীবের সৃটি করিয়া বাখিবাছেন, ও কোন্জীবকে যে কি প্রকারে প্রতিপালন করিতেছেন, মদিও ভাহা স্পূর্ণ কপে অবগত হওয়া অসাধ্য, তথাপি তত্ত্বানুদন্ধারী পণ্ডিভগণ কর্ত্বক এপর্যন্ত মার্ডানেকে বে জীবপুঞ্জ আবিক্ষৃত্ব ইইরাছে সেই সমস্ত জীবের আবন দারণ ও জীবিকা লাভের বিষয় আলোচনা করিয়া দেখিলেও গুকেবারে বিষয়ে সাগতে নিমন্ন হুটতে হয়।

প্রাণ্-বিদ্যা প্রান্যণ প্রিতের। পরীক্ষা হালা প্রভাক করিয়াছেন, যে কি জল, কি বায়ু, কি পথাৰ, কি বন, কি পুষ্পা, কি ল'ভা সক্ষতানই প্রাণী পুঞ্জে পরিপুরিক বহিনা-ছে। এক বিভুমাত্র জলে লক্ষ ক)। টাণু ক্রীড়া করিতেছে, এক অঞ্চলি পরি-মিত স্থানের মধ্যে রাশি রাশি জাব বিচ-রুণ করিতেছে, এবং এক <mark>এক বিল্ছ বায়ু</mark>ৱ बदना **३ व्यक्ति स्थान को छोत् मृत्ये ह**हेशाइह, অতি শুদ্র পুজ্পরেণু মধ্যেও জী**বপুঞ্বাস** করিতেছে এবং রুক শাখা ও রুকপত্র হ্-টভেও অসংখ্য জীব প্ৰাক্ত **২**ুৱাগিয়া**ছে**। কত প্রস্তর থাওঁ দ্বিধা করিবার সমধ্যে তল্পধ্য হঠ্তে অপুকাকটি নিগত হইয়াছে, কল-২০৮ সংস্ক ভেদন করিবার কালে ভাহার মধো-ं क्ष कोष्ठे पृथ्वे इहेशाह्य ध्वर कड कूल, হলি প্রন কংলেও গভীর ভুগর মধ্যে (का हि कि कि की होत् ध्वकान आहेशाह्य। নে ভানে জীব নাই ও মার্সালোকে এমত ऋग्मे रे व्यथितिक। किन्नु क्रेम्सद्वत कि बा-क्या किला महित्य की बहे य य স্থানে অবস্থান করিয়া উপযুক্ত মত স্থায দীয় জীবিকা লাভ করিতেছে এবং সুথেতে ক**্ৰন ধাৰণ কৰিতেছে।** 

মংসা কছেপ কুন্তীর প্রভৃতি জলদর সমস্ত চিত্র-জীবন জলেতে অধিবাস করিয়া আপন আপন প্রয়োজনোপর্ট্রাগী জাহার প্রাপ্ত হউতেছে 1 সুবিস্থীর্ণ সাগর মধ্যে
প্রকাপ্ত ভিমি মংসাও ভাহার ধ্বোপমুক্ত
গান্য প্রথা প্রাণ্ধারণ করিভেছে এবং
কুদ্র কুদ্র কলাশব্যের সামান্য জলচর সমস্ত ও

আপনাদিসের আহার লাভ করিয়া জীবিত রহিয়াছে। জলের মধ্যে বে কভ প্রকার প্রাণী আছে, তাহার সংখ্যা করা অসাধ্য, কিন্তু সে नकलात्र की बन किया (महे कलारक निकार रुरेट्ट्र । जनहरत्र मर्या ७ जुनाराती वदः নাংপাহারী প্রভৃতি ভিন্ন ভিন্ন জাতি আছে. किन्ह जाकर्या अहे (य जाशामित्रात माधा (य জাতি যে স্থলে থাকিলে আপনাদিগের অ-প্রযাপ্ত আহার পাইতে পারে, দ্যার সাগর প্রমশ্র ভাহাকে সেই ভ্লেবাদ করি-दाइ हे मार्ग न डिल्यू क अक्रू कि अमान क-तिशारह्म। य ममस कनकीय रेगवानक প্রভৃতি অমুলতা **ভ**ক্ষণ করিয়া প্রাণ ধারণ করে, তাহারা হুদ, পুদ্ধরিণী, বিল প্রভৃতি বন্ধ জলাশয় ভিন্ন, কদাপি স্রোতপ্রতী নদী মধ্যে বাস করে না এবং কুম্বীর প্রভৃতি মাং-সভ্ক্জল জন্তু সকলও কদাপি কৃত্ৰ কৃত্ৰ জলাশয়ে থাকিতে পারে না। মৎস্যাদি षानक कलक्क, मन्त्रान कि जिन्न क्षमब क-রিয়া ভাষার সহিত এক কালে নিঃসম্বন্ধ হয়, কিন্তু বিশ্বপতির বিশ্ব সঞ্চারিণী দর<sup>্</sup>সেই জল, মধ্যে উপস্থিত হইয়া দেই সমস্ত পরিত্যক্তা, ও নিরাশ্রয় কৃত প্রাণী দগের জীবিকা প্র-मान शृक्षक अर्था तका करत । कशमी श्रद्धत বিশরাজা মধ্যে যেমন জলচর সমস্ত জলে-তে থাকিয়া স্বীয় স্বীয় প্রয়োজনোপযোগী कीविका श्राश रहेशा कीवन धारन कदिएक-ছে. দেইৰূপ অসংখ্য প্ৰকার ভূচর জীব 🐾 লেতে অধিবাস করিয়া তাঁচার ছারা প্রতাহ প্রতিপালিত চইতেছে। নিবিড় অর্ণামধ্যে সিংহ ব্যাঘু ভল্ল কাদি মাংসভুক্ মহাবল প্ৰ সকলও প্রতিনিয়ত ভাঁহার হত্তহইতে আ-হার প্রাপ্ত হইতেছে, এবং গোমহিষ মৃগ প্রভৃতি ভুণাহারী পশুদিগের প্রাণ ধারণের জনাও তাঁহার অনুমঠানুশারে রত্নগর্ত্তা পু-থিবী নিতা নিতা নবতুণ প্রসব করিতেছে। ভাঁহার প্রসাদে হক্তী অম উট্র প্রভৃতি বৃ-হদাকার পশুসকলও আপনাদিগের উদর পুরণ করিয়া জাবিত রহিয়াছে, এবং ভাঁছার প্রসাদাৎ পিপীলিকা প্রভৃতি ক্ষুদ্র প্রাণী স মন্তও আদার প্রাপ্ত হইয়া প্রাণ ধারণ করি🖊 তেছে। তিনি একটি জীবকেও বিশ্বত

नरहत, प्रकलत्करे प्रम मृखिट नितीकन করিয়া জীবিকা বিভয়ৰ করিতেছেন। এক অরণা, এক পর্বান্ত ও এক প্রান্তর मर्था अभःशा श्रकात श्रानी वाम क-রিয়াসকলেই তাহার মধ্য হইতে কাক প্রয়োজনোপযোগী ভক্ষ্য ভোক্ষ্য প্রাপ্ত হই তেছে, কেহ তুণ আহার করিতেছে, কেহ পর্ণ **ভाজন করিতেছে, কেহ বা ফল দ্বারা উ**-দর পৃত্তি করিতেতে, এবং কেহ শুদ্ধ মূলা-বলম্ম করিয়াও জীবিত বহিরাছে ৷ কি আভ্যা! পশ্রা জ্ঞানহীন হইলাও আ-প্রাদিগের পরিভাজা আহার ত্যাগ পূর্ব-ক ভোজ্য দ্রব্য ভোক্ষন করিয়া সুবৈতে কাল হরণ করিতেছে। যৌসমস্ত পশুক-স্মিন্কালে একস্থানে স্থিতি করে না এবং যে সকলপৃষ্ঠি নিরস্তর নানা স্থানে ভ্রমণ করে, ঈশরের আজা প্রতিপালনার্থ তা-হার। কারাক্রন্ধ বন্দির ন্যায় এক স্থানে স্বায়ী হুইয়া আপন আপন শাবক ও সম্ভান প্রতি পালন করে ৷ পক্ষি শাৰক, যাবৎ না স্থাং ্জাচার করিতে পারগ হয়, তাবং তাহার জনক জননা প্রাণপণে তাহাকে উপযুক্ত আহার প্রদান করিতে নিযুক্ত থাকে 1 শৃ-গালাদি পশুগণ নিরস্তর বিবর বাদ্ধথাকি-য়া, আপন সন্তান গণকে স্তব্য পান করায় ৷ (मार्न काटन गांवी, वश्टमत जना श्रीम स्टान शक्त मध्य निविद्या द्वारंथ, इन्हीं कद्गरण्य ক্রামুখ মধ্যে আপন ভৌজা বিভাগ ক-तिशा तका करत, छेरकूनामि क्ष क्ष की है যে স্থানে স্বাস্থাতির উপযুক্ত জীবি-का एएएथ (प्रहेश्वादमहे जिस्र পরিত্যাগ করে अवर (महे जिम्र इहेट्ड य ममल की है। पि উৎপন্ন হয়, ভাহারা সেই স্থানেই আপন षाचात व्याल इहेगा विक्यु इहेटड बेटिक। ভূচর ও জলচর মধ্যে কোন কোন জীবকৈ পরমেশর এ প্রকার আশ্রয়া শক্তি দান করিয়াছেন যে তাহারা প্রয়োজন मर्फ ऋल खल উভয়েতেই मक्षत्रन कति-তে পারে। সিম্বু ঘোটক প্রভৃতি কোন काब कीव अधिक काल कलवानी इ-ইয়াও প্রয়োজন মত স্থলেতে গমন পূ-बैंक बाहात काछ करत अबर जनमानात

প্রভৃতি করেকটি জন্ত দীর্ঘকাল স্থলেতে वाम कतिया इस्नानुमाद्य जनमश इर्-য়া মৎস্যাদি ধারণ করিতে পারে ৷ পানি-কৌড়ি প্রভৃতি অনেক প্রকার আমি-বাশী থেচর পক্ষিকেও জগদীশ্বর নি-খাস রুদ্ধ করিয়া জলেতে মগ্ল থাকিবার শক্তি প্রদান করিয়াছেন। সংসার মধ্যে স-কল ঋতুতে সকলে জীবের সমান উপজীব্য উপস্থিত থাকে না, একারণ যে কালে যে জীবের সমধিক আহার প্রস্তুত হয়, সেই ममन कीर मिहे कालाई खितक उँ ९ भग्न है। रेशा बाटका श्रीम काटन अञ्चलात प्रत्यक জীব জন্মার, যাহারা বর্ণার প্রারন্তে এক কালে অদৃশ্য হয়, এবং বর্ষাকালে এরপ অনেক वानी छेरशन इस, याश्वितनरक जात नी छ काटन प्रिंश्ट शांखहा यात्र मा, वादर भी ड মতুও বশস্ত মতুতেও এইৰপ আনেক প্ৰ কার বিশেষ বিশেষ প্রাণী প্রত্যক্ষ করা-যায়। কিন্তু সর্বাত সকলকালে এ পৃথি-বী প্রাণী পুঞ্চে পরিপূর্ণ থাকে বলিয়া দয়ার নিধান জগদ¦শর কোন কালে ভাঁহার **অক্ষ**য় ভাণ্ডার ধরণীকে শুন্যা করেন না এ পৃ-ধিৰীতে এমন স্থান নাই শেখানে কোন এक প্রকার জীবের উপজ্ঞান্য বিদ্যমান নাই এবং এমন কালও নাই যে কালে কোন প্রকার জীবের জীবিকা উৎপন্ন না হয় ৷ তাঁ হার জীব প্রতিপালন বিষয়ক আশ্চয়া কৌ শলের কথা চিন্তা করিলে বিক্ষরাপন্ন হই তেহয়৷ এক পাত্র অললইয়া অসংখ্য লোককে ভোজন ক্রাইলেও যদি তাহার क्थन (स्य ना इस, छट्ट (म ब्यान्हर्या नामा-त पृष्ठे क ना सुक्ष इहेरवक? किन्नु ज-গদীৰটের কৌশল ভদশেকা অধিক আ শ্ৰুষ্য, তিনি কীব প্ৰতিপালন জনা পৃথিবী-তে প্রথমতঃ যে অলের সৃষ্টি করিয়াছেন. म्हे अब क्रमाधक नकल कोटवत कीविका निस्ताह कतिया बर्ख वर्ष छव्छ हरेश चा-সিতেছে, কোন কালেই ভালার শেব নাই; **मिन मिन जोव मध्या। यङ त्या इरेट ७८ ह** चामत्र পরিমাণও সেইকাপ অধিক হইছে-ছে৷ অভএৰ তাঁহার মহিমাকে বুকিছেৰ? তিনি উষ্ণ দেশে অপহাতি শীতল কল न স্যের সৃষ্টি করিয়। রাধিরাছেন এবং শীক প্রধান দেশে একপ ফল মুলের সৃষ্টি করি-ঘাছেন, যাহা ব্যবহার করিলে শ্রীরের স্মৃতিক উষ্ণতা বুক্ষা করিতে পারা যায়।

িংশেষতঃ অল্লপ্রদান বিষয়ে কিনি ম-नुष्मात भक्त ए द्वा कहनी अलाभ कति-াাছন, সেত্রপ আর কোন জাব জন্ততেই कृति का मा। अभिवाभित खोरवंद मीति म-भुकारक जरून अवत जेनदात्र पाणानावत জন্য সাস্ত থাকিতে হয় না ৷ জগদ, শর কেত ·· বি'লা ' যে প্রাকার পরস্পার সম্বন্ধ নিবন্ধ कविशा (नदार्ष्ट्रम, এवर अनुवारक स्व व्यक्तंत्र বৃদ্ধি সাধা প্রদান করিয়াছেন, তাহাতে এ-কজন মনুষা অতি অপ্সকাল পরিপ্রম করি-লে, এচ প্রচর শুসা উৎপন্ন হয় যে ভাছা বছ লোকে সমুৎসর কাল চোলন করিয়া অনাব্যাস কাল যাপন করিতে পারে ৷ 🖻-খারের এই করুণাই মনুষ্য ডাতির আশেষ সৌভাগোর সুল। এই কদ্ৰা হেডু মনু-বা অব্যামিট কাল ভয়ান ধ্যেত্র আলোচনার কোপণ করিভে সমর্ঘ হইতেছে, এবং শি-পোদি নানা বিদ্যার অনুভান করিয়া সংসা-রের নান প্রকার জীরন্ধি করিছেছে, এই **হেত বাল বন্ধ অন্ধ খঞ** হত:ছি অনৈক উ-शाश विशीम ल्याटक स्मय व्याश करेगा यो-ব্যধারণ করিতেতে যদি পশুপ্রিকর माञ्च मनगाक अर्कन रेफ्ट (शायरशद क्रम) ব্যস্থাকিকে কটভ, ভবে কোথার বা অ-পুরু মঠ মন্দির আইালিকা ময় শোভনতম-নগরের ধোড়ো, কোণায় বা ভলন ধ-(र्भव क्षात्राव, रक्षायात या मुधामशी मक्षीक वि-দারে মধরলোপ থাকিত। সংসার এসমস্ত-ই বৃদ্ধিত হইত। অত এব তালার পালন শ-জিলু বিষয় বিবেচনা করিয়া দেখিলে মনুষা-(कड़े डाँडोत निकृष्ठे व्यक्ति कुठछ इटेटल হয়৷ যথম তিনি আমাদিপের প্রতি সং मन इहेया जीविका लाउड़त अमक मूलक উপায় বিধান করিয়াছেন, তথ্ন সর্বাদা কে-বল অন্নের নিমিক্ত চিক্তিত হইরা ভাঁহাকে क्लिय़ा थाका कथनरे आमामिरभन कर्खना ATF !

## বিজ্ঞান বার্ত্তা

ছোভিব

১— i ইয়ুরোপে শনিগ্রহ লইয়া জ্যো-किर्बिट পঞ্জिपिरशत मध्या এक विषम वि-তক উপস্থিত হইনাছে ৷ ইতিপুৰ্বে এই পতিকাৰ উলিখিত হইয়াছে যে শনি প্ৰছ তিনটি রুছদাকার অঞ্চুরীয়কে পরিবেটিভ এবং ঐ ডিনটি অঙ্গুরায় উক্ত গ্রন্থ করে অবিক দুরে অবস্থিত আছে, কিন্তু জ্যোভি विरमत। विषात कतिया सिथियात्त्रम, त्य २० বংসর পূর্বে ঐ অঙ্গুরীয় তন্ত ঐ গ্রহের নি-क के कहेर के या अपूर्त मुख्ये कहे के अकारन क **ब्राटनक निक्रिवेखी इहेग्राट** : **এरे** निमित्र चार्याक विरवहना करत्न, छे লিখিত অঙ্গুরীয়তার উক্ত এহের ক্রমশং নিকট হইতেতে এবং উত্তর কালে ঐ এ-হের উপর পতিত হইয়া উহার সহিত সং-युक् कहेबा याहेरत। खन्नार ७व कान् অংশে কথন্যে কোন্ঘটনা হইচেছে, ভাষাকে ৰলিভে পারে? কিন্তু পরিণামে नकल घड़ेनारे या मछित कन्नानकत कहेत्न তাহার সদেক্ নাই।

ध्यानिविमा अ पृष्ठेषु विमा

১— 1 শিবালিক পর্কতের অভান্তর ছইতে ছইটি অদুত ছতীর আকার প্রাপ্ত ছত্তার আকার প্রাপ্ত ছত্তার আকার প্রাপ্ত ছত্তার আকার প্রাপ্ত ছত্তার আকার প্রাপ্ত কর্তার আকার হত্তার আকার হত্তার দেখিতে পাওয়া যায় ঐ ছই ছতীর আকার তদপেকা ক্তা । এ প্রকার হত্তা এত দিন কাছারও দৃতি গোচর হয় নাই বরং শুনিসে অসীক বোধ ছইত । পুবান লাপ্তে স্থো গণেশের যে এক দত্ত কুঞ্জর বদনের কথা বর্ণিত আছে এবং ইন্দ্রে দেবের এরাক ছত্তা বৈ চতুর্দস্ত বলিয়া লিখিত ছইয়াছে, বোধ করি পুরাণ কর্তারা উক্ত প্রকার একদন্ত ও চতুর্দস্ত হন্তার আকৃতি ভাহা কর্ণপানা করিয়া থাকিবেল ।

২—৷ আমেরিকা প্রতে নিউঅরলি-যন্স নামক স্থানে থনি থনম করিতে করিতে এক অভিনয় মনুষ্য শরীর প্রাপ্ত হুওয়া/রি- মাছে। ঐ করাল ১১ হন্ত মৃতিকার নিম্নে নিহিত ছিল, উহা এমত প্রীর্ণ হইয়াছিল, বে লগর্ম মান্তেই ভাহার সকল অস্থি চূর্ণ হইয়া-পোল, কেবল মন্তকের বর্পর নউ হব নাই। পণ্ডিতেরা ঐ বর্গরের লক্ষণানুসারে নিরুপণ করিয়াছেন, যে উহা আমেরিকার আদিম মনুষ্যের মন্তকের অবিহ ভাহার সন্দেহ নাই। যে তরের ঐ নরান্থিকায় নিহিত ছিল, সেই ভরের উৎপত্তির কাল গণনা করিয়াছেন, ইহার ৫২০০০ সপ্তপঞ্জান্দং সহস্রে বংগর অপেকাত অধিক প্রর্বে ইংগর অপেকাত অধিক প্রর্বে ইংগরে বাস ছিল।

শ্রিউৎপাবেলম্বী মহাশরের। তাঁহাদিগের বর্গাপুস্তক বাইনেলের লিখনানুসারে এই কপ বিখান করিতেন, বে ছয় হাজার বৎসর মাজ এ পৃথিবরৈ সৃতি ইইায়াছে। পরে মধন ভূতক্ত বিধার প্রত্যক্ষ প্রমাণ দারা তাঁহাদিগের বে মতের পঞ্জন হইল, তথন তাঁহারা আর কোন উপায় না পাইও ছয় সুহুস্ত বৎসর মনুয়ের সৃষ্টি ইইয়াছে, এই কথা বলিয়াকৌণল জনে আপনাদের ধর্মপুস্তকের মর্যাাদা রকা করিবার চেন্টা করিয়াছিলেন। একণে আনেরিকার এই প্রত্যক প্রমাণ পঞ্জন করিতে না পারিলে তাঁহারা আবার কিরপে আপনাদের শাস্তের মম্মন্তর করিবেন, বলা যায় না।

ইয়ুরোপখতে প্রসিয়া রা-0-1 জ্যের অস্তঃপাতী বরলিন নামক নগরে ই-রেন্বর্গ নামক এক সুবিখ্যাত পণ্ডিত স-ম্পুতি কীটাণু সহস্ধীয় এক অসাধারণ বাা-পার দৃষ্টি করিয়াছেন। ঐ নগরের কোন স্থানে মৃত্তিকা খনন করিবার সময় তিনি व्यन्दीकन यञ्च दाता (पश्चित्सन, त्र त्र हे हा-त्वत so इस कृषित नीए वनश्था को छोन्। বিচরণ করিতেছে, ভাহারা সেই স্থানেই উ-ৎপন্ন হইতেছে এবং কিঞিৎ কাল জা-विक शांकिया त्नहें ऋाटनहें नके हरेटठए । ডিনি ইহাও নিদেশ করিয়াছেন যে এক बक नमा के नमल की है शुक्क जुलता मधा দিয়া এক স্থান হইছে, স্থানাম্বর গমন ক-রাতে ভারার উপরি-ছিত ভূমি বিচলিত হইবা ঘর. খার, অন্তালিকা ঐভ্নতি বিদীর্ণ হইরা বার. এবং কথন কথন ভগ্ন ও চূর্ন হয়। কি আশ্চর্যা! আমাদিগের নির্মাণদে কালহরণ করিবার জন্য কত বিষয়ক জ্ঞানেরই দে খা-বশাক হয় ভাষা নির্দ্দেশ করাই কঠিন, এভ দিন কে মনে করিতে পারিত ? যে গভীর ভূগর্ভান্ত অতি স্কুক্ষা কীটাণু হইতে আমা-দিগের এ প্রকার মহানর্থ উৎপন্ন হইতে পারে।

৪— । আমেরিকার অন্থংপাতী কেন্দ্রের একেপ হইতে প্রায় পঞ্চিংশতি মন্পরিমিত এক থণ্ড চূষক ফরাশীশ রাজ্যে প্রেরিত হইবাছে । বে স্থানে এ চুম্বক প্রাপ্ত প্রাপ্ত প্রাপ্ত বিধানার কাছে।
তথ্য কর কোটি মন্চুম্বক বিদ্যান্য আছে।
উদ্ধিবিদ্যা

১-- ৷ আমেরিকা খাণ্ডে এক অন্তত রুক প্রকাশ পাইগাছে, উহার স্থকেতে আ-क्रियाञ कहिए। এक श्रीकांत्र क्रुक्कार विश्रीत নিৰ্মত হয় বলিয়া লোকে উহার নাম খীর তরু ক্রিয়াব্যকে। উক্তরুক্ষ দেখিতে অতি প্রকাও । উহার কাষ্ঠ অতিদৃত্ এবং দীর্ঘকা-ল স্থায়ী। তদ্যি সর্বাপ্রকার গঠন প্রস্তুত হইতে পারে, ফল অতি সুখাদা এবং সুস্থা-দ, দেখিতে 'মাতাব মত, এবং তাহার মধ্য হইতে অধিক সরম শ্সা প্রাপ্ত হওয়। যায়। কিম্ব ঐ রুক্ষের অন্তর্মত চূধাই সবাপেকা আশ্চয্য, বল্কলের উপর কিঞ্ছিৎ অস্ত্র:ঘাত করিলেই তৎক্ষণাৎ তাহা হইতে অপর্যাপ্ত ছুম্ম নিৰ্মাত হুইতে থাকে, এবং ভাছার আ-यान গোছ क्षात यादमत महिल किছू माज **ভिन्न नरहा कित्रल हेउत् छुद्ध ज**र का কিঞ্জিং গাঁচ, নচেৎ আরু সর্বাংশেই সমা-न। य दरन के प्रश्न द्वक आरह, नियन्म नामक अक अन नाट्य के तटन शमन कराउ ঐ উদ্ভিক্ষ ছ্বা, চার সহিত পান করিয়া দেধিরাছেন, যে, ঐ ছঞ্চেতে আর গোড়মে-তে আস্বাদের কিছু মাত্র ইতর বিশেষ নাই वदः छिनि वे इक बाता यरमगीय कुरे वक প্রকার গবা ডবা প্রস্তুত করিয়াছিলেন। ঐত্তব্ধ বারা এক প্রকার সিরিস প্রস্তুত হয়, **ब्युर मिर्दन्त गाइक एनके निवित्र** (कान কোন কার্য্যে ব্যবহার করিয়া দেখিয়াছেন, বে ভাহা, ইতার সিরিস ভাশেকা ভানেক মজ্জ ও দীর্ঘ কাল স্থায়ী ইয়াকি অভাবনীর মন্তুত ব্যাপার ! তুল পর্ণাহারী গো মহিনাদি সচততন পশুর সারীর ইইতে যে ক্লক্ক নির্মাত হয়, বিশ্বপাতা বিশ্বপিত। আনাদিগের প্র-ভিপালনের জন্য আচেতন উত্তিক্ষ শরীরেও সেই দুল্ল সঞ্জিত করিয়া রাধিয়াছেন।

२-। मनुरात आसाकत्नानारवाशी কত বস্তুই কত প্রকারে উৎপন্ন হইতেছে, बाहा नीई काल आधान कतिया नाना अर्दो-র কলে কোশলে প্রস্তুত করিতে ২ইড.জ-গদীশর কুণায় একণে অক্লেশে তাহা প্রাপ্ত इल्डा शाईरवका दूक इडेटड नावान है-ৎপন্ন হইতেছে। আমেরিকার অন্তঃপ তী কেলিফর্ণিয়া প্রদেশে এক প্রকার সাবা-নের বৃক্ষ প্রকাশ পাইয়াছে, এ বৃক্ষ এক কুট মাত্র দীর্ঘ হয়৷ উলা প্রতি বংগা আঁলু কালে জাপনা হইতে শুক্ষ হইয়া য চ, পরে প্রজারা সেই শুরু রুক্তের মধা হউ-তে অপূর্বে সাধান বাহির করিলা লয় এবং ভদ্যরা ভাহাদিগের সর্বা প্রকরে সাবাদের कर्म निकार हा। वे मादान मकल ८ क.त কুতিম সাধান চইতে উৎকৃত।

৩-- ৷ মনুব্যাদি জীব জন্তুর সন্তান যে ৰূপ নিয়নে সবল ও ছুর্বল হয়, বুকাটির চারাও সেই নিএমে হইয়। থাকে। মনু-ষোর চৌৰনাবস্থার সম্ভান যেনত সৰ্বা ও সতেজ হয়, বৃক্ষাদিরও প্রথমাবস্থার কসম কিচারা সেই মত গতেজ হ্রা এবং ম-নুষোর শেলাবস্থার সম্ভান নেমত নিকী যা হয়, বুজাদির প্রাচীনাবস্থার স্থানম কি চা-রাও সেই প্রকার নিত্তের হয় ৷ এক জন উদ্ধিদ তত্ত্ব বিৎ পণ্ডিত নিৰূপণ করিয়াহেন, বে যদিও প্রতি বৎসরেই বৃক্ষের ভূতন শাখা ও পল্লব উপ্তিত হয়, তথাপি প্রাচীন ৰুক্ষের মুতন শাখা অংশেকা, সতেজ রুকের শাখার কলম ভাল হয়, এই নিমিত্ত ২০৩০ वरगटतत्र पूर्वकत्र माशी इरेट्ड कंजम कत्रा ভাল, धर ভাহা विज्ञान गटक देव। शात অপরিমিত ভোজন বুরি৷ খেনত সভীর্ণ छएनाछ हरेबा बजूबाइनिक्रमाना खनात द्वान

জানে, সেইবিণ লিডা গুল্মানিও অপরিমিত রস আফর্ষণ করিলৈ উপ্লাগ ভালানিপের তেজ রৃদ্ধিনা হইয়া অশেষ রোগ উৎপন্ন হয়। নিজেজ রুক্তর কলন লইয়া যার, তবে অন্ধারা ভালা বিশেষ বৃদ্ধিকা হইয়া জনেম নিজেজ ও নার ইইয়া জনেম নিজেজ ও নার ইইয়া যার। কি আশ্চন্যানির শরীর বৃদ্ধিন ও পুন্টি সাধনের নিসেত্র বৃদ্ধিন মানার শরীর বৃদ্ধিন অর্থিবে। তিনি মনুর্বাদির শরীর বৃদ্ধিন অর্থিবে। নিম্নমান অব্রাদিরেও সেইবুপ নিম্নমার অব্যাদিরেও সেইবুপ নিম্নমার অব্যান করিয়া রাখিয়াছেন।

রসালিও ধাতুবিদ্যা

১-- । "में खिकात भरण अन् मिश्म शारम এক ধাতৃ বিদ্যানান আছে, উহা যেমত উ-**ংকুট ভেমনি সূলভ**া অপরাপর ধাতু रमञ्ज्ञान विस्थित ए शनि विरंगरम आश्र হওয়া বার, উক্ত খাডু সেৰূপ নছে, উছা সক-ল স্থানের মৃ!ত্তকা হইতেই পাওয়া যাইতে পারে ৷ পেরিস নগরস্থ একে ডিমি অব সাইন্দ নামক বিজ্ঞান শাল্তানুশীলন সমা-জে, দিবিলি সাহেব সকল সভ্যের সন্মধে ঐ এলুমিনন্ খড়ে নির্মিত কয়েক থেকার ত্রবা উপস্থিত করেন, সভোরা সকলে ভাষা जनमर्भन कतिया धन बक्र ठ हहे लान। महा মহা ভত্ৰিৎ পণ্ডিছেরাও ঐ ধাতুর বি-ষয় প্রতাক্ষ করিয়া বিক্ময়াসল হুইয়াছেন। शूर्ट्सरे डेक्टररेशाहर त जे शाजू नकन স্থানের মৃত্তিকাতেই বিদামান আছে, কোন কোন মৃত্তিকা হুইতে তাহার চারি ভাগের একভাগ উক্ত ধাতু পাওয়া যাইতে পারে ৷ ঐ ধাতু পরিমাণে বড় ভারী নছে, অথচ প্রায় লৌহের মত কঠিন ও দৃঢ় ৷ দেখিতে জাতি পরিষ্কৃত, রৌপ্যের মত শুদ্র, অগ্নিতে উষ্ট করিলে অতি শীঘুই উত্তপ্ত হইয়া উঠে, এবং উহাতে তার ও পাত উভয়ই প্রস্তুত হইতে পারে ৷ শীতল ক-ब्रिजा आचाज क्रिंग क्रिंग क्रिंग इंट्रेश यात्र, শীঘুমনিন হয় না। জল বাভাগ কি উক্তা-প লাগিলেও বেমন কেনমি থাকে বিবং স্বৰ্ণ क्षीनगरित्र बाता स्वयन ट्लांबन नाज, बन-भाव, सेभारात, कार् नार्यात अकृषि गरीब-

कात ग्रहकार्या। भरतानी रेडक नाशात श्रेष्ठ छ हर, छेड़ांद्र स्वीतांत (जहेंबर जलन थकांद्र ধাত পাত্র প্রস্তুক হইতে পারে, বরং তাহা বৌপোৰ অপেকা অধিক স্বায়ী হয়, এতভিন উত্তর কালে গৃহের শুব্ত, করাট, ভিত্তি প্র-ভতি এ ধাততে নির্মিত হইতে পারিবে ৷ উক্ত ধাতুর যে সমস্ত উৎকৃত গুণ নিরূপি-ভ হইয়াছে এবং সম্পতি দিবলি সাহেব উহা প্রস্তুত করিবার যে সহজ উপায় প্রকাশ কবিয়াছেন, ভাভাতে বোধ হয় উহায়ারা অতি সত্তরই সংসারের শ্রীর্দ্ধি হইতে পা-ब्रिट्वक। धर्मन मकल (मर्ट्स मकल लाक ঐ ধাত প্রস্তুত করিতে শিথিবে, তথ্ন আর কাংস্য পিস্তলাদি গাড় কে স্পর্শ করিবেক ? এবং তথন রঙ্গতের নির্মাল শভ্রতার গৌ-व्यवे वा देवाथात शक्दिक ? नाधादन नकरलहे अनीबारम मुनिर्मल मञ পাত্রে পান ভোজন করিয়। সুখী ছইবে, ধনী দিগের রজাত পাত বাবহার জানা অ-मञ्च जहरकारत्रत ज्ञासक शामका क्रेट्यक. গ্রাম, নগর, বিপণি প্রকৃতি আর এক প্র-। কার ফুতন মুর্জিধারণ করিবেক, মঠ, ম-নির, অট্রালিক: সমস্ত দুর হইতে রজ্ঞ পর্বতের নারে শোভা পাইতে থাকিবেক, বা-বিজ্ঞাের বেশ আর এক প্রকারে রূপান্তরিত हरेदिक, এदर मनुस्यात खाम चानिक लाहित হইবেক। ঈশবের কি অনির্ব্যনীয় মহি-\_ মা!' কালের কি আন্তর্যা গতি! কালার यत हिल ? य गर्दा श्राकात गामाना क-र्म्य अपूर्व धांडु इत्प पदिवड इहेर्व. (क विनिष्ठ भारत ? य हत्रस्य व भृथियो कान অনুপৰ অবস্থায় পরিণ্ড হইবে ৷

২— 1 আমরা শুরা পথে মেঘাবলি
ছইতে যে বিছ্যুতের অগ্নি শিপা নির্গত ক্ ইতে দেখিতে পাই, যাহার কঠোর নাদ প্র-বণ করিয়া আমরা মধ্যে মধ্যে হত চেচন হই এবং যাহার নির্বাত নিপতন হেতু স-মমে সময়ে আমানিপের ঘর, ঘার, তৃণ্-শন্য, গো, মহিব এবং প্রাণ পর্যাক্ষত নই হয়, প্রায় কড় বন্ধ মানেই ছানাধিক বিধানে সেই বিছ্যুতের অধিষ্ঠান আছে, পুতরং সেই বিছ্যুতের অধিষ্ঠান আছে, পুতরং সেই কিছু দিল অতীত ছইল, নিউইয়ৰ্ক নামক ছানে আক্ৰয়া বৈজ্যতিক ঘটনা গটিয়া ভিন্তিক দিল কৰিছে। এ নগরের কডকগুলি গৃহত সর্বাদা বিজ্ঞাত দৃতী হইত। কোন বা জ গাহার-ও গৃহত গমন পূর্বাক ভাষার হস্তুস্পর্ল করিয়া সন্তাধন করিয়া হত হৈছে। তি নির্গত হইত এবং ভাষাতে উমাদ্ আত ও শব্দ হইত। এইবংগে সর্বাদা সকলের গৃহ মধ্যে, শব্যাতে, ন্যের্কে, আক্লেভ, বিজ্ঞাতারি প্রকাশ গাইত এবং কল্পন কর্পন বাজু পাশানি স্পর্শ বা জু না জুলি ভ করিতে হইলে ইছে শ্লাহাত অনুভূত হইত।

#### ----

#### THE HUMAN IMMORTALITY.

The notion of a future life-of immertalityhas always presented itself as a religious item; it has always assumed the form, the character, tha There are passional relations, of a religious idea. of the earth that rule, and run their course in reference to earthly shings. And irror delights in the tample of battle, the shear of victory, the formation and the conquest of empires. Assures accumulates in stores, and drives ats thriving tride, with reference either to the mere possession of wealth, or to the various trace and advantages which wealth give in socie. Invention, the child of necessity, woks the stridgment of toil, for the propuring of food and of comfort, by its perer-fuling devices. The poet pours forth his song, because the thought i berning within him. and he must done and great internmen. Human passions, affections, more is, huild up, and ever have tank up, family relatives. They all pursue their earthly cour er they a 12ht pur on that same course if religion entered not at altinto the hors in mind. But when the religious sentiment is exeined, then the hope of importality appears it, strength and hencey, and glory. Hace man in the light of religious sertiment, and he sees beyoud the dark portals of the grave. When the choral song of multitudes is swelling in adoration

of the God and Tanner of all; when sortial windows, tichly dain, Shoding dies, cities, a high give solemnity to the perception of the senses when philosophy speculates on the or faished materials of character, the rudi mentary purely which are borne by these where existence have is prematurely terminated; when the spirit is in unison with the great hiemonies of nature, and drinks in delight and instruction from every orject of eight or sound, becautating, as it were, in the beauties of the fields, the vouls, the hire heavens, or the boarding mount when meditation communes with its over heart more its hed. and is still, and in the silonce hears the low voice within whappeing holy oracles; when hereave-ment stands by the yet angovered grave, weeping over its thighted hoper; then, and it all girranstaunes inducing similar states of emotion, speiling the religious sentiments, buman nature feels that r. futers life is an undoubted reality; and when is human nature more to be trusted than

under ouch circumstances?

Indeed, what is religion without this? It may be only a secondary idea; but does not the primal one of Deity, to close affinity, bring this in his train? Can man call God his Father without implying his own childhood, and, in that filial relation, his own fature destiny? Does he not feel the truth of that saying, "God is not the God; the dead, but of the living?" Miss be not be to the consiction that "all live to Prof. ones be castemplate these grand relathen only as things that are to pass away, like the off is no phenomena of this world of one? Write he says. My God " is it, as sometimes has icer agge ted, only with a sense of property? Is it not with ex with that of relation. that of the tool condition, and in that, of participation is the fittie namental electicy? In that puffinished melode of our hymn-book-"Art than no from a clading in everlasting, O God, mine it by that We shall not die, "-is was ever linked together f H religion were capable of existing in its proper strength and greatness without the emportality of man, it would become family rose approach the sorge of our exercises to nound give ness and less in the properties as what meet would purtake of that obtain which are gread over wealth, and power, and coming other ronge by which man's paswrite moments. It this the fact? Is it not most directly the accessed be and the triringh of religood, the hone of dimetriality, always greater at such times? In rot the death-hed especially the seere, the pressurement the eigenr of the religross sentiment, including this as one essential dia though only a secondary one, of that relior to sentiment; boit was rightly judged by

thin a to any of it. The probable of the major and the fact of the Major and the Major and the major date. She if the first the fine ral piec of the individual, we will as it by of congregated nature.

of the set in the order of the set of the se

tweets of a loss of any north order of the confine the case to the choice the case the case that a which hour, the case to be consequent and a case the case from the grow 1 of type of deduction, it is not a towaring born rusing of it; for we place it on the same houses with the existence and perfection of the Delmy. Let it stand as a fact incalcated by the very tendencies of our moral, and intellectual being, and therefore anterior to and paramount over, the thoughts and inventions. which we decid to ourselve on the sport or the working of those faculties. There let it ever stand, bound within the covers of no secred book - independent of tradition and legend -not resting upon the questionable testimony of historical evidence-unlinked from an association with preservatural wonders-needing the confirmation of no church or priesthood-neither affirming tor denying any divine mission, but resting and remaining, like the enduring pyramids, or rather like some mountain heaved up by Nature herself, to tower alon and hold a manuation with the skies, those stres which are the type of Divinity. "Love to tied and love to man" was the summary of the ctone-tables of natural and Christian duty. There is a summary of the religion of Nature inacribed on the fleshly tables of the heart, and that summary is,—"The perfection of Divinity—the immortality of humanity."—W. J. Fox.

### বিজ্ঞাপন

গত ৬১ বৈশাখ ও ৭ প্রারণ দিবসীয় বিশেষ সভাতে সভ্যোরা শ্রীযুক্ত বারু রমা-প্রসাদ রায় এবং প্রীযুক্ত বারু অমৃত্তনাল মিত্র মহাশর দিথকৈ এসভার সম্পাদকীয় পদে নিযুক্ত করিয়াছেন।

কুচজতার সহিত স্থাকার করিতেছি যে বিদিরপুরস্থ প্রাক্ষাস্থাকের অধ্যক্ষ প্রীমৃত্ত বারু রাখালদাস হালদার এন্তিরোপিভিয়া বিটানিকা নামক প্রস্তের সম্পূর্ণ এক প্রস্তুত ও অন্যান্য কতিপার পুস্তুক এ সভার দান করিয়াছেন।

শ্রীযুক্ত বারু রাজনারায়ণ বসু কর্তৃক র-চিত ব্রাহ্মসমাজের বক্তৃতা বিক্রার্ম প্রস্তুত ইইরাছে, সুন্য ॥০ আটম্মানা ।

ইংরাজী হইতে জীযুক্ত বাবু বজুনাথ মাল্ল-ক কর্তৃক মাল সংক্রান্ত আইনের সার সংধ্র-হ ইংরাজী হইতে অনুবাদিত চইয়া সভায় বিক্রার্থ প্রস্তুত আছে; মূল্য ২ তুই টাকা।

অধ্যক্ষদিগের অনুমতাধুসারে অবগত করিতেছি বে গত ৭ প্রাবণ দিবসীয় বিশেষ সভায় প্রভাবিত বিষয় সকল পুনর্বিচার জন্য আগামী ২৫ ভাদ্রা রবিষার অপরাহু ৫য় ঘণ্টার সময়ে প্রাক্ষসমাজের দ্বিতীয় তলগৃহে বিশেষ সভা ইইবেক, সভা মহাশায়েবা তৎ কালে সভাস্থ হইবেন ইতি 1

প্রীর্মাপ্রসাদ রার প্রিকাম্তলাল মিত্র সম্পাদক

গ্ৰস্তাএই ভজবোধিনী পাত্ৰকা, তলিকাভা নগছের খোড়ালীকোনিত ভজবোধিনী সভার ভার্য্যালয় ছ'ই-তে প্রতিহানে প্রকাশিত হয়।—ইহার মূল্য এক টাভা। ১ ডালু ব্যক্ষতি বার রহ্ব ১৯১২ । ভলিবকাঞা উঠিক



ভদেব নিত্য । আনমনত শিবং বত্ত নির্ব্বব্যক্ষেরাদিঙীয় সর্ক্ষর্যাপিশকনিষত্সর্কাঞ্চলক বিৎ নর্কশক্ষিম ধহংপূর্ণয়িতি ॥

ভব্মিন্ প্রীতিক্রণা প্রিমকার্যাদাধনক ভদ্পালনয়ের।

# ঈশ্বরের উপাসনা

ইছ সংসারে মনুষ্যের যে সমস্ত কর্ত্তব্য কর্ম আছে, তথ্যধো জ্ঞান উপার্জন এক প্রধান কার্যা। সকল বিষয়ের তন্তানসন্ধা-न कहा ७ मकन रखद श्रक्त नित्मां पूर्वक ত হাদিগের প্রকৃত পরিচয় প্রাপ্ত হওয়া, মান-ব-জাতির প্রেষ্ঠ কম্ম, এবং তম্মধ্যে ঈ-শবের জ্ঞান লাভ করাই সকল হইতে গবি-चामता यमि अनार्थ-विमा-अवायग इ-ইয়া জল, বায়ু, তেজ, মন্তিকা প্রভতি প্-मार्थित चार्चाव ଓ छन निर्माम कविशोह या-'বজ্জীবর্ন কেপণ করি, আর তমধ্যে সৃষ্টি क्छात अवस स्वान अवाक ना प्रिशि, करव কর্থনই আমাদিগের সে পদার্থ-বিদ্যার আ-লোচনা সমাক্ সফল হইতে পারে না ৷ যদি রসায়ন বিদ্যার আলোচনা ছারা বন্ধর সং-যোজন ও বিয়োজন জনিত অসংখ্য অন্তত ঘটনার উদ্ভব দেখিয়া চিরজীবন কেবল হা-হারই তত্ত্ব নির্দেশ করিতে করিতে আয়ু: শে-য করি, আর সেই সমস্ত অন্তত ঘটনা দর্শনে मक्रलच्चल जेगद्वत मक्त छेट्यम श्रेष्ठाक क्तिए मा शाहि, छटव आमानिरशत के विमा অনুশীলনের চরম কলও প্রাপ্ত হওয়া হয় না৷ ভূতত্ত্ববিদার আলোচনা বারা পৃথিবীর অ-**जित्रक नमस भगोर्जन दिवन सामना गारा**-কিছু জানিতে পারি, বলিভন্ন যে নেই জন-

ন্ধ শক্তিমান্ পরনেশরের মহান্ কৌশল না দেখিতে পাই, তবে দে ভূতন্ত্ব-বিদ্যা-প্রদন্ত জ্ঞানইব। আমারদিগের কত দুর সুখ সাধন ক-রিতে পারে? জ্যোতির্বিদ্যার অনুষ্ঠান ধারা স্থা, ঠন্দ্র, এহ, নক্ষত্র, ধুমকেতু প্রভৃতি অসং-ধ্য জ্যোতিকান্ পদার্থ-পরি-পুরিত নভোম-শুলের মধ্যে যদি আনরা অনস্ক শক্তিমান্ ঈশ্বের মহীরসী শক্তিকে সুস্পন্ত বর্তমান নাদেখিরা, কেবল দেই জ্যোতির্মার পদার্থের আক্রতি, আকর্ষণ ও বিতিগতির বিষয় জানিয়াই নিরস্ত থাকি, তাহাহইলেও কথন আমাদিগের দে জ্ঞান জ্যোতির্বিদ্যা সাধনের চরম কল বলিয়া উক্ত হুইতে পারে না।

অতএব আমাদিগের উচিত যে আমর। প্রবণ, বর্ণন, মনন, ইত্যাদি উপায় বারা যে কিছু পদার্থ প্রত্যক্ষ করি সে সমুদ্ধারের অনুশীলন বার। পর মেখরের জ্ঞান লাভ করি য়া আমাদিগের বুদ্ধিরভিকে চরিতার্থ করি এবং উপার্ক্তি জ্ঞানকে সকল করি।

কিন্তু এই প্রভাক এবং অনুমের যাবভীয়
পদার্থে যাঁহার অনস্ত জানের নিদর্শন সুস্পাই
কপে প্রকাশ পাইতেছে, ত্যুলোক এবংভূলোকন্তু সমস্ত অনুত ব্যাপার বাহার অনস্ত শক্তি
ব্যক্ত করিতেছে এবং সিন্তু-ভট-লয় ক্ষেত্তম
রেণুরগাহইতে গগন মগুলন্থ তেলংপুঞ্জ ভগন
পর্যন্ত নমুদর বস্ত বাহার মঙ্গল প্রস্থা উট্ডো-

স্বরে ঘোষণা করিতেছে, যিনি কুপা করিয়া क्रहे व्यमःथा जीव मृष्टि कविताहरून, याहात অপার করুণা অবলম্ব করিয়া আমরা জী-বন ধারণ করিভেছি এবং অস্ত কালেও আমরা नकरल गैं। हात्र जासदावान कतिर, छ हि। दक কি কেবল জানামাত্রই মনুষ্যের কর্ম ? তাঁ-हातक कामिटल शांतिरल है कि मनुरस्त अकन কণ্ডব্য সাধন করা হয় ? বেমত সর্ব্ব প্রকারে তাঁ:-হার জ্ঞান লাভ করিয়া আমাদিগের বৃদ্ধি-বুদ্ধিকে চরিতার্থ করা উচিত, সেইৰূপ প্রীতি ও ভক্তি সহকারে ডাঁহার উপাসনাকরিয়। 🍑 याण्टिशत मन्या जया मकन कर्। कर्ड्रवा। যিনি আমাদের শ্রেষ্টা এবং আশ্রয়, তিনি আ-মাদিগের কেবল জেয় বস্তু নহেন, তিনি আমা-দিগের ধায় এবং উপাস্য। ভারার উপাসনা কোন জাসাধ্য জাথ জনক ব্যাপার নহে ৷ তাঁ:-হার উপাসনার জন্য কোন জুর্গম স্থানে গমন করিতে হয় না, ছুষ্পাপ্য দ্রব্যাদিরও আয়োজ-न कतिया श्राक्षम मारी धवः कान रेमवी-য়ন্ত কাল বিশেষের প্রতীকা করিবার-ও আবশ্যক করে না, ভাঁছার উপাসনার महिल (लाक-वन, धन-वल ७ हेम्हिक वर्ण-রও সংশ্রব নাই ৷ তাঁহার উপাসনার জন্য অধিক অর্থ বায় করিয়া বহুলোক সমারো- পূর্বাক বাহ্য আড়য়রও করিতে হয় না, এবং অনশনাদি কঠিন ত্রত অবলয়ন করিয়া ভগঃ কাষ্টায় স্বীয় শরীরকে শোষণ করিবা-রও প্রয়োজন হয় না। ভাঁহার তপদাার ভনাপিতামাতা স্ত্ৰী পুত্ৰ আতৃ বন্ধু অ-মাতা গণের প্রণয় পাশ ছেমন করিয়া অর-গা মধ্যে প্রবেশ করিতে হর না এবং বেশ-বিশেষ ধারণ করিয়া আপনাকে পরিচিত করিবারও আবশাক করে না। ' তিমান প্রীতিস্তব্য প্রিয়কার্যাসাধনক ততুপাসন্মে-ভাঁহাতে প্রীতিকর৷ এবং ভাঁহার প্রিয় কার্য্য সাধনা করাই ভাঁহার উপাসনা। যাহা আমাদিগের নিরূপম সুখের বিষয়, তা-হাই তাঁহার উপাসনা। তাঁহাতে প্রীতি করা এবং ভাঁহার প্রিয় কার্য্য সাধন করার ভুল্য সুথের ব্যাপার জগতে আর কি আছে? প্রীতিতে যেৰূপ সুখোদর হয়, ভাহা বর্ণন कतारे अभावभाक । छोरा तकत्वत्र हे सम्बन

ক্সম আছে। সংশারে প্রীতির তুল্য সাধারণব-ख जात कि हुई नाई । कि धनी, कि निर्धन, कि মহৎ, কি কৃত্ৰ, কি প্ৰাক্ত, কি অজ, কি রাজা, কি প্রজা, সকলেরি মনে প্রীতিরুসের সঞ্চার আছে। প্রীতি হেডু কেই রূপে রত রহিয়াছে, কেং বা শব্দে মন্ত হইতেছে ৷ প্রীতি হেতু কেই ধনে আবিষ্ট ইইতেছে, কেই ধশে মুগ্ধ स्ट्रेटिट (६), क्टर अह-वज्जान वज्ज स्ट्रेटिस, কেই বা বন্ধান্ত-গুণে আরু ট রহিয়াছে। প্রী-**छिहे मनुर्यात मुर्थ , श्रीजिहे मनुर्यात जी-**বন ৷ এমত মন নাই যে তাহাতে প্ৰীতি নাই ৷ যাহার প্রীতি ও প্রিয় বস্তু নাই তাহার জীব-নেরও কোন সুখ নাই, তাহার জীবন নিরর্থ ক।এই সমস্ত অনি হা অস্থারী ক্ষণভক্ষর পু-থিবীর পদার্থে ধে প্রীতি স্থাপন করিয়া আমরা জীবিত রহিয়াছি ও সুখী হইতেছি, নিতা সভা পূর্ণ পর্মেশ্বরেতে সেই প্রীতি অর্পণ করিলে যে অপার সুখ লাভ করিতে পারিব, তাহাঁ-ছে আর সন্দেহ কি ?। যিনি ৰূপের আকর, গুণের দাগর এবং সুখের মূল, যাহাতে প্রীতি হইলে আর কম্মিন কালে বিচ্ছেদের प्रभावना नाहे, याहात्क श्रीकि कतित्व, भी প্রীতি স্থানের অন্তরেও অন্তরিত হয় না এবং অবস্থার ভেদেও বিভিন্ন হয় না ৷ কি বালা, কি যৌৰন, কি বাৰ্দ্ধকা, সকল অবস্থা-তে যাঁহার সহিত প্রীতি করিয়া সুখী হও-য়া যায়, যাঁহার প্রেম-পূর্ণ সংসর্গ আমরা निक निरक्ठान विश्वा मूर्य मरहार्वे क्विस<del>्ट</del> পারি এবং গভীর অরণা ও মুস্তর সাগর ম-ব্যেও দাহার সাক্ষাৎকার প্রাপ্ত হইতে পারি; যাঁহাতে পর্ণ কুটারবাসী দরিজের ও উঞ্চ-বুত্তিধারী নিক্লফ জাতিরও প্রীতি করিবার অধিকার আছে, এবং বিনি কৃতত্তম কীট इंदेर्फ मनुसामि छेश्कृष्ठे कीव अर्थास नक-लक्डि अनवत्र श्रीष्टिशूर्ग मृष्टिष्ठ मित्री-ক্ষণ করিতেছেন, ভাঁহার অপেক্ষা আর আ-মাদিগের প্রীতির পাত্র কে আছে? ভাহাতে প্রীভি করণাপেক্ষা আমাদিগের . श्रुरशेत कार्या है वा चात कि चा**रह?** . च-তএব ঈশরেতে প্রীতি কুরা বেমত আমার দিপের কর্তবা তেমনি সুঁখের বিষয় ৷ পরনেশরের প্রির কার্য্য সাধন্য ভাঁহার উপা-

সনার ভিডীয় অঞা তাহাও আমা-দিগের নিভান্ত সুধকর। আমরাবে তাঁ-হার প্রণীত সমুদয় নির্ম লঞ্জন পূর্বক এক कारल रेमहिक कार्या পরিত্যাগ করিয়া জড়-বৎ হইয়া কাল যাপন করি, ইহা ভাঁহার প্রিয় नरह। गृह-धर्म ७ मामाजिक निशम व्यवरह-লন পুর্বক গৃহতাগী হইয়া উদাসীনের মাায় অরণো ভ্রমণ করি, ইহাও তাহার, প্রিয় কার্যানহে। শারীরিক নিয়ম লজ্জন করিয়া শরীরকে শুদ্ধ ও অঞ্চ বিশেষকে অবশ করি, ইহাও ভাঁহার প্রিয় কার্যা নহে। অন্যায়াচরণ পুর্বাক জীবিকা লাভ করিয়া কেবল অ'ড়া সুখ উদ্দেশেই জীবন বাত্রা নি-ৰ্বাছ করি, ইহাও ভাঁহার প্রীতিকর নহে। শারীরিক নিয়ম অবগত হইয়া উত্তমরূপে শরীরকে রকা করা, সামাজিক নিয়মানু দারে ন্যায়োপর্জিত বিত দ্বারা ক্রী পুত্র প্রভৃতি পোষাবগকে প্রতিপালন করা নানা বিষয়ে সক্ষম হইরা আমৃত্যু 🗐 সৌভাগ্য বৃদ্ধি क्रिंटि यञ्जभीत थाका, मीर्टन मग्नी ଓ मा-ब योज त्माय कमा कता, दिशदम देवर्या ও अस्त्र-দেশান্তি অবলয়ন করা, বাক্যে কোমলতা ও কার্য্যে সরলতা প্রকাশ করা, ইত্যাদি যে স মস্ত কায়িক ও মানসিক কাৰ্য্য ছার। ত্রা-হার প্রিয় জগতের উন্নতি সিদ্ধি হইতে পারে, তাহাই ভাঁহার প্রির ও সেই সমস্ত কার্যা সাধ্যক্ষরিলেই তাঁহার প্রিয় কার্য্য সাধন ক-রা হয় ৷ তাঁহার এই ৰূপ উপাসনায় প্রবৃত্ত থা-किल्ल रव मूच ७ कना। मम् १ भन्न इत्र, ভাহা বৰ্ণন করা বাছলা। বিশেষত যিনি স্বার্থ পরতা পরিত্যাগ পূর্বাক অপাপবিশ্ব পৰিত্ৰ প্রমেশবের প্রীতি মাত্রের উদ্দেশে সংসার ঘাত্রা নির্বাহ করিতে রত হন, তিনি অনুপম সম্ভোষ অনুভব করিতে থাকেন। স্বার্ধপরতাই আমারদিগের সুকল দোশের মূল এবং সকল ছ:বের হেড়ু ৷ আমি মানী হইব, আমি ধনী হইব, আমার সমৃদ্ধি হ-रेत, এপ্রকার অভিসন্ধিতে কার্য্য করিলে মনুষা কত কৰ দোষ শুনা ও ছাংখ শুনা থা-কিতে পারে ? অবশ্যই ভাহাকে মোহ-পত্তে পতিত হইরা দুবিত হইতে হয় এবং নানা विवरत विदाय हरेना कृष्य रकाम कतिरक

হয়। কিন্তু পরমেশরের প্রতি জীতি প্র-কাশ মাত্র সংসার যাত্রা নির্বাচ্যে অভিসন্ধি হইলে, ঐ সমত ব্যাপার আর কোন মতে यिवात मञ्जादना शांदक ना । जर्गन :बाह প্রী পুত্র পরিবেটিত যং কিঞিং কৃত স্থান ব্যাপিরা আমাদিগের প্রীতি বন্ধ থাকে না ! তথ্য সকল লোক ও সকল জীব আমাদের প্রীতির আস্পদ হট্যা উঠে৷ সমগ্র সংসার একটি গৃহ স্বৰূপ এবং মনুষা কুল এক পরি-বার স্বৰূপ বোধ হয়। তপন যে দেশের ক-ল্যাণ হয় ভাহাতেই আনন্দ বেগ্ৰ হয় ও অপর, वाक्तित भूरथे अपूर्वी इउग्रा याप्र । मार्टिक ममल ७७ कार्याटक जेन्स्ट बर्बा अन् कार्या ट्वाइन তাহা সাধন করিতে সহস্র ক্লেশেও জার ক্লেশ বোধ হয় না, যে সমস্ত ধর্যা কর্ম্ম একানে নিতান্ত কঠোর ও নিতান্ত কন্ট সাধা বোধ হ-ইতেছে, তথন দেই সমন্ত কাৰ্যা ভাছাব প্রিয়কার্য্য বোধে সাতিশয় কোনল ও সা তিশয় সুসাধ্য ৰোধ হইতে পারে, আমর স্বন্ধন্দে সভার পথে থাকিয়া কালকে অ-ভিক্রম করিতে পারি, কোন মতে ভাহ। হই-তে বিচলিত হুই না, প্রচ্যেক ধর্মা সাধনে আ-মরা দিগুণ বল প্রাপ্ত হুই। প্রিয়তমের প্রিয়কান্য সাধন হইতেছে ব্লিয়া বৈধ কর্ম অনুষ্ঠান করিতে লৌকিক লাভালাত জয়াজয় ना, ज्यानम भूर्वक छहाम भूर्वक मश्मात याजः নির্বাহ করিতে পারযোয়, কিছুতেই আর আমারদিগকে ক্লেশ দিতে পারে না ৷ কর্মের অনুষ্ঠানে আমরা সামান্যতঃ যে প্র-কার সুখ লাভ করি পরমেশরের প্রিয় কার্ ৰোধে দেই কাৰ্য্য অনুষ্ঠান করিলে ভদপেক। আরও অধিকতর সুখ প্রাপ্ত হইতে পারি, **অতএব ঈশরের প্রি**প্ন কার্যা সাধন দারা তাঁ-হার উপাসনা করিলে কেবল আমারদি পের কর্তব্য সাধন হয় না, তদ্যুরা আমার-विश्वत व्यानव मूर्थ माध्य इरेट्ड भारत : वहें खीडि बदः खियं कार्या बढ़व मर-

এই প্রীতি এবং প্রিয় কার্য্য একত সং-মিলিক হইলেই ঈশবের উপাসনা সম্পূর্ণ হয় এবং অংমারদিগের কর্মসিক্ত ও অস্ম সকল হয়৷ কিক ইহার এক অঞ্চ ভগ্ন হ-ইলে তাহার উপাসনা সুসিক্ত হয়না৷ চ- নকাদি বিদল শংসার উত্তর ভাগ বেশত এক কর সংসুক্তান। থাকিলে ভালা ছইতে কর্বানই অঙ্গুর উৎপার হয় না, সেইক্রপ, ঈশরের প্রীচি ও প্রিয় কার্য্য উভয় একর মিলিত না হইলে. ঈশরোপাসনার প্রকৃত কল প্রাপ্ত হয় হয় না, অভএব আমাদিগের কর্ত্তব্য যে মার্কিত বুক্ষিয়ারা পরমেশরের জ্ঞান উপার্কন করিয়া আমাদিগের বুদ্ধিকে সার্থক করি এবং ভাঁচার প্রতি প্রতি প্রকাশ পূর্বক ভাঁচার প্রিয় কার্য্য সাধন ঘারা ভাঁহার উপাসনায় নিযুক্ত ব্যক্তিয়া নান্য জ্ঞা সকল করি !

### ---

## विश्वन-(तृश्]

জগদাশর পক্ষীগণের শ্রীর নির্মাণ বিষয়ে যেৰপ কৌশল প্ৰকাশ করিয়াছেন, তাহার উপমা দিবার তুল নাই। তাহাদে-व त्य श्राद्भव विषय दिवहमा कहिया एएथी-াায়, তাহাতেই ভাষার নিরুপম নৈপুণা অ-ভীয়মান হয় ৷ ভাহাদিগকে সভত বায়ু-ন গরে সম্ভরণ করিতে হয়, এনিমিত্ত পর-যেশ্বর ভাহাদিণের শরীর একথানি অত্য-ৎকৃষ্ট তরণি স্বৰূপ করিয়াছেন। ভাহাদের পক্ষ দণ্ডস্বৰূপ, পু্দ্ৰ কৰ্ণ স্বৰূপ, এবং বক্ষ-স্থল নৌঝার পুরোভাগ স্থরণ। ভারী হইলে, তাহারা আকাশ-পথে উড্ডী-श्रमान श्रोहण पाममर्थ श्रेट्ट अहे विद्वहना-র, তিনি ভাছাদের অঞ্চ সমুদায় অভাস্ত লঘু পদার্থে প্রস্তুত করিয়াছেন, এবং ভাহাদিগ-কে অক্লেশে বায়ু ভেদ করিতে সমর্থ করি-বার নিমিত্ত, ভাগ্যদের মস্তকের অগ্র**ভা**গ अञ्चल ७ हम् भू हे मू होक कांत्रशा निर्माद করিয়াছেন।

পক্ষীগণের চঞ্চু অতি আশ্রয়া বস্তু । যে পক্ষী যেৰপ দ্রব্য আহার করে, জগদী-শর তাহার চঞ্চু তত্তুপযোগী করিয়া দি-রাছেন ৷ শোন, শকুনী প্রভৃতি যে সকল পক্ষী অন্য প্রাণীর শারীর বিদীর্ণ করিয়া আহার করে, ও শুকাদি যে সবস্তু পক্ষী শ-স্য ডঞ্জন ও কলাদি খণ্ডন করিয়া জক্ষণকরে, তাহাদের চঞ্চু অত্যক্ত কঠিক করিয়া দিয়া-ছেন ৷ কিন্তু হংগু স্বাজ্ঞহংকাদি যে সমন্ত্র

नकी नरकत्र मध्या चाहात चरव्यन करत, **डाहारमंत्र हक्षु कामम ७ (हर्ग्छ। ववर व**-প্রকার কৌশল সহকারে নির্দ্ধিত, যে তা-হার মধা দিয়াজল নিগত হয়, কিন্তু সার বস্তু পতিত হয় না ৷ মাংসাশী পক্ষীদিগের চঞ্জুর পাশ দেশ তীক্ষু এবং অগ্রভাগ ব-ড়িশবৎ বক্রাকার। ভাহারা তন্দারা নিহত এপশ্ পক্ষাদির শরীর বিদারণ ও মাংসাদি উৎপাটন করিয়া ভক্ষণ করে। ব্ক প্রভৃতি যে সমস্ত পক্ষী কাগজন্ত ধরি-हा আहात करतः, अशमीयत विरवहना कति-য়া তাহাদের চঞ্জ কঠিন, তীক্ষুও দীর্ঘ করিয়াছেন। কিন্তু তাহাদিগকে নিহত জী-বের শরীর হইতে মাংস উৎপাটন করিরা ভক্ষণ করিতে হয় না, এনিসিস্ত, তাহাদে-त एकः शृरका <del>क</del>्रका वजाकात करतम नाहे । কপোত চটকাদি গ্রাম্য প্রকীদের চঞ্ ছে-ট, স্চাল ও ঈ্ষদ্ বলে, তদ্যুরা তাহারা শ-मापि ভाषा वस चाकरण जुलिया लरेड পারে। এইরূপ পুঝানুপুঝ বিবেচনা ক-রিয়া দেখিলে নিশ্চর হয়, পক্ষীণিগের মধ্যে যে জাতি বেরূপ সামগ্রী ভক্ষণ করে, পর-মেশ্র তাহার ভছুপযোগী চঞু নির্মাণ ক-রিরা নিরুপম নৈপুণ্য প্রকাশ করিয়াছেন। কোন স্থলে এ নিয়মের কিছুমাত্র অনাথা रमथा यात्र मा 1 एर ऋत्व त्यमन आवनाक, কগদীশর সেম্বলে সেইৰূপই করিয়াত্র।

তিনি যাবতীয় প্রাণীরই গাত্রাজ্ঞানন নির্মাণ বিষয়ে অনুত কৌশল প্রদর্শন করিয়া-ছেন, কিন্তু পক্ষীদিগের শরীরের আজ্ঞাদন ঘেমন পরিপাটী অমন বুঝি আর কোন জ্বন্তরই নহে 1 উহা বেমন লব্ তেমনি মস্ণ, আবার ভদনুৰূপ শীভ-নিবারক ও উক্ষতা সাধক 1 উহার বর্ণ ও শোভাই বা কেমন! পর্যাটকেরা অকল্মাৎ এক এক বন-বিহারী বিহঙ্গমের অসামান্য সৌক্ষর্য অবলোকন করিয়া মোহিত হইরা যান।

এক এক টি পালক এক এক অভ্যান্দৰ্য অসামান্য শিশ্প-কাৰ্য্য ট্ৰহার পূৰ্বভাগ অ-বহিং ক্ষ্টেশে বৈৰপ লযু, ভদমুৰ্থ দৃঢ় ৷ ববুঙা ও দৃহভা এই উভয় গুলের এবণ এ-কল্প সমাবেশ আয়া কোনাৰ্ভাতে দৃতি ক্ষ

ৰা 1' ঐ পূৰ্জভাগের ন্যায় অপয় ভাগও क्षांत्र अमार्थ शक्र ; অভি আভ্যা । ভুমগুলের খিন্সা কোন প্রাণীতে ও কোন ব-बटक छाहा विहासान मारे । छेहा ननु, पृष्, ও ছুর্ভেদা। ইচ্ছানুসারে সকলদিকে নত ও চালিত করা বার। স্থিতিস্থাপক, অ-ৰ্যাৎ উচাকে কোনদিকে নত অথবা চালিত করিয়া যদি ছাড়িয়া দেওরা যায়, তাহা হ-रेल शृद्ध य डात हिल, उरक्रनार म-ই ভাবে অবস্থিতি করে। পালক গুলি লবু না হইলে, পক্ষীগণ উড়িতে সমৰ্থ क्टेरव ना, अरे विरवहनात्र श्रद्धानमञ्ज छेहा-मिशरक लयु क्रियारहम । छेराता पृष् ना इट्टेंग बायु आबार बाता खग्न इट्रेग गहेटव এই कात्ररन, छेहामिशरक मृष् ७ ছूटर्डमा করিয়াছেন ৷ উহাদিগকে পরিক্ষুত করি-বার নিমিত্ত সকল্দিকে চালনা করা আব-भाक, এই বিবেচনায় উহাদিগকে কোমল, শিখিল, নমনীয় ও স্থিতিস্থাপক করিয়াছে-বিশ্বপতি বিহল-জাতির শরীরের ল-মৃতা ও দৃত্তা একত্র সংসাধনার্থ কত যুত্তই প্রকাশ করিরাছেন। জগতের যে বজর বি-যয় উক্তৰূপ বিবেচনা করা যায়, তাহাতেই ভাঁহার অস্তৃত কৌশল ও প্রগাড় যঞ্জের ল-কণ প্রতীর্মান হয়। অগরিভিন্ন অসীম বিশের কণামারও তাঁহার অয়ত্বের বিষয় নহে ৷ ড়িনি পিডার ন্যায় স্বেহ করেন, রা-জারনীয় পালন করেন, এবং বন্ধুর ন্যায় थीकि करतम ।

# কসংস্কার

প্রকৃত জানের জ্যোতি বারা মনুযোর वृक्ति-वृक्ति छेञ्चन बा हरेटन द्य कछ नृत পর্যন্ত ভাষতে ছাখ ভাগী ও অধোগামী व्हेटक इस, काहा वर्षमा कवा गाय मा। न्या अला इहेरल त्य रक्ष्यन नविता हर थ-মন মহে, তদ্দারা ভাহাকে অন্যের প্রকার ষপর কল্পাও ভোগ করিছে হয়। যিনি दिरगवन्द्रण मानदः अकुष्टि चारनाह्ना क्रिन श क्षित्राद्यम्, चिमिट् विशासनः चन्त्रक चहरू, व मनुवा क्वम द्वाम जुशहरू

অভ্ত ব্টুনা প্রভাক করিয়া ভাহার যথার্থ कारी कातन निर्द्धना कतिए ना शास्त्र, छ-ধন বভাৰতই তাহার কম্পনা শক্তি ক্রীড়া क्रिंटि बावड करत जबर तरे घटनात च-ব্যবহিত পূর্বাপর অন্য কোন ব্যাপারকে ভাষার কারণ ও কার্য্য বলিয়া প্রভার যায় ৷ এই ৰূপ অমূলক প্ৰভায়কে কুসংস্কার কছে ৷ এই কুসংক্ষার ৰূপ কাল পুরুষ যে কোন্ দেশে কোন্ মুর্ভি ধারণ করিয়া আবির্ভ ত হ-ইয়াছে, এবং কোন্ দেশে যে কভ অন-র্থ উদ্ধাবিত করিয়াছে, তাহা স্থিয়কপে নিদ্দেশ করা সহজ নহে; কিন্তু যে স্থলে অ-क्षानकात व्यक्षिकात (महे खुलाहे य कुनः-কারের বাস, তাহার সন্তেহ নাই। জানতাই উহাকে সমভিব্যাহারে লইরা ভূ-मश्रुता समन कतिरहरू धदः ए। छा। महार উহাকে চির দিন প্রতি পালন করিচেছে।

মনুবা জাতির মধ্যে বাহারা একণে স-র্মন্ত্রেষ্ঠ বলিয়া পরিগৃহীত হইতেছে, যা-शांक्रिशंत अनामाना कार्या रेनश्रुरशत कीर्डि পতাকা সংসারের সর্বত্র উত্তরেমান হই-তেহে, যাহারা অতলম্পর্শ জ্ঞান সমুদ্রের গভীর গর্ভ হইতে নানা রত্ন উদ্ধার করিয়া মানস মন্দিরকে সুসজ্জিত করিতেছে, যা-शिक्तित অভিন্তরীয় শিল্প নৈপুণা সনদর্শন করিয়া ব্যক্তিমান্তেই বিশ্বরাপল হইতেছে, এবং ঘাহারা মহত্ত ৰূপ মহামঞ্চে আরোহণ করিবার জনা অপূর্ধ্য সোপান প্রস্তুত করি-তেছে; অজ্ঞানাবস্থায় তাহারাও ঐ কুসংস্কা-রের অধীন হইয়া বিধি মতে ভাহার সেবা করিয়াছে, এবং তাহার অনুরোধে অসংখ্য প্রকার অভ্যাচার উৎপন্ন করিয়াছে ৷

• গগনমাঞ্জাক জ্যোতিঃপদার্থ সমুদারের স্বৰূপ না জানিয়া একণে এদেশীয় অনেক মনুধা ধেমৰ তাহা হইতে নানা প্ৰকার ভয় **প্রাপ্ত ছুইয়া থাকে** এবং ত:হাদিগের উদয়া-স্ত ও গতি বিধি দেখিয়া আপনাদিগের শুভা-শুভ ঘটনার কম্পনা করে; অজ্ঞানাবস্থায় ই-য়ুরোপীয় ব্দরেক সভ্য জাতির মধ্যেও ঐ श्रकात कुनः कात वर्खमान हिल। क बाद्रकरेगी स विकाश्य मनुवा विमक क्या म्हास्त्र अर्व पर्वन क्रिया क्रिया क्रिया

७ हेट्ट (पवरक प्राणम्थाच मटन करत, शू-संकात हेतुरतालीय चरतक मनुवास मारे প্রকার মনে করিছ, এবং তজ্ঞরা সংসারের অস্কৃত অশুত কম্পনা করিয়া মহা ভরে ভীত হইত। এপর্যান্ত পুমকেজুর উদয়কে रयमन अरमनीय अरमक मनुगा अञ्चाहित्तवः উপপ্রবের কারণ মনে করিয়া তদর্শনে অ-েশ্য প্রকার কল্পিত অমক্সল নিবারণার্থ নানা অনুষ্ঠান করিয়াখাকে, দেইৰূপ পূৰ্ব্ব-কালে ইয়ুরোপ থণ্ডের মধ্যেও অনেক স্থানে ध्यातक्षु मन्दर्भव कतित्त, ल्लाक् जूमिक-ম্প, ছুডিঅ, মহারণ, জলপ্লাবৰ, ছত্ৰভঙ্গ, খণ্ড क्षमप्त, ताकविक्षय व्यक्ति वस्त्रविध रेमव छ-র্ঘটনার আশক্ষা করিত। এতদেশের মত উকাপাত লইয়াও উহারা নানা প্রকার অলীক কথার রটনা করিত। ভূত ভবি-ধাৎ শুলাশুভ ঘটনা জ্ঞাত হইবার জন্য এপর্যান্ত এদেশে ঘেষন কর-কোন্তী; कर्किनी-পাত, কাকচরিত্র, হনুমান চরিত্র, পত্রাবলি, পা-নদৰ্পণ, নথদৰ্পণ প্ৰভৃতি নানা প্ৰকার কম্পিত প্রীকার প্রান্ত্র্তাব আচে, সময়ান্তরে ইংল-ও প্ৰভৃতি ভাৰেও ঐৰপ নানা মত ভয়ানক অমূলক প্রতারের অধিবাস ছিল। এবং এদেশের নাার ভত্তস্থ অধিকাংশ লোকের মন ভুত, প্ৰেভ, দৈত্য, ডাকিনী প্ৰভৃতি অসং-শ্য প্রকার কাপেনিক জীবের অমূলক ভরে ত্ৰভ ছিল।

জিয়ার অনুষ্ঠান করিরানে ক্রান্থা মধ্যে একটি বিবর অবগত হইলেও অবাক্ হইতে হয় ব

উহাদিশের ডাকিনী বিষয়ে এমত বিশ্বান ছিল, বে কঞ্জা কটিকা বাত বৃক্তি প্রজ্বতি প্রাকৃতিক প্রটনা সকলকেও উহারা ঐতাকিনীর মারার কর্যা মনে করিত, এবং কর্মন অতিবৃক্তি অনাবৃক্তি প্রভৃতি উৎপাত উপস্থিত ইইলে ভাহারা নির্দেশি স্ত্রীলোক দিগতে ভাহার কারও কম্পনা করিয়া বৎপরনাতি যন্ত্রণা প্রদান করিত এবং কথন কর্মন ঐ ভূড্গা স্ত্রীদিগের প্রাণ পর্যান্ত সংহার করিত।

ইংরেজী:১৪৮শাকে কনফানস্ নগরে অসক্ত বজাঘাত ও কঞ্রাপাত ইইরা কিরৎ স্থানের শস্যের হানি হর, ইহাতে তত্ত্বস্থা সকল
অবোধ লোকে উক্ত নগর বাসিনী এনমিণ্ডিলিন ওএগনিস্নামুণ জুইটি নির্দেণিী জীলোককে সেই উপডোবের কারণ মনে করিয়া
প্রাক্তিত অগ্নিকুতে দক্ষ করে ৷

ইংলগু রাজ্যে বর্থন প্রথম জেম্ম রাজা, রাজ সিংহাসনাজ্য হরেন, তৎকালে তিনি ডাকিনী প্রভৃতি কম্পিত মারা ধারী দিগের শাসনের জন্য এক বিশেষ নিয়ম সংস্থাপন করেন, এবং ভাঁহার সেই নিয়মানুসারে এক এক সমর অনেক নির্দেশী অবলা অক্রারে নিহত ইংলিছিল।

কিন্তু আনের কি আশ্বর্যা শক্তি ইব্রেলিখণ্ডে দিন দিন আনালোক যত প্রকৃতি হইতে আরম্ভ হইল, ততই তথা হইতে আরম্ভ হইল, ততই তথা হইতে আরম্ভ হইতে লারিল । জ্ঞান প্রভাব করেল এবং প্রাকৃতিক করেল রার্ করিল এবং প্রাকৃতিক করেল করেল কালকটক অন্তর্হিত হইতে লারিল । তাহারা লোভিবিলার জান পাইরা মুমকেতু জন্মাপাত ও প্রহুলানির জর পাইবিলা আলোচনা করিরা ভাকিনী প্রভূতিক শাক্তির বিশার আলোচনা রার্কিটিক করিল। ভাহারা রার্কিটিক বিশার বিশার আলোচনা রার্কিটিক করিল। ভাহারা রার্কিটিক বিশার বিশার আলোচনা রার্কিটিক করিল।

পরার্থের সংবোজন ও বিরোজন জনিত আশর্থা কার্য সকল প্রত্যক্ত করিয়া ঐক্রানাকিক
জলীক মত্র তত্রে অপ্রত্যর করিবেত আরক্ত
করিল এবং ভুকজ্বিদ্যার অনুষ্ঠান হেডু ভূমিকল্পা প্রভৃতি অনেক প্রাকৃতিক ঘটনার
কারণ অবগত হওয়াতে বিস্তর অমুলক সংকারে আস্থা শূন্য হইল। কাহারা আরুর্বিদ্যার
আলোচনা করিয়া নানা বিধ শারীরিক ও মানিক রোগের লক্ষণ ও কারণ জানিতে পারিয়া কম্পিত ভূত, প্রেত, দৈত্য, তাকিনী
প্রভৃতির অলাক মায়ার বিষয়ে অপ্রত্যর
করিল এবং প্রাণীবিদ্যার প্রত্যক্ত জ্ঞান লাজ্
করিয়া পশু পক্ষী কীট পতঞ্চ বিষয়ক অসক্রত্রক্ত করং কার হইতে পরিত্রাল প্রাপ্ত ক্রমং কার

কেবল এক জ্ঞান গুরুর সহায়ে তাহা-রাঐ সমন্ত কুদংস্কার পাশ হইতে মুক্ত হইয়াছে এবং ক্রমে সভ্যের পথে গমন ক-রিতে শক্ত হইয়াছে৷ তাহাদিগের ঐ স-কল ক্সংস্কার উৎসেধ বিষয়ে যে সমজ কথা বর্ণিত আছে, তাহা অতি চমৎকার। ক্ষণে এদেশে যেমন সর্বদা ভূত প্রেতের প্রতিমুর্ত্তি সন্দর্শন এবং মৃত মনুষ্যের সহি-ত শাকাৎ ও আলাপ করণের কথা শুনিতে পাওয়া যায়, ইতি পূর্বে ইংলন্ড প্রভৃতি স্থা-নেও লোকে মধ্যে মধ্যে ঐৰপ ভুক্ত প্ৰেত প্রভৃতির উপরিভাব দুর্শন এবং মৃত মনু-रवात्र निहरू धाक्त कदरनंद कथा नर्वमा त-টিনী করিত। কেহ সম্মধে দৈতাবং বি-কটাকার প্রতিমূর্ত্তি দেখিতে পাইড, কেহ মৃত পিতা, মৃতভোতা, কি মৃত ক্লী, মৃত পু-জ্রের সহিতও কথন কথন সাক্ষাৎ করিত এবং কেহ কেহ নিরস্তর স্বকর্ণে অসঞ্চত বিকট শব্দ শুনিতে পাইত। এই ৰূপ নানা কারবে ভূতের বিষয় তত্ত্ব লোকের মনে ध्यमन वस्त्रमुण इहेन्नाव्हिल, (यः कारनाक (महे অমুলক প্রভারের প্রতি নির্ভর করিরা ভূত প্রেড এড্ডির কথোপক্ষন বিবয়ক নানা মপূৰ্ব মাধ্যান রচনা করত গ্রন্থাদি প্রকাশ করিতে আরত করিল। পরে তজানুস-বারী শতিভয়া ঐ সমস্ত ভয়ানক কুসং-কারের কারণানুসন্ধান করিছে করিছে বস্থ-रादे कारात पुन्याक्षक्तराम अवर अकाम

জ্ঞানের এখর শনি দার†লোকের দন হইতে সেইখুল উৎসেধ করিতে আরম্ভ করিলেন।

তাঁহারা প্রমাণ করিয়া দিলেন, বে স্থানালিগের চক্ষর এবং কর্ণের এপ্রকার পীড়া জন্মিতে পারে, যে জন্ধারা নানা প্রকার কল্পিত অবয়র আমাদিগের দৃষ্টিপথে আসিরা উদর হয় এবং মানা প্রকার কল্পিত ক্ষান্ত পাওয়া বায় ৷ ইংলগু দেশের কোন বাজি উজক্প এক রোগে আকার হইয়া ক্রমাণত দ্বান্দ বংসর ঐ প্রকার বছবিধ কল্পিত মুর্দ্ধি সর্বাণা সম্পূর্ণে দেখিতে পাইত এবং এক ব্যক্তির সর্বাণা এক প্রকার শব্দ শুনিতে পাইত, কিন্তু ডাংছাদিগের ঐ রোগের শান্তি হইলে পর আর তাহাদিগের সে প্রকার ভন উপস্থিত হইক না ৷

গাঁচ ৰূপে কোন বিষয় চিন্তা করিলেও
তাহা আমাদিগের নিকট খনেক সময়
প্রত্যক্ষর প্রতিষ্ঠাননা হইতে পারে। এক
বাজির জ্রী বিয়োগ হইলে পর দে অতি
শোকে আছ্লম হইয়া সর্বাদা সেই মৃত
জ্রীর ৰূপ চিন্তা বরিত, ইহাতে কর্বন ক্থন
ভাহার এমন ভ্রম উপস্থিত হইত যে তাহার বনিতা আসিয়া তংহার সহিত ক্থোপ্রক্ষন করিবের কেন্টা ক্বিত অমনি হৎক্ষণ
গাঁৎ তাহার সে আহি দুর হইত।

কথন কথন অপু হেডু ও ভূত ভ্রমের উৎপত্তি হয় ! এক বাজির কথন ডখন এপ্রকার নিজা উপস্থিত হইত, বে সে তাহা জানিতে পারিত না এবং সেই নিজাবস্থার অপুক্রে সভ্য বোধ করিত ৷ সে বাহা কিছু স্বপ্রে অবলোকন করিত, অপুভ্রেও তাহাই তাহার প্রভাক্তবং প্রভারনান হইত ৷

মন্তিকের পীড়াও ভূত দর্শনের এক প্রধান কারণ। বর লিন নগরের নিজোলাই নামক এক ব্যক্তি পুস্তক বিক্রেতার ঐ রোগ উপস্থিত হওয়াতে দে বংসরাব্ধি প্রায় সর্ক্র্যা আপন সন্মূবে প্রীপুরুষ পদু পকীর অবয়ব দেখিকে পাইত। অনন্তর চিকিংসক্রয় বর্ধন আহার দেই রোগের কারণ কিনিই করিরা এক আহার নেই রোগের কারণ কিনিই করিরা এক নেকরা আহাকে আহার

রোগী করিলেন, তথন ভাষার দে ভূক বর্গ-নও আপনা হইতে অকর্ষিত হইল।

কোন কোন সময় কৃত্যুটিকা উপস্থিত হইলেও তল্পাব্তী নিকট্স সামান্য পদার্থকে দুরস্থ অতি প্রকাশু বলিয়া বোধ হয়। কোন পর্কতের নিকট এক ব্যক্তি একবার শুনা পথে কতক গুলি বিকটাকার দৈন্য গ্রেণী দর্শন করিয়া মহাভীত ইয়াছিলেন! গরে অনুসন্ধান দ্বারা প্রকাশ ধর্ণ সেকতক গুলি ব্নচারী মনুখের মুক্তি সেই পর্কত সন্নিক্তি বাস্পের উপর প্রতিক্তির হওয়াতে ঐ ভ্রানক সেনা সমূহ দৃষ্ট হুইয়াতে, বাস্তবিক তাহা কিছুই নহে।

এইবুল বছানিৰ প্ৰত্যক্ষ প্ৰমাণ ছাৱা তত্ত্বা-নুসন্ধায়ী পণ্ডিত গণ ইংলও প্রভৃতি স্থান হ-ইতে ভূত প্রেভ বিষয়ক অমুলক কুসংস্থার ममुरल छ। एमर करतन अवर किन किन वर्फ অন্যান্য নান্য প্রকার পদার্যভক্ত প্রকাশ পা-रेटल थाइड इहेन, उठहे के जकन साम इ-ইতে অপরাপর নানা জাভীয় কুসংস্কারও অ-भन्नी व स्ट्रेट लाशिया चाठवर विस्कृत দৃষ্ট হইছেছে যে ফুদংকারৰূপ কাল রোগ নিবারণের কেবল জ্ঞান মাত্র ঔষধ এবং সে জ্ঞান কোন কাব্যলিক্ষাবের অধ্যয়ন দ্বারা-ও উৎপন্ন হইতে পারে না ও কোন স্থি পাঠ করিলেও প্রাপ্ত হওয়া याय ला। य विमा याता अक्र क करन পদার্থ তন্ত্র নিম্নেন্দ করা যায়, কেবল পেই বিদারে অভাসে ছারা উক্ত জান উ-পার্জন কর। বাইতে গারে। এই ভারতভূমি-তে সেই প্রকৃত জ্ঞানের সমধিক প্রচার নাবা-কাতেই অপ্রায় এদেশের অধিকাংশ মনু-रा जल्पर अकात कुम्रकात शाहन देखा ब-হিয়াছে এবং ভক্তন্য অশেব প্রকার ক্লেশ জ্যের করিতেছে। अटमटनात्र व्यशनमीस व्य-পরপ কুসংক্ষার জালের রুক্তান্ত তাবণ ক-রিলে আশ্চর্যান্থিত হইতে হয়। এমন বিবর নাই যাহা ইহাদিগের কোন এক প্রকার কু-मशकादवन विषय **बटहा कि स्था स्ट्र** এহ ৰক্ষ, ফি পশু পকী কীট পড়ক, ক্লি ৰূপ বায়ু ভেল মৃত্তিকা, কি খিবা রাজি कारुः मन्ता, मुक्काकात्र शहादग्रिक्ट के

राता अस अस कामात्र अनुसक्त कामात्र आजा ৰ করিয়া ব্লাধিয়ীছে: 🎏 অভূলক প্রভার वण्छः हेशांक्रिशत मर्शा (कह वा मर्क्रिशव শুনা-সামান্য পজিকে সাক্ষাৎ ব্ৰদুত ভাষ করিয়া ভাহার রবে কম্পিত হইতে থাকে। কেই ৰা কাল স্বৰূপ কাল সৰ্গত্তে শুভ দাভা वाख रमवंडा महत्र कहिया खादात अर्हना করে ৷ কেছ অভি কুটিল বভাব প্রকাশা अञातकरक मृत्रमणी रेमवळ छित कविश মহাপ্রছা করিতে প্রবৃত্ত হয়। কেহবা বাত বৃটি মেখাদি বৰ্জিত অতি রমণীর সময়কে অনর্থ-ক অশৃতকণ বোধকরিয়া তৎকালে অত্যস্ত আৰশ্যক কর্মের অনুষ্ঠান ত্ইতে বিরত হই-য়া পাকে, কেহ বা তিমিরারত যোরা রক্তনীর পলার্ক মাত্রকে শুভ কর্ম সাধনের প্রশস্ত কাগ বিবেচনা করে, কেহ সামানা শারীরিক অসুস্তা হেতু আপন'কে মন্ত্ৰময় বাণ-বিশ্ব কল্পনা করিয়া রুখা মনঃ গীড়ায় পীড়িছ हा, आक्र रा छे कहें हारा आका ह हहे-লেও, তাহা কম্পিত ভৌতিক ভাব মনে ক-করিয়া প্রকৃত চিকিৎসা অভাবে প্রাণ ত্যাগ করে এবং কত ব্যক্তি আপনাদিগকে কল্পিচ ভৌতিক রোগের চিকিৎসক পরি-**চ**য় निश्नो अनर्थक **वस्र** (लाटकंब धनक्कंग कट्ड अ नाना श्रकात क्लम (क्रा পকার নাই, যাহা ঐ সমস্ত কুসংস্কার ৰূপ विव इक रहेटल उर्भन्न ना रहेबाटर, अवर এদেশে প্রার এমন একটি পরিবার নাই: याश्टक ले नकल शहनमञ्ज कल (छाश क्रि-তেনা হইয়াছে। কি ইভর কি ভন্ত, কি धनी कि पतिख, नर्स श्रकात लाटकत मर्थाहे ঐ কালকৃট বিষের সঞ্চার আছে ৷ ভবে (मोणारगात विवय अहे विलय्ण हहेरवक. त्य अक्टा॰ अरुएकगौत कान काम लाक था-क्र कारबत डेक न चारनाक आश हरेता बे कुनरकात वर्ग चात्राखकात स्ट्रेट १५-तिजान क्षांश स्टेब्राट्सन ध्वर बट्बट्स स्था-नालाक पिन पिन वर्ष विकीर्ग स्टेटक पा-কিবেক, তত্ত যে এখান হুইছত নৰ্ম প্ৰকা-त कृतरकात अक्षांत कतिरहक कारात न-海治於一分 教教 一一 教教 不知時 美教

### বিজ্ঞান-বার্ত্ত। ভোডিব।

১— ৷ দুরবীক্ষণ যন্ত্র ব্যক্তীত কেবল
চক্ষারা বৃহস্পতি গ্রহের চন্দ্র ও শনি গ্রহের অঙ্গুরীয়ক সংরাচর দেখিতে পাওয়।
বায় না, কিন্তু তীড়ার্ড নামক এক জন
সাহেব, পারসীক দেশের অর্ক্রায়া নামক
স্থান হইতে কোন সময়ে ঐ সমুদায় দুরবীক্ষণ ব্যতিরেকেও দুক্তি করিয়াছিলেন।

American Jonrnal, No. 56. উভিন্যো

>— ৷ দিন দিন মনুষ্যের জানালোক দত বৃদ্ধি হইতেছে, চতই ঈশ্বেরে রাজ্যের অন্তুত ব্যাপার সকল প্রকাশ পাইতেছে ৷ বীজ হইতে বৃক্ধ উৎপন্ন হওয়াই আশ্চয়, আবার এক বীজ হইতে অন্য বৃক্ধ উৎপন্ন হওয়া হৈ কত দুর আশ্চয়, তাহা কি আমরা মনেতেও ধারণা করিতে লাবি ৷ একণে এক প্রকার সামান্য তৃত্বের বীজ হইতে অপূর্ব্ধ গোধুম শ্সা উৎপন্ন হইতেছে ৷

সিসিলি উপথিপে এক প্রকার তৃণ ক ইয়া থাকে এবং উক্ত বিপস্থ ইতর লোকে প্রীয় বাতুর শেষে সেই তৃণ উৎপাটন ক-ব্যক্ত অগ্নিতে কিঞ্জিৎ সন্ধা করিয়া অতিশ-য় আমোদ পূর্বাক তাহার সেই ঈষদ দক্ষ বীজ জ্বলণকরে। কুন্ন রাজোর দ্দিনাং-শ্বাসী কেবর নামক র্যাবিদানিবিশারদ এক ব্যক্তি ঐ তৃণ বীজের লক্ষণ দেখিয়া অনুমা-ন করিলেন যে, ইহা অবশাই ধানা, ধো-ধুম, যব প্রভৃতি কোন এক প্রকার শসা জাতি ভুক্ত হইবে, তাহার সক্ষেহ নাইং এবং তিনি সেই অনুমান সপ্রমাণ করণ উ-কোশে যধা নির্যোধন ।

ইংরেজী ১৮৬৮ সালে, তিনি অতি যত্ত্বপূর্বাক এক থণ্ড জুনি বিলক্ষণ কর্মণ করি

য়া, ভাহার চতুর্লক ভিত্তি হারা আর্ত করিলেন, এবং তিনি সেই জুনিতে উক্ত ভূণের কতক গুলি বীজ বগন করিলেন, ভা-হাতে ভক্তংশন শলোর আকার কিনিক কণাভারত কুইরাআইক। কেবর সাহেব ইহা দেখিয়া বিলক্ষণ ভরনা পাইলেন, এবং উৎকৃষ্ট কৃষিকার্যা খারা বর্বে বর্বে সেই তৃণের ক্রমোদ্রতি নাধন করিয়া দেখিলেন, যে সপ্ত বংশর ক্রমো ভতৃৎপদ্ধ শাস্য অপুর্বা গোপুন করে পরিণত হইল। দেখিতে ঐ শংলার আকার অবিকল গোপুনের ন্যার এবং গোপুনের গোখাদের সহিত ছাহারও আহ্বাদের কিছুই বৈশক্ষণ নাই। এক্ষণে বহুসংখ্যক লোকে সেই তৃণ উৎপদ্ধ গোধুম ব্যবহার করিয়া ক্রীব্ন ক্রিভেছে।

Chamber's Imroat February, 1855. র সারম ও গাঁভুবিদ্য

১- ৷ করেক প্রকার জন্যের সংশোগে একরূপ প্রস্তুর প্রস্তুত হইতেরে ৷ তাহাতে জকু, সর্জারস, ধুনা, গল্পক, গুড়াচন, জিপ্সুম, বালুকা ও প্রস্তুরের গুড়া, এই করেক জবা লাগে ৷ বিভাগমত ঐ কয়েকটি জবা নিশ্লিত কার্য়া কোন পশক্রে কমাগত মালোড়ন করিতে হয় ৷ গরে ছাঁচে ঢালি-ধা ভাহার উপর কোন ছারী জব্যের চাপ দিয়া রাগিলে পর এক সপ্তাহ্রে মধ্যে ভাহা বিশক্ষণ কঠিন প্রস্তুর রূপে পরিগত হয় ৷ কোন উব্যের সংখোগে ধে কোন্ বস্তু উৎসর হয় ভাই) কে বলিতে পারে ১

২ - ৷ আমিরিকা গণ্ডের অন্তর্গত ব্-গটন নামক হানে, এক অভ্যন্ত বৈছ্যা-ভিক ব্যাপার ঘটিয়া গিয়াছে ৷ ১৮৫৪ দালের ১৭ডিনেয়র দিব্দে সন্ধ্যার সময় ও-রের নামক এক ব্যক্তি উক্ত স্থামের এক প্র-কাণ্ড শেভুর উপর ভ্রমণ করিতেছিলেন, ইতি মধ্যে ভিনি উপয়াপরি কংগক বার একৰপ শব্দ শুনিতে পাইলেন এবং দে-विलान (य. अठि स्का जीक कलेकदर अक व्यकात अमार्थ चात्रिश डाहात ननाटि विका হইতেছে, ইহাতে যেমন ভিনি ললাটে হ-স্তার্পণ করিলেন, অর্মান হস্তেতে কতক গুলি কুলিক্সবং বৈছাতায়ি দেখিতে পাইয়া আ-শ্রমান্তি হইলেন। তিনি ইছার কারণা-नूनकानार्थ हेण्डणः अवत्नांकन क्षेत्रित्छ कतिरक रमरथेन एवं रमहे रमकु शार्षक क-तिकार लक्ष्म रहेट अनवक्र বিদ্যাৎ শিখা নিৰ্গত হুইতেছে ৷ পরে তা-হুংর হস্তু, যৃত্তি এবং বস্ত্র ও টুপি হুইডেও অনবর্ত অগ্নিশিখা ও একর্প শব্দ নি-গত ক্ষতে লাগিল।

১\_\_৷ এতক্ষেশীয় অনেকে কোহিমুর बायक होबुटकतहे अधिका समिवादम्बन, धनः त्रः पुत्र महत्रा अकृत्य एएकारक है मर्का एवं छ हाला आदमम, किछ मण्लुकि दण्लाहम मा-अक अक क्रम मार्डिय द्विक लिम क्रेट्ड যে এতি কু কীরক আগু ক্ইয়াছন, তাহণ (41-কোহিনুর অপেকা অনেক বৃহৎ! হিন্দুর পরিমাণে ২৪৪ র্ডি নাত্র, উক্ত: श्तिमार्ग अकर्ण १०० आहम किंकु काणिया आह २०६ तक फड़ेटबक, এवर खेड़ांड़ शठेन ए **Бाक**िक অতি উৎকৃষ্ট, উহার নাম ৰক্ষিণ তারা ব-কিত হইয়াছে! এফনে প্রসিদ্ধ আর যে চারি পাঁচ খণ্ড হীরক রম্ব জাছে. काङ्गित्भवरे मत्था गरा स्टेशांट्स १ দার মুল্য এপর্যান্ত নির্দ্ধারিত হয় নাই। এবং এপর্যান্ধ উহার দংকারও হয় নাই, छेहात शास्त्र भाग शकात थेनिक खरवात 5িছ আছে: যে স্থান হইতে উক্ত রঙা প্রাপু হুওয়াগিয়াছে, দে স্থান স্বতি প্রসি-দ্ধ রব্লাকর বলিয়া পরিচিত আছে, এবং এপ্রান্ত তথা হইতে যে সমস্ত রত্ন আসি-शहर जाडात मत्या डेख्न बच्चे नर्स (अर्थ ) ইংরেজী ১৮৫০ সালের শেষে ঐ রত্ন প্রকা-भिए इस १८७९ शेकिटकांत्र स्माटम खिकल দেশের অন্তপতি বোগাজম নামক স্থা-त्वत्र तुक्ष्यंवित महारा धक्ति वित्तु कालीप्र স্ত্রীলোক কর্ম করিতে করিতে ঐ দীরক প্ৰাপ্ত হয় !

I.iterary Gazette, 18th August, 1856
৪—1 ইংলাও দেশের অস্তঃপাতী
রিভিং নামক স্থানে এক অভিনব সুবর্ণের
থনি প্রকাশ পাইয়াছে 1 ফিলিপস্নামক
এক ব্যক্তিশপ্রসিদ্ধ ভূতত্ত্ব বেঙা ঐ স্থানে
লৌহ অনুসন্ধান করিছে গিয়া উক্ত সু
বর্ণের খনি প্রকাশ করিয়াছেন।

American Journal, No. 56.

>--। जनमंत्रीयक अक्यन गौर्ट्य अक् था-

শাৰ্য টানা পাখ্যৰ কৰা ৰাজ্যত কৰিবাছে-न । जे कल बांबा राजन गढ बांधना हरेए চালিত इरेरबक, ভাহাতে কোম লোকের সাহায্য আৰশ্যক করিবেক না, যেমন ঘ-विका यञ्चटक हेव्हानुत्रादत जक्षानन कर्त्रा उ বন্ধ করা যায়, উক্ত কলকেও সেইৰূপ ই-क्षानुगारत हालिए ७ क्रम केंद्रा गारेरक। বিশেষতঃ উহার জন্য কোন বিশেষ আ্বা-**७४३ क्रिवाइड श्राट्य म इहेटवरू मा,** भुरत्व मर्था चिका य खकात जिल्लिक मर-लग्न थातक डेब्ल कलाउ (महे ध्यकात थाकि-বেক। ঘড়ির অপেকা উহার আকার রহৎ মতে, সুতরাং উহ। ব্যবহার করা কি স্থানান্তরে লইয়া যাওয়া কাহারও পক্ষে অনায়ত্ত হইবেক না! মনুধাকাতি বুদ্ধি চালনা করিয়া ক্রমে কত প্রকারই কায়িক এমের লাঘ্ব করিতেছে, যে সমস্ত কার্য্য অনব্রত অজ সংগালন নাকরিলে কোন ক্রমে সম্পর হইত না, তাহা একণে বিনাশ্র-म निकार हरेवाद छेशास स्टेटक्ट्रा

Englishman, 28th July, 1855.

ভবানীপুরস্থ বান্ধ সমাজের বক্তা তৃতীয় সাধংসরিক সমাজ

व्यामानितात ख्वानीशृतक खाक्रममाक তিন বংসর বরংক্রম শতীত করিয়া অদা চ-তুর্থ বর্ষে প্রবেশ করিছেছে। এই সমাজ প্রতিষ্ঠিত হওয়াবধি ছুই বৎসর পর্যান্ত বৈ-ठनिक खबरन रेहात कार्या निकाह इरेगा আসিতেছিল, পরে গৃত ঠ আবাঢ় দিবদে বিতীয় সাস্থসরিক সভা উপলক্ষে এই মু-**उन** जमान मन्तित्व श्राटम कविताविध ध-कांक्किटम अक वस्त्रत भर्यास स्काही बद्दार्ज कक्रने अमामार छेपामना कार्यामि वहे सारम निर्विष्यु मण्यन्न इहेसा व्यागिरण्डह । अहे काटन मगाएकत काम्रा चात्रल स्टेशात नम-(म्र चरनक विषयात्र गरंबके चळाकृत क्ति। विश्वभन्तः कान हिन्नाद्रि वक् कार्यामू-श्वार्थ बन्दान रहेर्ड जानावरत अमन क-রাতে প্রবলবিশক মঙলীর বিশক্তা ভরে कार्यमा प्रतिनंत कीक वर्षेशक्तिमान। यह त्रप्राच त्व जीविश शानक्षिक किस देशा व

केविक हरेरन के जा मानिएक असम काना क **छत्रना दिस बाँ। किन्ह सर्थन नटा पर्दार्थन** व প্রজ্ঞবণ জনগণের অন্তরে নিরন্তর নিঃস্ত হইতৈছে তথ্ন ভাহার প্রবাহ রোধ করা কাহারও সাধ্য নহে। যে পরাৎপর পরম शुक्रांचत्र शिश्रकत कार्या निकीह कना हेहा প্রতিতিত হইয়াছে, তাহারই অসীম করুণা প্রসাদাৎ ইবার উন্নতি সাধিত হইয়াছে ৷ কি-স্ক্র হার! আমাদিগের সে উন্নতির বিষয় মনে मत्म जात्मानम कतित्म मृत्र स्ट्रेट स्त्र। ख्वानीश्रुतक वाख्ति वाटकत मःथा। शगना করিলে ন্যুনাধিক ২০০০০ বিংশতি সহস্র वार्षिक इनेटवक, किन्तु उन्नार्था अमा किरल চারি পাঁচ শভ ব্যক্তি সমাজারত হইরাছেন ৷ ইহা কি আমার্দিগের আশার উপযুক্ত কল ? আমাদিগের আশা, যে অত্তস্ আবাল বৃদ্ধ त्रकल (त्राट्क्डे थरे त्रशाटकत खेल्ला विव-्य यञ्जनीत इहेरवम, मकरलहे हेहांत्र छै०-সবে মনের সহিত আমোদিত হইবেন এবং अकत्नवहे मृत्य हेशाव १७७ माभरमत कर्पः শ্ৰিতে পাওয়া যাইবেকাবে দিন আমা-र्गमरशत এই ज्यामा शूर्न इडेरवक, मिन-ই আমরা আমারদিগের পক্ষে প্রকৃত শুঙ দিন বলিয়া মনে করিব, কিন্তু তথাপি বাঁহা-त कक्न श क्षत्रादमं अहे नमादमत कार्या नि-বিঘ্যে এই তিন ৰংসর কাল প্রচলিত হইয়া वानिएक्टर बंदर नामां विचु নিবারিভ हरेशा कटम रेहात श्रीवृद्धि हरेवात छेशात्र হইতেছে, অন্য ভাঁহাকে নমস্কার ও স্তুতি না করিয়া নিরন্ত হইতে পারি না।

হে লগং অভা! তুমি ইছামাত এই অধিল ব্ৰহ্মাণ্ড কৃতি করিয়াছ এবং ইছামাত্র লয় করিছে পার । তুমি ইহাকে অবস্ত কৌলল ধারা রচনা করিয়া ইহার অন্তর্ভ প্রত্যেক পদার্থকৈ ব্রেথাপমুক্ত হানে ব্যাপন করিয়া নিরস্তর তোমার কুপা পাত্র লাব কিবনে করিয়া নিরস্তর তোমার কুপা পাত্র লাব করিছেছ । তুমি সৃত্তির প্রথম কালে তাবং ভবিষাৎ বিষয় আচলাচনা করিয়া সৃত্তি ছিলি পালন করা বে সমস্ত বিষয় সংস্থাপন করিয়াছ কেই সমস্ত ব্যাক্ষানিক বিষয়ার করিয়াল করিয়

MANAGE OF SHAPE वित्रमाञ्चगादन स्वा छेवत हरेता चारामिश-क बालांक छ छेडार्श अन्नान क्रिएटह. क्ष जकल धकाषिक्राय श्रीबर्ग्ड हरेग्रा বৎসরের বৈচিত্র্য সম্পাদন করিতেছে, কায় নিরস্তর সঞালিত হইয়া জীবগণের প্রাণ্যকা করিতেছে, মেঘ সকল আকাশ মণ্ডলে ব্যাপ্ত रहेश अपयोश्य वाति वर्षन कतिरहरू, बुक् मकल कलमाली इहेग्रा तमनात जुलि मन्त्रा-मन कतिराहर अवः मुनिश्च हात्रा श्रमान করত পথিক দিগের প্রান্তি হরণ করিতে-ছে। এই ৰূপে প্ৰত্যেক পদাৰ্থ নিজ নিজ কার্যে। নিযুক্ত থাকিয়া আমাদিগকে সুখ স লিলে সতত সিক্ত করিতেছে। প্রভোগ ভুমি গর্জন সন্তানের জীবন রক্ষা নিলিত্ত ভাহার ভূমিষ্ঠ হইবার পুর্বেমাত স্তনে জন্ধ সং ঞার করিতেছ। তুমি মাতার জনরে অ-क्षि अह थामान कतिया निरुप्तगटक था তিপালন করিতেছ। আহা । পক্ষী সমস্ত আপনাদিগের কৃত চঞ্গারা কি মনোহর वामकान मकलाई व्यञ्जकत्त्र वादः अध्यत् আহার বহন পূর্বক কি মধ্রময় লেহ রস ध्यकान क्रिया मावकशनक वक्का करत । दह क्क्रगमत्र । जूमि कीव विदम्द कोमल क्षका-শ করিয়ী কি আশ্চয্য মহিমা প্রকাশ ক-রিয়াছ! তুমি দ্বিপদ ও চতুম্পাদ জীবদি-श्वत मिन्तरक मूधा मन्न छेलारमञ्ज्य তৃষ্ণ বারা রক্ষা করিতেছ, কিন্তু অতি কুদ্র ও पूर्वन विरुक्त कांकि ও कनंदर कोदशर्गत প্রাণ রক্ষা নিমিত্ত দেরপ নিয়ম কর নাই ৷ তাহারা চঞ্চু ও অন্যান্য উপায় দারা কঠিন वञ्च-जक्त जाहांत्र कतिया जीवन धातन करते। হা ! ভৌমার অসীম কৌণলের তাৎপর্যা গ্র-হণ করা কি সামানা মনুষোর সাধা? পকি नकरनंत्र हक्ष्म खना शास्त्र छेशयुक्त ना कति-রা কঠিন করিয়াছ, সুতরাং, ভাহারা কঠিন खरा नकन चाहात कतिया थान धातन करता। ভূমি জলচর, ভূচর ও খেচরে সমভাবে

ভূমি অলচর, ভূচর ও খেচরে সমভাবে ব্যাপ্ত রহিরাছ এবং তাহাবিগের প্রাণ রক্ষা হেজু বংবাপবৃক্ত ভক্ষা এবেরর সৃত্তি ক-রিয়াছ । ভূমি ভূমিকে তুলাদি বারা প্র-রিয়াছ করিয়া ভূমিকে পালন করিতেছ। ভূমি ভালেতে গুলা প্রভৃতির স্থান করিবা ললচর্দিগকে রকা করিতেছা ভূমি ম-মুবা, পদা, পক্ষী কটি পতক প্রভৃতির পিতৃ প্রশেপ সকলকেই সমান্ত্রপে পালন করি-চেছা

হে বিশ্ব পিতা! আমি ভোমার স্তুতিবাদ কি করিব। এই সমস্ত ব্রহ্মাণ্ড উচ্চেংম্বরে ভোমার মহিমা গান করিতেছে। অতি প্রসা-রিত স্মুত্রস্থিত তর্জ সমূহ কল কল ধুনি করত তোমার অসীম শক্তি প্রকাশ করি-পৃথিবীস্থ সমস্ত পক্ষিজাতি সু-विक ७ मूरकामंत यथुतचरत **र**ामात महिमा গান করিতেছে। বায়ু প্রতিমিয়ত দঞ্চ-রণ করিয়া ভোমার মহিমা কার্ত্তন করিছে-ছে ৷ এবং প্রতি হিলোলে গাত্র মিশ্ব ক-রিয়া তোমার করুণার সমার্চার ঘোষণা ক-तिर्टाहर । यथन नर्टामञ्ज **अम्बी नक**ञ মালায় ধেষ্টিত হইয়া মন্তকোপরি মনোহর চক্রাতপ স্থৰূপে ব্যাপ্ত হয়, সর্বোবর সমস্ত আপ্রাদিণের অনিকানীয় শোভা প্রকাশ করে, মধুমঞ্চিকা সমস্ত গুণ গুণ ধুনি করত পুষ্প সমূহে উপবেশন পূর্বক ভৌমার গুণ कोर्डन करत, छझ जकन तकनीनार्यंत तमनीय সুধা পান করিয়া অপূর্ব্ব শোভা ধারণ করে, পূষ্প এমস্ত নিরস্তর মধুরসৌরভ প্রচার ক-বিয়া মন্দ্রমন্ত্রীরণ সহকারে সমস্ত কান-নকে আনোদিত করে এবং সমীরণ ইতন্ত-কিং তৃক প্র**েব সংলগ্ন হইয়ামধুর স্থার** কর্ণ জুহর শাতিল করে, তথন এমন পাশানময় চিস্ত জাহার আছে, যে আন**ন্দরসে অভি**ষি-ক্তে না হল এবং তোনার সহিমার অভাগাধু नावाम ना करतः

হে পরম বন্ধু! তোমার গুণ যত ক জিন করি, ততই রসনেন্দ্রিয় মধুর রস ক্ষরণ করে এবং তোমার মহিমা বর্ণনে নিরস্ত না ২-ইয়া ঔৎস্কুজাই প্রকাশ করে ৷ তুমি আমাদিগের সভাধর্ম সুধাকরের নির্মাল কিরণ বিস্তার করিতেছ ৷ তুমি সভা ধর্মের উন্নতি সাধনার্থে নিরব্ধি কৃত্রুণা বর্ণ করিতেছ ৷ তোমার নিক্ট আমাদের কিত্র প্রধানা নাই ৷ তুমি আমাদের স্কুল

বাসনাই সিক্ক করিরাই ওঁসকল বঞ্চলই সস্পাদন করিটেছ। তথাচ আর্রা আন্
র্বনা না করিরা থাকিতে পারিনা, এই নিমিজ
অভিনাষ করি, তুমি ব্রাক্ষাদিগের মহোছতি
কর, এই সমাজের কল্যান কর। তুমি ইহার বিপক্ষ দিগের অভ্যান বিমোচন করত
অপক্ষতাচরলৈ ব্যপ্র কর। তুমি মাতৃবৎ
প্রতিপালিকা বসুমভীকে মিধ্যাধর্ম প্রচারকদিগের দৌরাদ্যা হইতে নিভার কর।
তুমি সমন্ত মনুবাকে পাপের হল্ত হইতে পরিত্রাণ কর। তুমি এই অসীম ব্রক্ষাণ্ডকে
সভাধর্ম জনিত অনির্বাচনীয় আন্দের শাবাস কর।

হে প্রভো: আমরা পরম পবিত্র ভ-ক্তি-পূজা, সুনিম্মল প্রীতি-চন্দনের সহিত একত্র করিয়া, অতি গ্রন্ধার সহিত ভোমার পূজা করিতেছি এবং ক্লভ্ডভার সহিত ভোমাকে বার বার নমস্কার করিতেছি 1

# বিজ্ঞাপন

জীযুক্ত বারু রাজনারায়ণ বসু কলিক:-তাও মেদিনীপুর ব্রাক্ষ সমাজে যে সকর্ল বজুতা করেন, সেই সমস্ত বজুতা একণে একর সংগৃহীত হুটরা পুস্তুকাকারে প্রকা· শিত হইয়াছে ৷ যাহারা শাংসারিক কর্ম-আমহইতে অবস্ত হইটামধ্যে মধ্যে ঈ-শর প্রসঙ্গরা সুখী হইতে ইক্তা করেন, ত হারদিগের পক্ষে উক্তর্মন্থ বিশেষ উপকা-রী, বিশেষত যে সমস্ত তত্ত্বরসাকাজকী ভগ-वस्तुक उक्क ভावायणम् भूक्षक नेगात व्य-মাম্তপান করিতে অভিলাব করেন, তাঁহা-রা ঐপুস্তক পাঠ করিয়া প্রাচুর আমন্দ লাভ-ক্রিতে প্রারিবেন, উহার মধ্যে এৰপ প্রস্তাব একটাও নাই যাহা পাঠ করিলে মনোমধ্যে পরমার্থ রুসের সঞার নাহর । উক্ত পুস্ত-क मर्स मार्थात्र ग्वांशि मूलकार्थ केहात बूला ॥० व्यक्षे अका माक निर्कादिक रहेशा-त्ह । याहाता के भूषक खरन कतिए है-म्हा करवन, जारावा मुना (व्यवन कविरलरे প্ৰাপ্ত হটতে পারিবেন । n aller alean at 1999 aleanist sace

সভাপ্রবেশ মান ছইতে ভজাবোধিনী সভার প্রতি নতা প্রতি মুহদ এই শ্রমিকার এক বত বিলা দুলো প্রার্থ হরেন।



স্কলের নিজ্ঞাৎ আনমানতং পিরং মত্ত্রং নির্ব্ধন্যক্ষেত্রেরাছিড়ীয়ং সর্বার্যাপিনকানিয়ন্ত্রকাঞ্চন্ত্রনক্ষিত্রং পুরংসূর্বায়িতি।

ভिष्म श्रीडिक्सा शिक्कार्मामाध्यक छम्लासमहार

অনেক সময় অনেকের নিকট এই ঞ-কার আক্ষেপোক্তি প্রবণ করিতে পাওয়া যায়, যে মনুষ্যের মন নানা প্রকার বাছ বিষয়ের অধীন হওয়াতে, ঈশর আরাধনার পকে বিশেষ বাাঘাত জলিয়াছে৷ মনু-° ষ্যের মন যে কড বিষয়ের অধীন তাছা নি-দেশ করাই কঠিন। কঁখন নয়ন পথে পদার্থের রমণীয় ৰূপ প্রবেশ **अ** मृत्रा করিয়া ভাহাকে হরণুকরিতেছে, কথন না-না প্রকার সুজ্ঞান্য স্বরুমাধুরী ভাষাকে আ-कर्षन कतिरहाइ, कशन मिल्लका मालही था-ভৃতি সুরমা কুসুমের সুসৌরভ ঘাণেক্সিরে প্রবিষ্ট হইয়া ভাহাকে মোহিত করিতেছে, এবং কথন রসনা রঞ্জন নানাজতিয়ি উপা-দেয় রস মাধ্যা তাহাকে আক্রমণ করিছে-ছে। মন যেরপ এই সমস্ত নানা প্রকার বাছু বিষয়ের অধীন, সেইৰূপ আবার না-নাপ্রকার আন্তরিক ভাবেরও অনুগত ব'মন কঁখন ব্লেহে মুক্ক হইটেছে, কখন প্রেমে ব্রু ररेटण्डह, कथन मरणत अनुनामी वरेटल्डह, এবং কখন মান ছার। আকৃত হইতেছে। ष्ट्रक्ष अहे क्षकात ब्रह्मविश्व बाचाक महत्तु कि अकारत निर्दिष कश्रही बहुतत जाताथना क्या समूर्याङ माथा रहेट्य भारत । किस गावात्री अहे तमक विवस्तातः शत्राम्यादतः BALL BUT THE MORE BASE HIS BEEN র্থা ক্ষোভে ক্ষুক্ত হয়েন এবং ইচ্ছা পুর্বক আপনাদিগের জ্ঞাননেতে, অলীক আশক। কণ ধূলি প্রক্ষেপ করিয়া ভাঁহার সুনির্মাণ নক্ষমর ভাবের অনুপন শোভা সন্দর্শনে বঞ্চিত হয়েন, তাঁহারা যদি কিঞ্ছিৎ গাঢ়ক-পে বিবেচনা করেন, তবে অনায়াসেই ভাঁহাদিগের উক্ত ক্ষোভ দুর হইতে পারে এবং ইশ্বের সুশোভন মঞ্চলকরী মুর্ভি তাঁহাদিগের নিক্ট পরিস্কৃতক্তে প্রকাশ পায়।

य मक्ताकत व्यक्ति भुद्रव दिवत करू-ণা বিভরণার্থ এই বিশাল বিশ্ব সংসার সন্তি করিয়াছেন, এবং ঘাহার অপার করুণার নিদর্শন প্রভোক সৃষ্ট বস্তুর মধ্যেই সুস্পাই ৰূপে প্ৰকাশিত রহিয়াছে, তিনি স্বস্থী ম-নুবাকে কোন বিষয় ছারা তাঁহার ভ্রান লানে বঞ্চনা করেন নাই এবং কোন ৰূপে ভাহাকে वि इश्वनाथ करत्रम नारे। जिनि सनुत्यात निक-ট আপনাকে প্রকাশ করিবার উদ্দেশেই তা राक अधकात श्रकृष्टि श्रमान क्रियारहन, এবং মনুষ্যের নিকট প্রকীয় মহিমার পরি-**हत्र क्षणान कत्रितात्र कमारे किया भक्त, म्लार्था,** बर्ग, त्रम, शंकामि विवस मकलाक नियुक्त করিয়া রাধিয়াছেন। তিনি আমানিগকে बामा ध्यकात देखित ७ मरमात्रि आहात क्रिकारक्ष निवारे पासरा अक्रिक् का-

कात खान लाएक मंगर्थ कहे एक हि। किनि यपि आमापिशदक पर्भावित्वम् अमान मा कु বিতেন, তবে আমরা আর কি উপার বারা বী मूनिर्मात भारत प्रमिनीत मन्दर मिकी এবং নয়ন রঞ্জন স্থিশোভন পুষ্পকাননের রমনীয় ৰূপ সন্দর্শন প্রবাক তাহার মধো क्रशमीयद्वद विक्रशम (मोनमर्या विदीक्रव করিয়া অনিকাচনীর সুখ প্রাপ্ত হইতাম। ভাহার নিকটছ্টতে আমর যদি অ-শেষ সুখের হেতু স্বরূপ এই প্রবণেক্তি-য় প্রাপ্না হইতাম, তবে তরুশাখাব-लही विरुक्त मुलाब महारहत थ्री, जर्थवा मु-প্রাব্য সঞ্চীতালাপের ললিত লছরীর মনোহ-त चत्र अर्फ्**ठि भूचकत अवर**्शिक्टरात दिवत সকল কিব্ৰূপে আমর গ্রহণ পূর্বক সর্বনুখা-কর পরম কারণের অভিতীয় মহিমাসারণ করিয়া আনন্দ সাগরে সম্ভরণ করিতাম 1 ভিনি আমাদিগকে অনুগ্রহ পূর্বক ঘাণে-ক্রিয় প্রদান করিয়াছেন বলিয়াই আমরা উৎফুল কৃষুম রাজির মুসৌরভ গ্রহণ পূর্বা-ক, হা নাথ! তোমার কি করুণা, এই বাক্য উ-চ্চারণ করত বিমলানন্দ্ লাভ করিতেছি। এবং তিনি আমাদিগকে স্পর্শেক্তিয় প্রদান করিয়াছেন বলিয়াই আমরা নিদাঘ কালে সুরিক্ষ মলর মারুত সেবন করিয়া, হে জ-গদীশর : ভোমার দয়ার সীমা কোথায় ? এই মধ্ময় শব্দ উচ্চারণ করত ক্রতভাতা রসে षाम हरेए हि । জগদীশার যদি আমা-দিগের মনে: ভূমিতে স্নেহের বীজ রোপণ না করিতেম, তবে কি প্রকারে আমরা তা হার অতুলা হেহের সন্ত্রা প্রতীতি করিতে শক্ত হইতাম, এবং তিনি যদি আমা-দিশের মানস কেতে প্রীতির অকর রো-প্রনা করিতেন, তাহা হইলেই বা আমরা কি উপায় ভারা তাঁহার অসদৃশ প্রেম ময় ভাব বুঝিতে পারিতাম ৷ অতএব তিনি क्रशटक शाहां किছू मुख्कि क्रियारहर, तम म-মন্তই ভাঁহার মহিমা ঘোষণা করিভেছে। এবং সকলেই তাঁহার উপাসমার অনুকুল হইরা আমাদিরোর নিকট অভিকরে ভাঁহা-त ज्लुबरमञ्ज छेशासमा क्रिट्ड्र । क्रि कारात काटबत शक्तिका अमान स्विटक्टक

কেছ শক্তির বিষয় জ্ঞাত করিতেছে, কেছ क्रक्रणात विषय जिल्लाम क्रिएकर धवर दिन कामात औषि विचल्यत निका मिटल्ट । व्यागहा स्थाहरू अक्टिंग इहेशा अवर लाग ब-क इरेश कारात क्षेत्रा के करनाटक विज्यना মনে করি ৷ ফলতঃ ক্রিনি আমাদিগকে কোন প্রকারেই বিভূষনা করেন নাই ৷ আমরা যদি বিমাজিতি জ্ঞাননেত দারা এই বিশ-ৰূপ বিশাল এফু হইতে ভাঁহার অভিপ্রায় পাঠ করিয়া ভদনুসারে জীবন যাত্রা নির্বাহ করিতে প্রবৃত্ত থাকি, তবে আমরা বিলক্ষণ मिथिए भारे य সংসারের সকল পদার্থ ই ভাহার উপাসনার অনুকুল হইরা আমাদি গকে ভাঁহার পথের পথিক করে এবং ক্রমে ভাঁহার নিকট উপনীত করে। হে জগদী-শ্র**ুড়মি সর্কাদাই আছ এবং সর্ক্**টেই বি রাজ করিতেছ। আমাদিগের নেতা যথা-র্যদশী হইলে সকল রূপের মধ্যেই তোমা-কে দেখিতে পায়, ও কর্ণ প্রকৃত গ্রোতা হই লে সকলমধ্র ধূনির মধ্যেই তোমার গুণ গা ন শুনিডে পায়, রসনা প্রকৃত রসজ্ঞ হইলেও সর্ব্ব প্রকার সুরস ব্রুইতেই ভোমার করুণা র-স আস্থাদন করিতে সমর্থ হয় এবং মন প্রকৃত বিজ্ঞ হইলে আপনার মঞ্চলমগ্রী মনোরুদ্তি-র মধ্য হইতে তোমার অনন্ত জ্ঞান লাভ ক্রিতে স্ক্রম হয় ৷

# ঈশ্বরের মহিমা

বায়ু

বিশ-বিধাতা জগদীশর বায়ুতে বে কত কৌশল প্রকাশ করিয়াছেন, তাহা বর্ণনের , অতীঠ ৷ সৃতি নধাে যত প্রকার জীব জন্ত আছে, সকলেরি প্রাণ ধারন্থর জনা যথাে-চিত বায়ু সেবন করা নিভান্ত প্রয়োজন, এ প্রযুক্ত বিচিত্র শক্তিযান্ পর্মেশর বায়ুর এক্শ জবাহত গতি করিয়া দিয়াছেন, বে তাহা জনারানে সর্বান করিছে পারে । বে সকল ফুর্লকা ও ক্লা ক্যানে আনরা কোন মতেই বায়ুর গতি সন্তব মতে করিছে পারি যা, আনাধিনের কর্মেকিয়ের ক্লী-

**७ थि ७ व्यक्त मिन्ना नेश निता बांह्य मिन्** मकल जारन जिल्लान कर्न के का किन কে জীবিভাবস্থার রকা করে। পক্ষীজাতি কেশক মাসিকা রক্ষ্মরা নিংশাস ক্রিয়া স-মাধা করে নী, ভাহারা পার্যস্থ প্রভাক রস্ত্র সমূহভারাও নিংখাস পরিত্যাগ করিয়া थात्क, এবং তাशामिकात এই श्रेश्वत मख শক্তি থাকাতেই তাহারা বিনাক্লেশে অতি সত্তর বেগে বায়ু সাগরে সন্তর। করিতে স-মৰ্থ হয়৷ তম্ভকটি " যে অবস্থায় কোৰ মধ্যে কাল্যাপন করে, তৎ কালে সেও সেই अपृत्या काथ तरकात मधा निया व्यापनात নিশাদ যোগ্য বাসু প্রাপ্ত হয়। পদার্থবিৎ পণ্ডিভের৷ পরীক্ষা করিয়া দেপিয়া**ছেন**, যে কোন জলের সহিত বাহিরে**র বাতাসের স**ং-যোগ **প্রতিত করিয়া দিলে, সে জলে আ**র মৎস্যাদি কোন জীব জীবিত থাকিতে পারে না, অতএব মৎসাও যে জলের মধ্যে থা-কিয়া জগদীশবের করুণা প্রসাদাৎ বায়ু দেবন করত জীবিতাবস্থার **অবস্থান করে** <sup>•</sup> ডা**হাতে** আর সন্দেহনাই।

আদরা কাঠাদি দাত বস্তু দক্ষ করিয়া
লৈ অগ্নি উৎপাদন করি, বায়ু না থাকিলে
তাহাও প্রাপ্ত হওয়া ঘাইত না ৷ বায়ুর অভাবে কথনই অগ্নির সজ্বাথাকে না ৷ প্রজলত দীপ যদি এপ্রকার কোন পাত্র
দারা আর্ত করিতে পারা যায়, যে কোন
মতে আর তাহার মধ্যে বায়ু প্রবেশ করিতে না পারে, তবে তাহা ক্রমে ক্রমে নির্বাণ
হইয়া যায় ৷ অতএব পৃথীবিতে বায়ুর অভাব হইলে কেবল যে আমাদের নিম্মানাভাবে প্রাণবিয়োগ হইড, তাহা নহে, তাহাতে করিয়া পৃথিবীতে অগ্নিরও অভার হইত এবং সুতরাং অগ্নির অভাবেও আমরা কোন ক্রমে জীবন যাগন করিতে পারিতাম না ৷

অপরাপর জড় বস্তুর বে প্রকার ভার
ত্ব গুণ আছে, বারুরও সেই প্রকার আছে,

অথচ আমরা নিরস্তর প্রচুর বারু রালি ম
তকোপরি বারণ করিয়া কর্মাই ভারার ভারে

বীতিভাইছিঃ ২২ ইছ জলের নিশ্রে কান

পৰাৰ্থ অৰশ্বিত থাকিলে ভাহার উপর এত ভার পভিত হয়, এ পৃথিবীব আভ্যেক প্-नार्बाई व्यवदेशक त्यहे शतिमादन वासूद कात वश्य करिटलंटम्, किन्नकि जाकर्गा अंशमी-শরের কৌশল! তাহাতে মনুষ্য পশু পক্ষী জীৰ জন্তু প্ৰভৃতি কোন প্ৰাণীর ই অপকার इहेरण्डल नाः, मध्या रामन व्यवनीता करम সুগভীর সাগর গর্তু মধ্যে সঞ্চরণ করে, আমরাও দেইকপ অক্লেশে ঝয়ু সাগরের অধন্তলে সম্ভরণ করিয়া ভ্রমণ করিতেছি। म भा रामम हजू मि कृष कल दानित मरधा অবস্থিত থাকাতে কম্মিন্কানে জলভাৱে পীড়িত হয় না, সেইৰূপ আমাদিগেরও চ-তৃঃ পাৰ্শে বায়ু রাশি বিদ্যমান থাকাতে কি ঞ্চিন্সাত্রও তাহার ভার বোধ হয় না। পৃথিবীর উপর প্রতিক্ষণ বে পরিমাণে বং-য়ুর ভার পতিত হ্ইতেছে. তলুারা সংসারে त कान जनकात ना इहेगा वतः विहमव উপকারই দশিতিহয়। তদ্যারা আমাদি গের শরীরস্থ শোণিত দেহাভাস্থরে অব-স্থিত থাকিয়া ষ্থানিয়নে স্ঞালিত হ্ইতে-ছে। ধদি আমাদিগের শরীরোপরি অন-বরত বায়ুভার পচিত না হ্র, ভবে আং-मानिरात मतीतच् तक्तिता मकन विनीन হইয়া দেহ হইতে সকল শোণিত বৃহিৰ্গত হইতে আরম্ভর। বিশেষতঃ উপরিশ্বিত वाझु छ। तब यनि निम् खेरतत वासू अकाश चरी-ভূত নাহইত তবে কখনই আমরা সেই বায়ু স্বারা নিশাস কার্য্য সম্পন্ন করিতে পা-রিভাম না, এবং তাহা এক্ষণকার আমাদিগের কোন কার্য্যই সাগন করিতে সমর্থ হইত মা।

পৃথিবীর সমীপবন্তী বায়ু একপ ভারী
হওয়াতে নদ হুদ সমুক্ত সরোবার ইইতে জলীয় বাজা রাশি উদ্ধে নীত হইয়া নৈছের
দৃষ্টি ইয় এবং তছপলক্ষেই লবগান্ত সিজু সলিল সংজ্ ত ইয়া পুনর্বার রুক্তিরপে
ধরাতলে পতিত হয়৷ যদি কেহ অতি দুরস্থ সমুদ্র ইইতে জল আনমন পূর্বক আমার্থিকের পরিস্ক মরুত্রিতে সেচন করিয়া শাস্ত ইংগান্ত করিয়া দেয়, তবেলাহাকে আল্বিনির কত দুর্ম পর্বার বিলয়, তবিলা-

A STATE OF THE PARTY OF THE PAR

বন্ধু ইণিয়া বোধ হার বিজ্ঞান্ত ক্লানিক্স্
দীমবন্ধু এক বায়ুর সৃতি করিবা আমাধিগের নিরতই সেই উপকার কাধন করিতেহেন বিজি বায়ুকে এমনি বিচিত্র পতিলক্তি প্রদান করিবাহেন, বে, সে দক্ষিণ সাগরের জল বালি পৃষ্ঠেতে বহন করিবা উত্তর
দেশে উপস্থিত করিতেহে এবং পূর্বসাগরের জল লইবা পশ্চিম ধেশে গমন করিতেহে 1

দ্যান্য প্রমেশ্র আমাদিগের কেবল ঘাণে দ্রিমের তৃত্তি সাধন জন্য বায়ুকে গ-क्षा वडम कदिनाहरे में कि क्षेत्रान कदिशाहिन এমত নকে, িনি বায়ুতে এ প্রকার ক্ত কুত ছিত্র করিয়া রাখিয়াছেন, যে তক্ষরো প্র-दाइ काटन वासू मिद्रकृषे कनाम दात क লীয় পরমাণুসমস্ত বছন করিয়া আমাদি-গোর স্পার্শক্তিয়েরও সুখোৎপদ্ধ করে এবং অনেক সময় অনেককে দারুণ গিপাশার কটোর হস্ত হইতে রক্ষা করিয়া থাকে। নিদাঘ কালে ব্যন আমরা প্রচণ্ড প্রভাক-ব্রের এখর উত্তাপে উত্তপ্ত হইয়া আহি আহি শক্ত করিতে থাকি, তথন অদৃশ্য বায়ুর পরমাণু দারা পরমেশ্র জল সেচন ক-রিয়া আমাদিগের সেই সম্বস্ত শরীব শী-তল করেন।

जनमी भत्र हेव्हांत्र वाशु त्य अकात श्रू-চাৰু কুসুম কানন চইতে বিবিধ পূজা গৌ-রভ বছন করিয়া আমাদিশের ঘাণেক্রিয়ের कृश्चि मन्त्राहम करव धवः मूनावन जनीय প্রমাণু বছন পূব্বক আমাদিগের স্পর্দে-**क्रि**रतत मूथ विधान करतः (नहेंबल व्यावात আপন প্রতিবাত দ্বারা নানা প্রকার সুম-ধুর ধুনি উৎপাদন করিয়া আমাদিগের এ-वर्गान्तवरक उश्चि अमान करता कि बन्ध करकाक्षातिक मूखावा मध्य नश्रीक, कि त्रवाब (वर्ग बीवा बिनामिक चत्र माधुत्री, কি বিপিন বিহারী সুরব বিহল কুলের त्रत्याह्म धुनि, त्य त्कान नम् क्यामानित्वद्र कर्न कुश्दर व्यविके क्षेत्रा मदनामत्या मूर्यत नकात करत, करे वासू ता असरणिति सूर्वा-भारा। नकल मक्रमालक नद्रकाल यनि ना-तुरक केचिंगकी शकि अनाम ना अजिस्कन,

करन अंभानरे शृथियी महमाः कः समस्य प्रश्नुव चरता मृति हरे स ना। विचित्रकी निक्यो যুৱ এক চমংকার স্বভাব ৷ কোন স্বলে কোৰ আত্মক প্ৰাপ্ত হইলে বাৰু অভনি ভং-কণাৎ কল ভরকের ন্যায় গ্রাম করে এবং তদ্যুরা অত্যেক বায়ুর পরমাণু পরস্পার প্র-**ভিচ্ছ इटेश कार्य आमिनित्रंत्र अप्टिलिय** আসিয়া উপনীত হওয়াতেই আমাদিগের শকের অনুভব হয়। ৰায়ুর গতি রোধ श्रेतन, य मजीकानि कान श्रकांत्र भटक-तहे उद्भविक्रिकेट भारत ना छाहा मर्ज्यका-ই সকলের প্রত্যক্ষ হইয়াধাকে। বীণাদি বাদ্য কালে তাহার তারের উপর হস্তার্পণ ক-রিলে তদ্দারা প্রতিহত বায়ু প্রমাণুর গতি বোধ হওরাতে তৎক্ষণতে শব্দবন্ধ হয়, এইৰ-প কোন শব্দায়মান ধাতু পাত্র স্পর্শ করিলেও অগনি তাহার শব্দ লুপ্ত হয় ৷ অতএব বায়ু ফেডুই যে আমর। সর্ফাপ্রকার আর্বণসুখ লাভ করি, তাহার আর সন্দেহ নাই।

পরমেশ্বর বায়ুতে বে আর একটি অ-দুত কৌশল প্রকাশ করিয়া রাখিয়াছেন, এ স্থলে তাহাউলেগ নাকরিয়ানির স্কৃত্যা যায়না ৷ বায়ুতে প্ৰায় এক ভাগ অক্সিজন ও তিন ভাগ নৈতজন নামক ৰাষ্ঠা আছে, এবং পৃথিবীর কল্যাণের জন্য বায়ুতে উক্ত ছুই প্ৰকার পদার্থের ঐৰপ পরিমাণ ধাক:-ই নিতান্ত প্রয়োজন, এই নিমিত্ত অনন্তজ্ঞা-ন জগদীখর এমন এক আশ্চর্যা নিয়ম ক রিরাছেন, যে কমিন্কালেও উক্ত পরিমা-ণের অন্যথা হইবার সম্ভাবনা নাই। ভূণ শস্যাদির উৎপত্তি ছারা ও মনুষ্য পর্যাদির নিঃখাসক্রিয়া ভারা বায়ু হইতে প্রতি দিন ভাহার যে পরিমাণে অক্সিজনের ভাগ বায় হইয়া যায়, দিবাভাগে বুকালি হইতে অ্ল-বরত অভ্যিজন ৰহিৰ্গত হইয়া পুনৰ্বার তা-হার সেই পরিমিত অক্সিক্সের ভাগ পু-ৰ্ণ করে এবং প্রতি দিন ভাছার যে পরি-মাণে নৈত্রজনের ভাগ কর হর ভাছাও मनुरापि कीरकहत अवाम बाहा व स्वा-জন বহিৰ্গত হয় তদ্বারাই প্রীক্তিক ক্টতে थारक । जन नी परद्वत अरे अण , जनिकामीत ও भाणकी नित्रवाद्गारत बाबू कित विवर् न-

मकारव जनकिस अस्ति।एक अन्यः जीव सक् नकरनदे त्मदेनाङ्क त्मन्य कविता सूरवहत जीवन यात्रण कविरक्टर ।

**এरे अकारत जनमोचत्र वातूत्र गरधा रव** কত প্রকার কৌশল প্রকাশ করিয়াছেন এবং সেই বায়ুকে বে আমাদিগের কত কল্যাণ ও সুখ শাধ্যের কারণ করিয়াছেন, তাহা ব-র্ণনের শতীত। আমাদিগের জ্ঞান নেত্র দিন দিন যত পরিষ্কৃত হইতে থাকিবে, আ-মরা ভতই ভাহার কীর্ত্তি কৌশল দেখিতে পাইৰ, কমিন্ কালেও ভাহা শেষ হইহার নহে ৷ আমরা যদি তাঁহার বিশ রাজ্যের তত্ত্বানুসন্ধায়ী হইয়া যুগ যুগদ্ভিরও কে-পণ করি, তথাপি তাঁহার সৃষ্টির একটি রেণু কণারও অন্তপাইতে পারি না। তাঁহার সকল ভাবই অনস্ত। তাঁহার জানেরও সীমা बाई, मंक्तित्र खन्धि बाँहे, धन् मन्नात्र अ পার নাই, অভএব আমরা তাঁহার মহিমা সাগরে মগ্ন হইয়াই বা কিৰূপে পার পাইব 1 ठाँशत এই এক বায়ু विश्रास्त्र चान्ध्या কৌশলের বিষয় যিনি এক বার বিশেষ ম- নোঘোগ পূর্বাক আলোচনা করিয়া দেখেন, তিনি কি আর প্রতি নিঃশাসে তাঁহাকে আ-ন্তরিক ভক্তির সহিত নমকারনা করিয়া কোন মতেই নিরস্ত থাকিতে পারেন? ঈশ্বকে ভক্তি করিবার জন্য তথন আর ভাহাকে কাহারও উপদেশ গ্রহণ করিতে হয় না, তাহার স্বীয় মনই তথন তাহার উপদে-ফী স্বৰূপ হয়, এবং আপনাহইতেই তথন তাঁহার মনোমধ্যে নির্স্তর ভক্তি প্রবাহ প্র-ৰাহিত হইতে থাকে।

# নৈসগিক কন্দরের শোভা

পৃথিবীর কোন্ হানে বে কছ আঁশর্যা ও কছ রমনীর ব্যাপার বিদ্যমান আছে, তাহা কে বলিতে পারে? ভুমধার সাগরে হিছ আনীর দ্বীপ পুল্লের অন্তর্গত এন্টিপোরাস নামক ক্ষা উপদ্বীপে এক প্রান্তি কলার ব-র্তমান আছে। উহার আর্ত্তন অভি বৃহৎ উক্ত নিরি এহা ক্ষাক্র প্রায় ১৯০ হক এবং প্রশক্তে ২০০ হুছা। উক্ত দ্বীসক্ষ ও উহার नविक्रके जनवानव बीनक स्वारक भूकाव-वि अहेबन विवास कतिक, त्य से श्रवात मध्य कक दिक्कीकात हैम्हफात अधिवान चारह । देश्द्रकी बक्षमन नजाकीट हे-টালি দেশীয় এক পঞ্জি উক্ত दौरंश संगद করিতে গিয়া উলিখিত দৈত্য সংক্রান্ত অ-দ্রুত কথা প্রবণ করিলেন এবং তাহার তত্ত্ব निक्षा वियस को इंशाविक षापनात मकीत्क मम्बिगाहादत लहेगा बे গমন করিতে করিতেই ঐ কম্পিত দৈত্যের মুর্জি ভাঁহার দৃষ্টিগোচর হইল, পরে তিনি विद्रांच मत्नारयाश शूर्वक विद्युष्टना कतिश्रा चित्र कतिरामन, से भेड्रततं छाम हरेरा कः মাগত প্রস্তুর কণা মিশ্রিত জল ধারা পতিত হইয়া সেই সমস্ত প্রস্তার কণা কলেক্রমে সং-যুক্ত ও দৃঢ়ীভূত হইয়া উক্তৰণ দৈত্য ফু র্ত্তির ন্যায় হইয়া রহিয়াছে

অনন্তর ক্রমে ক্রমে তিনি গুরা মধ্যে যত অগ্রসর হইতে আরম্ভ করিলেন, তভই চ-ভুদ্দিকৈ আরো নানাবিধ অন্তত শোভা স-मर्भन क्रिए गांशितन। উज्जब्ध প্रस्तु মিশ্রিত জলধারা পতিত হইয়া কোন স্থানে অপুর্বে বৃক্ষ-শ্রেণী-শোভিত মনোহর উদ্যা-নের নাায় শোভা পাইতেছে। কুতাপি খেত इतिष्ठ श्रष्कृति विविध वर्णत शासानमञ्ज मू-हाक् छक्र नक्त एवन क्लान मनुषा कर्ड्क मू-নিয়মে সংরোপিত হইয়া অবস্থিতি করি-ভেছে। কুত্রাপি অবস্কুর প্রস্তর সকল কোন স্থানকে রাজ ভব্নের প্রস্তর ময় গৃহ তলের নাায় শোভিত করিয়া রাখিয়াছে ৷ शास्त सूनीर्थ क्षेत्र मरून वस्त्र वात्र अ यञ्ज সক্ষার উল্লভ ক্তেরে নাায় দ্রায়নান রহি-য়াছে। কোন কোন স্থানে প্রস্তর খণ্ড সক-ल উरहरे निम्मकांक त्राक जिश्हामध्यत নার পরিতরহিয়াছে ৷ ছাদ্নিঃস্ত অসং-था कलविक् के शहांत्र डेशति छाट्य मश्ल-ध ७ मृहीकृष हरेगा उच्छल होतक चटलत गात क्षकान भारेट एक। जे शहात मर्स স্থান নিরীক্ষণ করিলে উমাকে একটি আ-कर्य क्रीफ़्राकाम्य कि अभूक नाक्री माना call इश: - 445 क्लान इत दान कक्की पत লোক সক্ষতে পিশ্প আনের শিক্ষা আছীন করিবার জনা নিজনৈ বসিরা নিজ হতে ঐ সক্ল শোডা সম্পাদন করিরাছেন।

দশকেরা ঐ সমস্ত অস্তুত মৈস্থিক
শোভা সন্দর্শন করিয়া এক কালে বিমাহিত
তইলেন ৷ সংসার মধ্যে ৩মন মনুযা
কেহ নাই যে সেশোভা নিরীক্ষণ করিলে
১মংকত নাহয়৷ যিনি বিভ্রাপ্ত ও পথআত্ত পধিকগণের আন্তি হরণ জন্য গৃঢ় গিরি
গহলর মধ্যে বিচিত্র শোভা চিত্রিত করিয়া
বালিয়াত্তন, আমরা যদি মনুষ্য হইয়া ভাঁতরে মহিয়া আপন চিত্র পটে মুদ্রিত করিয়া
লার রাখি, তবে আমাদিগের মনুষ্য নামের গৌরব কোধায় থাকে ৷

### বিজ্ঞান বার্ত্তা পদার্থবিদ্যা।

১—: আগরার নিকটবন্তী কোন কোন স্থানে উপযুগপরি এ৪ দিবস শর্করবিব এক প্রকার পদার্থ ববিত হয়, উলার ক্ষ্ম ক্ষ্ম কর করা সকল দেখিতে বালুকার মত এবং উলার বর্ণ ক্রিয় পুলুর রসায়ন বিদ্যাবিৎ পত্তিত ডাক্সের মেকনামের পরীক্ষা করিয়া দেশিয়াছেন, উলাকে শর্কার প্রতি নামক পদার্থ আছে। লোকে পুরানাদি গ্রন্থ মধ্যে কেবল এপর্যান্ত অমৃত বর্ষকের কাম্পনিক গণ্প ক্ষরে অমৃত বর্ষকের প্রতাক্ষ দৃষ্টি গাচর হল ।

Journal of the Asiatic Society, No. 2, 1855. শারীর বিধান বিদ্যা 1°

>— ৷ শোণিতের মধ্যে এক প্রকার বাদ্ধ পদার্থ আছে, তাহাতে গোলাকার ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র রক্তবর্ণ বিশ্ব সমূহ ভাসিয়া থাকে, এই নিমিত্ত শোণিত রক্তবর্ণ দেখার ৷ সম্পতি উত্ত্যামক এক জন শারীর বিধান বেভা এইবীপ এক মত প্রকাশ ক্রিয়াছেন যে শোণিতের মধ্যে যে সকল রক্তবর্ণ বিশ্ব আছে, ভাষা বিজী ব্লাহ, এক প্রকার ক্রিয়ার স্থানার বিশ্ব স্থানার বিশ্ব স্থানার বিশ্ব ব্যার বিশ্ব স্থানার স্থানার বিশ্ব স্থানার বিশ্ব স্থানার বিশ্ব স্থানার বিশ্ব স্থানার স

इतारत काशामिरधेक मेर्चामक वृत्ति देते। कार्यक्षिक्रम वर्षक्र गर्वा के शिक्षित में कि था। অভি অপে शांदक, शर्म मुक्ति इहेट जी-त्र इत धरेर २० व्यविध ७० वर्गत वत्रम भर्या-ख जाशमिरशत मरशा मर्सारभक्ता व्यक्ति हरे शा उटिं, कमन खुद्र शक्षा नर वर्ष वस्त्र शर्या ख -শেপ অশেপ হাস হইয়া ক্রমে শেষাবস্থায় অ-তান্ত অপ্প হইয়া যায়। কিন্তু প্রথম দশবৎস-র তাহাদিগের সংখ্যা যত অংশ গাকে সেত্রপ चात्र कान व्यवसार्ण्ड हरा ना। उक्त हेज् সাহেবের ইহাও এক বিশেষ মত, যে ঐ শো-ণিতামুজ্তু কাটাণুদিগের সংখ্যার হাস वृक्ति अनुपादत मनुत्यात भंतीरतत्र अ-নেক ইন্টানিক ঘটিয়া থাকে। যে কোন কারণ উপস্থিত হইলে উক্ত কীটাগুদিগের অ-নিষ্ট হটিতে পারে, তদ্যারা মনুষ্যেরও সু-। স্থতার অনেক হানি হয়। টড সাহেবের এই অভিনৰ মত গদি সহবৈ।দিসিত্ব হয়, ভাহ: হইলে শারীর বিধনে বিদ্যার সম্বিক উ-মতি হইবার সম্ভাবনা।

Englishman, 7th April, 1855.

5-- ৷ কোন বৃক্ষের গোড় কলম নির্ক্রিছে অতি দুরদেশে প্রেরণ করিবার এক অভিনব উপার প্রকাশ পাইরাছে ৷ কলমের যোড়ের মুখে কতকগুলি আর্ফ্র তৃণ কি শৈবালক প্রচুর করিয়া জড়াইয়াদিলে, অথবা সেই ছলে একটি গোল আলু,বিক্করেয়া দিলে, আর সে কলম দীর্ঘ কালেও শুদ্ধ ছয় না ৷

Literary Gazette, 1st Sept., 1855.

র সায়ন ও ধাজুবিদ্যা।

২— ৷ সন্পূতি অঞ্চানের কতক ও লি সভ্ত গুল প্রকাশ পাইয়াছে ৷ কোন দটিত প্রবার সহিত্ব অঞ্চার মিজিত থা-কিলে, উহা সেই গলিত বস্তু হইতে জাহা-র সমুদার বিক্ত বাস্প শোবণ করিয়া লয়, ভাহার এক বিন্দু মাজত বহিগত হইতে দেয় না ৷ এবং উহার বারা সেই বিক্ত বাসের সাংঘাতিক হোল সকল নাই হই-লা বার ৷ কুর্মজন্ম বালি ভাষা বাইতে যে ব্যস্ত বিশ্বন বিক্ত বারু জনবর্গত উ-

থিত হইবা লেক্ষর উৎকট উৎকট পীড়া केर भावम कहते, दान वास है के बिद्धां अपन जेंक जजारतत जुन। भूनछ উপায়। আরু নাই। সম্পূতি অঞ্চার নি-र्षिक अक क्षकात यञ्ज क्षक्रक इरेता है। व बात किया शवाककात निधा शृह मरश कार्न फिक् इटेटक अनिकेकादी विक्रक वास **अत्यम क्**त्रिवाद मञ्जादमा शहक, (महे बोह থি গৰাকে উক্ত যন্ত্ৰ স্থাপন করিলে তমা-धामिश य वासू शमन कटत काहात लाव সকল নত হইয়া যায় : ঐ অঞ্চার নির্দ্দিত মন্ত্র বায়ুর অন্তর্গত দূষিত বাদ্প শোষণ ক রিয়া লয় লণ্ডন নগরের এক প্রেসিদ্ধ বিচা-রালয়ে বহু কালাব্ধি নিক্টস্থ এক অপরি-क्षक दान हरेटक उदक्ष प्रश्नमुक वाधु প্রবেশ করাতে গৃহস্থিত সন্দায় বায়ু দ্বিত হইত। পরে তথায় উক্ত প্রকার প্রক্রিয়া করাতে একণে আর সেরপ হয়না ! এক্তির ফর্যসন নামক এক বিজ্ঞ চিকিৎসক 'মঞ্চার চর্ণ ভারা বছ কালের পুরুষর ছুর্গ-স্বযুক্ত দুধিত ক্ষত রোগ শাস্তি করিয়াছেন, এবং ভিনি অপরাপর অনেক রোগেও উক্ত পদার্থ ব্যবহার করিয়া ক্রজ্যার্য হইয়াছেন। Litterry Cazette, 18th August, 1855.

২- । তুবারের মথে কোন পদার্থ
নিহিত থাকিলে গেতাহা বিকার প্রাপ্ত হয়
না, একথা প্রশিক্ষ আছে । কিছু দিন হইল তাহার এক আশ্বর্য প্রমাণ প্রাপ্ত হ
ওয়া নিয়াছে, সাই বেরিয়া দেশে প্রাচীন
নালিক এক হন্তার গৃত শরীর কয়েক সহস্র
বংসরাবধি প্রভূত তুবার অভ্যন্তরে নিহিত ছিল,পরে একলে কোন নোন পশ্তিত
সেই মৃত হন্তীর দেহ তুবার হইতে বহিগত করিয়া দেখিয়াছেন, বে ভাহার কোন
সংশে কিঞ্জিলাক্র হৈলকণ হয় নাই,
বেমন নরীয় তেমনি রহিয়াছে এবং কতক
গুলি কুকুর সানকে সেই নব ভক্ষণ কারিয়াছে

· अ पूर्विशा! : निका

ক্ৰিয়া প্ৰকৃতি ক্ৰেয়া কৰা উৎপাতের পূৰ্ব নকৰ বৈৰেয়া বৈৰণ বা-বিতে প্রিটাৰীয়, জান্ম ভূমি কলা ব্যস্ত হৰীয়ান্ত দেৱল কোৰ উপায় ছিল না, কিছ একৰে তাহাও হইরা উঠিতেছে ৷ সম্পতি বিসুবিয়স নামক জীগ্নেম লিরি চ্ইতে এক ভরাশক অগ্নাৎপাত হয়, ঐ অগ্নাৎপাত উপস্থিত হইবার পূর্বে ক্রমাগত জুইদিবস তথায় কম্পাস অর্থাৎ দিগদর্শন ধক্তের ব্য-তিক্রম ঘটিয়াছিল। ভুতজুবিৎ পণ্ডিতের। একণে অগ্নহপাত ও ভূমিকম্পের বিষয় লইয়া অনেক আন্দোলন করিতেছেন এবং ভাষার বিশ্বর প্রমাণ প্রয়োগ সঙ্কলন করি-না **স্থির করি**রাছেন, যে ভূমি কম্প **কি আ** গ্লেয় গিরির অগ্নাৎপাত উপস্থিত ইইবার পুর্বে দিগ্দর্শন যন্তের ন্যতিক্রম উপস্থিত হইরাখাকে৷ অভএব এক্ষণে দিগদর্শন যন্ত্র দ্বারা পাসন্ন ভূনিকম্পের পূর্ব্য লকণ জানা যাইতে পারিবেক।

Literary Gazette, 1st Sept., 1857.

### निष्भविमा १

> —। ভারত বর্ষের অন্তংপাতী রাভাপুরের মধ্যে এক প্রকাশ কামান বিদ্যান
আছে। এক্ষণে কুল্রাপি আর উহার
জুল্য কামান দেখিতে পাওয়া দায় না। উহার পরিমাণ ১২০০ নণ। উহার আয়তন
এত রুহুৎ নে উহার মধ্যে, অল্লেশে পাচক্রন মনুষা অবস্থিতি হারতে পারে। উস্ক্রনাননের নধ্যে দে পরিমাণে বারুদ্ধ ধরিতে পারে, এক বার তাহার অন্ধ্র নালা বারুদ্ধ
প্রদান করাতে উহার একপ ভয়কর শব্দ
হয়াছিল, যে তাহাতে করিয়া তমিকটক
আনেক গ্রহ, মন্দির, অট্রালিকা প্রভৃতি সন্দুলে কম্পিত হইয়া উঠিল এবং তত্তক্ত্ব মন্ব্য মাতেই সশক্ষ হইল।

২— । পিট্রস নামক একজন সাংহৰ
কুত্র ক্ষমর লিখিবার এক আল্চর্য যথ থা
দ্বাত করিরাছেন। ঐ যত্তের অব্যাহ্রের
একটি পেন্সীল সংলগ্ন আছে, ঐ পেন্সীল
দ্বারা যে প্রমাণ কুত্র বর্গ বিনাসি করা যার,
যত্তের উর্দুখ্য দারা তাহার দল সহস্রাহ
লের একাংল পরিনিত অক্ষর বাহির হইছে
থাকে। ঐ যত্ত সহকারে শীরক দারা একবাঃ
র একটি কাচ পারে ক্রিপ্রন্ধ বিনাক ব্রু
র ক্ষম্য অক্ষর এত কুত্র বে উৎক্রুক অনুধী

কণ কাজিরেকেতাছাকোনম্বপে চুক্তি গোচর ইর
না। বেলু ব্রী উ তাঁহার শিঘাদিবকে জগদীশরের নিকট বে প্রকার করিরাগ্রাগ্রাগর্না করিতে
উপদেশ প্রদান করেন, এবং যাহা অভি কুজাকরে মুক্তিত বাইবেল পুত্তকের মধ্যে সচরাচর ১০1১২ পংক্তিতে লিখিত ছইনা থাকে,
উক্ত গল্প থারা সেই প্রাসিদ্ধ প্রার্থনাটিও একরার একটি আগপিলক্ষত ছিত্র পরিমিত
ছানের মধ্যে অভি দুশ্যেউরপে লিখিত হইয়া ছিল। দর্শক দিগের মধ্যে অনেকে
ঐ যন্ত্র ছারা স্থীয় স্থীয় নাম লিখিয়াও দেথিয়াছেন।

৩-- ১ বরক সামান্যত শীত প্রধান
দেশেই জন্মিরা খানে, উফ্লেদেশের মনুযোরা তথা হইতে বহুবার ও পরিক্রম পূর্বকেনা
আনরন করিলে আর তাহা প্রাপ্ত হইতে পারেন না ৷ কিন্ত সম্পৃতি আমিরিকা খাণ্ডের
অন্তঃপাতী ফুেরিড়া প্রদেশ বাসী ম, ড,
গোরি নামক এক জন পত্তিত কুত্রিম বরক
প্রস্তুত করণের এক আশ্রুঘ্য যন্ত্র নির্মাণ করিয়াহেন ৷ ঐ যন্ত্র ছারা সর্কার সর্ব্বকলে সামান্য জল হইতে প্রচুর বরক প্রস্তুত হইতে
পারে ৷ ঐ যন্ত্র ছারা গোরি সাহেব

করার ২৪ ঘটিট্র মধ্যে ১০ মন বর্ফ প্রক্তর করিরাছিলেন। উক্ত যক্ত সর্ক্তর প্রচলিত হইলে অভ্যন্ত উক্ষ দেশীয় সোকেগাও প্রচক্ত গ্রীয় কালেও প্রচুর বর্ফ প্রাপ্ত
হইয়া উদ্ভপ্ত শরীর শীতল করিতে পারিবেকা

শ্বিদ্যা সহস্থীর নানা প্রকার আশ্রুষ্ঠ আশ্রুষ্ঠ কল প্রস্তুত হইরাছে ৷ কথার বৃক্ষ ক্ষাদি নমন করিবার একপ এক আশ্রুষ্ঠ কল আছে বে তদ্ধারা পাঁচ নিনিটের মধ্যে অতি দৃত্ ও প্রকাপ্ত বৃক্ষক্ষকে ইচ্ছা মত অবনত করিয়া বক্ষ করা যায় ৷

৫—1 তাড়িত বার্ডাবহ বারাবে সবৎস-রের পথ হইছে সহা স্বাদ প্রাপ্ত হওরা বাইতে পারে এবং সহজ্ঞ জেলা সম্ভরে থাকিয়াও যে তড়ারা বৃষ্টুবিছ অব্যা কোন ব্যক্তিকে আগমার মনের ভাব শবনক করা বাইতে পারে, তারা একানে বার অব্যাক করা

मर्गाण परेवादेवन , क्यि अण्डि था-विशिका चर्च केल विसरहर अक महास्था-खाव छेथांशिष इरेज़ारह । हे, श. त्रक्रमञ् नावक अक जन जारूव अध्यकात अक च-নাধারণ ভাড়িত বার্ডাব্ছ প্রস্তুত করিবার থকাৰ কৰিয়াহেন যে, তাহা সমুদায় ভূম-थल विकेत कविया अविकृषि कविविक । ভাষার প্রকাব এই যে উক্ত ভাড়িত বার্দ্ধা-বহের তার আট লাণ্টিক মহাসাগর ভেদ না করিয়া প্রথমতঃ আমিরিকার উত্তরাংশ হইতে লেৱেডর নামক স্থাম পর্যাস্ত সঞ্চালিত হ-ইবেক, তদনন্তর ২৫০ ক্রোশ প্রশস্ত সমুদ্র ভেদ করিয়া গ্রীন্শও নামক স্থানে উপনীত হইবেক। গ্রীনলও হইতে উক্ত তার আ-हेमल अर्थास ठालिक इहेरबक, शरत कि-রো নামক খীপ অতিক্রম করিয়া ইয়ুরো-পের অন্তর্বান্ত্রী নরওবে প্রদেশে আসিয়া উপনাত হইবেক। তথা হইতে ক্ৰমে ইফীক ह्लम, लिए म् वर्ग, मत्का, क्ष्मन अवः हेसू-রেলিরন্নামক পর্বত অতিক্রম করিয়া আ-সিয়া খণ্ডে প্রবেশ করিবেক। পরে ওরস্ক, কলিবেন, কক্ষ, আওদিনক প্রভৃতি নানা স্থান ভ্রমণ করিয়া ক্রসিয়ার অন্তঃপাতী ই-त्रकष्ठेक नामक नशरत नीक हरेरवक। छ-থা হইতে অংখাটক নগরের মধ্য দিয়া কা-মন্ত্রীর অভ্নতারে প্রস্থিত হইবেক। ত-দনস্তর পাদিকিকু নামক মহাসাগর ভেদ ক-রিয়া আমিরিকার পূর্ব প্রাত্তে পুনরাবর্তন করত পৃথিবীকে অপুর্বা অপরিচ্ছিল মেখ-मा बाता भाषिक कंत्रिया वाश्वितक। छेक প্রধান তার হইতে আবার নানা প্রসিদ্ধ স্থানে ভাহার শাখা প্রশাখা শকল সঞা-निक स्रेट्यक । अकथर से पूमश्रलवाणी चक् च वार्कावर अठनिक स्टेरन अव चना-माना बाालात मन्त्रत हरेता छेडिटव । छै-ছার ছারা কাণিজা জীবী বণিকেয়া ভারত बर्ख व्यवस्थि कतिशा श्रक मिनदमङ मर्था আমিরিকার দ্রব্য স্ব্যাক্তাত ব্রীয়া স্ব कार्या गण्ड हरेरछ शाहिरदक् बवः देश्न ७३ हाल भूकारका कात्रकारके स अक्राहित्यत ज्ञूच पूर्व नक काम होता जयदि पाराज क्षकिविशास क्षित्रक असर्थ हरेटवस । केवान

वाता नावरीत सावाहक व्यक्ति पहेंना नका वक प्रत्य वच हरेना जेंग नवाहें ल-कंत व्यक्तिक हरें रक्त वर्ग वह विधीन गु-विशे क्रांत्र करने लाटकर नेव वर्गन पर्वण रहेता डेटिंटर ।

Literary: Gusette, 28th July, 1856.

৭- । এইছলে বে প্রকার ক্র ক্র ক্র ক্রিম নদীর উপর নেতু সকল লৌহদণ্ডে লহমান দেখিতে পাওয়া যার পিটস বর্গ নামক ভানে ওহিও নদীর উপর রোবীং নামক সাহেব সেই প্রকার নৌহদণ্ডে লহ-মান করিয়া এক আভর্বা জল-প্রকালী নি-পাণ করিয়াছেন এবং তিনি আটিশত বোড-শ হল প্রশান্ত কেটকী নানী নদীর উপর নাশীর রথ গমনোপ্যোগী লৌহবর্ম যুক্ত এক সেতু প্রস্তুত করিতে প্রবৃত্ত হইয়ুছেন। উক্ত সেতু প্রস্তুত করিতে প্রবৃত্ত হইয়ুছেন। উক্ত গোক্তবেক। এ ব্যাপার সম্পান ক-রিতে পারিলে, এক অসাধারণ কীর্জি হ-ইয়া উঠিবেক।

Literary Gazette, 1st Sept., 1855.

## সাৰৎসরিক বান্ধ সমাজ <sup>তিপ্রা</sup>

গত ৩০ প্রাবণ দিবলে উক্ত সমাজের সংঘংসরিক উপাসনা কার্যা সম্পন্ন হয়, ভাচাতে প্রিযুক্ত বাবু রুম্বান্ত রাগ মত্রে সমাজ সংক্রান্ত নিমু লিখিত এই বিবরণ পাঠ করেন।

অন্য এই ত্রিপুরা ব্রাক্ষ সমাজের প্রথম সাহংসরিক সভা! অন্য ব্রাক্ষ গণের বিপুলানকের দিবম! গত ১৭৭৬ শকের ৩° আবি দিবদে এই সমাজ সংস্থাপিত হয়, তৎ কালাবিথ বর্জনাল দিবস পর্যান্ত এক বংসর কাল অভীত হইল, জ্বালীবরের কুপার এই সভার উপাসনার নির্মিত কার্যা সকল দিহুতকে সমাধা হইরা আরিতেহে, অভ্যান কিন্তী ক্লাক্ষানা সকলে প্রান্ত বিশ্বিক তাহার নিকট ক্লাক্ষানা বিশ্বিক তাহার নিকটা ক্লাক্ষানা বিশ্বিক তাহার নিকট ক্লাক্ষানা বিশ্বিক তাহার নিকটার নিকট

टलके को मान विकास गरम ७८व छटमहर्क व्यवश दंब क्रिकेटम् अक्रेनमान अधिकित स्वेताद्य, (महें जेम्बे विवयं नकरमत कालमात कता আবদাক, অভএৰ ভাছার মঞ্চ কিঞ্ছিৎ স क्लम विषय वास्त्र करा याहे करहा । . म-नुषा क्या नकत कब्रिवाज ७ डाहात शीतन রুদ্ধি করিবার যে সমস্ত উপায় আছে: ত-बार्या में बार्यात बार्यात श्रेष्ट्र कराहे जन्म অধান ৷ সত্য ধর্মের আলোচনা এবং এক-माज अधिकीय श्रद्धायरत्त्र छेशानवा कृति-ৰার উদ্দেশে এইস্থানে এক ব্রাহ্ম সমাজ স্থাপিত করা বিশেষ প্রয়োজনীয় বোধ ক-विशा के महत्राभारतत छेटमनान कहनातर्थ সভা সম্পাদক জীবুক্ত মম্ভলাল গুপ্ত ম-शामन निकारक छेन्त्याणी इत्तन उर भटत **क्रीयुक्त शादिमहत्त्व वमू, श्रीयुक्त बादका**-নাথ দেন প্রভৃতির যত্নে এবং উক্ত গুপু ম-হাশয়ের বিশেষ পরিশ্রানে ইহা সংস্থাপিত যধানিয়মে উপাসনাদি কার্য্য নি-**পাদন হয়। দেশাচা**র ও লোকাচার ম-ধ্যে যে যে কুসংকার ৰূপ পাপ বিস্তৃত আছে, ভাষা ছেদন করা সামানা ব্যাপার নতে, ভাহাতে বিশেষ যত্ন, পরিভ্রম ও সাহদের व्यरबाजन इस, काजविलय कारलका करत्र, भवः विश्वावनाम्य क्षिट् इस् । प्रथम खडे ত্রাক্ষমাজ প্রথম স্থাপিত ধ্রয়াছিল, ত-थन উলিখিত क्य वास्ति वाकीर सन्द (कहरे के मदकामी कुछकाया इत्यात लाक महात्रका करतन नाहे थवर (कह्हे प्रखा ट्या-नी**क्छ र** एसन नाहे। मश्यका कथा ध्वर मछा (खानी खुक्त इत्या मृत्य थाकुक, मछा-च ब्हेश काहात्र काश कर्मन ও खेरन कहा उ তাহাদিগের পক্ষে ছুঃসাধ্য ছিল। উক্ত বাজিরাও সভারম্ভ করিয়া কতিপ্র দিবস अम्ब डीक हिर्तन, य लाहक मनुहिंड **ार्गाइड्, अप्रकृष्टि कृदस्य त्र हहे** ताल তজ্ঞপ ভীত হুর না, ভাঁহাদের মধ্যে কেই বা পিতৃত্বে, কেঁহ বা মাতৃভয়ে, কেই বা ভাতৃ-ভ্রে স্ক্রি ব্যতিবাস্ত থাকিলা অতি সঙ্গে:-क नकाडू रहेवा अक्ताभागना कतिएवन, किंख " गुरुगात भवना खत्र हरेरवेक, मिश्रा कराष्ट्र असी रहेवात बदर " এই मीक्रि दाका

ভাঁছাদিপের-বিক্রকণ জ্বনক্রম ছিল:এবজ্ঞাগ্রে প্রতি সম্পূর্ণ নির্ভর করিয়া ভাঁছা:
বা প্রকাশারূপে ব্রাদ্ধর্য এইলে ছির্ম প্রভিল্ন ক্ইলেন, আর ভাঁছারা বিবেচনা করলেন বে, যদি ভাঁছার: অভ্না ভক্ষণ অপেয গান ইড্যাদি পাপ কর্মে রভানা হথ্রন, তবে কেবল একেশারবারী ব্রাদ্ধ হররাতে ভাঁছারা আত্মীয় বস্থু বান্ধ্ব কর্তৃক
ক্রনই বজ্জিত হলবেন না। পরে আগা
কাল ন্ধা ভাঁছাদেব এই ক্রণ দুদ্ প্রভিজ্ঞা

ক রাল মগারত কভিপয় সুধকেরা আ-পন দাপন বিদ্যা ও মার্জিত বুদ্ধির প্রভা-ে ভাদা ধর্মই সহাধর্ম, ভারুম ভারুই কাপ্পনিক ধর্মা, ইচা অনারাদে স্থানক্রম ক-রিরাজ বাজিক দিগের সজে এক সঞ্চী হইয়া দ্রুটাতে উপবেদান করত ব্রক্ষোপাসনা করিয়া দ্বীয় স্থীয় জীবনের সার্থকৃতা ক-तिद्ध खद्रस हद्देशन : ন্যানাধিক 🕹 मान भग्छ अहे करा व्यवस्था नहात क्या भिष्णाचे क्या धरा धरा नाम गर्या नियुक्त ह-दीहत् बर्जनाभाषात्रः अत्युक्त घण्याहरः। लम व्याः भीतुष्ट भेगातहस्म दात्र अङ्डि উন্ধিংশকি ধাজি ভাল সমাজের সভা জ্ঞেনী লুঞ্জ হয়েন ঃ পরে গক ১৩ পৌষ দি-বদে প্রিয়ুক্ত অভবাচরণ দাস মধানবের জ-বনে এক বিশেষ সভ: কথ, ভাছাতে ৯ ভার দভা অভিজ্ঞাপতে স্বাদ্যর করত প্রকাশ্য ক-रम खाम धर्म शहन करहर । এই मन्स कान महता त्य अन्त पृत्त अञ्चाहन, देश्व आधात বিষয় ৷ অভএব চে প্রকেশ্বর এই নহয়প-কারক সমাজকৈ চির স্বায়ী হর।

্ষনভার জীয়ুকু বারু অমৃতলংল কুপ্ত এই বস্তুতা পাঠ করেন ৷

অংশুবেরাপিত উদ্যানস্থ তর মুকুলের নিহা নিতা উন্নতি সন্দর্শনে তৎসংস্থাপ কের বর্জপ আনন্দানুতব হয়, ক্রমণা প্র-বর্জমান অভিনব কুবারের সুকুমার সহাস। মুখচক্রে অবংশাকনে তজ্ঞানক জননীর ছ-দয়ে বাদৃশ অত্যন্ত বাক্পবাতীত সংস্থাবের উদ্রেক হয়, আ্লা এই ক্রি-

भूता<sup>।</sup> खामः अमरामहः वर्षम् । नावद-সরিক সভা উপদক্ষে অভায়িতিত ভাদাবান ব্রাক্ষিণের অন্তংকরণে উদ্ধাপ অনুপম মি-र्मन मूर्यम् न्यात स्ट्रेप्टरः। आमता च-म्बदिव पूर्वतेना चिक्रम कतिशा धक वर-সর কালাবসাবে অদ্যকার উপস্থিত কার্য্য সং न्नामत्न रविवृक्त करेताहि, हेहा चामारमत श-तम मिणारभांत्र विषय । यक्ति कहे ममारजत थानानुबन केर्न् निम्नाम्य याम्या अमा-পি সক্ষ হই নাই, তথাপি এতল্গরে কু मरकाताविके आहीन मण्युमात्र-कुळ मनू-गामिर्भन्न यामृक् श्राञ्चलांव, कावः विद्यवना করিলে ইহার যে পর্যাস্ক উল্লক্তি সাধন হ **बेबारब, खाबारक है जाका पिरंग व अमित छे**९-সাহ ও যতের কার্যারিলার গণা করিতে **ই**-ইবেকু পত বর্ষের আবেণ মাসে যগন এই লমাজ প্রাপম প্রতিষ্ঠিত হয়, ভবন ভাজ চভুষ্টর মাত্র ইহার অবলমন ছিলেন এবং बिटबरीक्टिशद्व विमा ७ छैशलव विवायः -ার্গ ভাছারা ইছাকে " সাজীয় সভা " স ख्डा क्षणान कविट्ड फेंकिक-रवाथ कविता-हित्तन। शांत यह कात्त वह मनाछ गः ञ्चालन विवयस्य विवतन ७ फल्लमञ्जीस दर्ने ক্তা ১৭৭৬ **শকের অগ্রহা**য়ন নাসীয় ভ-ত্ববোধিনী পত্তিকায় প্রকটিত হয়, তদব্বি সভা " ভিপুরা ত্রাফালমাজ 🖺 देडाडिरंबत इड्रेश कननमारक धारत रेहात डेबडि कट्म अमिक एँप अम-র্শন করিতে আরম্ভ করিলেন। কিয়-क्तिय भरशहे किष्णित भषा (मका शूर्वक স্থীয় স্থীয় পূর্ব্ব পুরুষ পরম্পরাগত পৌ-तानिक धर्मात अमोकष ७ पुलक्केय জ্ঞাত হইয়া তাহা পরিস্থাগ পুর্বাক পরম পবিত্র কৈবলাপ্রদ অভ্যুৎকৃষ্ট ত্রাদার্থদ अङ्ग कतिया मामव क्षत्र मार्थक कतियात প্রথম সোপানারোহণ করিলেন। কিন্ত ছুংখের বিষয় এই যে কভিপয় অমার্কিত বুদ্ধি ও অস্থা পরতন্ত্র সভাধর্ম বিপ্লবকা-রী ব্যক্তি এই সভার বিনাশ সাধ্যে কুত-मक्ष्म इरेब्रा मरक्षानस्य बज्बल क्रिट

প্রবৃদ্ধ হইল, কিন্তু সভায়ে কি মহীরসী প্রভা, ধর্ম্পের কি অস্তুত শক্তি এবং সাধু কর্ম্পের কি বিচিত্রা গতি? নৈই সকল বিপদর্শক ক্রিবারত শর্ম কালীন মেশ্রের ম্যার সক্রেই
তিরোহিত হইরাকেল ও আজ্ঞাদনপ বিন্দল পূর্ণ শশ্রের বাহ্মদিগের মানসাকাশে উদিত হইরা ভংগাক্ষকাব দূর্রাভূত করেল এবং " সভ্যমের জরতে নান্তং " এই মহাবাকোর প্রভাবই পরিষ্কৃত কলে প্রকাশিত হইরা উঠিলা। সভ্য বাহার ক্রম ভারার ক্রিকিত কল।

दह विशुविनामान, मस्त मक्त धान, कश-স্থান। ভোমার কি অপার মহিমা, কি নি-কুলম কৌশল, কি প্রার্থনানপেক্য অনুক-দ্যা। আমাদের যখন যে বিঘু উপস্থিত খনু, ভোনার কুপাকুপানে তাহা অন্যাসে ভিন্ন হট্যা হায়। হে বিশ্বাধার, ব্রহ্মাগুনাথ, ক্রুণাদিল ' যাহাতে ছোমার জেমে প্রে-মী কটাল নিতা বিখনানন উপভোগ ন্বে! এই নশ্র মানন (দতের সার্থকতা স-ম্প্রাদন করিতে পারি, ভুমি নয়া করিয়া ত্রিগরে আমাকে ক্ষরান্কর। বলায়েন্! আমি ধন মানধশের তাদুখা ভাটিলালী নহি, তোষার প্রেম ধ পান করিতে পারিলেই আপনাকে এন ভূত প্রাক্রমশালী মহৈশগ্রেম্স্রাট্ হই-তেও সন্তিহ ধনী মানী ও যশসী জান ক রিব ৷ হে প্রভো! ভোমার জীতি কণ পৰে বিনি ধনী হইয়াছেন, ভিনি কি সামানা পনে আর স্পৃহা রাখেন! তিনি পর্কু-টারে বাস করিয়া শাকালাশনে যজপ সু খানুভৰ করেন, তোমার প্রীতি বিহীন জন সমাগরা ধরিত্রীর অধিপতি হইলেও তা-হার কোটি অংশের একাংশও উপলব্ধি করি-তে পারে না ৷ তোমার জীতি বিহীক হইয়া ধন মান যদোর অধিগতি হইলে কি কখন মনুষ্য জন্মের সার্থকতা হইতে পারে ? তো-मात्र क्षिष्ठ क्षीकि भवास्व वास्कि मृजूः नरवा-পরিও অকুভোভয়ে তোমার পবিত্র নামো-कात्र<sup>व</sup> कतिया शतम शूर्णाकः शतिशूर्व इन, क्षि कामातः त्थम भताब् व ममूरा मान-মরে নালা প্রকার জরকর চিক্তার ব্যাকুল इहेश जिल्ली शहर का का का करना इस হয় | জগদীখন ! ভোমার থোম রতের বেন कमाणि विशिष्ठं मा शाकि, जुमि कूशीकवा বিভরণে এই কয়। তপন তাপে উত্তর্থ বালুকা-আছর পরিজমণে সাভিন্স জান্ত হইরা কোন প্রশস্ত সরোবর সমিহিত জু-রুছ মূলে উপবেশন করত লিখকর সু-मन मशीवन जात्म न्यार्थ इते ता यामुण ज-निक्रिनीय मुवानुक्त रव. (इमस अमास भी-ভাৰ্ত্ত জীবগণ বহি উপদেশ্যে যজেণ আ ছ্যাল্ড প্রিপূর্ন হন, ক্ষনাই প্রানিন্দ আ-হারাত্তে যে প্রকার তালি জনিত সম্ভো-ষানুভৰ কলে, নিড'ন্ন ছুম্বভাৰাপন ব্যক্তি (मोड्डारकाम्ट्र शहर मुखे मंश्रेर मधे दश. নিকাসিত সান্বগণ বহু দিবস্থানানে আ দেশে প্রত্যাবর্ত্তন পূর্বাণ অপ্রিবরেশ্ব কর-গবের বদনবেশোকনে যজাগ ভাপরিসীয় হর্ষাভিত্তভহয় এবং অভাহনট রোগাক্রাণ্ড নিরাশ-জীবন ব্যক্তি পুনরারোগা সংপ্রাপ্ত हरेल गामुन मुनामूच्य करत, रह विश्वश्र কাশক নহেশর! এই ছঃখ সমাকুল সং-শার সাগারে তোলাব জোনে নিময় হুইয়া তোমার পরিশ্ব নামোচ্চারণ, ওলোহকী-র্ত্তন এবং ডোমার তালিয়া শক্তি, প্রভৃত ক-ৰুণা ও অপার জ্ঞানের চিত্র প্রচা**ক্ষ করি**য়া খুদ্গত চিও জনের মনে তজেপ সংস্থা-যের উদয় ১৪। হে প্রমালন্! আনমি ান নিরস্তর জোনার প্রেমে মগ্ন থাকিতে পারি, ভূমি রূপা করিয়া আমার এই বা-সনাপুৰ্কর ৷ হে ডাফ্গৰ ! ধর্ম প্রচারে হসাহী मकाभव! धई कार्व আপনাদের নিক্ট আমার এই নিবেদ ন যে এই সভার্চ হইয়া স্কারীয়াধ্য পরন পু-কনীয় কগদিভুৱ প্রতি প্রতি প্রদর্শন ও তাহার প্রির কার্য্য সংখন বিবয়ের অবশা কৰ্ত্তব্যতাও আৰেশ্যকতা বিষয়ত সুদীৰ্ঘ ৰ-कुषा भाक्षेत्राज काहात जिभागमा स्वाम क রিলা নিরক্থাকা আমালিগের উচিত নহে, তাল বজারা কার্যেতে পরিণত হইতে পা-त्त, कविषति नियक यञ्चवान् थाका जन्म शास्त्र निष्ठांच कर्डवा, महार बाखितक व्योषि का-कीक (मोथिक ध्यम धानर्गन कहाएक एक

वन कश्रेष्ठाई वाला इता कान मू-প্ৰসিদ্ধ নীতি বিশার্দ পণ্ডিত লিখি-ग्राह्म " अक्रुक्कका अंक्रेड अवीम्न নজ্ঞাকর অপরাধ, যে ভদপরাণে আপনাকে অপ্রাধী স্বীকার করে এমন ব্যক্তি আঁতি দুর্দ্ধ 🐪 হায়, আমরা 🗗 অপত্রপ , অপাত্র া গুড়া আমাদের জন্ম ছিলি পালন কর্ত্তা লগরিণভার প্রতি জামরা নিরত অকুতজ্জ ালাও আনাদের কিছুমাক লক্ষাদোধ ्य मः । अशह व्यक्त अक निवंश माज की-শর উপাসনা করালে দি ংশীচরবের প-পতি নিংশাস জিলাকে স-প্ৰসাহ হল প শী সঞ্চাল্য প্রচেষ্ত্রের যে কুল আপরি-. শাংগ্ৰাপাসীম লক্ষালা প্ৰচাঞ্চ হুইচতছে, ঠান হার প্রেমি বি আভাদের ঈদুশ তাবহার ভাত এব আমানের উচিত্র যে বশাস্থা পায় 🗀 আহার লাবহার প্রভাতি সমক অনুক্ষঃ ভাহার মন্তা উপসন্ধি স্থান্যা ভাঁন হার প্রিষ্ঠায় প্রাক্রম, অনিক্রেমীয় ব-ছিনাও পাণার কুপার বিষয় প্রয়ালোচনা পূর্ব্যক্ষ সঞ্জনজন চিত্তে ভাহাত্তে ময়স্কাব করি ৷ প্ৰামর। শিতামতে। পার। কির্ক্তই হই, শংশ্লীঃ খানুকুক ক‡ক লাঞ্ভিই ইই,স-्मनीत प्रामय र अनीच चेशकामा<sup>नश</sup>मके एके, বিচেত্র পরবাদ লোকদিলের স্থারা নিন্দিত া অগ্নাতি এই হই, জাতি কুট্ডাদি কর্ত্তক ''য়িভাক্তাই হুই, মহা বিপদেই পতিত হ-ते. ति छु एक हे त्याहे विश्वम ७ अन विव्रक्षत्वत केमाञ्चाक्त प्रहत्त्रकोहः इहेटच विद्रुत् था-কঃ কউব্যানকে ৷ হে সভাধকীয়েখণকারী বন্ধুগ্র। ভাপেমার। নির্দ্ধের সেই মহেশ্বরে চিত্ত সমাধান করিয়া সমরে সমরে আছো-बूमकारिय अबूहरू हर्डेय, वाला व्यक्तान ভিন্ন চরিত শোধনের উপায়াত্র লবং চরিত্র শোধন না চ্ইলেও ব্রহ্মজান জমিত বিমলানন উপভোগে কখন দ-মৰ্প হওয়া বায়ুঞান একাণে অত্যাগত প্ৰা-নীন সক্ষা দায়ী সংখ্যময়গৰ সমীপে আমার क्राञ्चलि शूरके अहे बिटवरम, त्व जानाता ভার অক্ষণানিকে কোন প্রকার ভূকান্য ব-गिराजियः काम काम जारमुक वाद्यां स्ट व्यक्तां क्रिक्स कीत क्रीत क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स

क छ कहा विक ना करवन, रकान सर्वाह স্বাদ্ধ পরিতাহ বাজীত তাহার উৎকর্মাপকর্য বিবল্পৈ অভিপ্রায় ব্যক্ত করা অর্বাচীনভার কার্য্য পরম কারুণিক পরদেশর মনুব্যমা-ত্রকেই বুদ্দি বৃত্তি ছার। বিস্কৃবিত করিরা-ছেন, ভান চকুরুমীলন করত চিতাবললিত কুসংস্কার পরিত্যাগ করিয়া কিঞ্ছিৎ পরি-टाम श्रीकात शृद्धक आमारनत मभानद्वनीय পাঠা গ্রন্থাদি আদ্যোপান্ত সবিশেষ পর্যা-लॉंडना कतिहा (मथून, व्यानता दाका धर्मा ক্রত প্ৰকৃতৰূপে তাহাদিগের निक्ताई ७ होगाञ्चाप हरे कि ना। आयारा অংশবয়ক্ষ ও নিতান্ত অনভিজ্ঞ বলিয়া অ:-মালের অবলমিত পরম পবিত বোলাধর্ণো-র কুৎসাকরা বিধের নছে। তাহাদিগের অতীৰ প্ৰন্ধেয় তত্ত্বজানোৎপাদক খা-তীন গ্রন্থ বোগবাশিষ্ঠেতেই লিখিত আছে युक्ति युक्तपूर्णात्मयः रहनः नामकामि। জনাৎ কৃষিৰ আভাষপুাকতং मा।" अर्थाय दालरकत बाकाउभन्यां कि সম্পন্ন হ্টালে আঞ্হয়, অন্যথা ব্ৰহ্মার উদ্ভি ও ভূনের মায়ে পরিত্যাগ যোগা। বে আপনারা কি নিমিত্তে এই শান্ত্রীয় অনুশাসনের বিপরীতপক্ষ অবলয়ন করে-ন. ভাষা বুকিতে পারা যায়না। অভএব আ-মর। যুবক বামুখ হই ভরিষয়ে বিচার নাক तिशा यामारमञ्जाकान्य कि श्रेनातु विमान उ উৎकृष्ठे, विद्युष्ठमा कतिया (पशिया रिप्रदल्यः নে তজপ বস্বান্কেল নাহন ? ছে প-বমাত্র্! অক্ষেক্শীয় মানব গণের চিত ভ্ইতেভেৰ মংসরতা দুরীকৃত সতা ধর্মাচরণে প্রবৃত্তি প্রদান কর।

'ওঁ একমেবান্ধিতীয়ং।

- অস্তব্য শোধন

>৪৬ **गर्थाकः करमस्याधिनी** পविकाद ५२ शृक्षीत প্রথম হতের ৩৪ পংক্রিতে যে Literary Gazette, 18th August, 1855. সিধিত আছে, ভাগ্ তথায় না হ-ইয়া ৮১ প্রার বিতীয় ক্তরের ২৫ পংক্রির নিরভা-**ल्लाम सम्बद्ध**ी

ध्या और जन्मदर्शाक्षरी , शक्तिका, कलिकाका मध्दर ह व्यापार्गातकोष्टिङ ङक्करवाधिनी महान हार्गाणत हरे-তে প্রক্রিয়ানে প্রকাশিত হয়।—ইহার মুলা এক নিয়ে। व कार्तिक दुधवात नवूर २৯३२। क्रिक्शकामाः ४३१७



ভদেব নিভাগ ভানমনম্বর শৈষণ স্বতন্ত্রণ নির্ব্যব্যেক্রেবারিডীবণ স্ক্রিয়াপ্সস্ক্রিয়প্সস্কালাখন হ বিশ্ব সন্ধাশক্তিমণ পুরুষপুর্বিশিল

किमा श्रीधिक्षा क्षिमका वागाधमध्य अमलागमस्यतः

### পরমেশ্বরের কৌশল ও মহিমা

বিশ্বপতির বিশ্বরাজ্য মধ্যে প্রবেশ ক রিয়া ভাষার অন্তভুতি আশ্চর্যা কার্যা সক-ল ৰত সক্ষান কৰা ঘায়, তত্ত মন বিশ্ব-রাজের মহিমা সংগরে মগ্ন ইইতে থাকে ! স্থাবর জন্ন ক্রি প্তক্ষ প্রভৃতি এক এক-णि भनात्य विभि त्य कि जनावात्र । कोनल প্রকাশ করিলাছেন, ভাষা মনেতে পার্থ করা অস্থা। পৃথিবীর প্রত্যেক প্রাণী-কে পুর্থিত্ জাকার প্রদান করিয়া সং-সারকে বিচিত্র ভূষণে বিভূষিত করিয়াছে, অথ্য প্রতি প্রাণীই স্বীয় স্বীয় আকুতি প্র-ক্তি লইয়া পরম• সুখে কাল যাপন করি-তেছে, কাহারও কোন বিষয়ে অভাব হই **उटह ना। এक कीव या उ**लाश दावा या প্রয়েষ্ট্রন সাধন করিতেতে, সেই প্রয়ো-क्रम शिक्ष कतिवाद क्रमा क्रशमीयम जमा कीरक म डेशायना मिशा डेशाश्रस्त व দান করিয়াছেন ৷ তিনি জগতে যত কৌশল প্রকাশ করিয়াছেন, বোধ হয় ইহার তুলা অ -ছুত কৌশল আর কুত্রাপি বর্ত্তমান নাই।

গো, মৃগ এবং মেব প্রভৃতি যে সকল চতুম্পদ অন্তর মুখমধ্যে অবাদির ন্যায় ভূই পংক্তি দত্ত নাই ৷ উল্রা স্বীয় স্বীয় ভোল্য অব্য এক কালে সুক্ষরত্বপৈ চর্মণ করিয়া

উদরস্থ করিতে। পারে না, এজমা প্রায়েখন উহাদিওতক বোমস্থ করিবার এক আছে ১১ **कि अर्थन कविशा हर्यन (**गर्भात अक्षेत्राहर করিবা দিয়াছেন। উক্ত গগুলিখের রোম ত ক্রিয়া এক আক্তর্যাধার, উহাদিবের बो शिक्त में गीकिता काम बहुध है के हातू। की বুন বারণ করিতে পারিত না। গো কি মে৹ প্রভৃতি রোময়কার। পশুলা যহকালে ভুলনি कक्षन करते, इंध्कारन स्वरं प्रमुख कुन पन छ। য়স্বাভাবিক অবস্থাতেই উহাদিখের উদরস্ব हण, जनवृत्र উহাদিশের গাকস্থলী প্রবিষ্ট হ-ইং কৈঞ্ছি আন্ত্ৰি কোমল হয় এবে উক্ত পশুরা সেই সমস্ত রুমার্রে ও কোমস ত্থা-দি উচ্চার করিয়া পুনর্বার মুগমবো আন-মন পূর্মক দব্দিত চবাণ করিতে থাকে, এবং ভাষা বিলক্ষ্ণ চুণ ও পিষ্ট হইলে পরে **অংশে অংশে উদরস্করে।** এই রশ সায়ে প্রবালীকুমে রোমস্থকারী পশুদিগের ক্রেফ **अता प्रकार राधाभयुक्त काल** जीन इंडेनः রস রক্ত বাপে পরিণত হয় এবং উহাদিগকে कीविकारशास तका करता। মে পাড়াতি ক্তিপর পশুর রোমস্থ ক্রিব'র শক্তিনা थाकिता (य कथनहे छेशांनित्यत जीवन द-ক্ষা পাইত না, ভাহা পরীক্ষা হারা সঞ্জনাণ হইরাছে৷ মেৰ জাতির পাকডলীন এঞ-कांत्र मेखिनाहे, रब कथाड़ा कान करमहे क भिक्के पुर अर्वामि कीर्व इरेटक भारत I কড়ক হলেতে শিক্ত হইলে ভুলানির যে প্রকার ত হা হয়, দেবাদির উদরস্থ পাক-রুস দ্বার প্রথমত উহাদিবের ভারু তু-शामित (मेरे आकात जात इरेग्रा थाएक, भएत লখন উচারা রোবভ্রিক্যা বারা নেই সমস্ত পুনাদিবে, চামাত চর্মাণ করিয়া পুনব্যার উদর-স্ত কলে, ভথন উহাদিগের পাক শক্তিব ক্রম জ্ঞান শাস এবং ভঃচা সেই সমস্ত ভুঞ্জিকে এম্মি বৃশদার কাপে জীপ্ করে যে তহেনিধের প্রি, গ্রুচি ঘ্যার ক**চিনালে** প্রায়ত্ত क्षक , १० ऋ डिज्ब करेसा बाता। क्यामी-শ্বের হি আ থগু মহিলা যে নিম্ম উচ্চারে बिक्ष जनामा आने हे हिटा है बहुण हैंद শন্ম করে, লাম্ডনার পশুদির্গের পরেন बाध्यक धरातम धुनै **दावका**लाई कार्यक्र इसा एको । अधारि शक्ता मध्याल (ा) बह की बहु है । इस किए किए कार के स्टूड के स्टूड के किकुमाब कर्ने १४१५ हो सा साम प्राप्त पर्या कार्यक्रिताह जात्रहे असुज्ब हते।

इक्ष्मिक्त । समस्य शहरमञ्जूत तकः। एः তির মধ্যে জার ও অংশংগ বেনীশ্ল ও কংশা ক্রিড়াছেন। প্রীজিভিএক কালে লয়-বিহান, কিল পাড়াবজ ও হংম এছটি বে সকল প্রচাদরের ও শসাব ছি ্ভতি ক-क्रिम खुदा छक्षभ कतिया कीदम बादन करत. ইছারিলের চক্ষণ ফ্রিল সমাধার নিষিত্ত প্র-রমেথর দক্ষা পরিবর্ত উহাদিগকে আর েন আশ্চম্য উপায় প্রদান করিয়াছেন 1 উ-कतनद्यात छेनल भाषा धर्वन यदञ्जत नाहत व-ধার মাংশগেশীমর এক প্রকার যক্ত আছে छिन्छ यात्रत्र यथेन द्वांता छेणानियात उपत्रह मसूमात्र कठिन प्रवा भाषा इहेटल शाहक. এবং পরে দেই সমন্ত পিউ পদার্থ উহা-রা অনায়ালে জীব করিতে সমর্থ হয়।প-রাক্ষাধারা সপ্রমাণ হইয়াছে, বে বৰুর কি नगावीक, कान करल हुन ७ लिखे ना ह-इत्त क्वनई छाहा पूर्वाङ शकीमरात्र कठेडानल जोर्न इरेटड शास्त्र ना, अ-চএব প্রমেশার পারাবত প্রভৃতি পক্ষীদিশে-व छेन्द्र बद्धा छेन्द्र श्रकाद कोमल गुला-इन क्रिया वि कि वर्धक आवनात महिना

বিস্তার করিয়াছেন, তাহা বচনাতীত ৷ ঐ সমস্ত পক্ষীদিগের শরীরে. জগদীশর যদি এ প্রকার কেশিল প্রয়োগ না করিতেন, তাহা ইইলে ক্ষুপাকার শস্যোপরি অবস্থিতি করিয়াও উহারা আচারাভাবে প্রাণ ত্যাগ করিত। শ্যেন প্রভৃতি যে সমস্ত পক্ষী অপরাপর প্রাণিবধ করিয়া তাহার মাংসাদি ভক্ষণ করে, তাহাদিগের নগ ও চঞ্চুর এমন ভাব করিয়া দিয়াছেন যে তাহাতে করিয়া আ টিহাদিগাকে কোন ক্লেশ ভোগ করিতে হয় না ৷ উহাদিগের নগ,চথা অতি সকল ও তাহা এবং অন্তরিশেষ ৷ উহারা তাহায়েই আগনাদিগের ভোছা দ্রব্য কোমল ও পেষ্ট্র করিয়া ভক্ষণ করে ৷

সপ্ এছতি কতিপর উরগ প্রান্থ গ্রান্থ বাপার মনে হইবে একবারে বিম্মানিক হইবে হয়। অগরপের জাব জল্প হল দে হালে কমন করে, নজুবাপক থারা উত্থানে ন হর, কিন্তু উলাক্রের সে প্রকার কেন্দ্র করে পর নাই আল উইবে। অতি করে বেগে অকলিলাজনে সর্বর গ্রাম করিবে পারে। উলাপিবের শরীর একপ ক্রুবিলে বিশিষ্ট মাকেসপেনীয়ার নির্মিত ঘে উলার ভিন্ন ইছলার ভারি এবং এবং প্রার সন্ধান ভারি ভারি ভারা ভারি ভারি ভারি সর্বার ক্রিক ভারা আনবরত শরীর স্বেক্ট ওবিকোচ করিবা ইছলামত নর্বারই সমর্যাকরিব ভ্রান্থ ব্যান্থ করিবা ইছলামত নর্বারই সমর্যাকরিব ভ্রান্থ ব্যান্থ ব্

এইনপে জগদীখন কত প্রাণীতে বে কত প্রকার অজুত কৌশল প্রকাশ করিয়াছে-ন, এবং কোন্ কোন্ জীবকে যে কি কি বি-শেষ সহায় প্রদান করিয়া তাহাদিগকে পর্ম সূথে প্রতিপালন করিতেছেন, তাহা কে কী-র্ত্তন করিয়া শেষ করিতে পারে! অনন্ত স্তির যে কোন দিকে দুটি পাত করা যায়, তাহাতেই তাঁহার অপ্যাঞ্চি মহিনা সন্দর্শন্ত করিতে পাওয়া যায়।

শুক প্রভৃতি বে সকল পক্ষী কলাদি কঠিন প্রব্য স্পঞ্জন ও বিদারণ করিয়া স্কর্মণ করে, জগদীশার ভালাদিগের চঞ্চু বডিশাবৎ বক্রাকার করিয়া নির্মাণ করিয়াহেন, কিছ শনস্ক কৌশল ক্ষা প্রবাশীশার বিলি উন্থা-

पिरमंत्र हथा रह जात अक्षि विदर्भय को मन श्वकाण ना क्रिएकन, छटव छेशामिरशत की-ৰন ধারণ কর।ই কঠিন হইত। অন্যান্য পক্ষীর ওঠ ভাগ যেমন মস্তকের অস্থির महिल এक अ मश्युक्त, स्वर्गनीय व विन शुक **अञ्चित एष्टं (नगरक रा**ष्ट्रे अकात कतिता क्रियान क्रिडिंग, जाहा इंट्रेश উद्धा आह কোন ক্রমে মুখ ব্যাদান করিয়া ভোজ্য দ্রৱা शलाध्यक्तर कित्र गुल्म इरेट मा । छ হাদিখোর ওঠি তাগা এত বল্ল ও অধর দেশ এত ্লাবে তাহতে কড়িয়া কেনে ক্ৰে মুণ বিস্তার করা সাধ্য হইতে পারে না, কিন্তু জ্যাদীখন আরু এক অসংধারণ কৌল-লখার: উক্ত কটের প্রছীকার করিবা রচি মারেলন ় অগ্রদীশার শুক্রাদির উজ্বস্থায় থান এমন এক প্রকার ক্রম্ম প্রকৃষ্টরে। মাস্করের মহিত সংস্তুত ক'বে। দিয়াছেন যে ভাছা- ত বরিয়: উহারা হাফেশে ই৴ানত আল थाव एकी वज के बगर करें व्याभावन अ अक्षांकन কবিট্ড ধ্যম্ ধ্রা

কুকলাদ অস্ত ভাহার নেত্র ইতস্তঃ স থ্যালন করিতেপারে না বলিপাগ্রমেখ্য তাহার ৩কে এঞ্চার করিয়া হন্ সংযোগ করিচা দিরতেছ্ন যে উত্তার সংক্ষার আজা ংশ উহার সন্তাদের উপারে সমুখত হইব। অবস্থিত আছে, কিন্তু শ্রীরের মধ্যে যে অঞ্জ-ধিক সন্মূৰ্য হাট্ডৰ অবস্থিত থাকে, সেই অফ্লেই অনিক আঘ:ত লাগিবার সম্ভাবন , এই জনা দয়ার নিধান পরমেশ্র ক্লকনা-সের শরীরে এক অসাধারণকৌশল সম্পা-দন করিয়। তাহার চক্ষুকে রক্ষা করিতেটের । সচরাচর জীব জম্ভর চকু যেমন উর্দাণ ছুই পত্রস্বারা আচ্চাদিত থাকে, কুকলানের চত্ সেরপ নতে উহার চক্ষু এক খানি চর্মাবর-ণে আচ্ছাদিত এবং সেই আচ্ছাদনের মধ্য ভাগে একটি হিদ্ৰ আছে সেই ছিদ্ৰ বারা উক্ত জন্তু সর্বাত্ত নিরীক্ষণ করিয়া আপনার জীবন ক্রিয়া সমাধা করে।

থক প্রকার শহুকের গতিক্রিয়া সমাধা করিবার জন্য প্রমেশর বে অসাধারণ জান নৈপুথ প্রকাশ করিয়াহেন, ভাষা মনে হবলে বিশ্বরাপর হবতে ছের। উক্ত জ্ব- ম্বর পক্ষ পদ প্রস্তৃতি এপ্রকার কোন সহায় নাই যে ভদবলয়নে উছা আপনার গনন কার্য্য সম্পান করিতে সমর্থ হয়, উহার শ-রীর চইতে লালাবৎ এক প্রকার রস নির্গত হয়, উক্ত শসুক সেই রস রুফশার্থা, রুফ পত্ৰ ও তৃণ পুষ্পাদিতৈ সংলগ্ন করিয়া এক-স্থান হইতে স্থানাতর গমন ফরে৷ উক্ত জন্তুর দেহ হইতে যদি ঐ প্রকার রুম নির্গণ ত ন। হই হ, তাবে উহা আগ্রেক'ন গ্রেকারে এ-কস্থান হইতে স্থানায়র প্রাপ্ত হইতে পারি-ত না এবং সুত্রাং আধারালাবে ভছার জী-ব্যন্ত ব্রহা অভ্রাজগদীশর যে কে-বল উহার আহাবির মাত সুখানগেনের নি-নিত উহার শরীরে এখানার বিশোষ কৌ-শ্रम সক্ষণদন করিরাহেছন, ভারের আরু সং रक्षर गारे।

ারমেশ্র মনুষ্ জাতিকে ও এলেরে আফুতি ও প্রকৃতি প্রদান করিন অবনীস ভাগে সৃষ্টি করিয়াতেন, এবং বাস বিঘটেন সহিত উহাদের যে জেকরে অব্যুক্তিক্সার হিলছে, ইহাতে বদিমন্দা জাতি অপরা-পর জীব জন্তুর নায় বুদ্ধিবিধীন হইজ, छाहा इंग्रेटन छेशानिस्थात कान् प्राटम **७ भु**-পিবীতে জীবনধারণ করা সন্তব হইত না 1 অবানা ত্ৰিছত্ৰ নামে মন্ধা জাতির পক্ষ भागिम कोष क्याहरू। ক্টোন প্রকার গাঞ্জাজ্যনৰ ৰাই গ্ৰং শালু নিৰার্থোপ্যো-গী নধ শুন এত ি কোনৰূগ সহায়ও না-ট। অ'রাপর ভাব জন্তু যে প্রকার স্বভা-ব জাত কল মূল ও তুব শস্যাদি আহার ক রিয়া জীবন ধারণ করিতে পারে এবং ভ-রুমুল, গিরি গহার ও বন কি বিবর এভৃতি স্থানে অধিবাস করিয়া জীবন ক্ষেপ্ত করি-তে পারে, মনুষ্জাতি সে প্রকার কিং ছুই করিতে পারে না, সুতরা পর্ম করু-**ণাকর বিশ্ব**পিতা উহাদিগকে উপায়ান্তর প্র-দান না করিলে, উহাদিগকে শীতবাতে ক-দ্শি**ত হইতে হইত,** প্রথর সূর্য্য উদ্ভাপে দ**ন্ধ** इ**रे**ग्राइठ-कीवन हरेएठ इरेठ, लक्क लक्क হিংতা ৰস্কর করাল গ্রাদে মুর্বপৃত্ পতিও इरेशा थान छात्र कतिए इरेड, जबर थ-याकनीय जब भान शाक्ष ना दहेश रूपन का

কুৎ পিণা সায় জীবন ত্যাগ করিতে হইত। পৃথিবী মণ্ডলে যে মনুষ্য জাতির কত প্রকার ল্লেশের কারণ বিদামান আছে, এবং তা-লর যে কত অসংখ্য শত্রপদে পদে বিচ-রণ করি:তেতে, ভালা কাছার শাধা ঘেৰণন করিয়া শেষ করে, কিন্তু জগদীশর উহা-বিগকে এক বৃদ্ধি প্রদান। করিয়া সে সমস্ত জ্লথেরই প্রতাকার করিয়ছেন। ্রভাবে মন্দ(সুচারু বস্ত্র বয়ন করিয়া উ-<u> এক কৰিবলৈ লোগ নার গাত্রাচ্ছাদন প্রস্তুত কল</u> রিয়া হিম্পাতুর উৎকট শীত জনিত বিষম यह-। नियातन कतिरण्डाहे, **भूतमा** शृहाहि নির্মাণ করিল: নিদাঘ কালের প্রেচ ও তথা किंद्ररेश्त भागस क्रिम इंड्रेस्ड शिखात পाई-তেছে এবল বৰ্ষায় বাত বৃদ্ধি চ্ট্তে আপ্ৰ-নাকে রক্ষা করিতে সমর্থ হইতেরে। রু-জি প্রভাবে মনুধা বিস্কার্থ সংগর মনেঃ ভাসমান হইষাও সুধার সময় আগনার ভে:-का छना आज दशेरङ्ख्य धन कल कना মতে ভূমির মধ্যস্তলে নিপতিও ১ইমাও ভূকা কালে সুখীতল **ভলপান** করিছা আপেনার জীবন রক্ষা করিতে সমর্থ ইউত্তেকে। রুদ্ধি ছার। মনুষা মহাবল সিংহকে লৌর শুখালে বন্ধ করিড়া পাহার সহিত জীড়া করিতেছে, এবং অতিকায় **মাতঙ্গকে আগনা**র ১রীন করিয়া ভাষার পুষ্ঠদেশে আবোষণ করিছে: (ছা) বুদ্ধি ছারা মনুষ্য সহৎসরের গথ হ-ই**তে** সৰাস্থান <del>আগে ইইতেছে এবং এক</del> সংক্ষেপ্ত গথ এক দিবসের মধ্যে ভ্রমণ করিতে-ছে। বুলি খাবামনুখা সূত্তীর ভূগও নধো অব্যাপ্ত কাৰ কাৰ্ড কাৰ্ড উদ্ধার ক-রিতেতে প্রান্ত্রিক প্রভাবে ব্যোদ্যান প্রান্ প্তত করিয়া পক্ষির নারি শুনা পবে, উদ্-ভারমানী হইয়া তথাকার সকল লোভা ম-নদর্শন করিতে সক্ষম হইতেছে। এক বৃদ্ধি প্রভাবে মনুধা যে কত সম্ভাবিত বিগদ নি-हाकत्व एतिशा मर्द्यमा चान्न तक। कतिएक-ছে এবং কত শত অনুত ব্যাপার সম্পন্ন করিয়া অনুপম সুধের অধিকারী হইতেছে, ভাহা বৰ্ণা চরা অসাধ্য। কেবল এক বু-कि अভादिर मनुषा लाठि विश्वतंत्रिका जा-कि काजरमात्र ब्लाम लार्ड ममर्क इंदेशारह।

অতএব জগদীখরের কৌশল ও মহিমার বিষয় শারণ হইলে মনুষ্যুকেই অধিক ক্লত-জ হইতে হয়।

# অযস্কান্তমণি

জারতব্ধীয় প্রাচীন পণ্ডিতেরা চুম্বক লৌহকেই অয়ক্ষান্ত মণি বলিয়া বর্গন ক-রিয়া গিয়াছেন। এই চুম্বক মণি কত দিন অবধি যে এ দেশে প্রকাশিত হইয়াছে, ডা-লা নিজেশ করা মুক্তিন।

চুষ্ট স্বাভাবিক ও কুলিম। স্বাভা-িক চুয়ক এক প্রকার লৌছ বিশেষ এবং ভাষা অনেকানেক দেশেই লৌচ খনির ম থো প্রপ্রের বয়ে। তাহার মধ্যে না-তেও দেশে এবং এলবং উপদীপ ও জা-इच्कर्णत (सोइश्रमित भाषाई छेक्क्कर p-५क करन উर्शन हरा। अस्माल bमक क्रेयए क्रुफ़ वर्ग धवर चारिक काक्रिक इहेसा গাকে৷ পুৰে ৰচ গৰিছন পুৰ্বক লো কদিলকে ধনির মধ্য ছইটেও ঐ প্রকার স্থান ভাৰিক চুয়ক আনয়ৰ করিয়াকর্ম নির্কাহ করিতে ইউড, কিন্তু বদবধি ক্লতিম চুম্বক প্রয়ত হইতে আরম চইয়াছে, ওদবধি কা-নকেও আর চুয়ক মনির জন্য সে প্রকার প্রিশ্রম করিতে হর না, এবং ঐ রাশি রাশি কতিম চুমকের স্বারা সকলের সধাপ্রকার कार्या निकाह इसेवा शास्त्रक, किवल कोड হলের জনা কেই কেই ছাই এক খণ্ড স্থা: डाविक ठूबक आह्य ।

রুতিম চরক কাহাকে বলে, পশ্চাৎ লি-থিত হইবে ৷ চুষকের আকর্যন, দিগ্দ-শন প্রভৃতি ধে কয়েক গুল আছে, পশ্চাৎ এক এক করিয়া ভাছার বিবরণ করা মাই-তেছে !

চুষ্ঠকের আকর্ষণ। চুম্বক, লৌহ প্র-ভূজি কাতপর পাজুকে আকর্ষণ করে, কিন্তু সর্ব্বাপেক্ষা লৌহকেই অধিক আকর্ষণ ক-বিরা থাকে । চুম্বক এবং লৌহ এই উভয় পদার্থের মধ্যে অপর কোন বস্তু ব্যবধান থাকিলেও চুম্বক লৌহকে আকর্ষণ করে।

" यनि धक शंश काशत्कत छेलत अक्छि लोह मह स्टो तका कतिहा तक काशत्कत জিল্মু চুৰক মণি ধরা খার, তবে তথনি দৃতী
হর বে, বে দিকে, সেই চুৰককে লই রা থাজ্ঞানাম কাগতের উপরিস্থিত স্থানীও অমনি সেই দিকে গমন করিতে থাকে 1 এই
ক্ষেপ কাচাদি অন্যান্য পদার্থ ব্যবধান থাকিলেও চুমকের আকর্ষণের গুভি কোন ব্যাহাত কলে মা। চুমক ও লৌচের মধ্যে
বে কোন পদার্থ ব্যবধান থাকুক, চুমক লৌহকে বথানিরমে আক্রর্ণ করিবেই করিবে।

চুষক মণির এই আকর্ষণ শক্তি সহ-কারে পূর্বকালে অনেকে অনেক প্রকাল করেছে আনেক প্রকালর কুছক জীড়া দ্বারা লোকদিগকে বিজ্ঞাপন ও বিমোহিত করিছে। অনেকে একটি কুজ মনুস্মের প্রতিষ্কৃতি নির্মাণ করিয়া ওদ্বারা যথানিয়মে বর্ণ ঘোজনা পূর্বক ব্যক্তি বিশেষের নাম লেগাইরা লোকদিগকে চমৎক্ষত করিছে। ঐ রুজ্মেম মনুষ্যের হত্তে একটি লোহমুর্থ গেখনী ভার্পাক করিয়া থেকাজ দলকে নাম লিবিতে হটবেক, ভাহান নিম্নে কোন বাজি গোলন ছাবে অব্দ্বিত কবিত এবং তথা হইতে সে, চুসক মাণির সঞ্চালন দ্বারা পেই কাইই ফলবৈর নিম্নুভাবে ববা প্রয়োজন বর্ণ বিন্যাণ করত ঐ পুজ্ঞিকা গারা উল্লিখিত নাম সমাণা করা-ইত । '

কেহ কেছ কোন ক্রিম রাজহংগ নির্মাণ করিয়া গুঢ়বলৈ ভালার মন্তক্রের মধ্যে লৌত রাধিয়া দিত এবং কোন দপ্তাপ্রভাগে গোপনে চুম্বক মনি প্রবিষ্ট করিয়া সেই হংগ্রের সন্মুখে ঐ দপ্ত ধান্ত করিত, পরিশেষে যে দিকে সেই দপ্ত লইয়া যাইত, হংসপ্ত তৎ পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিত, যথন ঐ দঞ্জের অপ্রভাগে মৎস্যাদি কোন প্রকার খাদ্য জ্বা সংযুক্ত করিয়া দিত, তথ্ন দেখিতে আরেবা প্রাধন হইত 1

কেহবা কোন ক্রন্তিম মৎস্যের মুখমধ্যে
এক খণ্ড চূৰক মণি নিবিকী করিয়া তাহাকে
ছল মধ্যে নিজেপ করিত, পরে সেই
ছলে কোন আনিবমার লৌহ ব্যক্তিশ মধ্র করিলে, বৃহক্কেই আকর্বণ শক্তি সহকারে সেই
ইন্যু মুখ-ম্যাছিত, চূহক ও আনিবান্তত্ত্ব,
ইন্যু বৃদ্ধিন ক্রিছিল উচ্চাই এক্তা সংস্থাক্ত হ-

ইত এবং ছফ্টে সামান্য লোকে মনায়া-লেই মুখ্য হইয়া বাইত ি পুৰ্বকালীন মনু-বোরা এইকপে চুম্মক ছারা নানা প্রকার কু-হক ও কৌতুক করিয়া কাল চরণ করিত কিন্তু ভফ্যারা কেবল ভাহাদিগের আমো-দই সম্পন্ন হইত; অন্য কোন বিশেষ উ-পকার দর্শিত রা ৷ হত্তিনা পুরে বে শূ-নো সিংহাসন থাকিবার প্রবাদ আছে, তা-ছাও বোব হয় এই চুম্মক মণি ছারা হইয়া থাকিবেক ৷

কত পরিমাণের চুধক মণিকত দূর হ-हैटि त कर दूर्श लोशिंग भगर्थ कि था-কর্মণ করিতে পারে পদার্থবিৎ পভিতেরা পরীকা করিয়া সে বিষয় স্থির করিয়া গি-য়াছেন ৷ মুদে ত্রেক সাহেব দেখিয়াছেন, যে অন্ধ ছটাক পরিমাণের চুম্বক এক অলু লি গরিমিত দুর হইতে ১৮ রভি লৌগ আ-কর্ষণ করিতে পারে এবং ছয় অঞ্লি দূর হইতে তিন রতি মাত্র আক্ষণকরে। ই-হাতে ডিনি স্থির করিয়াছেন যে, লৌহ চুষকের নিকট চইতে যত দূরে অবস্থিতি ক-রে, চুমুক ভারাকে ভত অপ ভেজে আক-র্যাণ করিয়া খাকে ৷ অর্থাথ এক অন্সূলি-দুর্স্থিত লৌহ পণ্ডকে যত আকর্ষণ করে, ভাষার সুঠ অঞ্জি দুরস্ত লৌহকে ভাষার অন্তেটি আকর্মন করে, এবং তিন অঞ্চুলি দুধস্থিত লৌহকে ভাহার তিন ভাগের এক ভাগ আকর্ষণ করিয়া থাকে ইত্যাদি। ই-হা কেবল পরীকার অধীন রহিয়াছে। ই-का इरेटन सूर्य (उत्तक मारहरदत अरे श রীকা সকলেই প্রভাক করিয়া দেখিতে প **C3** = 1

দ্বক মণির উৎপাদিকা শক্তি। এই গুণের তাৎপর্যা এই যে বাজাবিক চুবক লারা ইতর লৌহও চুবকের গুণ প্রাপ্ত হই-তে পারে। এই প্রস্তুত করা চুবকের গুণের মহিত আভাবিক চুবকের গুণের কিছু মাত্র ইতরবিশেষ নাই। যে লৌহ অধিক কটিন নহে, তাহাতেই শীঘু চুবকের গুণ বার্ডে, কিন্তু শীঘুই আবার তাহার গুণ বার্ডিত হয়।

ইণ্ডর লৌহকে চুবক করণের পদ্ধতি । এক বণ্ড চুবক লইনা স্কৃচী, ছুবিকা, কর্ত্ত-নিকা এভাত কোন প্রকার গোহমর পদা-পে কিঞিৎ কাল ঘর্বণ করিলেই ঐ স্থাচী প্রভাতি তৎকণ্ড চুবক লৌহতে ন্যায় অপর লৌহকে আকর্ষণ করে।

শাভাবিক চুৰকের ঘর্বৰ ভিন্ন অনা প্র-কারেও ইতর লৌহকে চুৰক করা মাইতে লারে। কোন লৌহদও সুদীর্ঘ কাল উদ্ধান করে অবহিত লাকিলে, ভালতেও চুনকের পুণ বর্ত্তে। এই হেড় অতি প্রাচিন গরাক দারের শৌহ দুগাদিতে চুনকের পুণ দুর্বত হয়। মদি আন প্রকার লৌহ দলাকা মুদ্রি কাল একপ সমান ভাবে স্থিত থাকে, তবে ভালাও চুমক ইইতে পারে, কিন্তে তালাকে সম্বাদ সম্বিক উভাগ লাগিলে আর সে চুমকের পুণ প্রাপ্ত হয় না। যদি উক্চ লৌহকে জলে ম্য় করিয়া শীত্র ররা যায়, আর ভালা সরল ভাবে অব্যাহত থাকে, তবে ভালতেও চুমকের ধর্ম সমুংপর হুইতে পারে।

অতি পাচীন গৰাক খাবের সৌচনও কোন সুচী ঘর্ষণ করিলে, সে সূচীও চুষ্কের গুলু প্রাপ্ত চইচে পারে 1

বৈছাতিক পদার্থ ঘারা ইতর লৌচ
অতি সহজেই চুম্বকের গুণ ধারণ করে।
কোন লৌচ দণ্ডে বজাযাত হইলে পর তাহাতে চুম্বকের ধর্ম উপস্থিত হয় এবং তাচা অপর সৌহকে আকর্ষণ করে। কলতঃ
চুম্বক, বিদ্যাহ এবং তেল এই সমস্ত পদার্বের পরস্পার অতিশার নৈক্টা সম্বর্ম আতে, ভাচার সন্দেহনাই।

চুষক এবং লোহ এ উভর পদার্থই উভরকে আকর্ষণ করিতে পারে। কোন মানদণ্ডের এক দিকে লৌহ খণ্ড রাখিরা অপর্যাদকে অন্য পদার্থ স্থাপন দারা সমতুর করত ভাহার নিম্মে চুষক ধারণ করিলে
যেনন সেই লৌহের দিক অবনত হয় সেই প্রকার মান-দণ্ডের এক দিকে চুষক রক্ষা করিয়া ভাছার নিম্মু দেশে লৌহ খারণ করিলেও সেই চুষকের, দিক অবনত হয়।
রক্ষাতে চুষক ল্যানিক বিশ্লা ভাছার নি-

কট কৌহ আনিলে সেই লোই ঐ কুই স্বককে আকর্ষণ করিবেক ৷ এবং চুম্বকণ লোহ উভ্রকে উভর রক্ষুতে লাইভ করিরা নিকট বভী করিলে, উভরেই উ-ভরকে আকর্ষণ করত মধ্য স্থলে আনিরা এক্তিত হয় ৷

রুহৎ চুষক ক্ষুদ্র সৌহকে আকর্ষণ ক-রে এবং রুহৎ লৌচ ক্ষুদ্র চুষককে আকর্ষণ করিয়া থাকে। চুষক ও লৌচ এই উভয়ের মধ্যে যথন যাচার পরিমাণ অধিক হয় সেই তথন আকর্ষক কইয়া থাকে।

চুষককে অগ্নিতে অত্য**ন্ত উক্ত করিলে** তাহার আর আকর্ষণাদিকোন গুণ**ই থা**-কেনা।

দিগ্দশন ৷ বিগ্দশন চুয়কের এক
অন্ত ভাজি ৷ চুৰক-শলাকেরে এক প্রান্ত স্বভাবত উত্তরানিমূবে ও অন্য প্রান্ত
দাক্ষানিমূবে অবস্থিতিকরে, কদাপি অনা
কোন দিকে থাকে না! চেন্তা করিয়া
ফিরাইরা দিলেও ক্রমে ক্রমে আবর করিয়া
ফিরাইরা দিলেও ক্রমে ক্রমে আবর করিয়া
ফিরাইরা দিলেও ক্রমে ক্রমে আবর করিয়া
বিত্তি করে, তালাকে চুম্বকের উত্তরাভিমুবে
করে, এবং অপরদিকের নাম দক্ষিণ মুঝ
করের থাকে। এই উত্তর মুঝ কদাপি দকিণাভিমুঝ হর না এবং দক্ষিণও কথন
উত্তরালেয় স্থিতিকরে না, এ উত্তর মুঝ
অনবরত যথাবোগ্য দিকেই স্থিতিকরে!

চুষকের যত গুণ আছে তথাধ্যে দিগ্দশন গুণ দারাই সংসারের বিশেষ উপকার
দার্শতেছে ৷ ইছার এই শক্তি যে মনুষা
ভাতির কি পর্যন্ত প্রীর্দ্ধি ও মঞ্চল সাধন
করিরাছে, তাহা বর্ণন করিয়া শেষ করা
যার নাঃ

চুৰকের এই গুণ যে পর্যান্ত মনুবা সন্
মাজে অপ্রকাশিত ছিল, সে পর্যান্ত কভ
বিবরেরই যে কুটি ছিল, কভ লোকের কভ
কত আশা যে অপূর্ণ ছিল এবং মনুযোরা
যে কভ সুথে বঞ্জিত ছিল, তাহা বর্ণনাতীভা বাণিজ্যের পথ কোন মতেই প্রশান্ত
ইইবার উপার ছিল না, নাবিক্সদের নিক্ষিত্র সমুদ্র গমন করিবার সাধা ইইভ বা

क्षर स्वामानुहाशी खनन काविवा अध्याद्भारन খেল দেলাপ্তর গমন করিতে লক্ত ভইতেন बा, जुरुहार अक्कश्कात यह कामाब अमि भर्याह्रेन बाहा विविध विषटत आक्र हरेवात সাধা হইত না,। স্রমণ করিয়া পদত্রকে অভি करके यद किश्विद द्वान शर्या हेन कति साहे खास इरेटबन, नाविक शर्वत मर्था । यानाता প্রেরেজন বৃশতঃ কথন কোন কুদ্র কুদ্র স-মুদ্রে বাত্রাকরিত, তাহারাও নকতে স্বারা দিক্ নিরূপণ করিতে করিতে মেঘাদি প্রতি-ৰন্ধক হেতৃ সৰ্বদা মহাবিপদে পতিত হ-ইত, সুতরাং বিস্তুত বাণিজ্যের অভাবে भन्याकां डिटक क्विन चारमार्भन छ-ব্যাদি অবলয়ন দ্বারাজীবন যাপন করিয়া নানা লেশে কাল । কেপ করিতে হইচ। চুষক মনির এই দিগ্দর্শন শ ক্তি প্রকাশ না भार्षेद्रज्ञ, रकाथास वा कलब्दमन प्यामितिकास গ্ৰন, কোখায় বানানা (দশে নানা বি-দ্যার প্রচার এবং কোখার বা সংসারের ম-ধ্যে এবাৰিক্য বিস্তার ধ্যকিত। অতএব ধে যুখক মণিব ভারা আমাদিগের এভ কট নিবারণ, এত বিপাদ নিরাকরণ ও এত অ-শেষ প্রকার সুধা সাধন হইয়াছে, যিনি षाश्चामित्रात् अञ्च উत्मृत्म (मर्वे अवन्त्रानु মণির সৃষ্টি করিরাছেন, তদ্যুরা ভাঁহারই মহিষা প্রকাশ পাইতেছে ৷

জনেকে স্থির করিংগছেন, প্রথম চীন দেশে চ্রকের এই দিগ্দর্শন প্রণ প্রকাশ পার, ঐ প্রকার প্রমাণ পাওয়া নিয়াছে ধে ক্ষরান ২৯০০ বংসর প্রার্কিটীন দেশীর লো-কে চ্রকের ঐ অসাধারণ প্রণ অবগত ছিল। মারকো পোলা নামক এক ব্যক্তি চীন দেশে অমণাত্তে তথা হইতে প্রভাগমন ক-রিয়াই প্রথমতঃ ইয়ুরোপ দেশে চ্রকের ই শক্তি প্রকাশ করেন।

চুষকের এই নিগ্দর্শন গুণ ক্রমে চুষ-কেও বর্জে ৷ লৌহনম স্থার উপর চুষক ঘর্ষণ করিয়া ভাষাকে জলে নিক্ষেপ করি-লে ভাষার এক প্রান্ত উত্তর আর এক প্রান্ত ছক্ষিগাভিমুখ হয় ৷ কতক গুলি ঐবপ স্থ-চী চুষকে ঘর্ষণ করিয়া প্রত্যেককে এক এক বঙ্গ খোলার মধ্যে বিদ্ধ ক্রিয়া জলে ভা- সাইয়া দিলে ও সমস্ত হুড়ী উভর ও দক্ষি-গাৰিষুণ কটিয়া অবস্থিতি করে ৷

সমুদ্র মধ্যে দৈবাং জাহাকের কদ্পাস ন-উছ্টনে ঐ ৰূপ স্থানী দ্বারা দিগ্ নির্বাহর ।

যদি এক খণ্ড চ্ছাকের দকিণ মূথ অপর পণ্ডের উন্তর মৃথে গংলগ্ন করা যায়, তাবে উ-ভয়ে উভয়কে আকর্ষণ করে। কিছু উত্তর মৃথে উত্তর মুথ কি দক্ষিণ মূপে দক্ষিণ মৃথ একত্র সংখুক্ত হুইলে পরস্পার কেছু কাছাকে আকর্ষণ করে মা, তাহারা উভরেই উভাকে দুরে বিকেপ করে। এই পরীক্ষা দারা অনেক সমন দিগ্দশ্ন শ্লাকার উভরে দক্ষিণ মূপের নির্ণাহয়।

কোন গ্রেকি সা স্থাকে চুম্বকে ঘর্ষণ পুর্বক শোলার মন্যে প্রথি করত জলেতে ভাসমান করিয়া যদি ভালার উত্তর মুখের নিকট কোন চুয়কে দ্বিক সংলগ্র হয়, আর ঘদি উত্তর মুখের নিকট কোন চুখকে নিকট চুয়ালে সংলগ্র হয়, আর ঘদি উত্তর মুখের নিকট চুয়ালে ইউডার মুখ ধরা যার তবে সে শোলা চুখক হইতে দুরে প্রস্থান করে।

চারি পাঁচেটা স্থচীকে চুধকে ঘর্ষণ করিয়া পরক্ষার উত্তর ও দকিব মুখে সংযুক্ত ক-রত রক্তুর মত বাুগনে যায়।

চুষকনোকের উভার অগ্রভাগ ভিন্ন, মধ্য দেশে কোন আকর্ষণ শক্তি দৃষ্ট হয় না ৷
কোন কাগণেরের উপর বদি কতক প্রালি লৌচ চুণ বিস্তৃত করিয়া প্রাহরে নীচে চুষক বর্মায়া, তবে লৌহ চুণ ক্রমে বিভক্ত হৃ-ইয়া ঐ চুষকের উত্তর ও দক্ষিণ ছুই দিকে গিয়া রাশীক্ষত হইতে থাকে ৷ মধ্য স্থা-নে কিছু সাত্র থাকে না ৷

চুমক যদি অতি দীর্ঘ কাল অধিক অপ-রিস্কৃত লৌহের নিকট থানে, তবে তাহার দিগ্দর্শন শক্তির অনেক হানি হর, কথন কথন এক কালে নর্যন্ত হয়।

দিগ্দর্শন শলাকার উভর অঞ্জাগ নিরস্তরই উত্তর ও দক্ষিণাতি মুথ অবস্থিতি করে, কিন্তু কোন কোন স্থলে তাহার কিকিৎ বাভিক্ষও ঘটিয়া থাকে ৷ ক্লিপ্দর্শন শক্তির এই বাভিক্ষম ঘটুনা প্রথমতঃ কলব্য সাহেব ভানিতে পারিয়াছিলেন ৷ তিনি

ধে যাত্রায় আমিরিরা প্রকাশ করেন, সেই
যাত্রাতে তাঁহার জাহাজের কন্সানে এই
বাতিক্রম দশা উপস্থিত হয়। কিছু ইহাত্রে দিগ্রিণ র ক্রণের দলৈ কোন ব্যাঘাত
জবেল নাই। প্রত্যাহ মধ্যাহ্ন কালে কন্সাদেব এই বাতিক্রম দশা উপস্থিত হইবার
বিষয় নিদ্দেশ করা বাইতে পারে।

সর্বাদা সর্বাহ এক প্রকার বাতিক্রম ঘটনা, কোন কোন জানে শলাকার উত্তর
মূথ কিলিং পানিচ দিকে বক্র হয়, কথন
বা পূর্বে বিকেও কিঞিৎ হেলিং। থাকে ৷ অতএব কোন কায়ণ বশতং যে চুম্বাকর কোন্কার্য ঘটিয় গাকে, তাহা অদ্যাক্রি কেহুই দ্বির ক্রিডে পারেন নাই, যত কাস
অতীত হুইবে, তত্তই সকল বিষয়ের সভা
প্রকাশ ও কারন নিদ্মিট ইইতেথাকিবেক ৷
একাশে অনেক বিষয়েই পরীকার অধীন রহিরাছে ৷

~/Y~

জীলুক উপরতক্ত বিদাসোগর নহাশীর है। भूरक विषविभागत भूगः महस्य मान স্তুত্রত বলিয়ায়ে পুত্তক প্রকাশ করেন, জলো প্রসাথিত হুইয়া অব্ধি ঐ প্রস্তাব ল-ইয়া হিন্দু সমাজে যোৱতর আন্দোলন হ-हेरकरहा अप्टरक्षीत्र घटनक शक्षिष्ठ उ গুলান বিষ্ট্রী লোকদিগের মধ্যে অনেকে উক্ত বিষয় অপ্রচলিত লাখিবার অভিপ্রায়ে এক এক পুস্তক প্রান্ত বিলা উলেরে ঐ মতে বিস্থা আগতি উপাণন করিয়াছেন। মেই সকল অংপত্তি যে নিতান্ত ভাল্ড মূল-क हेड। अभगोन कद्विपात विभिन्न, विमाणा-গর মহাশ্য সংগ্রিজ বৈধ্যে দ্বিতীয় এক পুস্তক প্রকটন করিছ। গুডি বাদীনধের স-মুদয় পুস্তকের একত্র উত্তর দিয়াছেন। তাঁ-হার ঐ বিভাষ পুস্তক এড বিস্ত যে তাহা প্রথম পুস্তকের ন্যায় এক মাসের পত্রিকায় আদোপান্ত উদ্ধৃত করা সম্ভব হয় না। মাসে মানে উক্ত করিতে হুইলেও, ছরমানেও (नंग रक्त ना किन्त गथन के भूक्क नक्त माधा-त्रभटक विकतन कत्रा इरेटकट्ट, ज्यान आमा-पिरात शांठक वर्ता छहा, विश्वहरू अ शांठ

করিতে থাইবেন, ভাষার সন্দেদ্ধ নাই ৷ এছলৈ কেবল উপক্রম ও উপসংখ্যর দাল
উদ্ধৃত করা যাইতেছে ৷ ভল্লবেয় উপক্রমভাগ পাঠ করিলে এতদেশীর পণ্ডিতগন্ধের
বিচার প্রণালী অভ্যন্ত দোবাবহ বলিয়া সুশার্ত প্রতীতি জন্মে ৷ ভাঁহার ৷ ভত্তমির্বন্ধ
পক্ষে সবিশেষ মবোযোগীন্যইয়া অনুলক
আপত্তি উপদ্বিত করিতেই উদ্যাত থাকেন ৷
আর দেশাচার ও কুসংক্রার যে এতদেশেল্ল
কিব্রুপ ভরক্ষর শাক্রু হইয়া উঠিয়াছে, ঐ
শুস্তকের উপসংহার-ভাগে ভাহা সুচার্যক্রপে
বর্ণিত চইয়াছে ৷ ভাহা আর্ত্তি করিলে,
গাবাণ জুলা কঠিন ক্রন্যও তার হইয়া যার ঃ

বিধবা প্রশিদ্ধের পুনর্বার বিবাহ নিরবলার সুক্তি অনুসারে সুক্তিভাতেই কর্তব্য,
চাহার সন্দেহ নাই ৷ ভারতবর্যার শাস্ত্রানুসাপেও সম্পূর্ণ বিধের বলিয়া অবধারিভ
হইল ৷ ভাতগর একানে উহা প্রচলিত করিল ভাহাদিলের অসহ বৈধবা যন্ত্রণাও
ঘোরতর পাতক মাশি নিবারণ ফরিতে ক্ষণ্যাহও বিবাহ করা উভিত নহে।

প্রস্তুত ঈশরচন্দ্র নিদ্যাগাগর প্রণীত বিধবাধিবাহ বিষয়ক **হিতীয় পৃত্তকের উপ-**ক্রম ভাগ !

বিধবাবিবাহ প্রচলিত হওয়া উচিত কি না এই প্রস্তার যথ কালে প্রথম প্রচারিত হয় তৎকালে আমার এই দৃঢ় সংস্কার ছিল যে এতদেশীয় লোকেরা পুস্তকের নাম জা-বণ ও উদ্দেশ্য কাষ্ধারণ নাত্রেই অবজ্ঞা ও অশ্রদা প্রদর্শন করিবেন আন্থাবা মাঞ্জ পুর্বাক: গ্রাহণ ও পাঠ করিবেন না সুভরাং श्रु उटकत मझलन विषदत य शतिकाम कति-वाहि (त महूनाव निकास दार्थ इट्रेंबक । কিন্তু মৌভাগ্যক্রনে পুস্তক প্রচারিত হইবা-মাত্ৰ লোকে এৰপ আগ্ৰহ প্ৰদৰ্শন পূৰ্বক গ্রহণ করিতে আরম্ভ করিলেন যে এক সঞ্চা-रहत अमधिककान मर्थारे अथम मुखि**ण हुरे** সহস্র পুত্তক নিংশেষে পর্যাবস্থিত হইয়া গে-লা ভদ্দবি উৎসাহায়িত হইয়া জায়ি আর তিন সংযু পুত্তক ছডিত করি ৷ ভারারও व्यक्षिकारमञ्जू व्यवस्थि विद्राप्त विष्यु वाक्ष्मा প্রদর্শন পূর্বাক পরিগৃহীত হয়। যথন এরূপ শুরুত্বর আগ্রহ সহকারে সর্বাক্ত পরিগৃহীত হইয়াছে তথন এই প্রস্তাবের সর্কান বিগরে যে পরিক্রাম করিয়াছিলাম আমার সেই পরিপ্রাম সম্পূর্ণ সফল ক্ইয়াছে
সন্দেহনাই।

আহলাদের বিষয় এই যেকি বিষয়ী कि भाखवावमाधी आतंदक वन् धव अम-র্শন পূর্বাক উক্ত প্রস্তাবের উত্তর লিখিয়া মুদিত করিয়া স্কাস্থারণের গোচরাথে প্রচার করিয়াছেন। শেবিষয়ে সকলে অ বজনাত অংশাদ্ধা প্রদর্শন কবিবেন বলিয়া আমার স্থিয় সিদ্ধান্ত ছিল গেই বিষয়ে ছানে-কে এন ও ৰাম দীৰার করিলেন ইচাজন্প আহলাদের বিধন নলে: বিশেষতং উত্তর-माठा महानग्रीमाश्रव मावा आमाकहे शक वि-ভব ও পর্য ওকা বিষয়ে এতাদেশে প্রধান ব-লিয়া গাল : এখন এই প্রস্তান প্রধান প্র-श्राम कार्याप्रदेशव कार्डरपात्री विष्ठावर्षात्री अ উদ্ভেদ্যন্ত্ৰাগা ইইয়াছে তথন ইছা অংশক। আমার ও আমার ছন্ত প্রস্তাবের পক্ষে খ-বিক : শহাস্থার বিষয় আরু কি ঘটিতে Million .

किछ आएकारशव विषय धरे त्य त्य भ-দল মহাক্ষেত্ৰ উত্তর লানে প্রকৃত ইইয়া-ছেল কি প্রাণালীতে একপ গুরুতার বিষয়ের বিগার করিতে হল ভাঁহাদের মধ্যে অনে-কেই ভাগ নিশিষ্টৱপ অবগত নহেন ৷ কে-হ কেছ বিধবাবিবাহ শব্দ **ভাব**ণ মাতেই ক্রোধে অধৈ। ব্য হইয়াছেন এবং বিচারকালে দৃষ্টি থাকে অনেকের উত্তরেই তাহার স্পাঠ প্রমাণ পাওয়া গিয়াছে ৷ কেহ কেই স্বে-ক্ছাপুর্বাদ নথার্থ অবথার্থ বিচারে পরাউ্মু-থ হইয়া কেবল কতকগুলি অসীক অমূলক আপত্তি উত্থাপন করিয়াছেন। কিন্তু তা-হারা যে অভিপ্রায়ে ডজপ আপত্তি উপা-পুন করিয়াছেন ভাহা এক প্রকার সকল হ-हेबारक विलक्ष इहेरबक। व्यवस्कृ अब-एक्षणीत अधिकाश्म लाहक हे मालुक बहरन সুতরাং শান্ত্রীয় কথা উপলক্ষে ছুই পকে ৰিচার উপস্থিত স্টলে উভয়পক্ষীয় প্রমাণ

व्यादार्गत वनावन विद्वहमा क्रिमा छशा-তথা নিৰ্ণয়েও সমৰ্থ নহেন ৷ ভাৰাৱা যে কোন প্রকার আপত্তি দেখিলেই সংশয়: ৰাড় হট্যা থাকেন। প্ৰথমত অনেকেট আমার বিধিত প্রস্তাব পাঠ করিয়া প্রস্থা-বিত বিদর শাস্ত্রসমাত বলিয়াস্থিস করিয়ে ছিলেন পরে কংখকটী আপত্তি দর্শন ক-রিয়াই ঐ বিষ্যাক একবারেট নিভান্ত শা **ক্রবিক্রন্ন** বলিয়াও ভিত্র ক্রিবল্ডের ৷ আ ধিকজ বিষ্ণী লেকেনা সংক্ষাত্ত ন্তেন সুভরা সংক্ষাভ বচনের ক্রা অর্থগ্রিচ ও ভাৎপর্য, ভারপরেণ করিতে পারেন না : শীহাদের বোধার্থে ভাষায় অঞ্জ লিপিয়া লিকে হয়; সেই ভাপের উপর নিখন ফ রিরা উচ্চালে ভ্রাতেখা মির্ণা করিখা প্র কেন! এই মুখ্যান (ধৰিয়া) সংস্কৃত্যান শয়ই অভিপ্রের অর্থ সাবনার্থে প্রায়ত স্বলেই স্বস্ত্র বচনের বিপরীত দর্গ ি থিয়াছেন। এব সংস্কৃতানভিদ্ধ পাইক্র গও ভাজাদের দি বিত এখাকেই প্রক্রত তার विभाग । इतं वर्गतेन। इत् । द विभाग राज দুশ পাত্ৰকৰণকৈ দোষ দিতে পাছে৷ দাৱ নাং কবিণ কোন ব্যাক্তি সন্মান্যক্তের বিচাহে প্র .इंड कर्मा इन ७ (के) बल खदल्यन शुद्धक यमिरातकार विश्वेष्ठ वर्षश्री शिक्षिण महा भाषांबर्धन (दाङ्याणं धन्मसार्भ ६ जक्त চিত্তে প্রচার অরিবেন কেছ্ আপ্রচ্চ, এরং, বেশে ক্রিটে পারেম মার্

ও কটক্রি আছে মাহার উত্তর সেই পরি-मार् पारमहत्त्व मिक्छे चाप्त्वीत इडेशाह्य। আনেকের এয়বিধ উত্তর মান প্রধানী **দর্শনে** धानाह अस्तारम् अथम् दः अस्ता एकान এলি এছিল । কিন্তু একটা উত্তর পাঠ ক-ভিয় খামার সকল ফোডে এককালে দুরী-রুণ হইয়াছে। উলিখিত উত্তরে সেখকের নাম ন $z\in \mathfrak{s}$ ক ৪৯ ঐ উত্তর লিপিয়া প্রচার করিয়াছেন ্ এই বর বয়সে রুদ্ধ ও সর্বত্ত এখান বিদ্ধা ধলিয়া বিখ্যাত চইয়াও উত্তর भुक्तक माला माला छेशभात तुनिक्छ, ७ क् ট জি. লৈণ্ড। প্রদর্শন করিয়াছেন। সু-ভয়াণ আমি 'সন্ধান্ত ক্রিমাছি যে এর্মান্য-স্ত্রবিচারে প্রানুজ্য হুট্যা বাদীর প্রতি উপদাস बाका 3 कड़े जिल जिस्तान अहा व स्मरण वि-**্জের লক্ষন ভাবিজে**র লক্ষন হইলে মী काटक (मभाशास क्षाहरक अल्याका क्रिया प्रवी-অধান বিজ্ঞ বলিয়া লাখ্যা করে সেই মহা मुख्य तुम्र है। भेग केशन के अंदानी ध्यदश ≑ন ব্রিংড্ম না া

কিম নিনিয়ে প্রণানীতে উত্তর প্রদান এটন না কেন আমি উত্তর দাতা মহাশয়-দিপের সকলের নিকটেই আপনাকে ১৩-পরোনান্তি উপক্রত স্থীকরে করিতেছি এবং 🖟 তাঁহাদের সকলেকেই মুস্তকতে, সহস্র সা-ধ্বংদ দিতেটি ! ভীহানে পরিভান স্থীকার করিলা উত্তর দানে প্রসূত না হইলো স্থান ইহাট লেভীয়মান হটত এতদেশীয় পণ্ডিত ও প্রধান মহাশরেরা প্রকাবিত নিম্র অপ্রায় व्यक्तिमाञ्चा कोश्रास्त्र केंद्रतमान बाहा थ-ऋष्य हैका जिल्लाक श्रामान करेग़ाइक (य अहे काश्चान अवस रहा (य अक्वाइवर्डे केटशकः ও অবজ্ঞা করিয়া নিশ্চিত্ত থাকা যাইতে ভাঁছারা অথাত ক্রিয়াউন্তর না দিয়া নিশ্চিত্ত থাকিলে আমি কচ কোভ গ্ৰীতাম বলিতে গারিনা ৈ ভাছারা আ-মার লিখিত প্রস্তাবদে অশান্তীয় ব্রলিয়া সপ্রমাণ কংবার নিমিত্ত যে কিছু প্রমাণ প্রয়োগ পাওয়া যাইতে পারে সবিশেষ প বিভাগ ও স্বিশেষ অনুসন্ধান করিয়া স্ব স্থ भुष्यक तम ममक छन्ना कतिहारहर । एर नाना वाजिएक नाना अवानोटक एक पूत्र

পারেন আগন্তি উত্থাপন করিয়াছেন ডখন বিধবাবিবাহের অশান্ত্রীয়তা পক্ষে বাহা কিছু বলা ঘাইতে পারে ভাষার এক প্রফার শেষ হইগাছে বলিতে হইবেক। এফানে সেই কলেকটা আপত্তির মানাংদা হইলেই কলিযুগে বিধবাবিবাহ শান্ত্রীয় কি
নাসে বিষয়ের সকল সংশয় নিরাকরণ হইতে পারিবেক।

প্রতিবাদী মহাশয়ের ছাছা উন্তর পুষ্টেকে বিজ্ঞার কথা লিখিয়াছেন ! কিন্তু লক্ষা কথাই প্রক্লুত বিষয়ের উপযোগিনী নক্ষা কথাই প্রক্লুত বিষয়ের উপযোগিনী নক্ষা কথাই প্রক্লুত বিষয়ের উপযোগিনী কথাশক্তি প্রভাগের প্রদানে প্রকৃত বিষয়ের উপযোগিনী বেখা হাই প্রদানে প্রক্লুত ক্ষানে এই প্রভাগের প্রদান বিয়ের বিজ্ঞান মন্ত্রি প্রিপ্রাম করিয়াছি ৷ পঠেকবণের নিকট বিনয়বাকের প্রাণান এই প্রায়ার যেন সন্ত্রাহ প্রক্লুত অধ্যত একবার আন্যাপান্ত পঠিকরেন ভাষ্য এইবলই প্রায়ার সকল ব্যুত্ত সকলে প্রমা সকল হইবেক ৷

### উপদংহার ভাগ

ছুডাগ্যক্রমে ধাহার। অলপ বয়নে বিশ্বা হয় ভাহার৷ যাবজ্জীবন যে অসহ যস্ত্রণ ভোগ করে এবং বিধবাবিবাছের প্রথা প্র-চলিত না থাকাতে ব্যভিচার দৌষের ও জ্র নহত্যা পাপের স্রোভ যে **উত্তরোত্তর** প্র वल इहे.। উঠিতেছে ইছা লোধ করি চুকু কর্ণ বিশিষ্ট ব্যক্তিমানেই স্বীকার করিবেন। অতএব হে পাঠক মহাশয়বর্গ আপনারা অমূতঃ কিবৎকাণের মিনিস্ত স্থির চিত্তে বি-বেচনা করিয়া বলুন যে এমত ছলে দেশা-চারের দাস হইয়া শাজের বিধিতে উপেক্ষা প্রকৃত্রি পূর্বক বিধবাবিবাহের প্রথা প্রচলি ত না করিয়া হতভাগা, বিধবাদিগকে যাব-<u>क्कोवन व्यमञ् रेतथेवा यञ्जशनत्म पञ्च</u> এবং ব্যক্তিচার দৌবের ও জ্রণহত্যা পাপের স্রোভ উন্তরোক্তর প্রবল হইতে দেওয়া উচি-ত অথবা দেশাচারের অনুগতক্লা হইয়া শাস্ত্রে-ब्र विधि अवनयन पृक्षक विश्वानिवारम्ब स्था অচলিত করিয়া হতভাগ্য বিধন্যদিপের স্থানছ

বৈধ্যায়ন্ত্ৰণ নিবাক্রণ এবং ব্যক্তিমার সো-ষের ও জান্ত্যা পাপের স্রোভ নিবারণকরা धहे डेक्स शत्कत मत्या कान् পক্ষ অবলয়ন করা শ্রের:ক'প স্থির চিত্তে বিবেচনা করিয়া আপনারাই তাহার মীমাংসা ক্ষুন্ আর আপনারা ইহাও বিবেচনঃ कत्रिया (मथुन (न ज्यामामित्तत (मत्नत जा-চার এক বারেই অপরিবর্জনীর নছে। ইহা কেইট প্রতিপন্ন করিতে পারিবেন না থে স-ফিকালাব্রি আমাদিগের দেশে আচার পা রিবর্ত্ত হয় নাই এক আচারই পূর্বাপর চ-লিয়া আসি.ডছে। অনুস্ফান দেখিলে আমাদিথের দেশের ভাচার পদে भाष अतिवा इंदेश आभिवाद । भूषेकादन অ সেলে চারিবর্ণের যেরূপ আতার ছিল এ ক্ষাকার আগোরের সঙ্গে ভুগনা করিরা দে-शिद्धा कात्र ठवरधंत्र देमानी छन लाक फि কে এক বিভিন্ন জাতি বলিয়া প্রতীতি জলো। বঙ্গতঃ ক্রমে ক্রমে আচারের এত পরিবয় **হট্য়াছে যে ভারতক্ষের হুদানান্তন লোক** ভারতব্যের পূর্বাতন লোকদিগের সন্তঃন পর্লশ্রা একপ এতীতি হওণা অসমুয়া অধিক ৰলিবার প্রয়েজন নাই। এক উ-भाइतः। धामभीन कतिरलाई पार्श्नातः बृचिएछ भातित्वम (य आमारमत त्नद्रशत भागाः । अन কত পরিবর্ত্ত হইয়া উঠিয়াছে। শুর্কালারে 🗄 শুদ্রকাতি ব্রাহ্মণের সহিত একাসনে উপ্ বেশন করিলে শুদ্রের অপরাধের সীমা 'বাকিত না একণে সেই শৃদ্ৰ উচ্চ আদনে উপবেশন করিয়া থাকেন ব্রাক্ষণেরা সেবা-পরায়ণ ভূতোঁর নাায় সেই শুদ্রাধিষ্ঠিত 🖰৯ আসনের নিমু ছেলে উপবেশন করেন।

আর ইংগঙ দৃত ইংতৈছে যে অভি
অপকালের মধ্যেও দেশাচারের অনেক
পরিবর্ত ইংরাছে। দেখুন রাজা রাজবঞ্জ
ভের সময় অবধি বৈদালাভি মজোপবীও
ধারণ ও পঞ্চদশ দিবস অসেটে এছণ ক
রিতে আরম্ভ করিয়াছেন। তাংগর পুরে
বৈদ্যলাতি একনাস অশৌচ গ্রহণ করিছেন
ও মজোপবীত ধারণ করিতেন না এবং
অদ্যাপি অনেক বৈদ্য পুর্ব আচার অবলমন করিয়া চলিরা প্রেকন। মাঁহাবা লুকন
আচার অবলম্বন করিয়া চলিতেছেন ওাংগদিগ্রেক অপনারা দেশাচারপরিকাগী সদাচারপরিভ্রন্ট বলিরা গ্রহ করেন না। দ
ভক্ত চল্লিকা গ্রহণ ক্রাব হর্মবার পরে

ট্ট লাইক্ষণান্ত্ৰ অংকগাছি স্কলা 可引作 可提供 করা আন প্রাছালে এই স্থানত প্রান্তির কাষ্ট্র রায়ত প্র চীন প্রস্তকনরে টেটিড বালাং। প্রচলিত নামা চচল্রিক। নাথে .च जक श्रामिक मन्द्राह हालू फ्राम्क क्रांका जब लग्रहत्त्व क क्षांत्रकः सबस्यान्त्रिकः अञ्चलिक कृत्यदेव तृष्टिः । शक ष्ट्राह्म अपने से हान राजिया अक्षेत्र के विश्व हुए । उन्हें क्साइर राज्य बद्धा । संस्थाप्तिकार्व द्रात्वम व्यवापि अनुगढ राष्ट्रह रच बाहे । श्रीकृष्ट पर्यं र द्युवित हि দাভূষণ ভট্টাচাগ্য এই গুল রচনা কবিয়া ভূষেবের নাম দিয়া প্রভান কবিকা থিমাছে এ। খনাথে প্রভার নাকার कुट्यमर्थाटम व्यक्तिका शांतिक्य क्रिकात । खादशका अहे त्वाच का ता चनारम श्रीकात कहित्व असका श्रीकुक, जुक গুড় ব'লিলা লাগত আনের্থীয় কউ চলা সুভুরুণে এচেকটো নুচন সংখ্য সংক্ষার ক'রব'র নিমিক্স যে প্রহাস পাই क्षांकिक्ष्य र राज्यक्रम बहुर था। अवक्रिक्षकात स्था acy fafets wire:

মন্ত্র'নিবালাবিব্যাস্থ্য বিসাদমার্কের্ সুক্টাদশহাপ মধ্য জ্যাজ্যান্ত্রালয় : কল্লাসনহ্দার্কিন্ত্রালয় বিশেষ্ট্রাম্থ মধ্য মহাত্র বিত্তাবিদ্যালয়ে মুধ্

আনাম মনুপ্রভৃতির বচন প্রমাণে আচ্তিচলিকাতে আ ফালেশ বিবাদপ্রেবট নিজপ্র কবিহাভি কিলুকলিযু বোক দলকবিধি বিবেচনা করাহয় নাট এট গ্রুবে ে সমুৰকা কবিংশয় নিক্পিত হউল।

बत् नर्वरनदा निर्देश चारका

ইনি জীকুনেরকৃত। সরকচন্দ্রি: সমাধা। ব্রুবেরর, ১৬ স্থান-স্লিকা সমাধা চলচা।

এই রুপে গ্রন্থের আদান্ত দেখিলে দওকচন্দ্রিকা কুবের্র ডি ড বলির। সুসরাৎ প্রতীতি করে। কিন্তবিদ্যাঞ্জন ভট্টা-চার্য্য গ্রন্থনাপি করে। কৌশলা করিয়া এক মোডেয়ধে। আপনা নাম কংগ্রুত করিয়া যিতাছেন। যথা

র ইয়াষা চন্দ্রিকা লয়পদ্ধতের্দ্ধর্শিকা লাসু : ম লোরমা সনিবেইশর্মিনাং ধর্মাতার বিঃ a এই মনোহারিণী চন্দ্রিকা স্ববস্থের নশ্রিকী সু

শ এই আচার শান্তবিক্ষন কেবল শান্তান-ভিন্ত শুলুও ব্রাক্তবের্ট এই আচার অবলয়ন করিত্তা-ছেন এমত নতে যে দকল পুলু ১ ইন্সেন শীন্তাল সনিকা বিব্যাত উচ্চারাও অঞ্চলিতে ও অবিকৃতশ্বারে এই আচ্চারালুলারে চলিতা থাকেন।

क्रव कविशास्त्र

সহাসনমভিপ্রেপ সূত্রৎকৃষ্টস্যাপকৃষ্টকঃ৷ কট্যাং

কুচাংজানিৰ্বাল্যঃ ক্ষিত্ৰ-খোল্যাবকৰ্ত্ত্ৰে ॥ ৮ । ২৮১ খনি শুন্ধু ব্ৰহ্মকের গহিত এক আলাকে উপবেশন করে আছা কইলে ক্ষাক্ত কটিছে [কথ্য কৌহণালাকামানঃ] তিরু ক্ষাক্তিয়া ক্ষো কেন্দ্ৰ নিৰ্বাহ্মক ক্ষাক্ত কিন্তা ক্ষো কৰা কটি ছেবন কৰিবলৈ আৰবা কটি ছেবন কৰিবলৈ বিবেক।

व्यविध आक्षामि किन वर्णन छेशनवन्यांगा কাল নথে। ও শক্তের বিবাহবোগ। কাল ম-(4) धारुम करिताहे प्रत्युक शृक्ष निष्क इंटेर्ड-इ किय जाहाद श्राप्त मकल पर्वत्र श्रीह «(श) धृष्क कृतिशा । **जाक**त्व ব্র সংব্র দ্ধার না ক্রিলে দক্তক পুত্র সিদ্ধাইইভ না ৷ এই সমস্ত দেখাচার সংস্কেষ্ণক ব্লিয়া প্রঝাপর চলিয়। আদিতেছিল পরে জন্য नान परना मात्वा कमा नाना छेडानिक ইংগাতে ভাষ্ট্রের পরিবত্তে শৃত্র আচার অচলৈত হউতে সায়েত স্ইয়াছে ৷ এই সকল খালে নূতন শাস্ত্র অথবা শাস্ত্রের गुण्य १९४० (पश्चित्र) शुक्र आहिन ह चाही-ংরর পরিবারে ধে লুখন মুখন আগোর প্র-দলিত ছইয়াছে অপিনা : লাচ্ত্ৰ সন্মতি श्रमान कविशासम्ब एतः इक्रमान विद्वा-দিলের দ্রাখাল, কাম প্রকারত বিষয়ে সং আতি প্রভাবের এত প্রতিরতা ও এতি কুপ্রতা अमर्गन कतिरहरूका त्यस । विरन्धना कः রিয়া দেখিলে একানিদ বিষয় প্রকাঞ্জ করেক বিষয় অংপক্ষা সহত্র অংশে প্রকৃত-ও । দেখুল গণি বৈদ্যালাতি মাজনাপ্ৰণিক ধারণ ও পঞ্জন দিবস আনৌচ এচন হা করিছেন এবং প্চেপ্থসরের অধিক মুয়ক্ষ বালক গুলীত চঠলে দত্তক পাল সিক্তিনা হ-हेक खाँडा इकेंग्स (बाक्यमार्टक देशन का-ংশ কোন অনিই হটিব্যু স্থাবন: ছিল मा। किछ अस्तिक दिवस आहितक मा থাকাতে গেশত শ্চ চের্ডর অনিষ্ট ছ টিতেছে ভাষা আপ্নর। অহরহঃ প্রভাক ক্রিতেছেল। আপ্রাধা প্রিপুর্বে কেবল শাস্ত্র দেখিয়াই প্রস্তাহালিত আচারের প্র-বিবর্ত্তে অবস্থিত ভুত্তন আগারে সম্মতি প্র-

अक्टब्राम महिन्दा अट-, दक्क महीह एत्रीर सक्तनः

এই রোদের পুরাদ্ধের আদি অজর ও আব ক্রেল লাইনা এবি নংগ্রাং চইরেছে। এই রূপে গ্রুতিক; দুই মান্টার্যাই লাভ করিয়াছেন প্রথম গ্রুতি প্রচলিত করমা ভিতীয় আপেনি গ্রুতিকা বলিম প্রসিচ হর্তা। কুরে-রের নাম লিলা প্রচার করাতে দরকচন্দ্রিল প্রচিন গ্রুত ইপিয়া অনায়ারে প্রচলিত ঘইনা লোভ আর শেষ রো-কে যে কৌশল করিয়া গিয়াছেন ভারাতে ভিনি যে গ্রন্থ কে যে কৌশল করিয়া গিয়াছেন ভারাতে ভিনি যে গ্রন্থ কেটা চারাও অপ্রকাশ রহিদ্বা।

দান করিয়াছেন একণে ধর্মন শাস্ত্র পাই-তেছেন এবং সেই শান্ত অনুসারে চলিলে বিধবাদিগের পরিত্রাণ ও 'শভ শত ঘোরতর অনিষ্ট নিবারণের পণ চয় স্পষ্ট বুঝিতে-ছেন তথ্ন আর প্রস্তাবিত বিষ্যে অসম্মতি প্রদর্শন করা আপনাদিগের কোন মতেই উচিত নচে৷ যত ভুৱার সম্ভতি প্রদান ক-রেন তত্ত মঞ্লা বল্তঃ দেশাচারের দোহাই দিয়া আর দাপ্রাদিশের এ বিষয়ে অসমত গাক৷ খুনুনিত। কিন্তু ৫খনও আমার আশস্তা ইইতেছে বে-আপনাদিগের মধ্যে অনেৰে দেশাচারশক কণ্ডুচ্বে প্র-বৈত ছইলে প্ৰসংকিত বিষয় প্ৰচলিত ছওয়া ইচিত কি বা এবিদ্দের অক্তানুস্কানে প্র-রস্ত হওরাও পাতিত্যক্ষক জ্ঞান ফরিবেন ्व, अस्तरक यस एस मक्षक हो गांद रक বল দেশাগারবিক্তম্ব বলিয়া প্রস্কাবিত বি্ধর প্রেরিভ ছওয়া উচিত ও কথা নাব্দ করিয়া संरथ्य विलाख शांतिरवस्ता । मांग कि थाः करणब विसन्न क्याहान् अ क्याबर आहि। जीर भागनकहा समाधाइके व स्टब्स्ट श-हम खेळा। (मनाभाटबंद मानसङ आयान माः जन दमभाराहदूत छेश्रामक हे आधान छेश्रामन ।

ধনা রে দেশগোর তেরে কি অনিকটে-নাথ মহিলা! ভুই তোর খানুগদ ৬৩ দি-গাক ছাগেল লাখত গুছালে বন্ধ মাধিয়া কি ্ক'ৰিপতা ক্রিতেছিম্৷ ভুই ক্রমে ক্রমে আপন অবিপত্য বিস্থার করিয়া শাস্তের মস্তকে পদাপণ করিয়াছিস্ধর্মের মর্মা ভেদ করিবাছিদ্ হিতাহিতবোধের গতিরোধ ক-तिहाहिन भाग वनाय विहादत शर्थ इस्क বরিয়াছিস। ভোর প্রভাবে শাস্ত্রও অশাস্ত্র বলিরা গণ্য হইতেছে অশা**ন্তও শান্ত বলি**য়া माना ११८७ हर धर्मा ३ व्यक्त विलास श्राम ছে স্থাৰ্থ কৰিছ ভ যথেক। চারী ছরাচারে-রাও ভোর **অনুগত** থাকিয়া কেবল লৌকি: क्तका करण मक्क भाग विलया भगनीय स आमत्तीय हहेरहरह आव मायम्भामाना अक्रब माधु भूक्रावडाउ छात अनुगठ ना इ-हेता (क्वन लोकिकतकार अयुष्ट अवाग उ जनाभन्न अनमन कतिरवाई गर्काव नास्टिएन्ड

শেব অধার্মিকের শেব ও সর্বাদোবে দোবীর শেব বলিয়া গলীয় ও নিক্ষানীয় হইতেছেন ৷ তোর অধিকারে ঘাহার! সতত জাতিঅংশ-কর ও ধর্মালোপকর কর্ম্মের অনুষ্ঠানে রত হইয়া কালাতিপাত করে কিন্তু লৌকিক রক্ষায় যত্ত্বশীল হয় তাহাদের সহিত আহার বাবহার ও আদান প্রহান কি করিলে ধল্ম হয় ন৷ কিন্তু যাদ কেব সভত সংকর্মান অনুষ্ঠানে রত হইয়াও কবল লৌকিক রক্ষায় তাদুল যত্ত্ববান্না হয় তাহার সহিত আহার বাবহার ও আদান প্রদানাদিব কথা দুয়ে থাকুক সন্তামন মাত করিলেও সকল ধর্মা লোগ হইয়া যার ৷

কং ধর্ম তেমোর ধর্ম রুঝা ভার ৷ জি সে তোমার রক্ষা হয় আর কিসে ভোনার লোপ হয় তা ভূমিই জান ৷

হাশাস্ত্র তোমার কি তুর্বস্থা ঘটিয়া-**ছে। ভূমিয়ে স**কল কর্মকে পর্মালোধকর ও জাজিলংশকর বালরা ভূয়োভুয় নিয়ন্ত্র করিভেছ যাহারা দেই সকল কলের অনু ধানে ব্রুত ইইয়া কালাভিপাত করিং চাভ **ভাহারাও শর্কটো সাধ্ও ধর্ম**গ্রেশ্য ব্লিন चामत्रवीय क्टेंट्टर्ड चात्र जुमि त्व क्यारक विश्कि अर्थ दलिया है गढ़मन मिट छ। ध्या ষ্ঠান দুরে গাকুক ভাষার কথা উপাপন করি। **লেই এককালে নান্তিকের শে**ষ অধা**ন্ম**-**क्त्र भिष् ७ अर्था**छीत्वत् (मृथ ३५ ७ ५) **ঁভেছে ৷ এই পুণাভূমি ভাবতবৰ্ষ যে বহু**াৰধ ছর্নিবার পাপ প্রবাহে উচ্ছলিত হইতে ভাহার মূল ভারেষ্টণে প্রবুজ হইলে তোমনে প্রতি অনাদর ও লৌকিক রক্ষায় এক। খু যত্ন বাতীত আর কিছুই প্রতীত হয় না ৷

হা ভারতবর্ষ তুমি কি হতভাগ্য ৷ তুমি
তোমার পূর্বতন সন্তানগণের জাগাংগুলে
পুণাজুমি বলিয়া সর্বান পরিচিত হইযাহিলো কিন্তু তোমার ইদানীন্দ্রন সন্তানেরা
ব্যেজানুরণ আচার অবলারন বরিয়া তোমাকে বেরপ পুণাভূমি করিয়া তুলিয়াছেন তা
হা ভাবিয়া দেখিলেক্সর্ব দারীরের শোণিত
ভক্ষ হইয়া যায়! কত কালেক্সতোমার ছা
রবস্থা বিমোচন হইবেক তোমার বর্ত্তমান
অবস্থা দেখিয়া ভাবিয়া দ্বির করা যায় মা

হা ভারতব্যী য় **মানব**গণ **আ**র কত কাল তোমর। মোহনিতায় অভিড্ত হইয়া প্র-মাদশয্যায় শয়ন করিয়া থাকিবে ৷ একবার জ্ঞানচকু উলীলন করিয়া দেখ তোমাদের পুণান্ডমি ভারতবর্ষ বাভিচার লোষের ও ক্রণা সাপের স্রোতে উচ্চলিত হইয়া যা-ইতেহে। আৰু কেন গণেতী চইয়াছে অ-তঃপর নিবিউদিক্তে শাল্পেণ সথার্থ ভাইপনা ও स्थार्थ कर्म अनुभावतम् क्राम्मानिवन् कर् এবং ভদন্যায়ী অনুষ্ঠানে পেরুর হও ভাছ হটালেটা আন্দেশের কলক নিব্যাস্থ করিছে পারিবে ৷ কিছু জুলার্যান্তমেল কোমার্যাট রুস্থিতে কুসংস্থানের শেষণা গলীয়ত হটান আছি কেন্ট্ৰাকের গ্ৰেক্ত হলে এইমা আনি দুরু মন্ত্রণে করিব ব্যক্তিক রঞ্জ রহে। ধেরণ সাক্ষিত্র সহঁলা আছে তালান্ত একণ ক্ষেক্সাৰা করিছে প্রোয়ায় নাথে ডোম্বা स्थेष्ट क्रियर प्राप्त विभक्तान अवसार विजय श्र মুখান্য পার্ভাটের ও সম্মা প্র লোটিকে বৃদ্ধ বেকের উচ্চাপন। কবিয়া স্থাপ কলেখার গ্রিক কটতে পার্বে । অভ্যান ভারে कि.स.स. वृश्चित्र के अध्यक्तिक मकतः একপ কলুবিভ ভটতা নিৰাছে ও অভিভ্ৰ इन्हेंता भारक एवं करानामा विवदा **पिरंगत छ** রবস্থা দশানে ১৯ মান্দের চির্ভয় নীর্ম श्रमाप्त क्रांकुल जानक मन्त्रात बन्दा कार्किन শবং বর্ল জনার । লাবের ও জার্ম করা পারেশর গ্ৰন প্ৰেশত দেশ অন্তলিত ৰাইছে দে णिया**ः मरन्यु**धतः छेन्द्र ३५तः व्यमञ्जविर । তেমের প্রান্ত্রা করা এড়ডিকে মদর বৈৰব্য যন্ত্ৰান্ত্ৰ, পশ্ব ক্রিচে সম্মন্ত আড় ভাষায়া ছুনিবার্রিপুরশীভুত হন্যা বাভি চার 'বেশবে দুখিত হউলে ভালার পোলকম করিতে সম্মত অনু ধর্মানোপালার জনার ঞ্জনি দিয়া ফেবল লোকলক ভেমে ভাষাদের **জ্ঞান্ড**্যার সহায়ত: করিয়া স্বরণ নপরিবারে পাপপক্ষেকলঙ্কিত হুইছে সম্মাত আছু কি ন্তু কি আশ্যান শালোৱা বিধি জাবলয়নপূৰ্বক ভাছাদের পুনরায় বিবাহ দিয়া ভাছাদিগকে ছুলেষ্ট্রখনা যন্ত্রণ হইতে পরিলাণ ক दिएक जवर व्यापनामिशएक अन्तर्म विश्वम् হইতে মুক্ত করিতে সম্মত্নন্। তোমরা

মনে কর পতিবিয়োগ চললেই জীকাতির 🗍 নারীর পাবানময় হইয়া বার ছুংখ আর ছুংখ त्नाथ क्य ना यञ्चना यञ्चना दिनाथ क्य ना छ-कंत्र तिभुवतं अककारण निर्माल बबेश बाहा। কিছ ভোমাদের এই ফিছাৰ বে নিভান্ড মা-खिन्नतक भाष गाएम खाष्ट्राय खेलाहत्व आय इ-हेर्डह । ज्यारिया (क्षे उने खनरवानरकारक দক্ষাণভারের কি বিধানৰ ফলে ডেলা করি-তে ।। এন কি প্রিছাপের বিষয়। मर्मत भू मुस्काडि। जा नाके धर्म नाहे লাত অনাত বিচার নত ভিতাজিক ৰোধ माण मन रित्राज्या मारे दक्राल धारिककत কাই এগান কর্মি 🖂 ন ধকা আরে সেন সে দেশে হ'ল্ডালা সাংগ্রাক্ত জিলা প্রহণ না করে (

হুণু কাৰ্লাগেৰ ভোমর: কি পাবেশভাব-তৰ্যে আগিখা জন্ম এইণ কর বলিতে পা-রি না ৷

### विकास दार्खा 可持有事件

>१--- विहित्तादि क क्षत्रवांकि (का:-জিৰিখ প্তিচ কওঁক সম্পতি চুইট লুৱন এছ ও ছুইটি ধমধেত আবিষ্ঠ হুইছা ক্ষেত্র উচ*্চ সং*ধাপেরিস নগরত*ালা*। 'ত্তেরিয়া ডাএন সংক্রে এবং ব্রুলিন নগর-छ हिहेत राजको शहरत ५१५७ शहरूक र मान त्य अकति भाषकानु शकाग करत्व अदश भू े हिंखद अध्यक्त अस कब शहरूव कर्नुक खे শাদের ৬৮ ীয়ার আরে জনটো সমকেন্দ্র আন বিজ্ঞান গাছে ৷ প্রস্থেতিম নগরস্থ মান্মন্দির প্রেক গড়িত্বর চেক্রনেক সা-**তেব গভ ২৫** টেব্র লে-এই**টি**কে বিকাশ করিয়াছেন, ভাষার নাম বনী এই রাখা क्केब्राट्स १८४९ ५२५२ भटकत २ दे**ब**म्साटक লাক্তর ল্থর যে গ্রাহ**টি**কে প্রকাশ করি-রাছেন, ভাছার নমৈ লিউকোণিয়া ৷

American Lurnal of Science and Arts, 1857. **Vay and July** াদার্থবিদ্যা

১৷— নেডক নামক নগরে সম্প্রি এক জনাও উল্কালিও প্রাপ্ত হওরাগিয়াছে। উ-श्रत পরিমাণ श्रीद हात्रिमन भौतिम त्मत अवर উলা উৎকৃতি লৌহমর। উলাতে ভার এবং পাত প্রস্তুত হইতে গারে 🕴 উক্ত লৌছের মধ্যে শতকরা ছয়ভাগ নিকেল নামক ধাড় আছে ৷

American Journal of Science and Arts, 1855, May. ২1--- কোন কোন পদার্থবিদ্যাবিৎ প-

ণ্ডিত পরীকা ভারা নিরূপণ করিয়াছেন, বে বায়ুতেও চুখকের গুণ বিদামান আন-ছে। চুম্নক যে প্রকার লৌহাদি ধাতুকে অঃকর্যণ করিতে পারে, বায়ুর অন্তর্জ্ত খ্রিজন নামক বাজ্পেরও সেই প্রকার তাক্ষণ করিবার শক্তি আছে।

American Journal of Science and Arts, 1855, July চিকিৎসাবিদ্যা

১৷-- বায়ুতে ওজন নামক এক প্রকার পদার্থ বিদাদান আছে। উল্কবরণ্, ডি, বেকেল এবং সাইমোনিন নামক পণ্ডি**ভের**া के भनादर्शन विषया करनक भन्नीका कविशा দেখিয়াচেন। তাঁলারা কছেন, যে **দেশে** य अभता वाशू व्यात डेक शमार्थ म्ना इत. তৎকালে সেই দেশে ওলাউঠা রোগের উ-২পজি হইয়া থাকে এবং য**থন বায়ুতে উক্ত** গনার্থের পরিমাণ অধিক থাকে, তথ্য এক প্রকার উদরের বেদনা রোগের প্রাছ্ত-र्शव इत्र १

American Journal of Science and Arts, 1855, July. ভূতজুবিদ্যা

১৷-- ইটালিরাজোর অন্তঃপাতী মে:-দেনা নামক নগরে ভূমি খনন করিতে ক-রিতে কএকটি আশ্রয়া,বিষয় প্রকাশ পা-ইয়াছে ৷ উক্ত নগরের চতুর্দিকে তুইকো-শের মধ্যে কোন স্থল খনন করিলে তা-হার ৪০।৪২ হস্ত ভূমির নিমেু চার্যড়ির স্তর প্রাপ্ত হওয়া যায়, অনম্বর তিন চারি হাত দীর্ঘ বেধনিকা অজ্র দারা সেই স্তর বিদ্ধ করিয়া ঐ অন্ত্র উত্তোলন করিবামাত্রই উক্ত ছিদ্র হইতে প্রকাও উৎসের ন্যার আছি-স্ল জলধারা মৃত্তিকা ডেচ করিয়া **উলি**ভ হয় এবং তদ্যারা সেই থাত প্রবিলয়েই শ-तिशूर्ग इहे<u>या</u> यात्र। **च्छेल मूनिर्मन छ०** म कल थार श्रीप कात्वत समाव्यक्ति एक रह मा। बारमभा नगर्ने क लाहिक ब-करन छेक अवात अनानी जनम कुनारि द-

नम क्रिया अविष्कृति वित्रमिन छे इस्के अन आश्व इटेट्डाइ। উक्त नगरतत अक शाम না। হস্ত ভূমির নিমে এক পুরাতন নগতের **डिइ अकाशिक बहेशारह, शंबन कार्विता म**-बिकात निष्म द्वारन छात्म के शृक्षण्य न शरत्त्र अप्रिक्तिका, शाका शर्भ १ है जैक जि-শিতি অন্যান্য নানা প্রকার গুলাদির ভগাংশ সকল প্রাপ্ত হটয়াছে ৷ গে সং েঐ নগর আনিদ্ধ ভ হইয়াছে। সেই স্তরের নিমুভা লে পুনর্বাদ আর একটি মান্তিকার উর দৃ-के इकेनारह बना अक कक शास अकान হন্ত ভূমির নীচে আবেটি কলেব রুজ স কল প্রাপ্ত হওনা বিনাছে! উহরে লবে, विष्णिय आल्ड्यां এहे त्य धामाणि (गार्थ ३० কল বুড়োফল ও পত ব্রহমন বলিয়ালে: के त्यारमना नगरवज्ञ (नाम दिनान छ। (न ) है। হস্ত ভূমির নীলে চাপড়ির স্থর বিদাসান আছে এবং পুনর্বার ভাগার নিম্পদেশ রুম-লতা তুণ কুল্বাদি নানা লাভীয় উদ্দিপ দার্থ দৃষ্ট কটায়াছে।। ভূতজুবিহ পণ্ডিটোর ু এই সমস্ত অধ্যুত বিষয় সন্দৰ্শন করিয়া এন काटल विद्याञ्चि व्हेशार्म ।

Literary Cazette Lote Oct. into

২।-- সম্পতি বিসুবিষ্দ নানক খা-থের গিরি হইতে ভরানক অগ্নাহপাত উ পদ্ধিত হইয়া ভটিকটকতী অনেকানেক ' খাস, নগর ও জীব জন্তু নত্ত করিয়াছে। ঐ ভয়ানক অগ্নাৎপাত দ্বারা নেপলস্রাফা-স্তর্মক্তর মেলকি নামক নগর এক কালে ধংস হইয়া গিয়াছে এবং উহার ভারা ম: সাড়ি সোমা নামক স্থানেরও কিরদংশ ন-ষ্ট হইয়াছে। উক্ত ঘটনার বিসুবিয়স পর্বত হইতে উপযু ্রপরি কএক দিবস গ-স্ক্রালি মানা জাতীয় ধাড়া প্রস্রেবণ সকল **अभार भारत**त्र महीत मात्र अवन ४५८% প্রবাহিত হইয়া কালাম্ভক সপ্রথ সংম্থাত नमस अमोर्थरक आनक्दत वदः छवः इरोत्य **भग्रश मिला थे ७ उँ० किश्व ह**रेता खत्रकृत বাশার উৎপন্ন হয়। উহাতে করিরাপ-ব্রত হইতে এত প্রভুত ধুম ধারা আকাশ পথে উন্ধিত হয়, যে ভজারামনুষ্মাতে-রই দুটিপর আছুত্র হুইয়াছিল, পুর্ণিমা

নিশীতেও কেই পর্যতের নিকট ইইতে চন্দ্রালোক সম্বর্গন করিতে গায় নাই ৷ প-কাডোংজিপ্ত থাতু সমূহ স্থানে স্থানে রা-শীক্ষত ইইয়া ৬০০।২০০ ইক্ত উচ্চ ইইয়াং

Athonium, 19th May, 1855

ণা-- বিজ্ঞানবিৎ ভদ্ধানুসন্ধার্নী পশ্চি-ভ দিবের কান্যালনা পরিভাষ দ্বার একরে কত স্বারে কত প্রকার বিষয়ত প্রকাশ পান উত্তেরে মদলতি ভুককুবিৎপণ্ডিক ডি. পি, প্রেক লাছের আলিরিকা দেবেশা দবের कर्णात्रम् । ए १८४५ - विकट्टिम हो किडिया প্রতি ক্রকর্তি অর্ড দিল; ক্রান্তা खान बालनका अस्ता। वेशक्थाङ বন মক্ষা প্রতি, এন্ডাম্ছ জ্বালা স্ট্রেড টিন িতে জন্তা ভলিকটার নান্ড স্থান প্রান वित्र वरिक्षा वाशिसादके। আমিরিকার লোচার ঐ হক্ষা জাত্রবংকে ছারের প্রস্তে वंध बारान केरलय करा। খন প্রাথিকিক মহাস্থারের ভাগেও ঐ জ কার শিলতেত্ব ভাগিতে দেখা নায়, ইহা-তে একণ কেন্দ্র অনুসান করেন, যে হয় সাং গৰের বিমে জ মান্ত সাজুর প্ৰিবিদ্যা बाद आहे ने ने व व व का इसे हरें हैं পুত পুত্ৰ নদীয় ১৯ ছে ভাষিয়া ক্ৰমে সং বালে অংশিয়া উপ্নীত হয়।

American Joors of of Science and Arts, May, 1855.

 ভূতপত্র ভক্ষণ করিয়া খাকে, একণে আমিরিকা দেশীয় জার তিন প্রকার ভূতন
তস্তুকীট প্রকাশ পাইরাছে, উহারা
অক্রোট বৃক্ষের গতে উইলো নামক বৃক্ষের পত্র এবং দেবদক্তে ও বদরী প্রভৃতি
নানা প্রকার বৃক্ষের গতে ভক্ষণ করিয়া জ্ঞীবিত থাকিতে গারে।

American Journal of Science and Acts, May, 1855. থা - তাকাণ্ডকতা জগদীম্ব কত স্থানে ্য কত অংকরে জীবের স্থী করিয়া রা-থিষাটেন ভাষা কে নিদেল করিতে পা-·ते : अक किन अक शांकि रसुख डीट्ड নমণ কৰিতে কৰিছে আক্ষা হক অন্ প্রত্ত প্রাপ্ত ই ইয়া তাতাকে ভুলভি রুজু ख्डारम मह। इस् श्रुव्हक ग्रहरू जातवन कतिल । **प्रमाध्य ८**१३ ७ ७८३४ अञ्च प्रत्यक्ष प्रमाध्य মজিকাদি মলিন পদার্থ পরিস্কার ববিয়া এক পাত্র জলেতে উহাকে নিকেপ করিয়া একটি দ্বপের আলে,কজারা উল্লেখনা কি গ্রাক্ত করি**তে আ**ওন্ত করিল। উক্ত भीटशत चाटलाक काता ता वाकि मिथिया, যে ক্রে সেই প্রথের পঞ্জরি ভ্রু চইয়া ক্ষুদ্র স্টাতে লাগিল একং কাহা চলতে গু-कुछ । अपने नामानित की है । छेटल स हेबा (अहे शाजक करन जो म कहिएक या-বস্তু করিলা ভাতত্র জগদীশ্বরের জীব मसित विशा आत्वाहमा कविद्या भवाक इत्रीक इस्र সহস্য কে মনে করিতে পা-নে ব বিভিত্ত ক'টে পুঞ্জ অপুৰ্বা উক্তল রত্রকণ ধারণ করিষা সমুদ্র ভটে বিরাক্ষ কবিবে

> Interacy Carette, 13th Occ., 1965 [MCS][47]]

১০- শানস রাজ্যের অন্তর্গাই কন্দার নগত নিবাসী টমস নামক একজন মারে নগত নিবাসী টমস নামক একজন সাহেব এক আশ্চর্যা গণিতাক্ষের বস্ত্র প্রস্তুত করিয়াছেন। উক্ত বস্তু ছার্যা গ্রুণ পূরণ প্রভুক্তি নানা প্রকার অঙ্ক সম্পাধ হইতে পারে। ঐ আশ্চনা গল্পের অসাধারণ নৈ-পুলা হেতু টমস সাহেব ইউরোপের নামা কেনীয় শাঙ্ভি মঞ্জীর নিকট হইতে প্র-চুর প্রতিষ্ঠা লাভ ক্রিয়াহেন। তাহার উক্ত যন্ত্র পেরিসের প্রাসন্ধ সভার সমুপ্র বিভ হইবে।

American Journal of Science and Arts, May, 1855.

২I— সম্পতি আমিরিকাখাণ্ডের অ-<sup>,</sup> দুঃপাতী নিউওরলিয়ন্স নামক স্থানে বেল্ন যন্ত্ৰ সম্বাট্য এক অন্ত ব্যাপার হইয়া গি-য়তে। উক্ত বেলুন পাচ কন প্রধান আরোহী ও অপরাপর কএক জন পরিচা রক লোককে এছণ পূর্মক গত ১৮ বৈশার্থ সায়ংকালে আকাশ পথে উড্ডীয়মান হ-ইরা ছয় ঘন্টার মধ্যে ১৫৫ ক্রোশ পথ গ মন করে। অনন্তর ফোর্টগিবন্স নামক कारम आहार्क्ड मिटशत महश्रा काम काम ব্যক্তিকে অন্তর্গ করাইয়াপুনকার অন্য দিকে থাতাকরে। নিউপর্লিয়ন্<mark>স নামক</mark> প্রকাশ্য পরে বাক্তকরে, যে এপ্যান্ত যে एक विकि चढवात तिलूब गक्क छे ५ छोन क-রিয়াছেন এবাবকার ভূষা কেহট থকন উ-জে বিবরে রুভক্ষে। হইতে পারেন নাই।

Literary Gazette, 13th Oct., 1855. ७१-- कारछन फिननी नारहय ७व প্রকার আশুর্য্য মুদ্ধের অপ্র গ্রস্তুত করিয়া: হেন। উক্ত সংখেত এমনি এক প্রকার গোল। নির্মাণ করিয়াছেন, যে ভাছ। নিকেপ কবিবার জনা অগ্নিক অপেক্ষাথাকে না এবং चाराइ लका ७ कथन वार्थ इस ना, कि कि-বারুদ ও এক প্রকার দান্ধ দ্রব প্র দার্থ হইলেট উক্ত লোলা **যারা বছ সং**-থাক সক্র করা যাইতে পারে। খাহেব রসায়ন বিদাা ঘটিত আবার এক প্রে-করে দ্রবা প্রস্তুত করিয়াছেন। বাক্ত করেন যে উহার ছারা তিনি কিয়ক্ষর হুইছে সক্র পক্ষীর সেনা দিগকে কিয়<u>ি</u>ৎ কাল পৰ্যান্ত অন্ধ করিয়া রাখিতে পারেন ! किस दरान कान विष्मेष कातरगत कना ভাঁচার উক্ত বিষয় এপর্যান্ত পরীক্ষা করি-यः (मर्था इत नाई ।

Literary Gazette, 13th Oct , 1855.

প্রক্রেএই তজ্ঞবোধিনী পরিকা, কলিকাকা নগরের গোড়াসাঁকোছিত কন্ত্রাকোনিনী সন্তার কার্যালয় হ'ই-তে প্রতিমানে প্রকাশিত হয়।—ইহার মুল্য এক টাকা। ৮ অগ্রহারণ অফ্রেহার সমূহ ১৯১২। জার্মারাকা উঠিইক



ভটোৰ নিডা॰ **ভানমন্ত**ে শিত্ৰ প্ৰজন্ত নিত্ৰযুগ্নেল্যন্ত্ৰিলিয়াণ সৰ্থান্যপিস্ক্ৰিপকুস্কা<u>ল্</u>যাহাত্ত বিং স্কৃশিক্ষিত্ৰ পূৰ্ণপূৰ্ণবিভি ॥

अभिन প্রতিশ্বনা প্রিনকার্যালাধনক ওদুপানন্ত্রের।

# ঈশ্বপ্রীতিই প্রকৃত সৃখ।

সুপের আশা পূর্ণ করিবার জন্য প্রথিবীত গাব ছীয় লোকে বাস্ত বছিলাছে এবং
সুথ নিবি প্রাপ্ত ছইবার অভিলাহেই লোকে নানা বিষরে মগ্ন ছইছেছে ৷ সুপ তৃফা শান্তির উদ্দেশেই ইক্রিলাসক্ত পুরুষ
নানা অভিলবিত উপভোগ ভার: ইন্দিন
সেবা করিতে নিযুক্ত রহিয়ছে এবং সুগের সহিত সংযুক্ত থাকিবার জনা বিদাগৌ বাক্তি আহার নিজ্ঞা প্রিভাগি পূর্বায়
অহর্নিশ গ্রন্থ অধারনে রক্ত রহিয়েছে ৷
সুপ্র প্রাপ্ত হইবার আশাতেই নিস্ত সন্তান
কাড়াগারে গমন করিতে নিরন্তর উদাত হয় এবং প্রাপ্ত করক্ত যুবা পুরুষও ধনোপার্জন করিতে প্রকৃত্ত থাকে।

দে সুথ পাগরে সন্তরণ করিবার অভিনোযেই শান্তির সানুরাগী নিরীহ ব্যক্তিরা নিরন্তর নিভূত স্থানে কাল হরণ দ্বরিতে
ইচ্ছা করেন এবং সানন্দের সহিত নিন
যাপন করিবার সানসেই লোকানুরাগী সভা
ব্যক্তি সভত জন সমাজে গভারাত করিয়া
থাকেন ৷ অনবরত সুথ লাভ করিবার
প্রত্যাশাতেই জনগকারী ব্যক্তিরা নানা
দেশ পর্যাটন পুর্বাক নিভা নিভা নৃতন
শোভা সন্দর্শন করিতে প্রবৃত্ত হন এবং সুথের কৃষ্টিত পৃত্তিক জীবন বাপন করিবার

ইজাতেই গৃহস্থ বাজি ক্সাপুত্র পরিবার লইয়া গৃহাল্সমে অবস্থিত পাকেন ৷ কি যাত্রা নহোৎসব রাগ রক্স, কি যাগ বজ্জানি ক্রিয়া কাণ্ড. কি কাবা কৌডুল হাগা। লাগ, যিনি যাহা কিছু অনুষ্ঠান কর্মন, সকল্ট গৈই এক সুগ উদ্বেশতেই সন্পান্ন হইয়া থাকে।

कियु जराजीमत मनुसारक स मर्स्कार-क्रुचे मूर्यात अधिकाडी कड़िशा मुख्य कड़िन हार्ष्ट्रम এद॰ इव जहम सूर्ध आध हहेगात জনা মনুগার মন সতভ ব্যাকুল রহিয়াছে, নে প্যাত্ত মনুষ্য ঈশ্বরের প্রেমামত পান নবিতে সমর্থ না হয়, সে পর্যাত্য কিছুতেই ভাগর সে সুপের আশা পূর্ণ হয় না। নি-স্ব বাংক্তি আপাতত মনে করিছে পারে या एक्त धन थाथ इहेल्लई छाहात मक्ल कृत्य छुट्त भमन कतिता, किन्छ गाँव छ। হাকে ভাহার প্রার্থনামত ধন প্রদান করি তে পারা যার, তবে তথন সে ব্যক্তি বিলক্ষণ দেখিতে পায়, যে ভাছার সূথের আশা এপযাস্তও পূর্ণ হয় নাই, তাহার मन भूटवंब रवकाश कुःशानता मझ इहेटछ-ছিল, একণেও সেইৰূপ ছলিতে লাগিল, क्वल फ्राथंत क्षकात्रमाळ (छन हरेल। যাঁহারা কেবল বিষয় ভোগ দারা সুখের আ-শা পুর্ণ করিতে রত রহিয়াছেন, ভাঁহারা

বিলক্ষণ অবগত আছেৰ **যে ক্ৰমাগত** বি-यह निष्णीएन कहिशा कथनहे मुख दून निः-সারণ করিতে পারা যায় না ৷ আলা যাহা महाबद्दात्र विषय विनय त्वा द्वा इस, कना ' <del>তা</del>হা বিশেষ ক্লেশের কারণ বলিয়া অনুভূ-ত হুইতে থাকে। প্রথমে যাহ। অভি রুমণীয় अत्राहत पृष्टि धात्रव कतिसा अगारश छे-দয় হয়, অনবরত উপভোগ দারা ক্রমৈ তা-हा कुर्धांक ७ कम्म, इहेश छेटा पृट्य যাহাকে ভুজন ও আৰু হা বলিয়া গ্ৰহণ ক-রিবার জন্য অস্থির হনতে হয়, পরে তা-হাকে বিক্ষত ও পথ্য সিত **সন্দর্শন করি**য়া পরিস্যান করিতে হারে। ইইতে হয়। পৃথিবীতে যদি কেই প্রধান পথের পথিক ই-ইয়া প্রস্পার সৌজ্লাভাব সঞ্চার করিয় আপনার সুখের খাশা পূর্ণ করিতে অ-क्षित्राम करवम, करव काहोरका मिक्स रेम-রাশ নীরে মথ হইতে হয়। মনুষোর দে প্রকার দোষ্ট্রিভ অপূর্বস্থার, ইহাতে সংসার মধ্যে বন্ধুলাভের প**থ বিষম কণ্টকিত** হর্মা রহিলাছে। প্রতারই বন্ধুতার মূল, কন্তু বারমার আঘাত প্রাপ্ত হইয়া অনেকের মন হইতে সে মূল এক কালে উৎসিল্ল হ ইয়া গিলাছে, সংসারের মধ্যে কপটভা প্রবেশ করিলঃ বিষম সংশক্ষের বাজ বপন করিয়াজে। সুতরাং প্রকৃত বন্ধৃতাও এখা-নে জুলভ হইয়া উঠিনাছে। যিনি যথা-প্রতোমনের সহিত্রজ্ব অক্ষেণ করি-যাছেন, ভিনিই জানেন, যে পৃথিবীতে স-তা যকু কি ভুলভ ? এখানে মুখেতে যি-নি অনবরত অমৃত ব্যণকরিয়া হৃদ্যকে শীরল করিতে জানেন, অস্থর মধ্যে তিনি অনায়াসে গরণ ভাও বৃক্ষা করিছে সমর্থ इट्सब ।

এইকপে পৃথিবীর নানা বিষয়েতেই বল বিষু বিদ্যানান আছে, অতএব বাহারা
কেবল তদ্ধারা সুথের তৃষ্ণা শান্তি করিতে
ইক্ষা করে, তাহারা সুতরাং নৈরাশ প্রাপ্ত
হয়। কিন্ত বাহারা একপে নিরাশ হইয়া
মনে করে যে পৃথিবী কেবল ছুংগেরই আগার, এথানে কোন কপেই শুদ্ধ প্রাপ্ত হইবার উপায়নাই, সুথের তৃষ্ণা কে-

বল মনুযোর বন্ধান কারণ, ভাছাদিগের আন্তির আর শেব নাই; তাহারা মানব জ-আের প্রকৃত সুথের কিছু মাত্র পরিচয় প্রাপ্ত হয় নাই, অন্ত যেমন পৃথিবীকৈ ত-মসাক্ষর মনে করে, তাহারাও সেইবপ সং-সারকে ছঃথের আলয় ভাবিয়া থাকে।

সুস্থতা যেমন শরীরের সুগ, শাস্তি সেইরণ মনের সুখা অসুস্থ শরীরের স-হিত অশান্ত মনের কিছু মাতা ভেদ নাই. কিণু ঈ্থরের সহ্বাস ভিন্ন প্রকৃত শান্তি আর কোন্সানে প্রাপ্রওয়াযায় ৷ বি-यशोम छ हक्षण हिन्छ भूत्रय कि कथन भा-ভির মুখাব্লোকন করিতে পারে? শা-ন্তিও ভৃত্তি, কেবল পরমেশ্বর-প্রীতি লা-ভদ্রে প্রাপ্রওয়া যায় ৷ বসভ্তালে যিনি কগন কুমুমিত পুষ্পা কানন মধ্যে প্র-বেশ করির। বিচিত্র কুসুম রাজির মনোহর শোভা সন্দর্শন করিতে করিতে ঈশ্র প্রেমে পুলকিত হইয়াছেন, তিনিই মনুযা জাখোৱ বৰাৰ্থ সুখ অনুভৰ করিছে গারিয়াছেন। ব্যাকালে ন্বখন নিংস্ত অবিশ্রান্ত জল-ধারা নিরীক্ষণ করিয়া এবং অতি দূর পর্বাত ক্তিত মেঘাবলির গভীর গক্তন ভাবণ করি-য়া যাহার ননো মধ্যে কখন ঈশর প্রেমের সঞ্জার হটয়াছে, দেই মানব জ্যোর প্রস্কৃত দুখ ভোগ করিয়াছে। অভ্যুক্ত পঁর্ব্বভোপ-রি গাতোখান করিয়া তএস্থ নানা প্রকার স্বাভাবিক শোভা সন্দর্শন করিতে করিতে মাঁহার মনে কথন জগদীখরের আবিভাব হইয়াছে, তিনিই অৰগত হইয়াছেন যে मनुष्रातक ज्ञेश्वत कछ मूरश्वत अधिकाती क-রিয়াছেন? মেহস্পর্শ মহাদ্র পরিপুরিত कनम्ना निस्क खड़ना मत्या এकाकी समन করিতে করিতে ঘিনি কথন ঈশরের সহিত সাক্ষাৎ করিতে সমর্থ হইরাছেন, তিনিই मानव करमात वर्शार्थ मुर्श्वत विवय कानिएक পারিয়াছেন। সুবিন্তীর্ণ সাগর মধ্যে গমন কালে যিনি সেই দুর-প্রস্থিত সমুদ্র জ-লের মহান ভাব অবলোকন করত স্নো-মধ্যে একবার ঈশবের মহীয়সী শক্তিকে প্রভাক করিতে পারগ হইয়াছেন, পৃথিবীর यथार्थ जूर्थ छाराब्रहे खनतकम स्टेनाटर !

# ज्वत्वादिनी गविका

নিশীধ সময়ে বিনি কোন উচ্চ তর স্থান হ-ইতে নভোমগুলের প্রতি দৃষ্টি পাত করি-রা ভত্তস্থ অগণ জ্যোতির্ময় নকত সণ্ডলী নিরীক্ষণ করত জগদীখবের সুগভীর জ্ঞান সমুদ্রে আপন মনকে নিন্ধ করিতে পারিয়াছেন, মানব জবের প্রকৃত সুখ कारात्रे क्माक्म वरेतारह ! खानगई मून-লিত গ্রন্থ পাঠ করিতে করিতে তথাধো ঈশ্বর প্রেমের কোন প্রসঙ্গ প্রস্থাপ হুইরা গালার নয়ন হটতে অনবরত আনন্দাশু নির্ভিছ্টয়া-. इ. तमहे ভाগাবान् शुक्तवहें श्रक्त मुर्यंत कतिगाद्या निष्ण्य श्रास्त উপদেশন করিয়া ঈশ্বরেতে মন অভিনিবে-শ করিলে বাহার জনতার ভাঁচার প্রীতিও ভঞ্জি রদের সঞ্জার হয়, সেই জানে যে মনুখার জনা প্রমেশ্বর কত সুখের সৃষ্টি ক্রিয়াছেন।

এই প্রকার সুপই মনুষোর ক্রেক সুপা যে অভাজন এমুগ ভোগ করে নাই, সে
নানব জামের সার মুগ প্রাপ্ত হয় নাই।
ঈশব প্রেমই প্রকৃত মৃক্তি। এই পৃথিবীতে থাকিয়াই দিনি সর্বাদা ঈশর প্রেমে
ময় থাকিতে পারেন, তিনিই জীবস্কু।

# ঈশ্রের মহিমা।

事例

অসীম জ্ঞানকর আদিপুরুষ জলেতে যে কত প্রকার অভুত কৌশল সম্পাদন করিয়াছেন, ভাহা কাহার সাধা যে বগন করিয়া শেষ করে ৷ যদি কেছ উহার ত ত্ত্ব নিদ্দেশ করিতে অনুরাগী হইয়। ক্রমা-গত পরীকা করিতে করিতে আপনার চির-कीवन निःत्मध करत्र, उशांति तम छेशत এक বিশ্হ মাতেরও সক্ষৃতি কাণ অবগত হইতে সমর্থ হয় না। জ্ঞানানুরাগী প্রভূগ-ণের অসামানা যত্ন দ্বারা এপর্যান্ত কলের বে করেকটি গুণ প্রকাশ পাইয়াছে, ভাহা-রই বিষয় স্মরণ হইলে মন এক কালে প-রম ক্রুণাকর পরমেশরের মহিম। সাগরে मध हरेया याया जन यथार्थ हे मनूरसाय बीदन, जल मनूरवात रायन डेशकांती रह-मिन जुलक । कृत मक्त कीरवृत मर्वाटका-

ভাবে আবশাক বলিয়া কগদীশর উল 🐤 थियीत नर्सकारमहे शालम कतिशार मः পুথিবীর নানাদেশীয় ও নানা জাউ: ঢ় তুর্লভ পদার্থ ভারা মনুবোর যে কার সম্পন্ন इहेटड शाद्धा, क्वबन এक जनहें (गर्हे কার্যা সাধন করিতে সমর্থ হয় ৷ জল জু-ধার রূপে কঠিন অবস্থায় পরিণত হইয়া মত্য লোক বাসী জীবদিগের অশেষ কল্যাণ সাধন করিতেছে। বাষ্প ৰূপ ধারণ কবিয়া রাশি রাশি অফুড কার্যের করেণ হইয়া রহিয়াছে এবং তরল অবস্থায় অবস্থিত থাকিয়া জীৰদিগের স্নান পানীদি নানা কা-ব্য নিকাহ করিভেছে। জলেতে যে সমস্ত অন্ত গুণ দেখিতে পাওয়া যায়, তাহা আর कान अमार्थ रे मुखे रहा ना । जनमे बरहात এমনি আক্রণা কৌশল এবং প্রাণীপুঞ্জের প্রতি তাহার একপ স্মাধারণ করণা, যে সংসারের হিত সাধন জন্য তিনি কো-ন কোন বিষয়ে জলকে জড় বস্তুর নৈস্গিক ধর্মাও অভিক্রম করিবার শক্তি প্রদান ক-রিয়াছেন।

कड वस्तुत मर्पा रच नमस्त्र भनार्थ धन ও তরল উভর অবস্থাকেই পরিণত হুইতে भारत, जाश्मित्भत धर्मा धरे त्य यथ कारल তাহার৷ তরল অবস্থা হইতে ঘন অবস্থা-তে প্রিণত হয়, তৎকালে ভাহাদিগের প্র-মাণু সকল একতা সংহত হওয়াতে বিস্তৃতির हान ७ छ। दित्र वृद्धि इश अवर य नमद्य चन ভাব হইতে তরলতা প্রাপ্ত হইতে আরম্ভ করে, তথন তাহার। ক্রমে বিস্তৃত ও লঘু হ-য়। কিছু জলেতে এ নিরমের বাতিক্রম দে<mark>খিতে পাওয়া যায়। জল যখন অ</mark>ভ্যস্ত শীতল হইয়া ভূষার আবস্থায় পরিণত হ-ইতে আরম্ভ করে, তথন তাহার বিস্তৃতির মানতানা হইয়া বৃদ্ধি হইতে খাকে এবং সুতরাং ভাছার পরিমাণও ললু ছ্র ৷ তি-কালদশী জগদীশর জলেতে স্বাভাবিক নিয়মের এঞ্চকার অন্যথাচর। করিয়া যে সংসারের কত অনিষ্ট নিবারণ ও কি পর্যান্ত মঞ্চল সাধন করিয়াছেন, তাহা কো-न करमरे वाका कतिवात जाधा रगना । कन बहेब्प चनामाना निवरमत चरीन'ना

इटेरन श्रेथिबीत भर्गा चबर्यत चात नीमा ধাকিত না৷ জল ভূধার অবস্থায় পরিণত কুইৰার সময়ে বিস্তুত ও লঘুনা হ**ইয়া** হ-্ৰিদ সংহত ও ভাৱী হইত, তাৰা চইলে জু-বার সকল আর কল্মিন্ কালেও জলের উপরিভাগে না ভাসিয়া স্বীয় গুরুত্ব হেতু ক্ষাগত অধস্তলে মগ্ন হউত এবং তা-इन्ट किन् कारम इस्म डेखान मश्लध তইতে না পাইয়া খার তাহা কোন প্রকা-রে জ্বীভূত হইবার সন্নাবনা থাকিত না, সু-ত্রাং শীত এখনে পেলের নদ, ভূদ, সরিৎ, সমূত্র সকল ক্রমে ক্রমে কঠিন প্রস্তরবৎ ভুশারময় হইবা বাইত। তলক মংসাদি অসংখ্য জলচর মন্ত হুইড, বাণিজ্যের পথ রোধ ছইত এবং প্রবিস্তীর্ণ দীত প্রধান দে-শ সকল এক কালে জীহীন ও লোক শ্ন্য হইলা যাইত। কিন্তু করুণানিধান বিশ্বক-র্ভার কি অন্ত কৌগল এবং অপার করু-গ! ভাগের অচিন্তনীয় কৌশলের গুণে ইহার কোন উৎপাতই ঘটবার পথ নাই। হাঁহার মধিমা প্রভাবে প্রস্তরবৎ কঠিব তু-বার সকল জলেতে ভাসিতে থাকে এবং তাং। জীবের কোন প্রকার অকলা:৭ উৎ-পাদন লাক্রিয়া অন্নেষ্**বিধ মঞ্জল কা**-र्यात कार्यक्षा हिम अक्षान (मर्ग भी-ত ঋতুতে যে গরিলারে হিম পতিত হয়, তা-হাতে করিয়া তত্ত্ত ভলা**ায় সকলের ভল** এত শভিন্ন হইতে পারে যে কোন জনেই খার ভগাধো মংস্যাদি জলজন্ত জাবিত থা-किटल भारत ना। किन्छ कि व्यान्तर्या जगमी-भरतत (कोणना भीटिंक व्यावस्त्र कन যেমন শীতল ইইয়া মৎস্যাদি জলচরের बारुगत चार्याचा इहेगात छेलाक्तम इस, चम-নি তাহার উপরি ভাগের জল ঘণীভূত হ-ইয়া প্রস্তরবৎ ভূষার রূপে ভাসিতে থাকে এবং আর এক বিশ্বমাত্র হিম সেই কঠিন जुवात का एक कित्रा कनमस्या थादवन করিতে শক্ত হয়,বা, তুবারের নিমু ভাগত্ব গমুদায় জল্বাশি সমুচিত উফ অবস্থা-एक्ट्रे **अव्ञान करत्र, अव्य अन्नारता ब**र्नेगानि अमरशा अन सह **अवनीलाः क्रांस** सीवन শাপন করে ৷ প্রস্থাত কোন কোন ছানে

উক্ত প্রকার ভূবার কেতা অপার সমুদ্রের ৰেতু স্বৰূপ ইইয়া খাড়ে এবং সেই সেভু <del>স</del>-बलयन कतिया धक श्रीरशय मामा क्षकात कोव कछ बीभाक्टर गमन कत्रिया সংসাद्धित বিচিত্র শোভা সম্পাদন করে ৷ প্রস্তু-রবৎ কঠিন ভুষার সকল জলের উপর ভাসে বলিয়া ভাষা নীরস নিদাঘ কালে স্বাউভাপে এৰীভূত হইয়া অনেকানেক জলশুনা পরিশুক্ত স্থানকে আরু ও শী-তল করে। জগৎকর্মানিখপিতা জলকে বনীভূত হইবার সময় বিজুত হইবার \* জিল প্রদান করিয়া পৃথিবীর আরে এক অসাধারণ মঞ্জ সাধন করিয়াছেন ৷ কোন কোন দেৰে শীত ঋতুতেই বাত বু ষ্টির প্রান্তর্ভাব হইয়া থাকে এবং ভগাস রুটি ধার। পভিত হইয়া মৃত্তিকা প্রবেশ ক-রিবার সময় অংশত হিমের আংবলা হেডু चूबातद यनीकृष्ठ श्रेश गात्र। किन्नु हे-হার মধ্যে আশ্চর। এই যে তদ্ধার। ঐ সম ন্ত দেশের ভূমি কঠিন ও সংহত হয় না। ো বারি বিক্তৃ ত্বারময় হিম শিলা হইয়া মৃত্তিকা প্রবেশ করে, ভাষা স্থীয় অসাধারণ গুণ েজু বিস্তুত গুটতে আরম্ভ করে, সু-ভরাণ তৎপার্থক্তী চজুর্দিকের মৃত্তিক:-ও তাহার তেজে প্লাধ ও আন হত হইতে গাকে এবং ভালাতে অনায়ানে উৎকৃষ্ট ৰা-পে তৃণশস্যাদি উৎপন্ন হণ। জগদীশ্বর যদি জলেতে উলিখিতৰূপ অন্তুত কৌশল अकान ना करिएडन, डाझा शहरल हेश्रुरता-প প্রভৃতি হিম প্রধান দেলের যে সকল मनाभाजी উर्वता जुमि इहेट अकटन अ-চুর শাসা উৎপন্ন ছইয়া বছল প্রাণীর জী-বিকা নির্বাহ করিতেছে, সেই সমস্ত ভূমি এক কালে শস্হীন মরু ভূমি হইয়া প-ভিত থাকিই।

জনের ভারিত্ব গুণও এক প্রমান্ত্রত ব্যাপার। কল যে প্রকার ভার বিশিষ্ট হইলে সংসারের কোন বিষয়ের কোন প্র-কার ব্যাঘাত না জনিতে পারে, ক্রিকালজ্ঞ লগালীখর ভাহাকে সেই প্রকার ভারী ক-রিয়া সৃষ্টি ক্রিরাছেন ভিল যদি ইছা অপ্রেকা ভার কিঞিক ল্যু হইড, ভাহা হ-

हेटल (ता मन्यापि कान अकात कीव चा-র জ্বলেতে সম্ভরণ ক্রিতে শক্ত হইত না এবং পোত ও তর্ণী প্রভৃতিও তাহাতে ভাসিতে পারিত না। পাযাণ পিও জলে-ঠে পতিত হইলে, ভাহা যেমন তৎ ক্ষণাৎ মল্ল হুইয়া যায়, মনুষ্য প্ৰাদিও জলেতে প্ৰ-তিত হইবামাত অমনি সেই প্রকার মগ্র হইরা যাইত এবং পণ্য দ্রব্য পূর্ণ পোতা-দির ভারও জল কথন ধারণ করিতে পা-तिक्रमा, भू इताः वानित्कात श्रेथ अक कात्न রুদ্ধ হইয়া ঘাইত এবং কোন দ্বীপের সহি-ত আরু কোন দ্বীপের সমক্র মাত থাকিত না৷ প্রস্তাত কল্মদি একগকার অপে-ক্ষা আর কিঞিৎ ক্রু হইত, তাহা হটলে-ও অ''' অনৰ্থ ঘটিত না৷ মংস্যাদি কো-ন প্রকার জল জন্ত আরু তালা হইলে জ লের ভার সহ করিতে পারিতনা, সুত্রাং পৃথিবীর সমস্ত জলের ভাগ প্রায কীব ক-ना रेडेड जदर छाडा इहेत्स भूषिती के-খনই এ প্রকার শোভনতম ও উন্নত অবস্থা-য় প্রিণ্ড হইতে পারিত না। অভ্যব কলকে বথাযোগ্য ভার বিশিষ্ট করিয়া জ-গদীশর যে কি প্রয়ন্ত আপুনার মহিনা বিস্তার করিয়াছেন, তাহ। বর্ণনের অভীত ।

অব্যাদ্যাকর পরম পুরুষ জাগেতে যে উত্তাপ শোষণ করিবার আর একটি আশ্র্যা কৌশল প্রকাশ করিয়াছেন, তা-হাতেও তাঁহার অপার মহিমা প্রকাশ পাই কেছে। তিনশের পারদ যে পরিমাণে উত্তা-প শোষণ করিতে পারে, তিনশের জল তদপেক্ষা প্রার ত্রিংশৎ গুণ অধিক উত্তাপ भाषन क्रिट्ड ममर्थ इस् । अल्लट এই অন্ত শক্তি বিদ্যমান থাকাতে আমাদি-গের অশেষ প্রকার নক্সল দশিতেছে ৷ औन कारन यथन अहल अकाकरवत अ-यत छेखारम शृथिवीत ममीमवर्खी वासू ज-গ্রি সম উত্তপ্ত হইতে আরম্ভ হয়, তথন পৃথিবীস্থ জলরাশি তাহার অধিকাংশ উ-ভাপ শোৰণ করিয়া লইয়া বায়ুকে সমভা-বে রক্ষা করে এবং শীত কালে বে সময় ৰায়ু সমধিক শীতল হইবার উপক্রম হয়, ভৎকাৰে জল খীর গর্ডছ সঞ্চিত উক্ষতা

উৎক্ষেপ করিয়া সে বায়ুর সমুচিত উঞ্চতা সাধন করে ৷ এই রূপে জল শীত উষ্ণতা উভয়ের শাস্তা স্বৰূপ হইয়া সংসার মধ্যে উহাদিগের কাহারও আতিশ্বা উদ্ভব হুই-তে দের না এবং উহার প্রভাবে পৃথিবীতে শীত গ্রীয়ের হঠতে পরিবর্ত্ত চইতে না পাইয়া অনেক প্রকার মহামারীও উৎপন্ন इहेरड शारत ना। अड शत शृथियो मरधा জগদীশ্বর জলের সৃষ্টি করিয়া কেবল रव छेश्रांदक च्यामितिशत दांत्र र्यात्रा कृति-য়াছেন এমত নতে, উহার ছারা এ পৃথিবী আমাদিগের সাভামর সুখ ধাম হইয়া র হিরাছে। শাত শতুর পরিগামে পুথি-वीटक या महनाइत वमस ক্তুর উ-मध रहेता धाहक, अत्मध छिल्लिशिक धा-দুত শক্তি তাহার এক প্রধান কারণ। শী তাল্তে মধন গ্রীয়ের প্রাছর্তাব আরন্ত হn এবং দিবাকর প্রচণ্ড কিরণ বর্ষণ করি-তে প্রস্তু হয়, ভখন জন ভাহার অধিকাং-শ শোষণ করিয়া লইয়া অপূথা বসস্ত ক:-লের সৃষ্টি করে। পরস্ত বায়ু হুইতে জল তা-হার তাপাংশ শোষণ করিয়া লয় বলিয়াই গ্রী-য় কালের উত্তপ্ত বাষ্ ছারা নদ নদী ওপ্রক-ত হিত তুৰার রংশি একদা দ্রবীভূত হইয়া নিক্টস্থ গ্রাম নগ্রাগিকে স্লামাবিত করিতে পারে ন।।

জল যে প্রকার আন্যান্য নানাবিধ প্রধ্ ধারা জীববর্গের হিড সাধন করিতে প্রবৃ ত রহিয়াছে, সেই ৰূপ উহার আছে,ত দ্রব-করা শক্তি দারাও এ পৃথিবীর অসংখ্য উ-্কার দশিতেছে। জলের তুলা এমন 'আন্চর্যা দ্রবকরী শক্তি আর কোন পদা-र्थरे मुखे इस ना। जलाउ अधिवीत शाप्र यावकीय शमार्थ है ज्योज्य इहेटड পারে। যে সমস্ত নদী অভি দুর পর্বত হইতে প্রবাহিত হইয়ানানা প্রকার ধাড় রত্মাদির আকর স্থান অতিক্রম করিয়া গমন करत, रमरे ममल बहीत करल थात वहारि-ধ কঠিন ধাড়ুর অংশ মিগ্রিত থাকিতে (मर्था वाहा। এভ हिन ट्यांजः वडी नमी टा-वाटर श्रात्र नर्वागांदे नानां श्रीकात छेल्डिम न-দাৰ্থের অংশও কেবিতে পাওয়া যায়। ভল

আপনার এই অদ্ভুত দ্রবকরী শক্তি প্রভা-বে কতশভ অগ্ন্য পর্বাতাদির অমূল্য সার **जाग दश्म क**दिया जमाना बक्कन हील **छ**-পদ্মাপের অসারবাঠী ভূমিকে উৎকৃষ্ট ৰূপে मात्रवर्शे क्ट्रतः। महत्य महत्य मनुषा ०-করিত হইয়া আজন্ম পরিশ্রম পুর্বকে সার বহুন করিয়া বে সমস্ত বিস্ত\ণ বালুকাময় খীপ শৃসাপালী করিছে না পারে, সে-ইসকল সুথি<del>তা</del>ত অসার ভূমি যদি**এক**-বাব কোন নদী প্রবাহে প্রাবিত হয়, তবে তালা এলন আশ্চেষ্য উব্ৰৱা ও সাৱৰ্তী হ-ইন উঠেনে ভাষাতে যে কোন শলোৱ বীশ বসন করা মায়, ভাঙাই অপ্রাঞ্জের-পোৰ্বলিটে বাকে ৷ আমরা একণে পুথি-বীর বে দেশের যে সমস্ত ভূমি হইছে 🕾 हुतकाल नाना अकात उँएक्छे भना आश হ্ইতেছি, জালার অধিকাংশই প্রায় পুরো-**क** अकरव संकात ७ यनवनी ६**रे**वाटका क्यभिष्यत्त कि धाक्या कक्षा। वि छ-চিত্তনীয়ে ওপায় দ্বারা তিনি **আমাদিগকে** অ-ল দান করিয়া জাবিত রাখিরাছেন।তিনি औरदेश कीदिकः निर्दाटश्त क्रमा अभ्धा क्षकात कल भूग ७ एवं मरमात मृष्टि कति-লেন এবং ভাষা রোপণ কার্যা বর্ষে বর্ষে হৃদ্ধি করিবার নিমিস্ত বিস্তীর্ণ ক্ষেত্র স্থৰূপ বসুস্কারার উৎগতির করিলেন ও বাভ ১ৃটি বুদ্ধি শক্তি প্রভৃতি অন উংগত্তির জনা য-তপ্রকার সভায় আবিশাক করে, আমাদিগ-কে সে সমস্ট প্রদান করিলেন কিন্তু ভা-হাতেও ভাঁহার দয়ার শেষ হইল না. ভি-নি আবার হয়ং কুষাণ হরুপ হইয়া জল প্রবঃহ উপলক্ষে আমাদিগের অসাব মঞ্জ ভূমিকে সার বহন করিতে নিযুক্ত রহিলে-ন। হায়, আমর। কিউপায় ভারা তাহার এ উপকার ঋণের পরিশোধ করিতে সমর্থ হইব! জীব কি কৰিন্ কালেও তাঁহার व अन् वक्षन हहें एक सूक्त हहें एक मक्तम हत ?

জলের ঐ আশ্রহা দ্রবকরী শক্তি বারা জামাদিগের আরও অনেক মহছপকার দ-র্নিরা থাকে? ইহা একলে অনেকেই অ-রগত আছেন বে ভূমগুলস্থ মহা মহা সাগর কলে যদি লবন মিজিও না থাকিত, ভাহা इरेल कथनरे (म जल मीर्च काल श्रक्कुछ।-বস্থার থাকিতে পারিত না, অচিরেই বিক্রত ও অব্যবহার্যা হইয়া উঠিত, কিন্তু জলের অদ্ত ডবকরী শক্তি হেতৃই সমুদ্র জল এ প্রকার লবণাক্ত ভাবে স্থিতি করে। লবণ জলৈতে যে প্রকার দ্রবাভূত হইতে পা-রে, আর কোন প্রকার তরল পদার্থ দ্বারা সেন্ত হয় না৷ লবণে ব্যাপরিমিত জল সংস্পর্ল ২ইলে আর তাহার চিত্র মাত্রও থা-কেনা জল স্বায়নপুথিবার লবলংশ সুক্ত-রক্ষে জ্বীভূত ২ওরাতেই সমুদ্র **জল সত**-ভ লবদাক্ত হইয়া থাকে এবং সেই হেডু বিক্লু-ভ ও দুয়িত নাহইয়। চির কালই সমভাবে হিতি করে। বিশেষতঃ লবণশুনা শুদ্ধ জল বোন ছিক্ত, নয় প্রদার্থের অন্তরে প্রবিষ্ট হ-ইয়া তাহাকে মত অবিলয়ে বিচ্চিন্ন ও বিকঃ র প্রাপ্ত করিছে পারে, লবণাক্ত জল কথন ভত শীঘ করিতে পারে না৷ এই নিনিজ্ঞ অব্ধাক্ত সিম্বু মলিলে কোন রুক্ষ লঙাদির ব্ৰিল পাতত হইলে তাহা শীঘু নঠ হয় না, সমুদ্র জ্রোতে ভাসিয়া ক্রমে কোন দ্বীপ কি উপথ্যে উপনাত হইলা তথায় অপুঠা অ भूका इकामि छेरभामन करता छेळ था। কারেই অনেকানেক তুল-শূন্য প্রবিস্তীর্ণ दीश करम कोव कछत्र वात्र स्थाशा हहेशा উঠিয়াছে৷ অতএব সমুদ্রজন লবণাক্ত হওয়াতে আমাদিগের যে দকল মহৎ কল্যাণ উত্তর হুইতেছে, জলের অভুত দ্রব্রী শক্তি যে তাহার মূলীভূত করেণ তাহাতে আরু সন্দেহ্নাই ৷.

ইহা অনেকেরই বিদিত আছে যে মৎস্যও জল মধ্যে কাল যাপন করিয়া এই
পূর্থিবীর বায়ুর দারা নিশাস কার্য্য সমাধা
করিয়া জীবিত থাকে 1 বায়ু বখন জলের
সহিত সংযুক্ত হয়, তখন তাহার কিয়দংশ
ঐ ললের সহিত মিঞ্জিত হইয়া অবৃত্তি
করে 1 নৎস্য প্রভৃতি জল জস্ক সেই বা
রি মিঞ্জিত বায়ু গ্রহণ করিয়া জীবিত থাকে 1 অতএব জলের সমস্ত অভূত গুণের
অন্ত পাওয়া সুক্টিন 1

অনন্ত কৌশলকণ্ডা জগদীখন জলকে বালারণে পরিণত ংইবার দক্তি প্রদান ক- রিয়াও সামান্য কফ্লা প্রকাশ করেন নাই।
উক্ত শক্তি জনা জল আমাদিপের বিবিধ
সুখের কারণ হইয়া রহিয়াছে, জল বাপারূপ ধারণ করিতে পারে বলিয়াই বায়ুর
অন্তরে স্থিতি করিতে সমর্থ হয় এবং পুনররার নীহার রূপে অবনিচলে প্রতিত হইয়া
বাজু বিশেষে নানা জাতীয় শস্য উৎপাদন
কবে এবং উহার জ শক্তি গাঁকাতেই উহা
সম্মূ হইতে গারোবানা পূর্পেক বায়ু সহকারে দেশ দেশান্তরে গমন করিয়া বৃত্তিরপে
প্রিভ হইয়া অসংখ্য প্রোণীর জীবন দান
করিয়া থাকে।

জল স্বাংগদে বিহীন হইয়াও কথন কথন আমাদিনের সুনেক্সিনের সুপের কা-বণ হয়। জলের সহারতা হারা সুগদে গুল্লাবেও যে প্রকার শাক্ষা রূপে পরিণত হই-য়া আমাদিনের সুনেক্সিয় প্রবিট হইতে প্রের, উহার মাহায় ব্যক্তিরেকে কথনই সে প্রকার হইতে প্রের না। এই নিমিন্ত রু ক্রির অন্তি বিলমে পুন্ধ কানন বা গদ্ধার মৃত্তিরা হইতে লে প্রকার সভেতের সৌ-রুভ নির্গতি হয়, সেরুপ থার কোন সময় হয় না।

জল স্থা অদ্ধ শঞ্জি লারাবায় হ-ইতে নানা প্রকার প্রাণ নাগক দ্বি-ভ বাজ্পের ভাগ শোষণ করিয়া উছাকে পরিস্কার ও মনুষ্টোর প্রাণ জুলা করিয়া র-•ক্ষা করে। জলের উক্ত প্রকার শোষণ শক্তি না থাকিলে আমরা এক একটি নি-শাস ক্রিয়াছারা প্রাণ ত্যাগ করিতাম ৷ জ-লের সহায়তা দারাই আমাদিগের শরীর মধ্যে শোণিত সকল যথানিয়মে সঞ্চালিত হইতেহে, জলের সাহায্যে আমরা ইকু ছইতে তাহার অন্তরস্থ শর্করা নির্গৃত করি-য়া সুথেতে উপভোগ করিতেছি এবং জ-লের রসকরী শক্তি দ্বারা পশু পক্ষী প্রভূ-श्विमश्था कीव श्रीय श्रीय भंती दृत्व कास्त्रि লাবণা ও কোমলভা রক্ষা করিতেছে। জল न्ना नीत्रम क्रारहत (व क्रिष्टू माळ (मोन्स-र्यो शिटक ना छाहा व्यटनटकत्रहे विभिन्न আছে ৷ জলকে যে জগদীশর আমাদিগের कि भर्या उपकाती क्षित्रा मृष्टि क्षित्रा-

ছেন, তাছা কছ বর্ণন করিব এবং ভাছা কি প্রকারেই বা জ্ঞাত হইব । মনুষ্যের বুদ্ধি কলিক। দিন দিন যত প্রক্রুটিত হইতেছে, ততই উহার গুণ প্রকাশ পাইতেছে। বাজ্পীয় পোত, বাজ্পীর রথ ও অন্যানা বছ্ণবিধ বাজ্পীয় যন্ত্র, যাহা ছারা সংসারের সমবিক সৌভাগ্য বৃদ্ধি হইগাছে, জল সে সমুলারেরই মূল কারণ। জলীয়বাজ্প ভিন্ন কোন প্রকার বাজ্পীয় যন্ত্রের কার্য্য সম্পান্ন প্রকার বাজ্পীয় যন্ত্রের কার্য্য সম্পান্ন প্রকার বাজ্পীয় যন্ত্রের কার্য্য নির্বাহ্ন পারে না এবং বাজ্পীয় যন্ত্র বিনা ক্রাইটি পোরে না এবং বাজ্পীয় যন্ত্রের কার্য্য নির্বাহ্ন না। অত্তরে বিচারত ভালনেই শিশ্প কার্য্যের প্রাণ সম্পান বিলাত হাইবেক।

কি নদ হদ সিন্ধু সরেবর, কি শ্রু,
কি গর্বতশিপর, জন হথন যে অবস্থান অ
বিভিত্তি করে, সেই স্থান হইতে অনংখা জ্বী
বের উপকার সাধন করিলা আদি পুন্দ
ভাবিল নাগের মহিমাকে মহায়ান্ করিলা
থানে। অভ্যব ঈশরপারান্ তত্ত্বদশী
ব্যক্তি যদি জলের সমস্ত গুণ অংলোচনা কবিরা দেখেন, তবে উহাব এক একটি বিস্তু
মাধ্যে তিনি ঈশরের অপার ক্লণাৰ সিন্ধু
সন্দর্শন করিলা ভাক্তি প্রবাহে প্রবাহিত হা
রেন।

# जीवरनत माक्ना।

मुन्सं পরমার প্রাপ্ত इहेतात প্রবলা আশা মন্থা মাজের ই মনে বিরাধ করিছে-ছে। জাপনের অপেতা জনা নহান আন্কেপ না করিয়া থাকে, পৃথিবী মগো প্রায় একপ মনুষাই দৃষ্ট হব না। কিন্তু ইছার মধ্যে আশুর্যা এই যে, যে প্রিয় কার্বনের পালার্মানের ল্যুনতা কোন কমেই মনুষার সহাহর না, অনেকে সেই কার্বনের অধিকাংশ কালকে স্বহস্তে ধংস ক্রিয়াও কিছুমাত্র ক্ষোভ প্রাপ্ত হয়েন না। কোন কোন কোন কার্বার কারনকে যদিংত অংশে বিজ্ঞান করা গার, তাহা হইলে দৃষ্ট হয় যে তাহাদিগের সমন্ত আয়ুর ১৯ ভাগ নির্থক গত হইয়াছে।

নিতায় ও খালস্যে কাল ক্ষেপ করিলে নে কালের কিছু যাত্র সার্থকতা হয় যা ৷ কুক্ষ ও কদর্যালাপদারা কাল কেপ কর। এ জাবন আমাদিগের নিত্য তীর্থ যাতার পথ করণ, অভএব সেই সুরম্য সর্নিকে পুণা কর্ম্মরপ রক্ত প্রেণীতে শোভিত না করিয়া কুক্মিরপ অম্পূর্ণা পদ্ধ দ্বার্য মলিন করা কথনই বৃদ্ধি চৈতনা বিশিষ্ট জীবের কর্ত্তনানহে। যে ব্যক্তি কুক্সেম্ম ও আলস্যো কলেকে নির্পতি নাই ক্রিয়া দীর্ম জীবন উপ্রেণা করেবার ইচ্ছায় বাংকুলিত হয়, তা হার ভূব্য হাসাম্পদ আর সংসাব মধ্যে কে আছে? ক্রেয়াক কুসুম লতা উচ্ছির্ম করিবার ইচ্ছা যেমন অসক্ত উল্লিখিত ইক্ডাও সেই প্রকার অকিঞ্জিৎ করে।

পরমণিতা পরমেশর তাহার মর্ব সু-থকর মঞ্জাভিশ্রায় প্রতিগালন করিবার জনা আমাদিগতে অবনিমণ্ডলে সৃষ্টি ক-রিবাছেন, অতএর যে কাল ভাঁছার **অনু**-ফলানুগত কাষ্য স্থিনে গত হয়, তাহাই আমাদিলের ঘথার্থা জীবন -বলিয়া পরিগ-ণিত ∌ই¢ড পারে ৷ বংসর যেমন বসস্তা-कि शकुरण विख्छ, शत्रदमस्त आंगानित्त्रत জীবনকে নেইন্ত বাল্য যৌবনাদি অবস্থা দ্বারা ভিন্ন ভিন্ন অংশে বিভক্ত করিয়াছেন এবং উহার প্রত্যেক অবস্থারই পৃথব্ পৃ-থক কর্ত্তবা তর্ম নিতিই করিয়া দিযাছেন। উচার মধে৷ কোন অবস্থা বিকলে গত হ-ইলে আর কোন প্রকারে **অত্তে** তাহাঁর ফ-লভাগী হইবার উপায় হয় না। পূর্তের ধান্যাদি রোপণ না করিলে যেমন ছে-মন্ত্রি কর্তে ক্রমন্ট তচ্ছপল্ল নাস্তা श्व इन्द्रशा यात्र बा, मिरे अकात वालामि का-লে উপযুক্তমত যতু ও 🐲 সহকারে বিদা। थनानि উপार्कन मा कतित्व, दृक्कावयात्र কোন প্রকারে ভছুৎগর বুখ উপভোগ ক-त्रा भारा ६व ना । भुरुशामी बाह्न नात्र काल প্রবল বেগে ধাবিত হইতেছে এবং আমা-मिर्शित जीवरनत स्य कोल शंक इंटेर्ड्स, শে কাল আজমের মত আমাদি**গের নিক-**ট্ট' হইতে বিদান হইতেছে, ব্ৰতএৰ সৰ্বাদা मक्क इहेरा अधिक वह सबसे मुझ-

বের শুভাভিপ্রেত কার্যা সাধন করিয়া জাং বনের সার্থকতা করা নিতাস্ত কর্তব্য ৷

সর্বহিতকর্ত্তা বিশ্ববান্ধবের এমত আশ্চ-যা কৌশল নছে, বে কোন মতে অতি ধৎ-কিঞ্চিৎ কালও আমাদিগের বুগাগত হইতে পারে। আমরা থত্ন করিলে সকল কালেই আপন আপন কর্ত্তব্য সাধন করিয়া, জী-বনকে সফল করিতে পারি। জনসমাজে বাস করিয়া দরিচের ছংগ মোচন করা, चक्रक উপদেশ প্রদান করা, বিপন্ন ব্য-ক্তির সন্তাপ হরণকরা, উপযুক্ত ব্যক্তি-র যথোচিত মর্যাদা রক্ষা করা, ক্রোধনের ক্রোধানল নির্বাণ করা এবং দ্বেঘী ব্যক্তিকে শাস্ত করা প্রভৃতি খেনন মনুষ্যের নিত্য ক-खना, मिरेक्श विद्रल इति वास कदिल्छ মনুষ্য বছবিধ শ্রেষ্ঠ কর্মা সাধন করিয়া আপনার **জীবন সার্থ**ক করিতে পারে। নিজন বাস আত্মানুসন্ধান করিবার একমা-ু ত্র উপযুক্ত উপার। জন শুনাবিরল *ভ*ানে অবস্থিতি করিয়া আমরা যে একার স্বীয় স্বীর পূর্বর চরিত্র স্মরণ পূর্বেক তাহার দো-बारमाय निरम्बंभ क्षिएक भारत, या अकात জার কোন সময়েই করিবার সামর্থ্য হয় না, ক্রিন্ত গতানুম্মরণ ও পরিণাম দর্শন প্র-ভূতি নিজন বাসের যত প্রকার কর্তব্য কর্ম আছে, অনম্ভ ব্রহ্মাণ্ড কর্তা আদি কারণের মহিমা চিন্তন পূর্বেক ভাষার সাক্ষাহকার লাভ করাই স্কাপেকা শ্রেষ্ঠ ও সুখ্কর ৷. चामद्रा यथन निर्जन शादन चवित्र व थाकि, তথ্ন যে আমরা এক কালে স্বজন সুস্ত্ৎ বঞ্জি হইয়৷ই বাস করি এমত নহে, আমা-দিগের প্রাণাধিক প্রমব্দ্ধ সর্বাদা সর্বা ত্ৰই আমাদিগের সকে বিরাজ করেন। অতএব ,নিৰ্জনে থাকিয়া আমরা আপন জ-দর ধামে ভাঁহাকে স্থাপ্ন করিয়া ভাঁহার সহিত অমৃতালাপ করত জীবনকে সার্থক করিতে পারি, এই প্রকারে নিযুক্ত থা-কিতে পারিলে আমাদিগের জীবনের তিলা-ৰ্মাত কালও ৰুধা গত হয় না ৷

য়দিও মনুষ্য জাতির এবণ প্রকৃতি ন-হে বে সর্বালা এক প্রকার কর্ম্বে নিযুক্ত থা-কিয়া স্পন্ধী ক্ষান্তিলাত কার্য্য করিয়া কেন

মড়ে পুরি ভোগ ও শরীর ধারণ করিতে সুর্কম হর, তথাপি কুক্রিয়া অবলম্বন ও বৃ-र्रोषा करमात अनुक्रीन जाता कार्र्यात ध्वकात ভেদ করা কোন ক্রমেই কর্দ্রবা নহে ৷ জ-शंकीश्वत भनुषारक विधित वााभात नाथन জনিত নানা বিধ উৎক্ল ট সুপে সুখী করি-বার জন্য ভাগকে এত সংকার্যা সাধনের श्विकाती कविषारहम रगममूण विनिध-তি দণ্ডে পৃথক্ পৃথক্ সংক্রিয়া সংসাধন পুর্বকে আপিনার ভিয়োয়ু নিয়পেষ করে, তথা-পি তাহার শেষ হা না৷ এর অধানন (याम এको प्रश्किशा, अनि द्विक दासाम সেইরণ একটি কর্ত্তন্য কর্ম। নাম পুর্বক व्यर्थिशकन कता यानुभ कर्छरा, नाना तः मा भगोष्टिय कतिया अन्तर्गने अदतत विधिय त-চনাসক্ষান করা তেমনি স্বনুষ্ঠান। ি:-ভাকে ভক্তি কুৱা গেমন উচিত, পুত্ৰকে ক্ষেত্র করা তজাপ (বধের। দ)ন বাজির এতি **ভ**েলিকাশ ক্রিয়া সীধানিসারে ভাছার দ্রাখা নাচন করা বে প্রকার উচিত, পরিমি-তৰূপে ভোজন পানাদি সম্পন করিয়া স্থাম শ্রীর রক্ষা কৰা দেই ৩২ক:র সাধ্কারণ। ' সংসার মধো বে এমন কছ একরি ভিন্ন ছিল সংক্ষা বিদাননৈ আছে, ভাঙার সংখ্যা করা জংসাগা, আত্রব বিবিধ ব্যাগার সা-ধনের সুধ ভোগ করিবার জন্য ক্ষিন্ কানো আন্থ ক্রিষ্টা অবলয়ন করিবার না-• बनायः इत ना।

অনবরত কর্ম এম হইতে অবসূত হইয়া মন্যে মহার আনোদ প্রমোদ হ'র আন উদুর করা মনুয় জাতির নিতন্তে আব লাক , কিন্তু বিশাম কালে অনপক ও অ-লাক কারো আমোদিত হইরা কাল হরণ করিবারও কোন প্রয়োজন নাই। সংসার মধ্যে এত প্রবার নির্দোধ আমোদ আছে, যে আমরা অনারাসে তদবলমন দায়া প্রা-ভিদুর করিয়া সুখী হইতে গারি অথচ ভাষাতে করিয়া আমাদিগের জাবনেরও সাফলা হইতে গারে! অল্লীল ও অনুচা-র্ষা পরিহাস বাকোর প্রস্কু দার। স্বীয় রসনাকে দুখিত ও স্বভাবকে খলিন ক-রিয়া আনেকে: আনোদিত হয়েন, ক্ষিত্ত বিচার করিলা দেখিলে কখন উক্ত কর্মকে বৃদ্ধি বিশিষ্ট মনুষ্যের কর্ম যোগা বলিয়া গলা করা ঘাইতে পারে না ৷ তাব পাসকালি ক্রীড়া দ'রা কাল হলন কলেও সর্বলাই জন সমাজে দুন্ট হল বটে, কিন্তু উক্ত প্রার সামান কার্য্যে সময় নতী কলাও মনুষ্য সনুষ্য সহও জীবকে শোভা গালনা ৷

বিভামকালে কাৰা রুগেও অনু বীলন ও সবিলাশানী সাধু নিছের সদালাগে উপজেন গাপেকা কি সেতে, রক্তন নীল, কীত, প্রান্ত তি বণ বিভেদ আলোচনা পুর্বাক সানানা কীছা অবলয়ন কর অধিক বিনোদকর। সংসার মধ্যে যত একার সুগোর বাপোর বর্তমান আছে, বোধ হয় মনোগত মিয়ের মুখ বিগলিত সুবাসন নিউলোপের তুল। আন কিছুই নাই। প্রিয়াব বুলু সহিত্ ভিন্টালাপ করিব র সময় গুংপছ যে জানার বিকলিত ছল, সে প্রকার আর ফিলুতেই হয় না। আভাব বিজ্ঞান কালে আন্যান সুবি-জ্ঞান্ত সংগ্রাপ করিবা অন্যাস্থ্যে সমরের সার্থিকার ক্ষিত্র গ্রেষ্

সুহাবা সত্রীতের আশাপ্ত এক প্র-कांत्र फेरक्रके निरम्भाग आह्य, स । भारतत काका भूचत এक शाक्ति गरिका वृत भारत जनमेशाह्य खन नाम करत्य, **छ**न হং হটকে, অন্যাসে ভাপরাপর দশ না**ভি** ভাষ্টাৰ মুখা কৰ্তি পারেনা আঙতৰ गंददारल कमी धार इहेटच धारत्क बहेत्। অবেদ গণোদকানক্ষেপ করিছে বাদনা ছর, ভবন সুনবিত সংগ্রি শাক্ষের **ল** জ্ঞা প্রচণ করিয়া জীবনের প্রচলা করা माधियात्र मुथनात्रकः। नक्षार्टन सन्धान রুষ ভৌগের তুলা নিজেনে আন্মাদ প্রাপ্ত হৰ্মী অতি ভুল্ভ1 সজীতের সংখ্যানি শব্দি ছার।আোচা গগটা উভয়েই অ-পার সুখা নাভ করিছে গারেন . इत्त महनामत्या वहे दियम जातकथ छेथ স্থিত হইতেতে যে, এমন মগুময়া সঞ্চিত রস মধ্যে মধ্যে পাগমর পক্ষিল স্থানে প-ভিত হইয়া দুধিত ও সাধ্দিগের অঞাছ इरेबा थाएक, किन्नु ग्रीहाता मञ्जीड भारञ्जल আর্থনীর পীয়ব পান করিয়া নির্মালানক

উপভোগ করিতে অভিলায করিবেন, ওঁ: হার যে উহাকে অসপ শা কুংসিত স্থান হ-ইতে উদ্ধার করিয়া গ্রন্থণ করিবেন, ভালার খোর সংক্রে নাই 1

প্রসারিত প্রান্তর; সুনির্দান নদীর উরি ও স্চারু কুস্মলতা পরি পুরিব পুলপ কা-নন এডতি রম্পুর ছানে বস্পাধ্যের স हिक धकब उन्द कड़िलांत छंडडू है बिटला-म कार्रभाव छेलाचान करा गाए। जनम গ্রহেন্দ্র সংখ্য করিখনেন্দ্র ধর্মা করিখা अस्य-সামে গিনি কথন ড'লেপান কপ ানে গা विनमन कविपारणम, टिमिटे विलाजन अव-গ্ৰহ আন্ত্ৰে, উড় প্ৰহায় নিভত কৰে अवस्य का वर मा भागा हो। कि तहा का व्यवस्थात खेलत क्य अंतर करहे दे अर्जुनेत्रत अर्जुन भूति शमनकत्त्र। भाषात् भाषा राष्ट्रा राधकात শাসসহত্র দ্বাপ নিধানি ও উৎক্রট আগ্রাপের বিষয় বিদ্যাল আলে এবং ডাল পাবলছৰ ক্রিয়া কোন নুন্নান্তন কর্ম শ্রম সূত্র করিয়া मधी इंडेटड १८१३, घटनद ता साहित यरीव পথ অবলয়ন করিটা আয়া করে, ভালাকে আ-(मान अरमारमञ्जल) श्रमाक्षमाद द्वार ক্ষেপ করিতে হয়ন। দে ব্যক্তি স্ক্রি প্রকা एक मध्यभी भारत कतिया आगरण आने-বন সাথক কবিচে সমর্থ হয় এবং তা ছার্ট্ জীনের প্রকৃত জীবন ব্লিয়। পরিগা ावक इंडेटल गाँदन ।

## विकान वार्छ। প্ৰদাৰ্থ বিদা

১- ৷ মদীর জোগার ভাটার সহিত চল্র स्टर्माह स्य मध्यमध्य सम्बा निवक आहरू, ভাষা একৰে প্ৰায় অংকেই অবগত ইই-ধাছের । কিন্তু চল্ল ভূষা ভিল বালুর সহিত-পারে জোরার ভাটার সহস্প আছে, ভাহা-ब्रुष्ट अमाद धार्थ इंदर्शा । तथारह । लखन, লিবরপুল এবং ব্রেষ্ট প্রভৃতি স্থানে উক্ত विषरात्र वात्रसत्त भत्तीका बाता ज्ञित दरे-ग्राटक, या शबन तम ऋतन बाग्नु विकुष्ठ छ न-খু হয়, তৎখালে সেই স্থানে জোয়ারের किकिर आहर्षाव इरेग्रा शास्त्र वदः ज्वन

बमीत कल दक्षि हरेता शांदक। आहे क्ष यक শংহত ওভারী হইতে থাকে, ততই ছো-য়ারের হাসতা হয়। অতথ্য পদার্থবিথ পাধিতেরা অনেকে স্থির করিয়াছেন, যে এ-ক্ষণে বায়ু পরিমণে যন্ত্র দ্বার। দ্বোরার ভা-টার হাস রুদ্ধি জানা ঘাইবেক।

Museum of Science and Art

२--। व्यानितिका मिनीत अविधि क्री-ােক বস্ত্র ধৌত করিবার এক সুলভি উপায় প্রাণাকরিয়াডেম ৷ সারাদের সভিত যৎ-কিঞ্চি সোহাগা মিপ্রিত করিয়া দিলে ত-দ্যুরা অতি সহজে এবং উৎক্র**ট রূপে বস্তু** বৈতি হাতে পারে ৷ এছা সের সাবানের ষ্ঠিত আৰু অৰ্দ্ধ ছটাক সোহাগ। মিপ্ৰিছ ক'রতে হয়, তাহ' হইলে যে রক্তর ধৌড ক-বিচে প্রচামের সাধান লাগিড, সেই বস্ত ভাষায় আন্ধেক সাবান ছাৱা স্থানটা ৰূপ শুদ্র হুইয়া উঠে ৷ তালাতে পরিক্রমেরও জ্ব নেক লাঘৰ হয় ৷ প্রায় চারিভার্গের একভার মাত্র শ্রম করিলেই কার্য্য সম্পান্ন হয়। বিশে-ষতঃ পুরের(জ্ঞাক,রে যে সকল বস্ত্র ধৌত ক্রায়ার, ভাষা স্পশ্ করিলে রেসমের ২ জের নাম মধ্য বোধ হয়।

৩-- | কাফি নামক কলের একটি আ ক্র্যা হার প্রকাশ পাইয়াছে। অনেকে পরীক্ষা করিয়াদেখিয়াছেন, যে ভাজা কাফি हाता जन्म अकात छुर्गक धकवादत मधे र-ইতে পারে ৷ কেনি গৃহ মধ্যে নাংসাদি . প্রিয়া ভাষা অভান্ত জুর্গন্ধময় ইইলে প্র যদি সেই গৃহে অন্ত্রের পরিনিত ভালা কাফি লইয়া কিয়ৎকাল ইতস্ততঃ ফেরান যায়, তাহা হইলে ভূৎক্ষণাৎ সে গৃহ হইতে সমুদায় জুৰ্গকাদূরীকৃত হইয়া যায়। পৌ-ময়, গোমূত প্রভৃতি মলিন পদার্থের ছুদ পরিস্কার গুরিবার সময় তাহা হইতে যে বিষম জুর্গজ্ব উপিত হইয়া সমুদায় বাটীর বায়ুকে দূষিত করিতে থাকে, উক্ত পদ্ধতি অনুসারে সে ভূর্যক্ষও নইট হইতে পারে 1 কান্ধির বীজ প্রথমত শুদ্ধ করিয়া উদুখলে তাহাকে বিলক্ষণ করিয়া চুর্ণ করিছে হয়, পরে সেই চর্ণ করা কাঞ্চিকে কোন্ लोह शास्त्र छालिहा कास वर्व कंत्रित श-

ত দারাকর্ম সক্ষা হইতে পারে। বিখন কোন বাটি কিয়া অন্য কোন প্রশস্ত **স্থানের জর্মজানটি কবিবার প্রয়োজন হ**য়, তথ্য কোনপাত্রে কিঞিং ঐবপ কাফি চর্ণ লইয়া সেই প্রশস্ত স্থানের সর্বাত্র ভ্রমণ ক-রিলেই সুন্দর রূপে কার্যা দর্শিতে পারে।

\* Laciary Gazette.

**উদ্ভিদি**।।

১-–। আমিরিকার দক্ষিণাংশ, রইটের এক প্রকার রতন চা একাশ পাইয়াতে [ ৰক্ষ প্ৰভাগত ঐচ। প্ৰস্তুত হা, ভাগাৰ মাম বেট। এতকেশীর প্রেকে গেঞ জনে করিয়া চিরভার জল কবিহার কবিবা থাকে, অংমিরিকা এদেশস্বছ কে লেংকে সেইবল করিবা জ মেট নালক বৃত্য চা বাব্ছার করে। তার্স আপানর সাধারণ সকল লোকে সহা আমোদ করিরা ঐচা সে-वस करता अवर अ है। स्मान स्मान वर्ग ऋतु क ছা প্রিয়া (ম কেন্দ্র করে প্রায়োগ করি পরা প্র-বিমাণে ভাষ্য জালপান করে। উভাচার পত্রকে অধিক কল উক্ষ জনে রক্ষা করিলে (भ अन्न विशक्त कृष्ण वर्ग करेगा ७८५ । अ চার ভল শ্যান্স বৰ থাকিতে সেবন করি-লে উচার অংশাদ প্রায় চীন দেশীর চার মত বোৰ হয়। আমিরিকা দেশীর লোকে উহার বিস্তর গুল বণন করে ৷ স্পিও সে नकत नजा भा क्या किन्द्र छेश्य कर्यक्रि প্রণ নিঃসংশয়ে স্থির হইয়াছে। উহার বি লক্ষণ রেচকতা ও মুত্রোৎপাদকতা শক্তি আছে এবং উহার অহিফেণ্ডে মতও জ त्मक छ। आह्य । छेश (मवन कतिता अ-সুস্থ ব্যক্তির নিডা উপস্থিত হয় এবং নি-ৰ্ববীয়া শরীরে বীর্যোর সঞ্চার হইয়। থাকে। অহিকেণ ব্যবহার করিলে পরে ভ:হা ভ্যাগ করা যেমন কঠিন হয়, উক্ত চাকিছুদিন বাবহার করিতে আরম্ভ করিলেও তাংগ করা সেই ৰূপ কঠিন হইয়া উঠে।

রসায়ন ও ধাতু বিদা৷

>—। य मिविलि जाट्य हेिळ शृद्ध अल्- : মিনম্ধাড় ঘটিত করেকটি অন্ত বিষয় প্রকাশ করেন, এক্ষণে ভাঁহার দ্বারা দার अकि जाक्यं विषय जाविक उ हरेबाट ।

সিলিকন ধাতু স্বৰ্ণ রৌপ্যাদির ন্যায় এক-টি ৰাচ পদাৰ্থ বলিয়া প্ৰানিদ্ধ আছে , কিন্তু পূৰ্বাবিধি অনেক পণ্ডিত অনুমান তরিয়া আসিতেছেন যে সিলিকন অন্য কোনপু-থক বস্থ নাহ, উহাকেবল সনীভূত কাৰ্কা-छै झिरिष पिरिशि माहान से नितिकन ধাজ চইতে কিনিগ প্রকার ভারান নির্গত कहितारमभावेतारस्य । छन्य अक अकात এই দুভু শা লকা, া হাত পালাভু কঠানি প मार्थ (एकम कर्या गानेएक भारत ।

 । কার্মানিক এসিও নাম চ পদার্থ স্থা-ता भारतकारचक छ०७ है त्वणाय भाष्य छ-हैव व डिलाब व्येगार । डिक्क श्रम में भावा শার্বি বিক দৌৰ লাও ১৯ ব্রিটেগর ভাষেক क्रिकेट करेशायहरू हराय । सामग्र अक अन महरूव नाउन प्रदास, ह्या अपन्यहा हो। हात भरमत छाद्दिन्द राभना । अ भारताम ह्या ৰ হওলয় থিনি খেই বেলন স্বলে ইন্তৰ পদাৰ্থ বংলাৰ কৰাটে আবিনায়েই ভাছাৰ (म **(वमना** ७ अव्मन्नहो हुत इंग्रेस्ट्रिल ।

> to indier's Journal भारतीयकान विशा

>--- । वाशिक्षिका शहर ४ रेग्य ५ (सर ४ टन এক অন্তুৰ্গ ধন্ত কোনে পোরিত কর, ভাষা র ভূন। আক্ষম সমত সভাম কেই কথম मक्ति (१८४० मार्डे ) 👑 कम्म, घटाय वशः-क्रम अति एक वयः छेश्या छछि तुक्तिम्डी হাৰিপোর উভয়েৰ পশ্চ ২ ভাগে ভটতে এক প্রকার মাংস উৎপ্র ৮ইরা শুরীরের নিসু দে-শকে একর সংসুক্ত করিলা রাসিলে । কি ख कहिरमद व उपन अखक पर्मान कानात-ও সহিত কাহারও কোন সংযোগ নাই। মু र्थ मानिका श्रीता सन्द्रक १३ ग्रन्थ अस्ति मन भूगात छेष्कं छात्र व्यवधातकत गड्य. तक्वल নিমুদেশ সংযুক্ত মাজা কিন্তু উহাতে ভাशक्तित काशत कान क्या नारे, छ-ভয়েই সর্বাদা ক্ষত্রেক জীড়া করিতে পারে: कर्मित উश्पित्वत डेड्राव महीत्रक এমনি আশ্চর্যা কৌশলে সংযুক্ত করিয়াছেন যে, তদ্বারা উহাদিগের গমনাগমনের কোন वाषाक यत्तेना। यथन अकृषि कना भू-

রোভাগে চলিতে থাকে, তথন ভং পশ্চাতের কন্যাকে দেরিলে বোধ হয় যেন পুরোগানিনী কন্যা উহার কটিতে রজ্জু বন্ধন করিয়া নাড়াজলে উহাকে পশ্চাং ভাগে আলক্ষা করিয়া লইয়া যাইতেছে ৷ উহাদিন্তার উভ্নের কোন ভিন্ন সক্ষণ ও ভিন্ন কায়া না থাকাতে পণ্ডিতরা ভালদিংকে বস্তুতঃ এক প্রাণী বলিয়া অবধারিত ক্রিয়াছেন ৷

Englishman, 2nd Oct. 1855. [\*[\*\*\*[47]]

১—া শাক্ত কোটি নামক স্থানের প্রশিক্ষ বিদ্যালয়ের অধ্যাপক বাই রোট সাহেব নাড়াঁ পরীক্ষার এক আশান্য যন্ত্র প্রস্তুত করিরাছেল 1 প্রথমত এক থানি কাঠ করের উপর হস্ত রাধিয়া ঐ মন্ত্রের ওক প্রাস্থ নাড়ালৈ সংলগ্র করিয়ালৈ ইয়া বিশ্বের এক প্রাস্থে নাড়া সংলগ্ন পরা থাকে। করের এক প্রাস্থে নাড়া সংলগ্ন বরা থাকে। নাড়ীর হচ গতি হইতে থাকে, ভালার প্রশান্ত উপর এক একটি বজরেথ। পরিত হয়া বলি নাড়ীর অবস্থা উরম্পাতে ভালা হলাল রেগা অবিশ্ব অব্যাত্র স্থাকে ভালা হলাল রেগা অব্যাত্র স্থাকে ভালা হলাল রেগা অব্যাত্র স্থাকে বর্গা ভিন্ন ভলাল রেগা অব্যাত্র স্থাকির ভলাল রেগা অব্যাত্র স্থাকির ভলাল রেগা আরু হয়, মতুবা সম্প্রাক্ত রেগা ভিন্ন ভলাল রেগা লিয়া ভিন্ন ভলালা রায় !

>— ৷ সদশ্টি অগ্নি গাতিরেকে জল
উক্ষ করিবরে এক অভুত মন্ত্র প্রস্তুত চইঘাছে ৷ ঐ গল্পে যাগ্নি দিতে হয় না, যন্ত্র
ঘ্রথ করিলেই কল আপনা হইতে উক্ষ
হউতে থাকে ৷ এই যন্ত্র সর্ব্বর প্রচারিক
হলৈ যে নিশ্প কার্যোর অনেক সুবিধা ও
সংসারেব বিজর উন্নতি হইবে জীহার স্বদেকত নাই ৷

৩—। আমিরিকার অখংপাতী বসটন
নগরের বর্লি নামক একজন সাহেব জাজ
নির্মাণ করিবার এক উৎকৃতী শস্ত্র প্রস্তুত
করিয়াছেন ৷ বিলক্ষণ কর্মীঠ স্থান্তর এক
দিবসের মধ্যে যে-প্রকার জাক ৩০ ৪০ টার
ক্ষাকি মুড়িতে পারে না, উক্ত বন্ধ দার।
সেই প্রকার জাক এক ম্বনার মধ্যে ১০০ টা
দোড়া বাইতে পারিশেক এবং ভাষা ইন্তের

আপেকা অতি পরিক্ত ও দৃদ্দইবিদ্ধা আনেকে বিবেচনা করিয়া দেখিয়াছেন যে ই ১ চাতে পরিকাম ও বায়ের লাঘ্য হইবেক। উক্ত যক্তের কৌনল অতি সহজ্ঞ এবং তাহা কথন সংস্কার করিবারও প্রযোজন হয় না। উহার ছারা বক্ত কাল সুন্দর কপে কর্ম চলিতে পারে। যক্ত ত্থাপন কবিবার জন্ম কোন বিস্তৃত স্থানের বা বাছলা বায়েরও আবশ্যক করে না। যক্ত ক্রমণ প্রথলন করিতে শেবায় হয়, তাহা শীঘুই ঐ যক্তের ছার। উৎপন্ন হইয়া থাকে।

Chamber's Journal

# ধর্মেতে অনুরাগ।

যে প্রকার দিগুনিবারক চুত্রকমণি অ-ভাবে পোত নাজ ছালা দুন্তীণ সহাৰ্বাদি 🗟 दीने इ.३११ माहिलय कठिन, धर्म 🔏 কুপ নণির সাধায়। বারিবেরকে সংসার বুংবাল পার হওল। সেইৰপ দ্বন্ধা ভ-ভারৰ সংবৃদ্ধ উদ্দেশ্যের দার্গণেল থাকিণ: ওধুর্মাতে অবলম্বন করিয়া সংসার যাতা 🌬 র্বাচ ক্রামনুব্য জাতির নিতাম কর্ত্রা। বি-· ख्या व माला तम बाकि कार्य मेश्राहत के काल জ্যোতি চৰুশ্ৰ করিতে মাপার, ভাছার সং রব্যে এচও সুর্যাও ত্যোমর। জগতের বিভুষাত প্রকাশ পাঃ না,ভালর চকু চৈত্রন্য পুনা ধূরার পুতলিকার অকিব ন্যায় হয় ৷ अंतरमरातृत् कि**न्**रिनीयः श्विमकेषम् इ-ইতে ভঃমৃত আনন্দ বারি যে জন পান মা-করিয়াছে, তাঁহার আাহা চিরকাল ভূষিত शांदक, जाहात कथनरे माखि हरा ना। विवश ভোগে যে পরিমাণে সুখ লাভহয়, সেই পরি-মানেতঃধের সহিত্ত সাকাৎকার হইরাপা-কে। মনুবোর অবস্থা পরিদোলক স্বৰূপ। মুনব্য কথন সৌভাগ্য প্রাপ্ত হইয়া উন্নত পদে चारताश्व कतिरहरू, कथन छुःभ बाता चाकुछ इरेश नीव्यक्त अखिब इरेक्ट्र । কিন্তু অক্ষয় ধর্ম ভূমিতে ধ্য ব্যক্তি আপ-নার প্রতিষ্ঠা করিতে সমর্থ ছইরাছে, ক-বিষ্কালেও ভাহার ক্রমার প্রনাইন

ক্রিমত তল্পদলী জানীগণ কর্মন অ-ক্র্ম্পরত্ব পরিত্যাগ করিয়া করশীল বিষ- , ুর্নী সুখে রত হয়েন মা। মধ্যাহ্ন কালীন প্রচণ্ড প্রভাকরের উজ্জুল জ্যোতির সহিত তাম-भी निमात शामाजात्मात्कत वतः छ-পমা হইতে পারে, তথাপি ধর্ম জনিত বি-শুরু সুখের সহিত কখন অস্থাী কণ্ড-शुद्र विषय भूत्थेत मामृशा हैहे (ङ शात ना । পরস্তু ইন্দ্রির উপভোগ জনিত সুগেতে যে মন প্রিত্থ হয় না, ইহা আমা-দিপের পরন স্বৌভাগোর বিদয় বলিতে ব্টবেক, কেন না ইন্দ্রিয় জনিত সুখ ভোগে মন পরিত্র হইলে ত্রন্ধানক বস পানে ক্ষ ব্যক্তি প্রাসী হইত। নহালা পুক-বেরা অলোকসানানা শ্রত্ব পভাবে পা-প পিশাচীর মোহিনী মুক্তিতে থিমুখ্ব নাহ-ইয়া ভাষাকে অভিক্রম প্রকাক সমুদ্র ক: ১ মনা জলদীশ্বৰে সমৰ্পণ কৰিয়া ধৰ্মের শ্বল্পন্ন হন এবং সেই নিতা জান প্রি পূর্ব অমতানন্দময় পুরুবের ঘটিত দংবাস कहिलाई मुथी शालन। य छानावान् भू-तुरसद भाग अक्षा विश्वक छारवत छेनस हत, যে, গে গরম করেনের ইছোর তিনি স্ট হ-ইয়াছেন, যাঁহার দৃষ্ট প্রাণ বায়ু ভাঁহার জাঁ-ব্ন গায়নের আত্রুল ছইয়াত্তে, ঘাঁহার অক্ষ্য ভাগোর হটতে তিনি প্রতি দিন আহার আছেদন প্রাথ হইয়ানিরত প্রতিপালিত হইতেত্নে, যাহার অভিন্তা শক্তি শশত বুদ্ধি বুত্তি সমস্ত অধিকার করিয়া সঞ্চি-র ভাৎপর্যা কৌশল ও আহা মহস্ত গৌ त्रव मूथ खड़को मिं तृकि कदिए मक्तम इ-इशाह्मत, ভবিষাতেও সেই ক্রণারানপু-রুবের আশ্রয়ে তাঁহাকে কাল যাপন করিতে হইবেক, সে ব্যক্তি আর অনিতাচার কো-হৈ পতিত হইয়া নৃত্য করিতে বা পাপের মোহিনী মুর্ত্তিতে মুগ্ধ থাকিতে কথনই ইচ্ছা করেন না৷ আপনার আ্মাও আশা ঈশ্বরেতেই সমর্পণ করেন এবং তিনি স্বার্থ পরতাকে বিসর্জন দিয়া আপনাকে -এই বিশ্বাজোর এক কৃত্ততম প্রজাবলিয়া त्नहे द्वाकाविद्वाक महादादकत अनुकार का-. (र्राप्त आत बहब श्रास्त्र फाहात अनाव आ-

প্তির জনা কুনাকুলিত থাকেন এবং তিনি অ-তে, অপার সুখ ও অপার শাস্তি লাভ ক-রেন !

#### SPIRITUALISM.

This theory teaches that there is a natural supply for spiritual as well as for corporeal wants, that there is a connection between God and the soul, as between light and the eye, sound and the ear, food and the palate, truth and the intellect, beauty and the imagination, that as we follow an instinctivo tendency, oboy the body's iau, get a natural supply for it's wants, attain health and strength, the body's welfare, - as we keep the law of the mand, and get a supply for its wants, attain wisdom and skill, the mind's welfer, so if, following another instanctive tendency, we keep the law of the moral and relations mature, we get a supply for their wants anoral and religious truth; obtain peace of couse nee and rest for the soil the highest moral and religious welfare. It teaches that the world is not neaver to our beaties than God to the soul, " for in 11m we live and move, and have our being As we buve bodily sense, to lay hold on matter, and amply boddy wants, through which we obtain, "toturally, at needed material things, so we have cointral mealties, to lay hold on God, and in pry spaninal wants; through them we obtain all a edect piritail thanks. As we observe the conditions of the body, we have nature on our side, as we observe the Law of the Soul, we have God on one side. He taparts trut's to all mon who observe these conditions ;-- we have direct acress to Hier, through Reason, Conscience, and the religious Sontoacut, jud as we have direct necess to nature, through the eye, the em, or the hand. Through these from is, and by means of a law, certain, reorder and universal as gravatation. Cool inspires non makes reveation of truth for is not tenth as cruch a phenomenon of God, as nection is of unitto the refere, of Gast he omnips sent and omniactive, tras inspiration is no miracle, but a regular ande of C. A. action on conscious sperit, as gravication is a ancons, i a, matter it is not a rare condesses som of God, but a universal upliffing of man, to dean a knowledge of duty, man is not sort awar, saleide of henoull, to amend documents, for the ody ruse of faith and practice. the Word is very might him, even in his heart, and by this Word he as by try all documents whitever. Inspiration, like God's onnipresence, is not librated to the few writers claimed by the Jews Christians, or Mahamatans, but is coextensive with the energy As God Fils all space, so all spirit, as he influence. and construing unconscious and recessitated manter, so he inspires and hetps free and constitues than

This theory does not make God he died, partial, or caprations. It exalts man. While it be more the excellence of a edigion, gomes of a Money or a Jesus,—at does not proteomes their character monstrones, as the supernatural are function, as the rationalistic theory; but natural, hannan, and beautiful, revealing the possibility of mankond Prayer, whether conscious or spontaneous, a worst or a feeling, felt in gratifulde on point are, in joy or resignation, is not a sollloguy of the man not a physiological function, nor an address to a decreased man, but a sally into the infinite spectral world, whence we bring back light and truth. There are windows towards dod, as towards the world. There is no interestion, angel, mediator between man and

God; for man can speak and God here, each far-himself. He esquires no atomate he pleas for men, who need not pray by attorney. Each coul stands close to the omnipresent God; may be this beautiful prosoner, and have familiar access to the Albertalico; god fruits at first-hand from its Author. Wisdom. Righteomonoss, and bove, are the Spirit of God in the coul of man problemes these are, and me many and me man problemes there are not go and me man for the first of could be formed to their power, there is in proportion to their power, there is in privation from God. Thus God is not the author of confusion, but of Concerd;—Falth and Knowtedge, and Revelation and Resson, tell the same tale, and so legitimate and confirm one another.

God's action on matter and on man is perhaps to save thing to Him, though it appear differently notified to us. But it is plain, from the nature of things, that there can be but one kind of Inspiration, as of Truth, Path, or Love. It is the direct and intuction perception of some truth, either of teacht or of sentiment there can be but one said of Inspiration, it is the action of the highest within the soil, the divine presence importing light; this presence us Truth, Justice, Holmess, Love, unfining itself into the soil, giving it new hie; the breathing in of Deity; the in-come of stod to the soil, in the fiven of Truth through the discission and Religious Sentiment of Inspiration confined to the obegins in matters alone? Most surety not. Is Newton less suspired than Simon Peter?

Now, if the above views he true, there seems ao ground for supposing that there are different kinds or modes of inspiration in different persons, rations, or eges, in Minos or Moses, in Gentiles or Jean in the first century or the last. If God be infinitely perfect. He does not change then his mode, of action are perfect and unchangeable. The table and not transcended. As God less left no and any management of the hold of the area of Reason, Conscience, Religion, so be leaves none destitute of mapiration. It is, therefore, the light of all our being, the background of all human faculties; the sells mean by which we gain a knowledge of n! at is not seen and felt; the logical condition of all sensual knowledge; our highway to the world of spirit. Man cannot, more than matter, exist without that. Inspiration, then, like vision, must be everywhere the same thing in kind, however it differs in degree, from tace to rac', from man to man. The degree of inspiration must depend on two things; first, on the natural ability, the particular intellectual, moral, and officious endowment, or genus, wherewith each man is furnished by God; and neal, on the use each man makes of this endowment. In one word, it depends on the maris Quantity of Bring and his Quantity of Obedience.
Now as men differ widely in their natural gudowments, and much more widely in the use and development thereof, there must of course be various degrees of inspiration, from the lowest sinner up to the highest saint. All men are not by birth capable of the same degree of inspiration; and by canonic, and acquired character, they are still less capable of it. A man of noble intellect, of deep, capanie of it. A man of more incentive, to seep, rich, honevolont affections, is by his endowments capable of more than one less gifted. He that perfectly knops the soul's law, thus fulfilling the conditions of inspiration, has more than he who knops it imperfectly; the former must receipe all arous as unpersons; one towner must receive hi his soul can contain at thet stage of his growth. Thus it depends on a man's own will be rest the sure, to what extent he will be impried. The man of humble gifts at first, by faithful obedwade, may

attain a greater degree than one of lives out who neglects his talent. The appeales of the New Yorkment, and the true maints of all countries are proofs of this. Inspiration, then, is the consquence of a faithful use of our faculties. Racon man is its subject.—Good its source—Truth its only lest. But as truth appears in various modes to us, higher and lower, and may be superficially divided, according to our faculties, "at" truths of the Scauses, of the Hadiguous Nentiment, so the perception of truth in the highest mode, that of Reason, Morals, R ligion, is the most of Wisdom, Goodness, Religion, the most of Truth, in the highest modes, as the most inspired.

Now universal and infallible inspiration can of course only be the attendant and result of a perfeet fulfilment of all the laws of mind, of the moral and the religious nature; and as man's faculties are limited, it is not possible to mun; a foolish man, as such, cannot be inspired to reveal Wisdom, nor a wicked roun to reveal Virtue, nor an impions men to reved Religion. Unto him that hath, more is given. The post reveals poetry, the artist art, the philosopher science, the saint religion. The greater, purer, loftier, more complete the character. so is the in piration; for he that is true to Conscience, faithful to Reason, obedient to Religion, has not only the strength of his own virtue, wisdom, and piety, but the whole strength of omnipotence on his side; for goodness, truth, and love, as we conceive them, are not one thing in man, and another in God, but the same thing in each. Thus man partakes the drone na-ture, as the Platonista, Christians, and Mysacs cali it. By these means the Soul of all flows into the man; what is private, personal, peculiar, ebbs off before that mighty influx from on high. What is una real, absolute, true, speaks out of his lips, in rud , honely attorance, it may be, or in words that burn and spackle like the lightning's flery flash.

This inspiration reveals itself in various forms, modified by the country, character, education, pe-culturity of him who receives it, just as water takes the form and the colour of the cup into which it flows, and must needs mingle with the impurities it chances to meet. Thus Minor and Moses were inspired to make laws; David to pour out his soul it pions strains, deep and sweet as an angel's pealtery; Pindar to colebrate virtuous deeds in high heroic song ; John the Baptist to denounce sin ; Gerson and Lather and Böhme, and Fenelon and Fox, to do each his peculiar work, and stir the world's heart deep,—very deep. Plate and Newton, Milton and Isaiah, Leibnitz and Paul, Mozart, Raphael, Phidiss, Praxiteles, and Orphous, receive into their various forms the one spirit from God most high. It appears in section not less than in speech;—the Spirit inspires Dorcas to make custs and garactest for the poor, no less than Paul to preach the Gospel. As that bold mare innerly has said, "there are diversities of gifts, but the same spirit; diversities of operations, but the same God who worketh all in all." In one man it may appear in the iron hardness of reasoning, which breaks through sophistry and prejudice, the rubbish and diluvial drift of time;—in another it is subdied and softened by the flame of offsection: the hard iron of the man is malted, and becomes a stream of persuasion, sparking as it rum.

Inspiration does not destroy the man's freedom; that is left fistingers by offenders; Is does not reduce all to one uniform standard; but Habaktuk speaks in the own way, and the sea of the total

his. The man can obey or not-obey—can quench then grint or feed it, as he will. Thus Jonah flees from the duty; Calchas will not tell the truth\_till of danger; Peter dissembles and lies. Each of these men had schemes of his own, which he had carry out, took willing or not willing. But when the sincere man receives the truth of God into his soul, knowing it is God's truth, then it takes such a hold of him as nothing clse can do. It makes the was strong—the timal brave; men of slow tongue become full of power and persuasion. There is a new soul in the man, which takes him, as it were, by the Lair of his head, and sets him down where the idea he wishes for demands. It takes the mont away from the half of comfort, the society of his friends; makes him austere and lonely cruel to lamselt, if need be; sleeple s in his vigitance unfaltering in his toil; never resting from his work. It takes the rose out of the check; turns the men in or himself and gives him more of reath. Phen, in a porter fancy, the man sees vision - has wondrous revelations; evere mountain then loss -God barns in every bash, flames out, in the crimson cloud, specks in the wind, descends with very dove, is All in All. The soul, deepwronger in his intense struggle, gives oni-ness to its thought; and on the trees and stars. the fields, the stoods the corn ripe for the sickle, on man and woman, a sees its burthen writ. The Spirit within constrains the man. It is like wine that both no sent, the is full of the God. While he muses, the fire burns; his boson, will scarce hold his heart; he must speak, or he dies though the earth quake at his word. Pauld flesh may resist and Moses say, Soul eyes. Go, and I will be with thy mouth, to quicker thy tody tengue." Strucking Jereanah. effences c and thand, recoils before the fearful work "The desh will quover when the pineers teac." He say . I cannot speak; I am a child" But the the go at Soul of All flows into him and says, " Say not I am a child; for I am with thee thy lours like a man, and speak all that I command thee Be not afraid at men's faces, for I will make thee a defenced eng. a column of steel, and walls of brass. Speak, then, against the whole land of sinners; against the kings thereof, the princey thereof, its people and its priests They may fight against thee, but they shall not prevail, for I um with thee." Devils recopt the man with the terro, of defeat and want, with the Hopes of elfish ambition. It avails nothing ;-Get-thee-behind-me, Satan " brings augels to help Then are the man'. lips touched with a live coal from the alter of Touth, brought by a Seraph's hand . He is baptized with the spirit of fice. His countenance is like lightning. Truth thunders from his tongue - his words eloquent as Persuasion; no terror is terrible -- no fear formidable. The penceful is satisfied to be a man of strife and contention -- lus hand against every man, to root up and pluck down and destroy, to build with the sword in one hand and the trowd in the other. He came to bring peace, but he must set a fire, and his soul is straitened till his work be done. Elisha must leave his oxen in the furrow; Amos desert his summer fruit and his friend; and Bohme, and Bunyan, and Fox, and a thousand others, stout-hearted and God-inspired, must go forth of their errand into the faithless world to accept the prophet's mission, be stoned, hated, scourged, skin. Resistance is acting to these men;—over them steel loses its power, and public opproblum its chame; deadly things do not harm thom;

they count loss gain, shame glory, death triumph.
These are the men who move the world: -they have an eye to see its follies, a heart to weep and bleed for its sin. Filled with a Soul wide as yesterday, to-day, and forever, they pray great prayers for sinful man;—the wild wall of a brother's heart. runs through the saddening music of their speech. The destiny of these men is forecast in their birth; -they are doomed to fall on evil time and evil tongues, come when they will come. The Priest and the Levite war with the Prophet, and do him to death: they brand his name with infamy; cast his unburied bones into the Gehenn's of popular shame; John the Baptist must leave his head in a charger: Sociates die the death: Jesus by miled to his cross; and Justin, John, Huse, and Jerome of Prague, and millions of hearts stone as these, and as fell of God, must mee their last prayers, their admonition, and farevelt lessing, who the crackling snap of fagots, the hiss of quarring flesh, the impotent tears of wite and child and the mad roor of the exulting crowd. Every path where mortal feet now trend secure, has been beaten out of the hard flint by prophets and hole men, who went before, us, with bare and blee ling feet, to sme o'h the way for our reduction tread. It is the blood of prophets that seftens the Alpine to the their bones. are scattered in all the high places of markind But God lays his bur hens on no volgar men -He never leaves their souls a prey. He paints Elysium on their dung on wall. In the purp lons chamber of their heart, the light or Falth shines bright and never dies. For such as are on the side of God, there is no emore to Figur.

The influence of God in Nature, in its mechani cal, vital, or instinctive action, is brantiful. The shapely trees, the leaves that clothe them in leveliness; the corn and the cattle, the des and the flowers; the bird, the insect, moss and stone, fire and water and earth and air; the clear blue sky that folds the world in its soft embrace ; the light. which rides on sain pinions, enchanting all it touches reposing barmless on an infent's eyelid, after its long pass in from the other side of the universe sall the core noble and beautiful; they adnounds while the delight us, these allent counsellors and saver ign aids. But the inspiration of God in rian, when fur fully obeyed, is nobler and far more beam, fel. It is not the passive elegance of unconscious things which we see resulting from man's veluntary obedunce: that might well charm us in natura; in man, we book for more. Here the beauty is intellectual, -the beauty of Thought, which comprehends the world, and understands its laws: it is roral, -the beauty of Virtue, which overcomes the world, and lives by its own laws; it is religious, -- the beauty of Holmess, which rises above the world, and lives by the law of the Spirit of Life. A single good man, at one with God. makes the morning and evening our soom little and very low. It is a higher mode of the divine Power that appears in him, selfconscious and self-restramed.

Now this inspiration is limited to no seek, age, or nation. It is wide as the rooted and common as God. It is not given to a few men, in the infancy of mankind, to monopolize inspiration, and but God out of the seed. You and I see not been in the detage and decay of the world. The stars are beautiful as in their prime; "the most ancient Heavens also fresh and atrong;" the bird merry as over at its clear. Heave. God a still svery, where in mature,—abeths line, the pole, in a mountain; or a moss. Whereave a heart legale with life where faith and Reason utber their oracles.—

mere also is God, as formerly in the heart of seers and prophets. Neither Gerizim nor Jerusalem, nor and prophets. Neither terrain for seriusation nor the soil that Jesus hieserd, so hely as good man's heart, nothing so full of God. This inspiration is not given to the learned alone, not to the great oil were, but to every faithful child of God. The world is close to the body; God closer to the soul, not only without but within, for the all-pervading current flows into each. The clear sky bonds over each man, little or great, let him uncover his head there is nothing between him and infinite space. So the ocean of God chereles all men; uncover the sold of its sensuality, schishness, an -there is nothing between it and God, who flows into the wan a light into the air Cercuin as the open eve drinks in the light, do the piece in heart see God: and be that lives truly fees thin as a presence not to be put by

But this is a doctrine of experience, as much as of photaet reasoning. Every man, who has ever prayed preced with the mind, prayed, with the heart, greatly and strong knows the truth of this doctrine, well omed by pours sonds. There are hours, and they come to all mean when the hand of destry seems howy upon us; when the thought or il required the experience of many verst are bure, and the sense of our or a degradation, come over us. In the outward and inward trule, we know not which was to turn; the heart faints, and is see by to perish. Then, is the deep silence of the some also the name turns inward to God,

or the some at or the roan starts inward to cook, light, comfort perce does, upon him. His troubles they are total shocker, in his sandar, his cindities or jedensine, hope, franchonours, diagraces all the unites total buildings of his, are lost to the ciew, diminished and then hid in the rusts of the odley he has left betaled and below him. Resolution comes wer had with its vigorous wing, Truth is clear as mora; the could in fight rushes to its And The mestery is at an end

It is no sulgar superstoring to say that men are aspired in such times. They are the accitime of Then we he whole years through in a few numers and afterwards, as we journey on in life cold sact dosts, and travel-worn and faint, we look to that moment as a point of light; the cemenben as of it comes over us like the music of our home hourd in a distant, land; - tike Elisha in the fable, we go lone years in the strength thereof. It travels with man a great wakening light, a pillar of fire in the dartness, to guide us through the tonely pilgrange of the These hours of inspira-son, like the flower of the absertee, may be pure but are yet the celest, blossoming of man- the result of past, the prophecy of the luture. age not numeror to say many happy is he that

has ten auch in a year, yes, in a lifetime.

Now to many men, who have but once for thiswhen beaven lay about then, in their unlang, befere the world was too much with them, and they had laid waste their powers, getting and spendingwhen the look book upon it, across the dreary guif where Honoue, Virtue, Religion, have made ship wreck and perished with their youth, -it seems visionary -a shadow, dram-like, unreal. They count stonary -a studios, dream-tree, unreas. They count it a phantom of their inexperience—the vision of a child's fines, raw and unused to the world. Now, they are waser. They couse to believe in impiration;—they can only credit the saying disks priests, that long upo there were impired men, but none now; that you and I must how sor faces to the dust transition like the Riind-moves and the Bastle. dust, groping like the Blind-worm and the Bestle

- not turn our eyes to the broad free Heaven; that we cannot walk by the great central and celestial light that tool made to guide all that come into the world, but only by the farthing-candle of tradition, poor and flickering light, which we got of the priest, which casts strange and fearful shadows around us we walk, that "leads to be wilder and dazzles to blind." Also for as if this is all!

Rut can it be so F. has ! Minity had saide Itomnipresence, retreating to some fittle corner of space? No! The grass grows as green, the birds chirp as gaily, the run shince as warm, the moon

chirp as gaily, the sun shines as warm, the moon and the stars walk in their pure beauty, sublime as before, morning and evening have lost none of their loveliness - not a jewel has fetten from the diadem of night God is still there, ever present in matter, cise it were not; else the serpont of Pare would coil him about the All of things, would crush it in his remorseless grasp, and the hour of rain

strike creation's knell

Can it be, then, as so many tell us, that God, transcending time and space, immanent in matter, has forsaken man: retreated from the Shekingh in the boly of bolies to the court of the Gentiles? that now He will stretch forth no aid but leave his toffering child to wander on, and the palpable obscure, eveless and (atherless- without a path, with no guide but his feeble brother's words and works -groping after God it haply he may find him -and learning at last, that he is but a God atar off, to be approached only by or diators and atterneys, not face to there as before? Can it be, that Thought shall be through the tleaven, his pinion glittering in the ray of every star burnished by a million cans, and then come drooping back, with ruffled plume and thagging wing, and eye that once looked undaxied on the sun- now spiritless and cold -- come back to tell us that God is no Father b. that he wells his face, and will not look upon his child, his erring child? No more can this be true! Conscience is still God-with-us; a Prayer is deep as ever of old - Reuson as true, Religion us Faith still r agins the substance of things hoped to, the evidence of things not seen. Love is yet mignes to cost out fear. The soul still searches the deeps of God; the pure in heart serexhausted, nor the well of La'e drunk dry. The Tather, in near us as ever- else Reason were a fraitor. Morality a hollow form, Religion a mockery, and Love an hideons lie. Now, as in the days of Adam, Moses, Joses, he that is faithful to Renson. Conscience, and Religion, will, through them, receive inspiration to guide him through all his pilgrinage.

### 01010 Min 1010

### বিজ্ঞাপন

আগ্রামী ২ পৌৰ রবিবার প্রাত্যকালে गांत्रिक खान्नमान रहेदाक।

ক্ষাত্র ভারবোধিনী পরিকা, কলিকাডা নগরের যোজালাঁভোছিত ডক্তাবোধিনী সভার কার্যালয় ঘই-তে প্ৰতিয়াৰে প্ৰকাশিত হয়।—ইহার মূল্য এক টাঞ্চা ) श्लीव मनिवात मध्य ३৯३३। क्रांत्रशकाकः ६३०।



ভদেব নিতাং আনমনস্ত্ৰং শিবং স্বতমুং নির্ব্যধ্যেক্ষেবাহিঠীয়ং সর্বাহাপিস্কানিষ্ত্র্দ্রাপ্রাহসর্কা বিং সক্ষশক্তিমুং ধূবং পূর্বিতিঃ

' কৰিব প্ৰীতিভাগ প্ৰিষকাৰ্য্যসাধনক তদুপাদনমেব।

### বান্সমাজ

আগামী ১১ মাছ বুধবার সন্ধান হতীর সময়ে বড়বিংশ সাহ্ৎস্তিক ব্রাক্ষণমান হইবেক।

> প্রকারন্দতন্ত্র শর্মা গ্রিহাবেশর শর্মা উপাচার্য।

### বন্ধভাত।

হে পরমান্মন্! কেবল তোমাতেই আ-মারদের মুখ। ভুমিই রস স্বৰূপ ভৃপ্তি হে-ভ ৷ আমারদের আত্মা ভোমার সহিত প্রেম পূরিত সুধারস পান না করিলে কিছুতেই আ-র তৃপ্তি লাভ করে না। যতক্ষণ আমরা জ্ঞান-চকু ভারা ভোমাকে সাক্ষাৎ দেখিতে পাই এবং প্রীতি ও উৎসাহের সহিত তোমার গু-ণ কীৰ্ত্তন ও ভোমার প্রিয় কার্য্য সাধন করিতে थाकि, उडकारे आमता जीवत्मत्र पूर्व मुध প্রাপ্ত ৽ই; কিন্তু যত কাল আমরা তোমাকে বি-শ্ব ত হইয়া জনিত্য সংসারকে নিত্যজ্ঞান করি-য়া বিষয় মদে মন্ত থাকি, তত কাল জ্ঞামারদের জীবন হুথা ও রুসশুনা হইয়া যায়। তে। সার रेकात अनुवाती श्रेता मनन अकार्या कतिएक থাকিলে সামারদের স্বান্ধা যেন প্রকৃত সু-मृत्यम्। व्याख हरेशा चाष्म-क्षत्राम लाख करत. কিন্তু যুধন আমুৱা ডোমা হইতে ঐচাত হ-दे ७ मान सम लाकानुहात्मत्र वनीकृष रहेत्रा

কর্ম করি, তথ্ম আমারদের দূবিত ভ্রান্ত চিত্ত প্রকৃত সস্তোধ ও শান্তির সহিত কথনই সাক্ষাৎ করিতে পারে ন। । হে করুণানিধা-ন! তুমি আমারদের হিতের নিমিত্তে এই নকলমন বিধান করিলাছ যে তোমাতেই আনারদের সুখ, তোনাকে প্রাপ্ত হইলে আ-मात्राहत मन्त्रीम् ७ (मो) हार्यात मीधा थीत्क सा। जूमिरे कीत्वत शहम जम्श्रम्; ভোমাকে প্রাপ্ত হইলে আমরা সকল লোক প্রাপ্ত হই ৷ কে দ্যাসিজ্যো! আমরা মহা-মোহে মুখা হইয়া তোমাকে সারণ করি না, বিস্তু তুমি আমাঃ দিগের প্রার্থনার অ-পেকানা কৰিয়াওবে অজত্র করুনা বারি বর্ষণ করিতেছ, তাহার কি শেষ আছে? অত্যন্তন-প্রিয় পিতা বার সম্ভানকে যে ৰূপ প্ৰবন্ধে লালন পালন করেন, ভুমি আমারদিগকে তাহা হটতে অনম্ভ গুণে স্নেহ ও বড়ের সহিত রক্ষণ ও পালন করিতেছ। প্রত্যেক স্থ্য কিরণ, প্রত্যেক বারুর হিলোল, আমীরদের প্রত্যেক নিশ্বাস ও প্রত্যেক নিমে-ৰ তোমার যে কভ মহিনা প্রকাশ ক্রিভেছে, তাহা স্থির করিতে পারি না৷ তুনি আমা-तरमत धर्मात अवर्षक, त्व धर्मा प्रकल जुर छत् মধু স্বরূপ। যে বাজি একাত্তে ভোষাকে প্রার্থনা করে, তুমি তাহাকে অমৃত রূপ সু মধুর ধর্মোপদেশ প্রদান কর, ভুমি ভাতার कुछात्छि नकन पमन कत्र, छाहात्र म्नद्रः

পৃषिदी गहेट७ उस्ट कतिया धटर्मत दम-আবাদ কর এবং তেমার পৰিত্র সম্বাদেষ যোগ্য কর: সে ভোমার অন্ কীৰ্মন ভোমার মাখ্যা প্রচার, তোমা-র অভিপ্রেস্ড সন্ত্রা সাম্ক্রান্স সাধন ক-বিষ্যা মানসালে লিজার করিতে ব্যক্তের <u>ক</u> গ্রসালন প্রামার প্রসাদে জোনার প্রতি প্রতিদ্র অসভ আরি আমার্লিফার চিত্ত ভাষিকৈ বলং বৈধন লাবিক ব্রিয়া আমা-র্দিশারে ওারনের সাফ্ষা সাধন করিয়ালে, এক্ষাং পুথান, চা, ভোমার এতি অবিচলি-क शोरण, परिशाहककारा ताम कामात्र<mark>मित्</mark>रार ন মালেপ্ত ও গাঁৱন অবস্থা হয়ে বু জুমি দয়া মারিণা আমাণাদভার ভারেরে উপ্ত সঞ্চল মাহল কুনিব বৃদ্ধি । কুলেনা সন্তব্যক্ত হো জোকার বাজানাবর্গর দ্বাস্থা দুর ৮ লেকের্গর-শিক্ষী ভূজা সূপে শ্রিবিত কণ্ডারে আমত ফল জনত সান প্ৰাড ভোগ কৰিটা চার ভার্য ১টতে পারি ৷ ময়ল পুরিত লো-মার বিশ্ব বাহা ৷ ভ ডিটকে দেখিয়া আমারাদ গের মন বেন ভেমেরে এতি প্রতিনিধ্তই धानिक थाएक। यथन अधिकिन मिनाकत निर्मित्ते गाइन क्षकाशिष्ट करेंगा कारियाङ-কে আনন্দরভিতিক করে: যথন চক্রমার বিমল কির্ব জগতে সুবাব্যনক্রিতে থা কে, মধান আনংখ্যা নমাত নাওলা উদিত হ-ইয়া তোমার অনন্ত বিদের ও অগীন মহি-মার পরিচয় ভালোক ও দ্যালোকে প্রচাব করিতে গাবে: যখন ঝায়ু খনবঢ়ত প্রবাহিত হইয়া আমারদের নিখান প্রস্থাস ক্রিয়া সম্প্র ম কড়িকে থাকে, দ্বাদি কালে যখন ভোমার কৰুণা ঝাঁৱ বিশ্ব বিশ্ব লিশিয় ৰূপে পরিণ্ড শ্রীয়া ভূমি। সকলকে **তথ্য**রাও শ্রাণা-লিনা করিতে গেকে; আসরা যেন সেই সেই কালে ভোষার মঞ্লম্য মধুব মূ-र्खि ष्यवत्नाकम करिया धम शम कारव भू-লকিত হইতে থাকি এবং ডোমাকে মনের সং হিত প্রতিও কুতভতো সহকারে নমস্কার করি ৷ সংসারের আপাতভঃ তুঃখ জনক ঘটনাতেও যেন আমরা তোমার গুঢ়ম-क्रवास्थित वका कतिए नमर्थ रहेता অস্তঃক্রা ভোমার মহিমা গাবে পরিপূর্ণ

হইয়া আর্নজ্ব বিশ্বর্জন করিতে পারি। আমরা যেন তোমাকে কখন বিশ্বত না হই, এবং তোমাকে অতিক্রম করিয়া কোন চিন্তা ও কার্যা না করি ৷ হে ধর্মাবহু! তুমি আমা-রদিগের মনকে ধর্ম দারা প্রশান্ত কর, প্র-তোক মনন ও ভাবনা প্রিশুদ্ধ কর. তোমাব প্রতি প্রতি ব্রপ পুষ্পা কলিকাকে ে স্টুত কর। আমর! বেন ভ্রমেতেও মনে স্বার্থ সাধন, ইন্দ্রৈ চরিতার্থতা, পরদ্বেষ ও প্রানিই চিষ্টা না করি এবং ভোনার প্রতি ও লোকের প্রতি অফণাট প্রেম দ্বারা যেন আ-মার্মিন্মের মন সকাক্ষণ পরিপূর্ণ থাকে। কি श्वाप्त तथा । कि एक स्थाप्त निक्राह, कि ख्वान শিক্ষা, কি হিভানু হান, সকল কৰ্মেতেই যেন ভোদার ইজার অনুনামী হইরা নিস্তুত থা-কি ৷ কোমার ইজানুকাণী কর্মা করিতে যেন আমারদের **দৃঢ় অনু**রাগ ও আন্তরিক ব**তু এব**ং আক্রাদে হয়; আনরা দেন কর্মের কল লা-ভের প্রতিবিশেষ আক্তিফানা রাখিয়া তোমীর ইচ্চা সক্ষায় ও ভোষার প্রতি আ মারদের কর্ত্তব্য সাধন করিব, ইহাই আমা-ুদিলের লক্ষ্য হয়। হে জগদাশ । আমার্দি-গকে ভোমার অভিজ্ঞেছ পুনা পথের পথিক কর, এবং অমস্ভকাল স্থায়া সেই ব্রহ্মানলে-র—দেই প্রেমান**ন্দের উপযুক্ত কর, যাছার** নিনিত মন ৰূপ্তে হটতেছে।

# ঈশ্বের মহিমা।

স্থাতে এই নকত প্ৰভৃতি সমস্তম-हान् श्रमादर्थत ज्यान्ध्यां श्रीत्रशांकी मृज्यला त्य পরম পুরুষের সুগভীর জ্ঞানের পরিচয় প্র-দান করিতেছে, স্বনীমগুলস্থ এতোক উদ্ভিদ পদার্যও প্রতিক্ষণে সেই বিশ্ব রচয়িতা পরম বশরণের মহিমার সাক্ষ্য দিতেছে ৷ উদ্ভিদ সম্বন্ধীয় পরমান্ত্র ব্যাপার সকল আলোচনা করিলে এক কালে বিমোহিত हरे ए इस । द्क लंका ७ जुन छल्या विश्विष পদার্থের মধ্যে জগদীশার যে সমস্ত সুক্ষানু-সুক্ষ কৌশল সম্পাদন করিয়াছেন, ভাছার मध्यम् कोमल भर्गात्माहमा क्या मुद्ध था-

कुक के जमल श्रेष में अञ्जी से कुल विषय ज-कल वर्गन कतिया अकियान कारण एक रण-व कतिरुक्त मर्थ इब्रागी।

উদ্ভিক্ত, यांवजीये कीव कहा कीवन अ-ৰূপ এবং এপ্ৰদিনী 🕮 স্বৰূপ। এপ্ৰানিবী তণ শন্য সরুভূমির ন্যার এককানে উদ্ভিদ প্রাণ হীন হইলে যে কেনে প্রকুরে জার জার আর এখানে জীবিত থাকিতে গারিতনা, গ-হাকোন মৃত্তিও তর্গারাপ্রমণে করি-বার অবস্যাক করে না, এবিদ্যা সহত্রেই স-कटलत रवापधाम स्हेटक शास्त्र अवश्वाधानी-श्रुत गामि श्रुविधी मध्याहरू सामा छ। छ। स छे-श्चिम शमार्थ धावा विकृषिक मा कति एवन, छ।-হা চইবেণ্ড যে ভূম ওলের কিছা মার্ট সোল-ষ্ঠাথীকিভানা ভেল শন্য বৃত্যু ভূনির স-ভিজ সুক্ষেত্র হরিত ধর্ণ শস্য কেটেরর অ-থৰা উংক্লা কুসুম ঘতিকা পরিপূরিত ম-নোহর প্রপোদ্যানের জুলনা ক্রিয়া দেখি-(सहै ८४ दिना मकासः अविश्वभ इहें ८७० ્લુદિવીત મહા હમાં લગ્ન મહિ, સ তথায় কোন একপ্রকাষ উদ্দিদ পদার্গ বিদ্যাদান নাই এবং এপ্রকার কোন উদ্ভিদ্ধ নাই যে তদ্ধান্ত্র কোন একরাপ ত`তের বিশেষ উপকা-র দার্শতে নাপারে৷ যে কোন উদ্দিদ পদার্থকৈ আমবা অহান্ত অপকাৰী 🥱 বিব জুলা মনে করিয়া নিভান্ত অঞ্চল করিয়া থাকি, ভালাও অন্য জীবের গ্ কে অমৃত স্বৰূপ ২টয়া অসাধারণ উপকার **छेथ्लान्य करत्। क्लामीयरत्त्र** व!कः ८२-মন বিস্তাৰ, ভাঁহার মহিমাও ফেইৰণ বি-চিত্র। তিনি পশু, পক্ষী, কীট, গতঙ্গ এভতি অসংখ্য জীবকে বছপ্রকার শক্তি যেগের বি-**বিবিধ কামন: বিধান করিতেছেন** এবং স্থা র অচিন্তা শক্তি দারা সকলকেই সুগে রা-থিয়াছেন। কোনকোন রুকের সুরুস ও সুমেটকল ভোজন করিয়া বছপ্রকার প্রাণী প্রাণ ধারণ করিতেছে এবং কোন কোন র ক লতাদির **সুগন্ধ পুষ্প** সৌরভ আঘাণ করিয়া আমরা মহানন্দে পুলকিত হইতেছি, কোন বৃক্ষের সুশীতল ছায়াতলে উপবে-শন করিয়া তপন পীড়িত পথ আন্ত প্রিক থণ খীর খার অঞ্চলভাপ ভূর করিতেহে

এবং কোন রুক্ষের শাখা প্রবাদির মনোহ্র ভাব ও অবিরল পত্র শ্রেণীর শ্যানল কাস্কি जन्मभीन करिया (लाइक अनुभाग साम मुश লাভ করিতেছে। জগদীশ্বরের কি আশ্চ-যামতিমা এবং কি অপেকপ ভাষার র্টনা! (य जगन्छ पर्माना উद्धिमक: जि. कल भू-ষ্পাপতাদি দ্বারা আমাদিবের কোন সুখ উ দ্বৰা হা, এবং ৰে সকল **অ**গ্ৰহ্ম মগৰা তুণ স্থান্যান্ত আময়া নিভা নিভা গ্ৰহণে নি-পাড়ন কবিয়া ঘডাগ্রাভ করি, তালরাও উৎ-कृष्टे छेटल है जारधन उपन रहेगा महाम वि-শেষে আমানিমেয় এত কল্যাণ সাধন ক রে পে এক এক স্বয় তলেদিনকে প্রা-ণদাতা পরম জিতেনা বলিচা বেশে জয় 1 হা জগদীশ্বং তেখেরে খহিমা কত বোষণা করিব এবং ডোমার দরার পার কি একারে আপুৰইবা তোমার মহিমা গাচারে খা-छ इन छेड़िका धन है। अनवान से इनके की (वज्ञ नाम विद्वजन। क्षित्र) मिम्म शुक्रक স্কির কলাৰে দাখন কবিতে লত রহিনাতে: सङ्कितात्म हम्म संगति इतन अधारतः নে আমটিলাগর সুখ সাবন করিবার ভার গ্রহণ করিতেতে ৷ কেই বসন্ত ভালে পু**ল্পিত** हरका स्रोत मरमाहत रक्षाका । छटकुछ रसी-वाज बाहा आयामिकाहक आकरा मुश्र विकs-, করিভে*তে,* কেই গ্রান্থকালে মুপ**ক্ সু-**বিষ্ট কল প্রদান পরিলা বল প্রকার জাব জন্তকে মুখা কলিছেছে। এমন কাল না-ই. যে 😢 কালে অংশর. কোন প্রকার উ-हिम शमार्थ ३३(७ मुश आल न(इहे 1 हे. হার মধ্যে বিশেষ আশ্চয়ঃ এই যে এক ঋ-ত্তে যে রফের পুল্প শোভা সন্দর্শন ও সু-ঢারু কুসূম ঘাণ এহণ করিয়া আমরা সুধ লাভ কারতেতি, অনা ঋতুতে পুনধার সেই রক্ষোৎপন্ন সুস্বাত্ত ফলভে:জন কবি-য়া তৃপ্ত হইতেছি, এক খততে যে তরুর ক-ल ज्यून कतिया मुर्थी इंडेट्डिइ, अड्विट्स বে সেই তরুর সুলিশ্ধ ছায়ায় উপবেশন ক রিয়া শরীরকে শীতল করিতেতি। জগ-দীৰরের এইৰূপ আশ্চর্ঘ্য কৌশলানুসা-त्र नाना का **डोग़ डेस्टिए बा**द्रा च्यायदा चि-য় ভিন ক্তুতে ভিন্তিয় ৰূপ আনন্দ্লাভ

করিষা সম্বংসর কাল সুখেতে যাপন করিতেছি, শতএৰ উদ্ভিদের গুণ ও ধর্ম আলোচনা করিলে যে কেবল তাঁহারই অনস্থ
মহিনা প্রকাশ পার, তাহার আর সন্দেহ
নাই 1

इन्हु शप सूथ नामिका विभिन्ते महत्त्वन মনুষা পশাদির অঞ্চ প্রভাঞ্চের সুকৌশল পর্যালোচনা করিলে আমাদিগের মনেজ-গদীশরের যাদৃশ মহিমা প্রতিভাত হয়, অ-চেত্র উদ্দিদ পদার্থের জন্ম স্থিতিওপাল-নের বিষয় বিবেচনা করিয়া দেখিলেও আ-মরা ভাষার তাদৃশ গুণগ্রাম সনদর্শন ক-রিতে পাই ৷ ইয়া সামান্ত সকলেই मिरिटाएन या दीक श्रमुदिक इरेटिए, ক্রে সেই অঙ্র দলিতও পুলিপত চট্যা कन मानो इहेर हर अवर कारतर ह विश्व ह इ-ইয়া প্রকাণ্ড বৃঞ্জ্বপে পরিণত হইতেছে। বী-জ ওরকের এই সমস্বাপার স্কাদা সন্দ শ্ব করিয়া আপাতত অনেকের ফনে আ-শ্চয়েরিদের সঞ্চার হয় নাবটে, কিন্তু যিনি উহাব অন্তৰ্ভ নিগৃঢ় তত্ত্ব সকল বিশেষ বিবেচনা করিয়া দেখেন, ভাছাকে বিকারণিবে নিক্র মগ্রুটতে হয়। বিষম বিশায়কর শত শত ঐলেকালিক কৃহন জী-**फा अट्यका উদ্ভিদ সম্বন্ধীর উল্লিখিত** ব্যা-পার সকল অধিক আশ্যা জনক।

কেবল বীজেতেই :য জগদীশর কত ঞ-কার আশ্চর্য্য কৌশল সম্পাদন করিয়াছেন এবং কি অচিস্থ্য উপাব দ্বারা ভাগতে রক্ষ্য কবিভেছেন, ভাষা বর্ণন করিবার শব্দ माहे: (काम करलंद अफ वीक प्रविदन ভাহার সধ্যে সঞ্জীবনী শক্তি বস্তমান থাকা আপাতত কোন মতেই সক্ত বোধ হয় না, কিন্তু সেই বীজের সভিত সরস নতি-কার সংযোগ ছইবামাত্র যেন মৃত দেহে की व मक्षादब्र नगात्र मिर्ट एक कर्तात वीक সজীব হইয়া উঠে। তথৰ আর সেবীক স্থির থাকেনা, বোধ হয় ধেন আছুরিত হই-বার উপায় ধেষ্টা করে এবং তৎকালে সেই বীজ গুৱঁত্ব সঞ্চিত রুদ্ধ আপনা হইতে এমন ভেজ খারণ করে, বে সেই ভেজে বীজে त्र शाजायत्रन एक दिशीर्न ब्हेजा यात्र

এবং উহার অধোদ্রাগ হইতে অভিত্-ক্ষা শিকা ও উর্জ্ঞাগ হইতে অঙ্কুর নি-ৰ্মত হয় । উদ্ভিদসম্ভবিৎ পণ্ডিভেরা পরীকা করিয়া দেবিয়াছেন কোন শস্যের বীজ ভাতি দৌর্ঘ কালের পুরাতন হইলেও যদি তাহাউপযুক্ত কো-ত্রে বপন করা যায়, তবে সেই বীজ অস্তর্গ-ত সঞ্চীৰনী শক্তি স্বীর ক্রমপ্রকাশ করিছে আরম্ভ করে। বীজ অঙ্গুরিত হওয়া এবং সেই অঙ্কুর বন্ধি ফু হইয়া পরিণামে প্রকাণ্ড বৃক্ষ হওয়া অভ্যাশ্যম ব্যাপার ৷ একটি বীক্ষ অঙ্রিত হ্ইবার জন্য যে সমস্ত মহৎ মহ-ৎ পদার্থের একত সংঘটন হওয়া আবশাক করে, তাহা স্মরণ করি**লে স্বাক্ ছইতে হ**র। জন বায়ু তেজ মৃত্তিকাও অলেক প্রভৃতি কতিপয় পদার্থের সাহাগ্য ব্যতিরেকে কো-ল শুনা মরুভূমিতে যেমন কোন প্রকার শ-সা উৎপন্ন হয় না, বায়ু বজিত স্থানেও সে ইপ্রকার কোনবাগ উদ্দিদ পদার্থ জন্মিতে পারে না৷ বীল অঙ্রিত হইবার জন্য আলোক এবং উত্তাপেরও যে নিতান্ত প্র-য়োজন হয়, ভাহারও প্রচুর প্রমাণ প্রাপ্ত হওয়া নিয়াছে। যে বীক অঙ্কুরিত হই ধার জনা যে পরিমিত উদ্ভাপের আবশ্য-ক হয়, ভাহার ফান উত্তাপ বিশিষ্ট স্থলে ক-খনই সে বীজ অঙ্কুরিত হইতে পারে ন। এবং আলোক শুনা অন্ধীভূত কুপ কিয়া थनि गत्था एव ममल छेल्डिक छेर्पन इंग्र, তাহারা কমিন্ কালেও স্বজাতীয় সুন্দর বৰ্ণ প্ৰাপ্ত হয় না৷ অতএব বিলক্ষণ প্ৰতিপ-न हरेर ७ (इ. (ग जिकालक क्रामी अत अक्रम সংসারের সমস্ত ভাবী প্রয়োজন অবগত इरेशा उद्वभरगाशी नकत भवार्थ मृष्टि क-রিয়ীছেন। কি আশ্চর্যা তাঁহার মহিমা এবং কি অস্তুত তাঁহার শক্তি! একটি তৃ ণাকুর উৎপন্ন হইবার জন্য কতগুলি ম**হৎ** পদার্থই অহনিশি নিযুক্ত রহিয়াছে! জল বায়ু তেজ মৃত্তিকা প্রভৃতি প্রত্যেকে স্বতন্ত্র পদাৰ্থ হইয়াও তাঁহার শাসন ৰলে সমৰেত চেন্টা ৰারা সংসারের উন্নতি সাধন করিতে षविकास नियुक्त बाह्य, जरमारत्रत पणि

সামান্য বাপোর ক্ষেত্র ভাষার ইছা দেনীপামান প্রকাশিত রহিরাছে এবং প্রত্যক পদার্থই তারার জ্ঞান, শক্তি ও শুভাভিপ্রার ব্যক্ত করিতেছে। অতথাব বিবিক্তাচিত্ত ধীর ব্যক্তিরা সকল কৌশলের মধ্যেই তাঁছাকে প্রত্যক্ষ সন্দর্শন করিরা অনুপ্য আনক্ষ লাভ করেন।

প্রত্যেক বীজেরই উদ্ধাণ ও মধা এই किन निर्मिष्ठ जाश चर्छ, छेहात मर्या छे-দ্ব্লিগ চইতে অস্ব উৎপন্ন হয়, অ-খোডাগ হইতে ফুক্স শিকা নিগত হইয়া मिक्का श्राटम करत अदर मधा (मर्ग अक প্রকার রস সঞ্জিত থাকে, যে পর্যান্ত র-কাসুর স্বায় শিকা দারা মৃত্তিকা হইতে রুস আংক্ষণ করিতে সক্ষম নাহয়, সে প-যাত এ বীজ আপনার গরত রস দারা অক্রকে পোষণ করে। এই অন্ত প্রণা-লী ক্ৰমে বীজ অন্ধ্রিত হইয়ানানাজ ভী-য় রক্ষের উৎপত্তি হয়, কিন্তু বিশেষ আশ্চ-ধ্য এই যে কথন এই প্রণালীর কোন বাতি-ক্রম উপস্থিত হইলে ঈশরের আজ্ঞানুসারে অচেতন উদ্ভিদ পদার্থ যেন সচেতন জীবের ন্যার কাষ্ট করিয়া তাহার প্রতিবিধান ক-রিতে প্রবৃত্ত হয়। ক্ষেত্রেতে বীজ বপন ক-রিবার সময় শকল বীজ সমভাবে পতিত হয় না, কোন বাজ প্রকৃত ৰূপে উদ্বি ১-ইয়া পতিত হয় এবং কোন বীজ নিপরী-ত ভাবেও ধরাশায়ী হইয়া থাকে কিন্ত যে সমস্ত বীজের অঙ্কুরের ভাগ অধা-मित्क ও শিकात ভাগ **উদ্দিকে** इहेबा यात्र, **मिरे ममल वीज अक्**रिक हरेवात अस्ड ব্যাপার সন্দর্শন করিলে হতচেতন হইতে হয়। উচ্চ হইতে শিক। সমস্ত নির্গত হ-ইয়া বক্রগতি দারা ক্রমে অধ্যে দিকে মৃ-দ্ধিকাভিমুধে গমন করে এবং অধা হইতে অঙ্কুর উৎপন্ন ইইয়া ঐৰূপ বক্ৰ ডাবে উ-জ্যভিত্ব হয়৷ উহারা কেহই কথন স্ব স্থান বিশ্বত হয় না৷ কেবল বীজ অকু-तिष इहेवात नमस्त्र उहे स अहर उन छेडिम मकरमत वहे धकात मरुष्टरनत नाम কার্য্য প্রকাশ পায় এমত নহে, অপরাপর चातक मनारहरू छे छे होता हिन्दावीन ची-

বের ভুল্য কার্য্য করিয়া থাকে ৷ মৃত্তিকার माथा तृक-मूल हालिक इटेवात नमध यनि ভাহার সন্মুখে প্রস্তরাদি কোন নীরস কটিন পদার্থ প্রাপ্ত হয়, তবে সে মূল আর সে দিকে গমন না করিয়া সার্বতী সরস ম জিকা**ভি**মুখে গতি করিতে আরম্ভ করে ৷ হায় কি **আ**শ্চর্যা ব্যাপার! বপন কালে ক-য়টা বীজ প্রকৃত ভাবে ক্ষেত্রে পতিত হয় ? বোধ হর এক শত বীজের সধ্যে একটাও यथोर्थ करण काज्य इस कि मां, अडबार वी-জ অস্কুরিত হইবার সমার যদি শিকাও অক্র আপনা হ্ইতে সাস দিকে গমন করিতে নাপারিত তাহা হুটালে কত শত সারবর্তী উর্বরো ভূমি নিয়র্থক হইলা প্রিত থাকিত। কত সহত্র সহত্রেরুবাকের সম **ক্ষত** পরিশ্রম বার্গ হইত এবং কত কেটি কোটি জীব অয়ভাবে প্রাণ্ডাপ্ত করিত -হাজসদীশা অচেতন উলিদ গদাল স बक्षीत এই সমস্ভ অভত कार्या সন্ধান क রিলে কে আরু তোমাকে বিধাত হটয়া থাকিতে পারে: কোনু যুত্টনা ভোমার ভাবে মুখানাহয়! ভুনি গদিটেভনাশুন্য উদ্ভিদ্বৰ্গকে এই সমস্ত আশ্চয়; শক্তি व्यमान ना क्रिट, इत कि चात क्येनडे তোমার অক্ষয় চাওার স্বরূপ বসুফারা এ-প্রকার শ্রাপ্র চ্ইছে পারিত*়* আন-তএব তোম'র স্থিমাই আমাদিগের স-কল কল্যাব্যের মূলবিরে ১

বীজ অঙ্কু বিত হওয়। নেরূপ অঙ্কুত ব্যাপার, সেই অঙ্কুর হইতে প্রকাণ বৃদ্ধ উৎপর হওয়াও তজ্ঞপ আশ্চন্যের বিষয়। বীজ অঙ্কুরিত হইলেই হালার শিক। সকল মৃতিকা প্রবেশ করির। রস আকর্ষণ করিতে থাকে, কিন্তু তংকালে ঐ অতি শ্বন অঙ্কুর সমার রস জীর্ণ করিতে পারে, এই নিমিত্ত যাবে অঙ্কুর সমারিক বন্ধি ফুনা হয়, তাবহ আহার নিমু দেশে ছিলাকার ফুইটিপত্র সংলগ্ন থাকে, ঐ পত্র হারা শিকারুইট সমন্ত রস জীর্ণ হয়, কিন্তু আছুর কিঞ্জিৎ রুদ্ধি প্রাপ্ত হইয়ারস জীর্ণ করিবার উপযুক্ত প্রাপ্ত হইয়ারস জীর্ণ করিবার উপযুক্ত শহরে আর উক্ত দিলের প্রয়োজন ইইলে আর উক্ত দিলের প্রয়োজন

থাকে না বলিয়া ভংকালে ভাছা আপনা হ-ইতেই : শুদ্ধ '9 শ্বলিত হ্ইয়া যার। অনস্তর ্দই অক্র দিন দিন যত উন্নত ও বর্জিত চট**্চ জারম্ভ করে, তত**ই তাহার রস শো-ধ্য ক্ষতিবার শক্তি অধিক হয় এবং পরি-নামে সেশোজন বিস্তৃত মহা বিটগী স্ইলে-ও মুলাএভাগ দারা মৃহিকা হইতেরস প্র-েশ করিয়া ঐ রুক্টের সমস্ত শাখা পলব ও অন্ত পুজ্ঞাদিগকে পোষৰ ও বছৰি করে ! কি শ্ভিদ্বারা (সংশ্রণ তাল দেবদায় এভৃতি মহোচ পাদপ সকল মূল কারা মৃত্তিকা হ-ইতে রুগ অংক্ষণ করিয়া আপনাদিগের অ-প্রভাগ পর্যাত্ত সংগ্রালন করিতে সমর্থ হয়, ভাষা কাছার সাধ্য যে ছির ৰূপে নিদেশ কবে, সেই এক অনন্ত শক্তিমান্ ঈশবের ×িক ভিন্ন ইহাব প্ৰতি আৰু অন্য কোন कात्व ई फ्लाइकिंड इश्रमा।

পশু পক্ষী এড়তি জীব জন্তু নে প্রকার व'शु अवा विकास करना सम्राश कडिया জীবিত থকে, উদ্ভিদ কাভিত মেই কণ বারু হার, ভাপনাদিগোর শাস প্রখাস কিচা भिकाह कतिया जीवन शाक्यकतत । शस्य शकी ওড়তি দীৰ ক্ষমুৰ নিশাস কৰোঁ নিকাচ জ-না জগদীশ্বর ঘেনন তংলাদিনকে নাশিকা প্রদান করিয়াবেদন, উদ্ভিদ জ্ঞাতিকেও পর-্মেশ্র সেই কপ বায়ু গ্রহণ করিবার উপায় প্রদান করিয়াছেন। সুশোভন শ্যামল পত দারাযে কেবল রুফ লতাদির শোভা মাজ वृद्धि हत् क्षा बरह, के मण्ड शत बादा छै चित्रक वर्ष अर्त्वाकत्वाभरमानी बांबू अहर क-बिट्ड प्रपर्व इस्र । (काम **अकात উ**ख्डिम চ্চতে ৰাগ্নুৱ সংযোগ এককালে রহিত ক-ব্রিয়া দিলে পশাদির নাায় সে বৃক্ষ প্রাণ ্ড্যা-গ করে ৷ যে স্বলে সত্ত সুক্ররংপে হা-म् अक्षः लिङ इत्, (महे चटाई द्रकाणि छेखम ৰূপে বন্ধিত ও সতেজ হইতে পারে। উ-ক্রিদের শাখা পল্লব শিরা পত্র প্রভৃতি কো-न शमार्थातकरे अशमीयत तथा मृष्टि करतन नाहे, छेहाता প্রভ্যেকেই এক একটি নির্দ্ধি-छ श्राज्य माध्य कवित्रा शास्त्र ।

সামান্য তুণ শস্যাদি হইতে রস **রক্ত** ও মাংসাদি উৎপদ্ধ হইরা পক্ত শন্ধী প্রভূ: তি জীব জন্তুদিগের শরীর ধারণ ও পুতি
বর্জন হওয়া যেমদ অন্ত ব বালার, জল বায়ু প্রভৃতি কেবল কভিপুর কা পদার্থ বারা
উদ্ভিদ জাতির প্রাণ ধার্মী ও পুতি সাধন হওরাও সেই কপ আশ্ভর্মের বির্ময় । উদ্ভিদ বর্গ কেবল এক মৃত্তিকা হইতে রস পার
ও শুন্ম হইতে বায়ু ভক্ষণ করিয়া জীবিত
থাকে।

এক ক্ষেত্ৰ হইতে কটু, ভিজ্ঞা, ক্ষায়, জ্ঞ মু, মধুর প্রভৃতি মানা রুসেরই শাসা উৎ-পল হইতেছে ৷ এক ক্ষেত্ৰ মধ্যে ইকুও যে মৃত্তিকার রস পান করিতেছে এবং যে বায়ু সেবন করিছেছে, আমাতকও সেই রস ও সেই ৰায়ু ভাৰা ঐতিপালিত ও বিভিত হউতেকো কিন্তু ইছাকি অন্ত ব্যাপার रय উशक्तिशत मर्दशः श्राटकारक से स का তীয় পৃথক্রস প্রাপ্ হই ছেছে। ঈক্ষও প্রবিষ্টরস নধ্র হইয়া নিগতি হটতেছে, এবং আমু:ভক শর্রি গত বস অমাস্থাদ উ থপাদৰ করিতেছে। এক ফের**মধা**টে কি প্রকার কৌপলে বিষলতাও সুধাসম মুখাছু রুকের উৎপত্তি হয়, ভালা কেনে ৰূপেট ভান গোচর করিবার শক্তিনাই। উक्तिम शमार्थत् मत्ता এ श्रकात चारमक मः তাও বৃদ্দাদি দৃষ্ট ছঙ্গাছে যে ভাগাদিগের পরস্পারের কল পত্র ও পুস্পাদির আকারের किছू मांज दिल्क्क गा नाहे, अक्ष तम ७ ७० वि-यरवत चाक्तर्या हेटत विरमध मृष्टे इस् । এक বৃক্ষে বিষের গুণও অন্য বৃক্ষে অনৃতের পুন প্রকাশ পার। এক বুকের কল ভক্ষণ क्रिल ভागत मुश्रिके मुचाकू तम बाता শরীর শীতল হইয়া উঠে, অন্য রুক্ষের ক্স ভোজন করিলে তাহার ছুর্গন্ধ ও বিশ্বা-छ तम बाता छमतन्द्र अवामित छम्तीर्व ह-ইয়াৰায় "একাকার এৰপ ছুই লভা আছে বে তাহাদিগের মধ্যে একটির মূল স্কন্ ক-রিলে অমনি তৎকণাৎ প্রাণ ভ্যাগ করিছে হর এবং অপর সভার মূল জ্জাণ করিলে कान नावाक करते ना । উद्धिन नवकीत **এই সমস্ভ নিগুড় ভত্ত্ কে चित्रः कतिद**ः? अवर कांन् वास्त्रिह वा ज्ञेचरवृत्र व्यक्तित भाइ भारेद्ध ?

डेखिटनत वरण विखात रुउनाउ जन्म व्यान्द्रर्शात दिवत কোৰ কোৰ বুকের বীজ পদুপ্ত পক্ষী ভার। নান। शास्त्र वाश्व इस वर्ष कोन दूरकर दीख ন্দ, নদীর স্ত্রেইত ভাসিয়াও নানা দে-শে উপনীত হইয়া থ কো এ প্রকার ब्यानक वृक्त ब्याह्म, य जानात बीक शरी-পক হইলে আপনা হইতে বিকিয় হটয়া ক্রোশাস্তরে পতিত হরঃ কোন বীজের উপরে পক্ষীর পক্ষেপ্র নার চুইটি গুবয়ব খাকে ভাহারা ভদ্যরা বায়ু সহকারে বছ-দুর গমন করিয়াপতিত হয় । এই বা-নান: প্রকার উপায় ছারা নানা জা-रीक (मण (मर्गाचत वा:-তীয় রকের श इहेशा खोश खोश वश्टणत हुन्नि कटेंद्र ade अमरशा जीत्नव छेलकीना वर्डे । मर-সারের মঞ্ল সাধন করিতে নিযুক্ত গাকে। ষদি কেবল মনুষ্যকে পরিশ্রম করিয়াই সক ल (नर्भ भवन अकात्र উদ্ভिद्ध हे छैथ्प छि क-বিজে হটত, ভাছা হটলে অসংখ্য প্রকার জীব ভদ্ম অন্নাভাবে প্রাণভাগে করিত এবং তাহা চহুলে মনুষ্যও কথন এফণ্কার মত অনায়ানে অপ্যাপ্ত ফলম্লাদি প্রাপ্ত হ-ইতে পারিত না৷ জগদীশরের আশ্চয্য কৌণলের কথা কভ বৰ্ন করিব, কোটি শ্-তাব্দেও তাহা শেষ হট্বার নহে।

পরম কৌশলকারী পর্ক্ষ পুরুষ উদ্ভি-জ্ঞ বিশেষে কৌশল বিশেষ প্রকাশ ক-রিয়া আপনার মহিমা আরও বিস্তার ক-রিয়াছেন। যে সকল লতা দৃত্তর বৃ-ক্লাদির নায় নিরবল স্ক্রা করং ডিতি করিতে না পারে, সে সকল লতার শ वीद्र अक जान्हर्या को मल पिरिक भा-ওয়া বারা ঐ সমস্ত লভার মধ্যে মধ্যে এক একটি অস্থি ধাকে এবং ঐ অস্থি হইটে क्रहेकि काइन उदश्य हम, क्यार्या अविधि विकास हरेया कार्यक्र नाम नागरनमित भा अप्रत्क दिन्दीन क्षिट्ड शांदक धरः व्यश् অস্কুর ক্রমে ক্রমে দলিত ও পুষ্পিত হ मृत् छेश्लास्करतः। विश्वा कर्तत्रा प्रिथितः क्षा कि म्यानका देकोनल बान इस! यमि **छेक्ट मधार अहि स्टेट्स हे अना**त

আছুর উৎপন্ন । ইউ, তাহা হইলে কি
প্রকারে উক্ত লতা নির্বলয়নে ছিতি ক
রিতে শক্ত হইত এবং কি প্রকারেই বা উহা হইতে আমরা কল ও পুলা প্রাপ্ত হইতাম ইহা দারা কি জগৎ কর্তার প্রভাজ
ক্রান প্রতীরমান হইতেছে না। কি জন্ম
প্রকাপ্ত রুক্তে এ প্রকার ভাব দুইট হয় না,
কেমইবা রুক্তের এক স্থান হইতে এ প্রকার
শাধা নিগতি হয় না। ইহা কেবল পর মে
সরেরই অনিব্রহনীর সহিমার নিদ্রান।

গো মনুবা প্রভৃতি অনেক প্রাণীতেই ধান্য, বব, গোধম প্রভৃতি নানা জাতীয় তুণ ও ত্রেৎপন্ন শস্য ছোলন করিয়া প্রাণধা-রণ করে. এই নিমিত ঐ সকল জ্থেতে এক অস্থারণ কৌণল দুঠ হয়, যেরপ প্র-করণ করিলে অন্যান্য উদ্ভিদ নাট হুইগ্র যায়, সেই প্রকরণ ছারা ঐ সকল ভুণ আরেও সতেজ হইরাউঠে! যে প্রান্তরের তুলুমেষ মহিষ ও গো প্রভৃতি পশু দারা প্রতি নিরত ভুক্ত হয়, সেই প্রান্ধরেই অধিক ভুণু ক্লাম ইহাতে বিলক্ষণ দৃষ্ট ইইডেছে যে পশ্ দির ভক্ষণ ছারা ভূণের হাস না হট্যা আরু अ तद्र दुक्ति दश । दिरमय डः स्मय महिशानि র ভোষা দৃষ্ধা প্রভৃতি কতিপয় ভুণুকে দীর্ঘ कान कारो कतियात स्वया स्वयम्बद्धाः हैश-দিগকে অতান্ত দৃঢ় ওবত গ্রন্থিক করিয়া-ছেল। প্রাদিতে ঐ সকল তুণের পতা ঘ-ত ভক্ষণ করে ততই মৃত্তিকার মধ্যে আরও উত্তাদিগের মুল বিস্তৃত হইতে থাকে এবং डेशिष्टिक यह भागतल निधी फिन्न कहा-যায়, ততই উহারা ঘণ ও নিবিড় হইয়া 🥦 মিতে থাকে। প্রদণ্ড গ্রীম কালের প্রথর মূর্য্য উদ্ভাপে পর্বাভ ৫ প্রান্তরজ্ঞাত সমু-দার তুণ শুক্ষ হওরাতে তাহাদিগের আর চিত্র মাত্রথাকে না. কিন্তু তথাপি তাহাদি-পের মূল নক্ট হয় না, জাবিত্যবস্থায় মৃদ্ধিকার व्यक्तास्तरत व्यवस्थिति करत अवश्वसीत दृष्टि थाता अर्थ हरेवामाज शूनकात सृब्य एक भारत कॉर्रेया रमहे ममल भूल व्यक्त द्विष्ठ ह-हेटक. **काइस** इस ।

रेसूरताण चरक स्त्राग मनीत मराग करू क्षकात मार्क्स नका समिता गारका से क

তা সমন্ধীর চুইটি অন্ত ব্যাপার মনে হ-हेल अदाक् इहेट इस् । के लखात मर्बा স্ত্রী ও পুরুষ তুই প্রকার জাতি ভেদ আছে, के छेख्य काठीय लहार भूत बनीत भएई नि-বিষ্ট থাকে ৷ কিন্ত উহার মধ্যে স্ত্রী কাভির লতা হইতে প্রমালের ন্যায় এক প্রকার মঞ্জরী উপিতে হয় এবং তদগ্রভালে পুজা প্রস্কৃতিত দুইয়া জলের উপর ভাসিতে থা-কে: জগদাশ্র ঐ স্ত্রী জাতীয় লতা মঞ্জীতে এক্প- এক অস্থারণ শব্দি অর্পণ করিয়া-ছেন, যে ऐहा के निषे कत्नत हात तृष्टि थ-মুসাংর কীয় শরীরকে উল্লুভ ড হণ্ ক্রিড পারে। নদার জল যত রুদ্ধি হ্য, কসেই ঐ লতা মঞ্রীউন্ত হইরা ভদ্নপরি ভাসিতে থাকে এবং জন যত হাস হয় উক্ত লতা মঞ্জীও ভালার সংক্রে সংক্রেড ভাত হার ক্টাতে আরিয় করে 🕆 আনেক সময় প্রতিঘটার 🗗 মধ্য নীর হ'দ রুকি চুইট হইবাছে। উক্তল-তিকা সম্বলীয় ছিতায় আছেত ব্যাপার এই । व डिहार शुक्रव का छ व ल छात भूष्ण नहीं द ৰূল মধো পেশ্টিত হয়, অথচ দেই পুষ্প উপযুক্ত খবস্থার পরিবত হইলে পব স্থ-স্থান হইতে পরিজিন্ন এইরা জলের উপর ভাসিতে আৰম্ভ কলে এবং যে স্থান স্থীজা-ভীর লতাপুস্পকে প্রাপ্ত হয়, সেই ভালে গ-মন পূকাক ভাহার সহিত একতিত হইয়। থাকে। ইহা সামানা আক্রেগ্র বিষয় নতে, যে চেত্ৰ রহিত বুদ্ধিছীন জলের লত। হ-ইয়া একপ অদ্ত প্রকারে আহারকাভ বীজ উৎপাদন করিয়া জগদীশরের অভি-প্রায় সিদ্ধাকরে ৷ অচেতন বস্তুতে এ প্র-কার টৈতন্যের কার্যা সন্দর্শন করিলে কা-হার মনে নালেই চেতনের চেতন স্বৰূপ ज्ञेषद्वत भहिमा छेमग्र बहेसा फेटर्र ?

আলেক লতা নামক এক প্রকার লতা আছে উহার মূল কথনই মৃত্তিকা প্রবেশ করে না, উহার মূলকে মৃত্তিকা প্রবিষ্ট করাইবার জনা অনেকে অনেক প্রকার চেকা করিয়া দেখিয়াছেন, কিন্তু ক্ষেইই ক্ষত কার্য্য হইতে পারেন নাই। স্ক্রীশ্ব ন কভা উৎপন্ন হুইবার কি এক স্থান্য উ

পার সংস্থাপন করিছা রাথিয়াছেন i কো-न इंट्यून पदक छेशासक धर्मन क्रिटन है छ-হা তথকৰাৎ ভাষাত সংলগ্ হইয়া যায় **७व**ः (न**रे तृक हरे(ठ तृन आकर्षण क**र्तिश জাবিত থাকে। মত্তিকার মধ্য হইতে এক প্রকার উদ্ভিজ্জের পুষ্প উল্থিত হয় এবং ঐ পুল্প কোন প্রকার পত্র বাদল ছারা আ বৃত থাকে না। উক্ত পুষ্পা গো মনুষ্যা-দির পদাঘাত অথবা অপরাপর নানা কা-রণ দারা সর্বাদা নথ্ট হইবার সম্ভাবনা, অতএব অন্যান্য জাতীয় উদ্ধিক্ষের বীজ যে-मन भूष्ण शद्धं उँ ९ भन्न हरा, या छे छ छ-ভিদের বীজও সেই ৰূপ পুৰুপ মধ্যে জান্ধিo काहा इट्रेटल **छेखन जा**डीस সংসার হুইতে লুপ্ত হুইয়া বাইত। কিন্তু জ-গদ। খর উধার বীজ রক্ষা পাইবার এক আ-শ্চ্য। উপায় করিয়া দিয়াছেন। উহার বীজ মৃত্তিকার অভায়রে রক্ষের মূল মধ্যেউৎপন্ন হয়, সুতরাং কোন কার**ণে পুষ্প নফ্ট চ্ইলেও** উহাব ব'জ নফ হয় না। বীক রক্ষার এপ্রকার কৌশল আর কোন উদ্ভিদেতেই দৃষ্ট হয় না। क्ल कि बीज सूशकु इहें (लहे छ।ह) बुक इ-ইতে ভাষ্ট হইয়া মৃত্তিকায় পতিত হয় ৷ কিন্ত আশ্চর্যা এই যে,যে বৃক্ষ উৎপন্ন হইবার নে ঋতু নিৰ্দিষ্ট আছে, সে ঋতু ভিন্ন ক-খনই ভাহার বীজ অঙ্কুরিত হয় না ৷ কে৷ न कान द्वार्मित वीक थाय महरमत काल মৃত্তিকার মধো নিদ্রাগ্রন্ত হতচেতনের নার পতিত থাকে পরে আপনার উপ-गुक्त काम अथि इहेट्न (यन महत्त्वन इ-इता अक्रुतिक दहेवात छेशांत्र किसी करत । যে সমস্ত কৃদ্ৰ কৃদ্ৰ পুৰুপ লভ। এবং ওষ-ধি সম্প্রের মধ্যেই পুষ্পিত ও কলিত হ-ইয়া নফ হয়, ভাহারা যেন কোন নাটকের নটের বাার স্ব স্থায়ানুসারে সংসার স্বৰূপ রঙ্গভূমিতে আসিয়াউদর হইয়াখা-কে৷ গাঁদা চন্দ্ৰমলিকা প্ৰভৃতি শাভ ঋ-তুর পুষ্প র্ক্ষ সকল শীতের কিঞিৎ পূ-ৰ্বে উৎপন্ন হইয়া সমস্ত শীত ঋডু সংসা-রের শোভা সম্পাদন করিয়া পরে অন্তর্হিত रप्र अवर अवनिक्षे नकल क्षत्रु आर्था-मिरंगत्र निक्षे अमृद्धे थाकिशा शूनकात भी-

ভারন্তে উদয় হয়, এই বপ গ্রীম কত্র কোন কোন উদ্ভিক্ষ গ্রীম কাল মাত্র ভোগ ক-রিয়া প্রস্থান করৈ, পুনর্কার গ্রীমের আগম-ন সন্দর্শনে আমাদিগের নিকট আবির্ভ্ ত হয় ৷ কি পশু, পজী, কীট পভল্ল; কি রু-ক, লভা, তৃণ, গুলা; কেহই জগদীমরের নিয়ম হেলন করিয়া অন্যণচরণ করিছে শক্ত হয় না, তিনি সংসারের সৌদর্ম্য স-চ্পাদন ও কল্যাণ সাধনের জন্য যাহাকে যে প্রকারে নিযুক্ত থাকিয়া ভাহার আজ্ঞা-পালন করিতেছে ৷

উদ্ভिদ সম্বস্থ্যে করুণাময় প্রমেশ্র আ-র যে একটি অন্তত কৌশল প্রকাশ করি-शाह्म, अञ्चल छाइ: उत्तर ना কোন ক্ৰেই নির্ভুহওয়া ধাংনা। निकारनक करले व मर्या स लागर्य होता वीरमञ भूषि माधन ও শরীর वर्फन श्रेश बारक, श्रुतिवारम स्मर्के श्रमार्थ सुम्प्यू त्र तमग्र छेशास्त्र थामा हरेया दक्त वानीत कौविका পুনর্বাহ করে। পরীক্ষা ছারা স্থির ইইয়া-ेंह, त्य बातिदक्तल अथम् कल्लत नक्षात না হইলে কথনই তন্মধ্যে শস্যের উৎপত্তি **इहेड ना এदः भना ना इहेटल ७ कथन छै-**क्क कत्वत्र डेश्लाषिक। मंख्यि शंकित ना। **भारुक् दिनक्रव मुध्ये इटेट्ट**एस. (स मन्त्रा-रात वह शर्माक्त भिक् कत्रिवात डेस्करम कामी बत এक এकिंग शमार्थत मृष्टि क-রিয়াছেন। তাল খর্জর আল পনশ ব-দরী প্রভৃতি নানা জাতীর সুধাদা কলের যে যে অংশ আমরা সুপেতে ভোজন করি-রা তৃপ্তি লাভ করি, তাহা প্রথমত কল মধ্যে উৎপ্র হইরা বীজকে পোষণ করিতে থাকে, অন্তর বধন বীজ পোরণের কার্যা শেষ চ্ইয়া যায়, তথন সেই সমস্ত ভাগ স্থা কিরণ ও অন্যান্য কারণ ছারা প্রকারাস্তরে পরিণ্ড ছইয়া জীব জন্তর ছোজন বোগা হইয়া উঠেন ইয়ে কি আকৰ্য্য ব্যাপার! কি वह के क्षेत्रक स्व श्रार्थ अक्तामा कन बर्धा क्रिस्त हरेता दक्षण वीटकत भूकि नाः

রা আমাদিগকে আশ্রের সুখ প্রধান করে !
এই রূপে জগদীখন এক একটি উদ্ভিদ পদার্থে বে কত প্রকার অচিন্তনীর অন্ত্র্তুত কৌশল প্রকাশ করিরাছেন, তাহা কাহার সাধা যে বর্ণন করিয়া শেষ করে ? জলদী-শর স্বায়ং বাল্য মনের অগোচর এবং তাঁ-হার মহিমাও বচনের অতীত, আমরা যপন তাহার বে বিষয় শারণ করি, তথ্নই তাহা-তে মুশ্ব হই!

> च्या स्था विश्व च्या स्था विश्व च्या स्था विश्व च्या स्था विश्व च्या स्था विश्व

শেবৈ ভূমা তৎ স্থং নাদেপ স্থমস্তি ভূমেব সুখং ভূমা ছেব বিজিজ্ঞাসিতবাঃ।

'বঃ বৈ ''ভুমা' মং নদির ভিশমৎ এক্স 'ভৎ সুঋৎ ' 'ন আপে) ব্রক্ষাধিরিকে ক্সিং নির্দাধি বস্তানি 'মূঝ্য' দল্পুন্ধ 'অফি ''ভুমা এব সূল্য' অভঃ' ভূমা ভু এব বিজ্ঞানিত হয়'ঃ

বিনি মহান, তিনি মুগধরুপ; ক্ষত্রপদার্থে সুধ নাই। মহান, পদার্থেই সুধাররূপ; ভাত এব দীহাকেই জানিতে ইচ্ছা ক্রিবেন।

মনুষোর মন কুল পদার্থে কথনই সুখী হইতে পারে না! গাঁহারা মহৎ মান, বিপুল বল, মহলারতন ভূমি ও প্রচুর ঐশর্যা লাভের নিমিন্ডে অতীব বন্ধানা, তাঁহারা অবগত নছেন বে নিমি প্রকৃত মহীয়ান্: গাঁহার ভুলনার অন্য সকল পদার্থ-ই কণীরান্; যিনি পরংপের একমান, ধব, অনস্ত পদার্থ; সেই ভূমা পদার্থ প্রান্তিত তাঁহার মুখের ইছা কথনই চারিভাগ হইতে পারে না; অত্যব তাঁহাকেই অস্বেখন করিবেক, তাঁহাকেই আমিতে ইছা করিবেক। মনুষোর আমা আতি মহৎ, সে এই মর্ভালাকের অধম পদার্থে কলাপি ভুগু হইতে পারে না! গ্রান বিহারী উৎব্রোগ পন্ধী, বে আকাশ মণ্ডবের মহো-

না গজীর সম্ভাশ্নী ক্ষি বৃহৎ তিনি মৎসা মনুবা-খাত ক্ষা হুদে অবস্থিতি করিরাা সম্ভোষামূত লাভ করিতে পারে ? যিনি
অনন্ত সুকের মাকর, তিনিই কেবল মনের অনন্ত সুধের স্পৃহাকে পরিপূর্ণ করিতে পারেন!

# সভগবঃ কব্মিন্ প্রতিষ্ঠিতইতি স্বে মুহিমি ৷

হে 'ভগৰং 'ভগৰন্ 'ধং' ভুষা ব্ৰহ্মান্ত্ৰা' কৰিব প্ৰ কিন্তি চাটি কিন্তুননক্ষ, শিলাম প্ৰতি আহে আচাৰ্য্য 'ৰে মহিদ্যি' অধ্যান মহিন্তি প্ৰতিন্তিত ভূষা।

শিলা লিজ্ঞান করিংলন, চে ভগরন। তিনি কোথা,য প্রতিধিত আছেন। আইংলা উত্তৰ কৈ বিলেন, তিনি আপনাং নহিদাভেই প্রতিষ্ঠিত আছেন।

পরমেশর নিরবলয়, অতত্র ও মুক্ত-স্থাব।
খান্য সকল বস্তু দেনল তাঁছাকে অবলয়ন করি বিয়া ছিতি করিছেছে, তাঁছারই উপর নিউর করিছেছে, তিনি তক্রণ কাছাকেও
অবলয়ন করিয়া ছিতি করেন না। এই
বিষক্রপ মুখাল তাঁলাতে আহে ভা থাকিছালম্বান রহিয়াছে, তিনি একনাত শক্ষু অরপ
হইটা তাহা ধারন করিয়া আছেন; কিছু
তিনি কিছুতেই আবদ্ধ নহেন, তাঁছাকে কেই ধারন করিয়া রহে নাই। সেই
নিরবলয় পুর্ণ ক্রন্ধ অকীয় মহিনাতেই অবস্থাতি করিছেছেন, আপনাতে আন
প্রিই নিতা বহিয়াছেন: তাঁহার কেই জনকও নাই এবং তাঁহার কেই আত্রম্ভ নাই।

সএবাধস্তাৎ সউপরিষ্টাৎ সপশ্চাৎ সপুরস্তাৎ সদক্ষিণতঃ সউত্তরতঃ ৷ ঈশানোভূতভব্যস্য সএবাদ্য সউ শ্বঃ ৷

'স.এন 'সুদ্ধ' অয়ন্তাৎ' বিদ্যানে তথা 'সা উপরি-টাং সা পালাৎ সং পুরস্কাৎ সা দক্ষিণতঃ সং উল্লেখ্য '। সন্ধুমা 'উপানং' 'জুচন্দ্রামা 'কালক্ষনা 'সং এর ' নি-ভাঃ কুউদ্ধ' আয়া 'ইয়ানীৎ বর্জধানঃ 'সং' 'উ' অপি বর্জিয়াকে।

তিনি অংগতে, তিনি উর্জেডে, ডিনিলি শাসা তে, ডিনি সমূদের, ডিনি, শাসিংগ, ছিলি ভিতর । তিনি ভূক ভবিষ্যাতের বিরক্ষা। তিনি অন্য আ-ছেন, পরেও প্লাকিবেন।

কি উদ্বে, কি অধোতে, কি পশ্চাতে, कि नग्दा, कि मिक्काल, कि উखदा, आधा-विभिन्न हे कि कि कि कि कि कि कि দীপ্যমান রহিয়াছেন ৷ আমরা হদি পর্বত শিখরে আরোহণ করি, সেখানেও তিনি বিরাজনান; অনুমরা যদি গভীর সমুদ্র গর্ভে প্রবেশ করি, সেখানেও তিনি বর্ত্তমান। দি বাক্রের মধ্যাত্র কালের কিরণে যেমন ভিনি স্থাকাশ ইহিয়াছেন, তজ্ঞপ ভাষতী বিভাব-রীর অকাচন তিমিরেও জাজ্জল্যোন বুহি-রাছেন। সকল স্থানই ভাহার রাজা, স কল স্থানেই ভাঁহার দৃষ্টি ৷ বেমন তিনি সর্ববেশ বাপী, তেমনি তিনি সর্ববাল বি দামান ৷ ভিনি খেমন ইছ কালের নিয় স্তা তেম√ন পরকালেরও নিরস্তা; তিনি অ্-দাও আছেন পরেও থাকিবেন।

8

যএকোংবর্ণোবহু ধা শক্তিযোগাৎ বর্ণাননেকামিহিতার্থোদধার্থা তি। বিচৈতি চাল্ডে বিশ্বমাদেই সদেবঃ অনোবৃদ্ধ্যা শুভ্যা সংখ্নকত।

'নঃ' 'একঃ 'অষিঙীয়া প্ৰায়া ' আবৰ্গা নিৰ্ক্তিশ্যঃ' বৈতথা 'নানা ' দক্তিশোলাৰ ' 'নিবিতাৰ্থা ' গুৰীজপ্ৰয়োজনা প্ৰানাৰ ' কৰিবলাৰ ' গুৰীজপ্ৰয়োজনা প্ৰানাৰ ' কৰে বিশ্বাজনা প্ৰানাৰ ' কৰে ' ' চ' মধ্যে চি ' বিশ্বাজনা প্ৰানাৰ কৰিবলা ক

খিনি এক এবং বর্ণছীন এবং যিনি প্রজাদিগের প্রয়োজন জানিয়া বছ প্রকার শক্তি হোগে বিবিধ কাম্য বন্ধ বিধান করিতেছেন, সমুদার বুজাও আদাত্তমধ্যে বীহাতে ব্যাপ্ত কইরা রছিয়াছে, তিনি দীপামান প্রথেখর: তিনি আমারদিগকে প্রভ বৃদ্ধি প্রদাম কর্মা।

नामा वर्शन गुजरवर्षा त्वरे ए क्रम भन्नद्रवस्त्र, शिव भन्न वर्गने हरे-त्रांव विभाग कामिन्द्रतन्त्र जिल्हा है क्रि क्रमामान कामोगा नहित्रहरूको है क्रिनाम क्रमामान कर्मामा विद्याह क्रिक् मुहेनाह নিরস্তা, ক্ষান্ন কাম্য বস্তুর প্রেররিতা, সম্বান্র বৃধু নিভাগোর বিধাত। কপে ছতি নিক্তির করিলা জার্নেন এবং নিজাম হইরা তাঁহার উপাসনা করেন। তাঁহার নিকটে তাঁহারদিগের কিছুই প্রার্থনা নাই, কেবল তাঁহাকে লাভ করিবার নিমিত্তে শুভ বৃদ্ধির পার্থনা।

সবৃক্ষকালাক্তিভিঃ পরে।ইন্যোযস্মাৎ প্রপঞ্চ পরিবর্ত্তেইযং । ধর্মাবহং পাপন্দং ভগোশং জ্ঞাত্বাত্মসূতং বিশ্বধাম।
বিশ্বসৈকেং পরিবেটিতারং জ্ঞাভা শিবং শান্তিমতান্তমেতি ।

ভিনি সংসার, কাল এবং সাকার বান্তু সমুদ্বায় হ্টাত শুকি এবং সূত্রাং ভিন মাহ,
কর্ম্ম এট প্রপঞ্চ সংসার প্রিবাজিত হ্টভেছে। ভিনি ধর্মের আকর, পাপের শান্তা, এধর্মের আমা। নেই দক্ষের আক্ষ্ম অমৃত, বিধ্যের আশুহরে সেই মুদ্ধল স্কুল এক মান্ধুপরিবেন্দ্রীকে জানিয়া নার অভান্ত শান্তি এন্তু হয়।

এই জগৎ সংসারে যে কিছু সৃত্তী বজু আছে, তাহার মত তিনি কিছুই নহেন, তাহার সত তিনি কিছুই নহেন, তাহার সহিত কাহারও উপনা হয় না, । না তিনি বাছ বিষরেক্ত নত, না তিনি অন্তরক্ত মনেরই মত ৷ তিনি বিষয় ওমন সকলেরই সৃত্তী কর্তা, সুতরাং তিনি সকল হইতে শ্রেষ্ঠ এবং সকল হইতে ভিন্ন ৷ তিনিই মনুবার, মনে ধর্মশাসন সংস্থাপন করি মাহেন, সুত্তরাং বে মহাত্মা তাহা বন্ধু পুর্কিক পালন করেন, ভিনি অতি উৎকৃত সুধ্ব ব্যোগ করেন এবং তাহার সেই পর্বা

বদিও কথাচিং মোহাজ প্রযুক্ত ভাঁহার পদ ধর্মজুমি হইতে শ্বলিত হয় এবং তিনি পাপ পচ্ছে পতিত ইয়েন, তথাপি সন্তঃ-পিত-চিত্তে সেই পরম মঞ্চলাসরের শার্নগণস্থ হইকে তিনি ভাঁহাকে ভাহা হইকে উদ্ধার করেন এবং ভাঁহার মনে প্রার্থনীয় স্বাস্থ্য ও শান্তি প্রদান করেন।

সবিশ্বকৃদিশ্ববিদাপ্ত্রথানিজ্ঞ । কালকানোগুণী সর্ববিদ্যঃ । প্র-ধানক্ষেত্রজ্ঞপতিগুণেশঃ সংসার-মোক্ষস্থিতিবন্ধহেতুঃ।

শ্বঃ 'বর্তমন্তর' বিপকুম' বিশ্বন্য কলা বিশ্বম কে জীতি 'বিশ্বাহম' আবোস গোনিবিছি 'আল্লেনারি ' জানাপতি 'ভা কাগেজে 'কাল্ডা কম্ম' ভন্নী কি চিত্রশক্তিন নে সুস্তিম দা'লু প্রধানজ্ঞভান্তি ' প্রধান প্রপদ্ধ ক্রেলারি দালী ভা ক্রেম্প পালম্ভিত 'প্রধান' প্রধানমিত ন সার্থ্যাজ্ঞতি ভিত্তবিভূত ক্র শ্বেম্পে প্রধানমিত ন সার্থ্যাজ্ঞতি ভিত্তবিভূত ক্র

তিনি সকলের কালন, পবলের পালক, সকলের প্রজান করেব প্রজান বহু তাঁহার শাসন অতিক্রম করিতে পাবে না। তাঁহারই শাসনে ভাবায়া শরীরে বন্ধ আছে এবং সংসারে বিচরণ করিতেছে এবং পারশেষে তাঁহারই প্রসাদে ভাতাকে লাভ করিব।

मञ्जारवाहामृञ्ज्ञेगमः दशा खः मर्वरभा ज्वनमामा त्भाशाः यक्रेरगरमा जगरजानिज्ञास्य ना त्मारहजूर्विमाञ्ज्ञेगनाय । जर ह रमवमाञ्चवृक्तिश्रकागर मुम्कृरेव मज्ञासहर श्रामा ।

' সঃ' পর্যেখরঃ' ভষ্ফ: ' ইচতনাজ্যোতির্মন্ত: 'ছি' 'অমূতঃ' অমর-ধর্মনা ঈশকানে) সংব্দের্ভি ' ঈলসং-বঃ' ঈশঃ বামী সম্মক্ ব্রিকিইন্যানে) সংবংঃ সানাভীতি 'জাং'নর্মান সজ্জাতি' সর্বাদ্য' 'আস্স' ভুরনার্য'
'বোবা' পাল বিভাগি না 'কবে' কবেট 'আস্য জগজং'
নিভাগ এব' নিম্মেন 'ম পানার বেভুল বিষাতে' 'কুলনাম 'পাননার। 'ভব' 'হ'লখন লোভ খোনতে 'দেখণাননার। 'জগুনি হা বুদ্ধি ভাগ প্রকাশমহানি
আখন বিপ্রকাশা' 'মুনুখ্য' বৈ' বিশাব্দাহ ব্যাহ্রে
আহণ্য' লুব্রুগ্রে' প্রপ্রে' প্রপ্রে' বিশ্বিকাহ বিশাব্দাহ ব্যাহ্রে

ভিনি ইংতনাময়, মরণপ্য রহিত এবং দপ্রথমিরপে দ্যাক্ স্থিতি করিতেছেন, ভিনি
প্রকানে, দর্মান্ত গামি এবং এই জ্বাভের প্রভিপানক। বিনি এই জ্বাংক নিভা নির্মে
রাখিয়াছেন কলা গতিবি পাসনের মার অন।
(৬ জু নাই। তামি ন্যুক্ ইউবা দেই আনি
বৃদ্ধি প্রকাশক প্রবেধ্রের শ্রেণিসাইট।

আমারদিণের আল্লাতে যে বুদ্ধি প্রকাশ পাইতেছে, সে ভাঁহারই প্রসাদাং ৷ তিনিই আমারদিগের খালাতে বৃদ্ধি কন্তি সংস্থাপন করিরাছেন এব: ক্রমে হাছ প্রকাশ করি-ভেছেন।ভিনিই আচার্যা স্বরূপ হইয়া অ-इत्र आमाव्यास्य धाःभाषामम् अमान করিছেন এবং পর্ম কলাণে পথ প্রদ-শক হইয়া অলেশ অলেশ আপনার নিকট-বন্তী করিতেহেন। সেইপ্রমপ্রেমাস্প**-**দের সহিত্নিতা সহবাস জনিত খনিকা-চনীয় সুংখ আকাজনী হইয়াআমি তাঁহা-র শরণাপল হই। তিনি আম'রদিণের মঞ্চ-লময় প্রম পিতা, আমরা উহোর শর্ণাণম इहेटल ভिনি অবুশাই আমারদিণকে এই সংসারের শোক তাপ পাপ হইতে মুক্ত ক রিরা ভাগনার সঞ্চী করিয়া এইবেন 1

তস্য হ বাএতস্য ৰুষণোনা-ম সতাং । নিজলং নিজি বং শাকং নিরবদ্যং নিরঞ্জনং। অ-মৃতস্য পরং সেতুং দক্ষেদ্ধনমি-বানলং।

ত্যাহ বৈ এত্যা রজনঃ' নাম' অভিধান ' ন তাং : প্রজন বক্তপং দর্শবিতি। কলাজবববানির্গতীব আচু তং 'নিজনং ' নিরবববং ' বিজিন্তু ' জুনি বুবং নির্গেট্য নর্কং ক্ষাং পুলাভি ' লাভং ' উপসংস্কৃতস্থ-বিভান্তে ' নিরবলা ' অন্তর্গনিধ ' নির্ভিটিশ লং৷ 'অস্তলা' ঘোলালা প্রাথ্যে ' পুরুষ্টিশ ব্যক্তি সংগ্রিক্তেন্ত্রের্ডোলাম্প্রাধ্ব ' র্ডেক্ত্রের্ডিশ ' অন্ সেই এই বুকের নাম সভ্য। দ্রিন শিবর-বরব, নিছি যে ও শান্ত। তিনি অনিক্রীয়, নি-লিপ্তাও মুক্তির পরম নেতু এবং দঞ্জ দান্ত দিং দুও অধির ন্যায় দীপামান।

সেই এই অতি দুরস্থ এবং অতি নিক-টস্থ সর্ববদ্পী ব্রন্মের নাম সতা: ঘে হেড তিনি সভা স্বৰূপ । জিনি এডজেপ সভা, (य (महे मुकादक व्यवस्था कतिया এই সমুদায় জগৎ সত্য হইয়াছে: তিনি সভ্যের मणा। এই मगुनात कागर शुर्का किन्नहे ছিল না, যাহার ইজ্ঞাতে এই সকল হইয়া-ছে এবং ঘাহার ইচ্ছাতে এই সকল বৃহি-য়াছে ভিনি কেমন সার্বান্বস্থা কেন ও বুধু দু অপেকা সমুদ্র অবশা স্থায়ী প-দার্থ, কিন্তু সমুদ্রকে ঘিনি সৃষ্টি করিয়াছেন, তিনি কেমন স্থানী পদার্থ। তৃণ, লতা, রক্ষ অপেका পৃথিনী অবশ্য স্থায়ী পদার্থ, কিন্তু পৃথিবী যাহা হটতে হইয়াছে, তিনি কেমন স্থানী পদার্থ ৷ হা৷ আমরা হৈ মুড়া যিনি সকলের সার, নিতা, সত্য পদার্থ, তাহাকে আমরা ছায়া তলা ভান ক-রিতেছি। বিনি জ্যোতির জ্যোতি, প্রাণের প্রাণ, চেডনের চেতন, সভ্যের সভ্যা, তাঁ-হাকে আমরা শুনা প্রায় দেখিতেছি৷ এই জগৎ ৰূপ স্তম্ভান মনোহর অট্রালিকা শ-ना नरहः हेश जामात्रप्तिशत शत्रभ (पर्व-তার আবাদ নন্দির, ভাঁছার ছারা সমাক ৰ-পে ইছা পূর্ব য়হিয়াছে।

তিনি এক মাত্র, প্রজ্ঞানখন; তাঁহার অব্রাব নাই, তাঁহার অংশ নাই, তাহার কোন পরিমান নাই। তিনি অপরিবর্তনীয় মঞ্চলন্মর নিয়ম সকল স্থাপন করিয়া বিশ্বরাজ্য পালন করিতেছেন। সেই নর্থনজিসমান্স্র্রজ্ঞ পুরুষ এই সংস্থার নির্মাহ নিমিছে বাহাকে যে কর্ম্মের ভার দিয়াছেন, সে তাহা প্রাণপণে বহন করিতেছে; আপানি সকলের অধিশতি হইয়া নিয়ন্ত রূপে স্ক্রত বর্তমান রহিয়াছেন। তাহার শাবনে স্থা উদার হ্রতহেছে, বালু প্রবৃদ্ধিত হইছেছে, আমি উদ্লাপ দিকেছে, ক্রম্ম কল্বার ইইডেছে, মনুষ্য ধর্মাচর্ম্য করিছেছে।

হার স্বরং বের আরাদ লইতে হর না ; তিনি নিষ্কির ও শান্ত ; তাহার ইচ্ছা মাত্রে এই স-মুদ্র জগুঞ্জি পর হইয়াছে এবং ভাঁহার এক ইচ্ছার শবজী হইয়া সকলে মিলিরা ভাঁহা-ক্রম জ্পাদন করিতেছে। ভিনি সংসা-রের কর্ত্তা, অথচ সংসার হইতে অভীত: তিনি স্বাং সাংসারিক কোন কর্মে লিপ্ত ন-হেন: তিনি নিরঞ্জন, নির্লিপ্ত l. তিনি পু-ৰ্ণ স্বৰূপ, ভাঁহার স্বৰূপে কোন দোগ নাই. তিনি নিরবদা, অনিন্দনীয়। সেই অমৃতের শরণাপর হইলে মৃত্যু ভর থাকে না, তিনি অমৃতের পরম সেড়া যাঁহা-বা ভাঁহাকে জ্ঞান চকু দ্বারা দেখিতে পান, ভাগার৷ উগ্লেকে সর্বাত্ত স্থলস্ত অনলের ন্যায় দেদীপামান দেখেন, তাঁহার ন্যায় প্রকাশবা-ন্বৠ আরে দ্বিটায় দেখেন না 1

সদেত্রিধৃতিরেষাং লোকা-নামসম্ভেদায় টেননং সেতুমহো-রাত্রে তর্তঃ ন জ্রা ন মৃত্যুন শোকঃ ৷

দা বিজ্ঞালা দেবুরিব 'দেবুই' বিধ্বিভা বিধ্বদ্ধ
কানের হি দক্ত জগত বিধ্বত্ত। অধিকান্ত হীলরে
তেকা বিধ্ব বিদ্যাত সতজ্ঞান সং দেবুর্জিই তিঃ।
কান্ত প্রকানাত 'লোকানাত 'শুলসভ্জান ' অবিচার্বাহ অবিনাশাহেত্যক। 'ন এন্ত দেবুই বুলা
ভাবত 'অহোকাতে' সর্বাদ্য কনিমতঃ পরিজেনকে
তর্তঃ'৷ ঘর্যা অনে সংগাবিধ্ব তালেন অহোরাত্তাদিলকান্ত পরিজেন্যা। ন তথা আহা কালপ্রিজেন্যঃ।
বা এন্ত জারু৷ বা ভাবি প্রাধ্যেতি তথা নি মৃত্যুঃ' ন 'লু
শোক্ত গ

তিনি এই লোক ভল নিবারণার্থে সেতৃত্ব-কুপ হইয়। নম্দার গাঁহণ করিতেহেন, এই সেতৃত্বক্রপ পরস্ক অহোরাজেব পরিছেল। ন হেন এবং জরা মৃত্যু শোকও তাহাকে স্থিকার ক্রিতে পারে না।

তিনি নিত্য বস্তু; তিনি অমুক দিবসে ক্ষিয়াছিলেন, এত দ্বিন বর্তমান আহ্মন, ছমুক দিবস পর্যান্ত থাকিবেন, এ প্রকারে অহোরাত্র ছার! তাঁছাকে পরিমাণ করা যায় না ৷ তিনি নির্বিকার : মুতরাং জরা শোক-ও ট্রীতাঁছাকে অধিকার করিতে পারে না ৷ যিনি কালের সৃত্টিকর্তা ও আ্লায় এবং নিয়ন্তা, কাল তাঁছাকে কি প্রকারে অতিক্ষম করিবেক ? যাঁছার শরণাগ্য ছইলে কং

রা সূত্য সেশ হইতে পরিরাণপাও যা ম<sup>া</sup> র**ে সেই অমৃত অ**কপকে জরা মৃত্যু কি ঞ-কারে অধিকার করিবেক ?

যতাত্বাংশংশত পাণ। বিজ-রোবিমৃত্যবিশোকোবিজিছং সোহপিপাসঃ সত্যকামঃ সত্য সংকলপঃ সোহসেক্টব্যঃ সবিজি-জ্ঞাসিতব্যঃ। সদসংশ্চলোকা-নাপ্থোতি সর্বাশ্চ কামান্ মস্তমা-ত্থানমন্বিদ্য বিজ্ঞানাতি।

্মং 'ক্ষায়া' বক্ষায়া 'অপচত্তলালা' সিদ্ধবং বিশ্বকৃত্য বিশোক' বিভিন্ন 'ক্ষিত্ৰ-সং' কিছিল না অন্যাপক, ত পুষ্ঠিত 'ক্ষাপিলে ' কিলোনালি না বিভিন্ন বিভান বিভিন্ন বিভান বিভা

যে পরমাস, পাপশন্য এবং গ্রন্থ এন । অংশক ও কংপিপান। ব্রিত এবং সাংক্রম ও সভাসকল , কাহাকে অন্নান করিবে ব্রা ক হাকেই বিশেষ কলে জানিবার জন্ম করে। কা নিজে পারেন উহোল সকল জোল প্রিত য় এবং সকল কামনা নিজ্ঞ হয়।

ভাষরা অপূর্ণ, ভ্রান্ত, পগোক্রার জাব হই য়া যে সেই পাপশ্নাপ্রিশুল্ পরিপুণ শ্লা-বকে জানিতে পারি, ইরা আমার্নি-भित्र मामाना भोष्यां । तह । किन्द्र हो:-হাকে জানিতে হইলে আমার্দিণ্ণর মনের अकास हेका, यन ७ ठिछीत आवशाक त-রে। তৃষিত মূগ যেমন জল অন্নেধন করে. ভদ্ৰাপ ভাহাকে কর্তল নতে ফল যেমন প্রভাক্ষ হ্ব, তাজগ ভাঁহাকে বিশুক জ্ঞান বারা নিংসংশয় রূপে অতি নিকটস্থ করিয়া জানিতে ইক্ষা করি-বেক ৷ বছ অবেষণ পরে তাঁহাকে আপনার নির্মাল ও পবিত্র মনের অভ্যস্তরে সকলের কারণ ও আতার ব্বংগ সাক্ষাং প্রভাক্তব্য জানিতে পারিলে ভৃঞার্ত্তমগ যেমন প্রকা পাইলে পরিতৃপ্ত হয়, তক্রপ তিনি পরিত-श्र इरहर ; जाहात ज कल कामना निका इश्र ও ভাষার ভুরাদি সকল লেনকের সুখ প্রা-

mation must at length be completed, and our destruce dwelling-place be made ready. Nature must gradually be ac-olyce into a condition which her regular action may be calplaced and safety relied tipou, and her power here a fixed and definite reinmon to true which o since to govern it, -that of man In so but a this relation already exists, and the endm June of Nature has obtained a firm tooting, the works of man, by their mere existence, and be an influence altogether sevond the ora man intent of their authors, shall again reset pun Neture, and become to her rock vivilyng prompte. Calrivation of H quicker and and have the singuish and balefus atmosphere of the printed forests descris, and marshes; none regular and socied were various shear difthe throughon the are not aupul es to life and tertilet, and the stor shall pour be most connating to ve into an stansphere broathed or haliblad and astrons, and endaged rations. Seconde, tust called my, existence by the preare of necessity, shall interwards eximity and excelledly rate togeth the unchangeable law of Nature, eye a its power of freely and I said co calculate their possible manifestionness and while closely following the foresteps of Natura in the land; end actual world form for itself n thought we shad one Beer diswery which Reason to external from Novan shall in ponistanted throughout the ages, and be rose the ground of new snowledge, for the con more possession or constant. Thus shall Notices to be our more and more intelligible the prinsparent over a lice most seven depotes, and formate power, enlightened and union by homan divention shall rule over her grout difficults, and the conquest one peade. is penerially maintained. This countries of out, over Name shall gradually be estended, andil, or length, no famber expenditure of no hamen above shall be necessary than what the to may body requires for its development coltivation and bealth, and this labour shall case to be a broden perfor a reasonable being and destined to be a beaver of burden

But it is not Nature in a Greedem uself, by which the greatest and most terrible desorders meadout to our rose are produced; man is the cruclest enemy of aun. Lawless hordes of savages sellen in decrease vast wildernesses; they meet and the feter decours his for at the triumpical feast. or where culture has at length united these wild bordes under some some bond, they attack each other, as nations. with the power which is and which have given them. Delying toil not privation their trinics traverse peaceful plane and ferests : they meet each other, and the sight of their brethern is the signal for slaughter with the mightiest inventions of the human understanding, hostile flects plough a way through the occan; through storm and (empest man rushes to meet his fellow-man upon the lonely, unhospitable sea; they must, and defy the fury of the elements, that they may destro; each other with their own hands. Even in the interior of states, where men seem to be united in equality under the law,

it is still for the most part only force; and fraud which rule under that venerable if the; and there the warfare is so much the more c shame-ful that it is not openly declared to be war, and the party attacked is even deprively of the and the party analysed is even deprived of the privilege of defending binuself against square oppression. Smaller associations rejoice and in the ignorance, the folly, the vice, and the ensury in which the greater mander of their bankers. brethren are sunk, and make it their avoned object to retain them in this state of degridaçãos, and even to plunge them deeper p is in order that they may perpetuate their slavery to themselves, - and to destray one one who should venture to enlighten or improve them. No attempt at amelioration can anywhere he made without rowing to from number a bost of selfish interests and setting there to war against it without uniting together the most varied and opposite onone in a contract hostility. The good crosse is ever the weaker for it is simple and can be hard for itself alone the bad attract each minimized by the promise which to not sovar proper themselver se soon as the most makes its appearance, exactude a trace, that they may onite the obote powers or how wickedness against at Scarcely sadeed, sso had opposition needed for even the good Jameshes are but two often divided by meson dorstanding error distries, and secret self and the sames the more in both. the more carriestly each strives to propagate that which he recognises as best, at 3 this disstudes by internal discord a power, which jeven when correct, could carrely bold the belauce and code the blance the other for rushing one as howith storms impatience to his object bulk torest born out from cartery readons, have been prepared, whilst the other blames in e that through hes fation and cowardies be compaches nothing, his alteas this, s to be mone as the core, centrary to his bear conore-.un; and the fer him the hour of action pever arenes -- and only the Oraniscient can determine whether either of the parties in the dispute is in the right. Every one regards the rendertaking, the necessity of which is most appearent to him, and in the prosecution of which he has sequired the greatest skill, as the most important and needful,—as the point from which all improvement must proceed; he requires all good men to unite their efforts with his, and to subject them to him for the accomplishment of his particular papaose, and secondinament of the process and process and bodds it to be treason to the good-closed they refuse,—while they or the off-si hand make the same dearends upon him and accuse him or similar treason, should be refuse. Plus to all good intentions among men appear to be lost in vain disputations, which leave behauf them no trace of their existence; while in the meantime the world goes on as well, or as ill, as it can without human effort, by the blind mechanism of Nature,-and so will go on for . J. G. FICHTE.

৫ খাল বৃহক্ষাভিতার সহয় ১৯১২। কলিবাভাষ্ট ৪৯৫৬



ওলৈও নিতাৎ আনমনত্ত্বং শিবং কতন্ত্ৰং নিবংবগ্ৰহমকমেবাদিনীয়ং দৰ্কয়াপিদৰ্কনিষ্কৃদৰ্কাশ্ৰহদৰ্ক বিৎ দৰ্কশক্ষিমৎ পুৰুৎ পূৰ্বাদিনি।

**७ वि**त श्रीडिसमा श्रियठाधःमाध्यकः सम्मामस्ययः

# ষড়বিংশ সাম্বৎসরিক ব্যাহ্ম-সমাজ।

अलिकाका ३३ ग्राम ३१५५ गर

াত ১১ মাঘা পুধবার সন্ধানি পর কলিকাতা নগরে রোজা সমাজের বড়বিংশ বাধিক কার্যা অতি সমারোচ পূর্বক সুক্তর কাপে নির্কাং হয়। উক্ত পর্বের এত অধিক লোকের ন্যারোহ হুইরাছিল, যে দর্শক ও লাক্ষিণার নথ্যে অনেকে সমাজ মন্দিরে বাসিতে স্থান প্রথা অনুবার কালি কালি উপার্টার সময়ে উপার্টার সময়ে উপার্টার সহার বিদ্যাল বাস্ক্র নিমুলিখিত প্রাক্তির কালিখিত প্র

শ্বাহাতে জান মার্কিত হইরা বিশুক্ত ক্রমান্ত জানা যার, বাহাতে ধর্ম পরিপালিত হইরা আনুর্কুত্র পরিত্র হয়, বাহাতে প্রীক্তি উজ্জ্বল ইইয়া জাতরঙ্গ প্রিক্তি হয়, বাহাতে ইজা ব্যবহার আনুর্বাহার আনুর্বাহার আনুর্বাহার আনুর্বাহার আনুর্বাহার আনুর্বাহার করে বাহাতে ইয়া জাতরঙ্গ প্রাক্তি বাহাত করে আনুর্বাহার আনু

তন পল্লবে পল্লবিত হইর,ছে? ইছা আর कड मित्र भूष्ण करत मूटमांचिठ इरेरेद ? দেশের মঞ্চলের প্রতি অতি বাএ হইয়া ঘাঁছারা এই ৰূপ প্রশ করেন, ভাঁছারা কি আ वश्रक नटकन या भीर्यकाल आसी आहराम त्क तमाण मीच डिम्ना थाश्र रग मा। নে ব্রাক্ষসমাজের আয়ু পুথিবীর সহিত সম কাল, ভাষার নিকটে বড়বিংশতি বৎসরে-র গণনা কি 2 তথাপি এই কভিপর বংস-রে সত্য নির্পণে কি অনেকের যত্ত্ব হয় बारे ? अंबरत्व विश्वक खताल कि खतन কের মনে প্রতিভাত হয় নাই ? ভাঁছার জ ভিত্তোত পর্যান্ধানে 🗣 অনেকের শ্রন্ধা জ কো বাই 🖓 উন্ধরেতে প্রীতি রুতি কি কা-हाद्वा मत्न ऋ दि प्रामाहे ? हेहाब छ-खद्रि ना दला जामस्य उ आकार्मादक्षा (सा তুশ বৎসর পুর্বে আমি স্বচ্ছে দেখিয়াছি যে এই ব্রাহ্ম সমাজে পরত্রক্রে উপাসন। কালে দশ জন বাস্তি স্মাগত চইতেন कि मा, चना कि मूर्यंत्र मिवन ' चमा कि मुरुधंत विवतः! अना अहे मुन्ति समाक म-ক্ষিত্র তাহার উপাসক ক্ষেত্র—ভাহার কুত্ত पुक्त मकटलबं धात्रा शतिशृनं इहेशाटह ; कहे नवारक ज्ञामाकात इरेशारक । देश कि जा-क्रिक्ट के क्रिकित थेंडाक हिंदू बर्ट्स ा जन्मदिन कीची स्व जापान जन्मिन रके **सहस्रा**ः शाः ध्याविका विश्वादक कृतिः वास्त्र-

খণ করে, আকাশের অভীত পদার্থকে আ-কাশের মধ্যে আনিতে চেন্টা করে, শুদ্ধ বু-ভু মুক্ত হভাবে শরীর ও মনের ধর্ম আ-রোপ করে, উপমা রছিতের প্রতিমা মি-শ্বান করিয়া পূজা করে। দেখ, ঈশ্বর প্র भामार दहे खडान-खड़ाकांत्र अटमन इरेटर क्रमम गांध भीष जित्ताहि । इहेट एट : अहे অল্প দিনের মধ্যে পর**ত্রন্দে**র উপাসনার ক**ত** বিঘু 'ও ক'ৰ্ড বাধা নিরাক্ত ক্ইয়াছে । পু**র্কে** পর্ম পূজা রামমোহন রায় দশ জনের মন हरेट स अख्यान क्रिक कूम कात्र ममाक् करण विकास क्रिएंड शास्त्रक नाहे, अहेक्करव সহস্র সংস্থা অংশ বরক্ষ মূবকেরাও ভারা হটতে মুক্ত হইখাছে। এক্লণকার যুব-कनिर्गत क्मिर्ग कथन এ विश्वाम स्थान भी स्र बा एवं क्रेयर मनूरपात बाह्य भतीती अ-থবা তিনি কোন প্রকার শরীর ধারণ করি-য়া পৃথিনী লোকে অবজীণ হয়েন ৷ " নেতি নেতালো অগুলোন হি গৃহতে। " প্রা-চীন ক্ষিদিগের এই মহাবাকা ভাঁহারা স-মাক ৰূপে বুঝিয়াছেন।

কিন্ধ হে যুৰকগণ! তোমরা যে এই षांचेत जन नःभारतत मृष्टि कर्खाटक मृष्टि-ব অতীত পদাৰ্থ বলিয়া নিৰূপণ করিয়াছ, সেই অন্তর্কন প্রিয়তমকে আপনার বি-শ্ব আত্মাতে জ্ঞান-চকু ছারা সাকাৎ স-ক্ৰনি পাইয়াছ কি না! করতল দারা যেমন আমলক কল স্পর্শ করা যায়, ভজ্জপ আপনার নিষ্পাপ পবিত্র আত্মা ছারা সেই শর্মব্যাপী অন্তরাদ্ধাকে সংস্পর্শ করিতে मिरे मकालब अखत-পারিয়াছ কি না? স্থ ভূম। অমৃত-সাগরে অবগাহন করিয়া আশেষ কামনার কল লাভ করিয়াছ কি না? সেই অমত আননদ রস পান করিয়া সংসা রের ছঃখ শোককে পরাজয় করিয়াছ কি न! ? यकका ना अहे मः मात्रक ছातात बात ত্মার সংসারের **শুকী সত্যের সভ্যকে আত**-পের ন্যায় **দর্জত দেদীপ্যমান প্রস্তীতি হইবে**-ক, তাবং তাহাকে অন্তেবণ করিবে; ভাহাকে লাভ ধ্ইলে আর আর লাভকেক্সাভ বলিয়া-ই আন হয় না, গুৰু বিপদ্কে বিপদ্ৰলিয়া-रे (नाथ रत्र मा ) किन्न शत्राः कत्र व्यक्ति की॰

হাকে অন্বেষণ করে? ভাঁহাকে অন্বেষণ कतिवात त्मरे न्मृहा करे ? त्मरे सुनुताभ কই ? শরীর রোগগ্রন্ত হইলে বেমন মাক্য হয়, ভজাপ মন পাপ ভারে প্রত হইলে তাহাতে **ঈশর-স্ল ভাল্**র পায় बा। अहुत धनभानी हरेता ताली ह**रेल** य छ फॅना, छानवान् हरेशा भानी ह**रेता** সেই কুর্দ্রশা। ধনী ব্যক্তিদিগের সুস্বাদ্র অর ব্যঞ্জন আহ্রণ করিবার ক্ষমতা থাকি-লেও রোগ প্রযুক্ত ভাহাতে মনের প্রবৃদ্ধি श्य मा, छानी वा**र्जिमित्रात क्यादात विभूख** শ্ৰূপ খান করিবার সামর্থা থাকিলেও পাপ প্রযুক্ত তাহতে মনের স্পৃহাহয় নাঃ আব-তএব পাপ কর্ম হইতে বির্ভ হইরা ঈশর স্থাকে উদ্দীপন না করিলে ঈশ্র লাভে-য় সন্তাবনা নাই। যদি অনুৱাগ বাজীত কোন কর্মাই সিজাহয় না, ভবে ঈশবেতে যাহারদি-গের অনুরাগ নাই, ভাহারা ভাঁহাকে কি প্র-কারে ল'ভ করিবে ? ' নায়মান্ত্রা প্রবচনেন লভোন মেধরান বছনা আচতেন৷ যমে-বৈষ রুণুতে তেন লভাস্তবৈগ্যৰআত্মা রুণু-তে ভতুং স্বাং ৷ " "মনেক উক্তম বচন, দারা বামেধাভারা অথবাবছ আইবণ ভারাতা-হাকে লাভ করা যায় না, যে সাধক সম্প হ হইয়া তাহাকে প্রার্থনা করে, সেই তাঁহা-কে পায়; পরমাত্মা এৰূপ সাধকের সলিধা-নে আত্ম-স্বৰূপ প্ৰকাশ করেন ! " যাঁহা-র তাঁহাতে স্পৃহা আছে. তিনি যতক্ষণ না তাহাকে লাভ করিতে পারেন, ততক্ষণ তা-হার আর কিছুই ভাল লাগে না। তাঁহার নিকটে স্ব্যরশ্ম অক্ষকার প্রায় হয়, তা-हात निकटि भनी नक्क लाका मुना हत्र, काशतक मूनीकल बाह्य मीकन कतिएक श-রে না। তিনি ভৃষিত মৃগের সার তাহ। क अरब्दन करतम अदः ভृषिक मृश स्थम কল প্রাপ্ত হইলে পরিতৃপ্ত হয় ভিনিও ড-জাপ বেই অমৃত লাভ করিয়া পরিভৃঞ্ रुद्रिन । छिनि कि श्रुणवान् वाक्षि । विनि वस चार्ष्यम् भारत् नका कावनातः भारतमानिः मानवः मृर्थतः जाकतः, जबतः जबतः, जब-র্পুরবলৈ লাভ করিয়া আছির আর্থ ररेबाइट्न। श्रीवित कि वाश्राक्ष्म विनि अन

ৰ্ব্ব ভাঁচার আহিতাব জাজ্লামান দেখি-क्रि वश्य हक् ख्यीलन करतन, (ड्रंट्स । ' ভৱন এই অনন্ত আকালে মেই অৰূপী প-রমেশরের বিচিত্র রূপ দর্শন করিয়া ভাঁহার গুণ প্রাম ক্ষার করেন এবং মধন তিনি চক্ নিমীলন করেন, তথন স্তক্ত হইয়া চেডনের চে-ভনকে মনের অভ্যন্তরে অনুভব করেন। তি-নি প্রভাকরে তাঁচার প্রভা, চন্দ্র-সঞ্জান ভালা র শোভা, নক্ষত্ত-গহনে চাঁহার জ্যোতি,প্রতি পুল্পে ভাঁহার সৌন্দ্র্যা, মাতৃজ্বদরে ভাঁহার (यह, म्याःल्युत मदन छोहात प्रशः), विश्व-मर-সারে জাঁহারই ভাবের আবিষ্ঠাব দেখেন; অথচ জামেন তিনি ইহার কিছুই নহেন। তিনি জালা নছেন, তিনি জ্যোতি নহেন; তিনি স্লেছ নছেন, তিনি দয়া নছেন ; উপহার ৰূপ নাই, ভাঁহার নাম নাই। তিনি সভ্যের সতা, প্রাণের প্রাণ, চেতনের চেতন, মকুল ক্ত্রপ ৷ বে মঙ্গলমধ নিগৃত্-ভাবের এই বিশ্বৰূপ আৰিষ্ঠাৰ, ভাঁহাকে না মনেতে পা-अत्र वात्र ना वात्कात्क कही यात्र । हे लिहत ও মন ভাঁচার সেই নিগুছ-ভাব অনুধাবন ক-বিতে গিয়া কৰে হয়। চকু ছারা সেই অ-বণকে বণ্জপে দেখা যায়, কর্ন দার। সেই অশব্ধকে শব্দৰূপে শুনা যায় মন দারা সে-हे अपनादक महनाबहल अडीडि हा, কিছে দেই অচিম্বা নিগৃত-ভাবকে কেছই পারে ना। ' न उत প্রকাশ করিতে मृर्त्याङां व म्ह्यू शत्रकः (बनाविष्ठा-ভৌভান্তি কুভোষসগ্নিঃ। তনেব ভান্তম-নুভাতি সকং তস্য ভাষা সক্ষমিদং বিভা-ভি ৷" " সুষ্ঠী ভাছাকে প্রকাশ করিতে পারে বা এবং চন্দ্র তারাও ভাহাকে প্র-কাশু করিতে পারেনা; এই বিত্যাৎ স-কলও ভারাকে প্রকাশ করিতে পারে না, ্তিৰে এই অগ্নি তাঁহাকে কি প্ৰকাৱে প্ৰকাশ করিবে ৷ সমস্ত জগৎ সেই দীপামান প-রুমেশরেরই প্রকাশ ছারা অনুপ্রকাশিত হ-देशा मीख लारेट्टर । अहे प्रमुनाय छी-হার প্রকাশেতেই প্রকাশিত হ**ইতেছে** ৷ '' বাঁহার প্রকাশেতে এই সমুদ্ধার প্রকাশ পা-ইতেহে, তিনি বে কি ভাষা কেবল ডিনিই कारमस । " गटबन्धि विचार म ह जगानि वि- खा" "ভिনি যাহা কিছু বেলা বস্তু সমস্তই জানেন, কিন্তু ভাঁহার কেহ ভাগা নাই 1

যধৰ আমরা নিদ্রাতে অভিভূত থাকি তংৰও বিনি জাগ্ৰত থাকিয়া আমার্দি-গের কামা বস্তু সকল নির্মাণ করিতে বা-কেন, ভিনি জলে স্থান প্রো স্কাত সম ভাবে तहिवाद्यम । जिनि ऐपाकात्मत **य**-क्निक्द्राः, निनानारथक् अच द्रश्चित्व, श-ব্যতের উচ্চতন শিখনে, সমুদ্রের ভীষণ ত-রজে বিরাজ কবিতেছেন: তিনি এই জ-গৎ ৰূপ স্তম্ভীন মনোহর প্রাসাদকে আ-প্ৰাব্ত অধিহাৰ ৰাবা প্ৰিত্ত ক্ৰিচেছেন। তিনি আমাত্রিতার শরীর ক্রামন্তির মধোঁ মন আসনে আসীন হট্যা বিশ্বাস্থ্য পালন করিতেছেন। তিনি এই সমাজেতেই বর্জ-মান রহিয়াছেন। এই সমাজে এই সকল দীসমালা হইতে যে জেচতি বিক'ৰ্ণ হইয়া-ছে. ভাষার মধ্যে সেই জ্যোতির স্মোতি, শুক্ত, অপাপ বিদ্ধ জাছল্যমান প্রকাশ পা-ইতেছেন এবং এথানেই বস্তমান থাকিয়া আমারদিণোর প্রতেটকের মনের ভাব পর্যান্ত অবলোকন করিতেছেন, তাঁচার মহিমার ঘোষণা আবণ করিতেছেনও আমারদিনের পুজা গ্রহণ করিতেছেন। ভাঁহার নিকটে কুতাঞ্জলি পুর্বক আমার এই প্রার্থনাযে তিনি এই পৰিত্ৰ ভ্ৰাহ্ম-ধৰ্ম পুথিবীময় ব্যাপ্ত

অনস্তর উপাচার্যোরা ত্রক্ষোপাসনার নি
দি বি পদ্ধতি পাঠ করিলেন, ত্রান্ধেরা ঈশরের জ্ঞান ও শক্তিখান করিলেন এবং করেক জন ত্রাক্ষ উপাচার্যাদিগের সহিত মিলিত
হইয়া সমস্বরে তাঁহার মহিনা প্রতিপাদক
কএকটি ক্রান্তির আর্ত্তি করিলেন। তৎ
পরে উপাচার্যা শ্রীযুক্ত আনন্দচক্র বেদা গুবাগীশ ত্রাক্ষার্যান্ধির চভুর্জন অধ্যারের প্রথম
তিনটী ক্রান্তি তাহপর্যাের সহিত ব্যাঝ্যা ক
রিলেন এবং বিভীয় উপাচার্যা শ্রীযুক্ত বাবেশর বিদ্যালক্ষার মনুখ্যের কর্ত্তরাকর্ত্তরা
বিধান ও ঈশরের প্রতি প্রতি ভক্তি বিষয়ক
একটি সুচারু প্রস্তাব পাঠ করিলেন। তদলকর শ্রীযুক্ত নহীনকৃষ্ণ বন্দ্যোপাধ্যাস্ক স্বারের উপাসনা বিবরের বে ক্রা

পাঠ করেন, ভাষা পশ্চাৎ প্রকটন করা ধাই-তেছে !

'' ইহা প্রম নৌজালার বিষয় বলিতে হইবেক, দে এঞ্চৰে এদেশীয় অৰেক সন্ধিদ্যা-नानो विष्का वास्त्रित वृश्वितृष्ठि मार्किष छ গর্মা প্রবৃত্তি পরিশাদ্ধ হওয়াতে ভাঁহারা সঞ্চশ্ नं शुद्धि भूशक महा श्रामंत्र व्याचार शहन के রিলামনুতানংদের গৌলব রুদ্ধি করিতে অ-মুরাপা হইয়ারেন এবং ভাছাদিলের **অব**-লধিদ ধর্ম যাহাতে মক্ষাৰ্ ক্ৰপে ভ্ৰম প্ৰমাদ বন্ধিত প্রিশুক্ত হর, ভাষার নিমিক্ত ভাষা-রা বিশেষ বস্থা প্রকাশ করিতেত্তন। তাঁ-হাণা কোন মনুধা কম্পিত কাম্পনিক শাস্ত্রের অনুশাসন ঘাঞা চালিত ইইয়ার্ধা কর্মের अमुष्ठीम करिए हेका करतन ना जदर का-ন অংশীক্তিক ও অনুসক বচন প্রমাণ্ড ভাঁহাদিলের প্রভাষের মূলেক্তন প্রাপ্ত হয় না ৷ ভাল্রা স্বরং কোন প্রকার অমূলক क्ष शास्त्रतः अवीन हरेशा कुर्शिक क्रियाद **च**-न्धान कवा मूटत चाकुक, जांशामिटशत मिनीय ह क्रमंत्रः . व नमस्य कृत्रः स्वादित क्रमुद्धार्थ क्य-দ্যাপি নাম প্রকার অলীক কার্যার আচ-রণ করিয়া **আসিচেছে** ওঁ,হারা সেই **সমস্ত** ংজনুল কুনংকার ভা≢।দিলের জন্ম হইতে ধ্যুলে উম্পন করিবার জনা সাহিশ্য বাঞ হই ধ্ৰছেন এবং নান: দেশীয় শাজকাৱদিলেব া সকল ছুক্ছেদা শাসন জালে জড়িত হুইয়া **ৰহু সংখ্যক মনুয্য অদ্যাপি অসভ্যের প**্রে ভ্ৰমণ করিতে বাধ্য রহিরাছে, ভাহারা মা-না প্রকার যুক্তি ও তর্কপ অসি দারা সে-ামরু শাস্ত্রের ভ্রম *এতি স্কল* ছেমন ক-निता भन्ना कुलत्क बना कतिवाद कना ८५-থিত হইয়াছেন। দে সকল কাম্পনিক পর্মা গ্রন্থের নাম প্রবধ্ করিলে কন্ত কত বিজ্ঞান বিং ব্যুৎপন্ন কেমরী ব্যক্তির স্থক্ষ বৃদ্ধিও কড়ীভূত হইয়া যায় এবং সম্পূৰ্ণ অসক্লন্ত ও ष्यदरोक्तिक इहेदलक सहात धक्ति वादका অপ্রতার করিতে অনেকের ভরসাহয় না, ভাহারা দেই সমস্ত এছ মহম পূর্মক ভাহা-व नस्मात्र नात्राश्म अस्म कत्रित्रा विकेषि घमाद छात्रा जनसाहिन छात्रा विसिद्धिकी। राष्ट्रावितमेत्र नियान अर्थे त्या वर्ष निर्मेश के-

গদীবার সম্পার মনুবাবর্দের নকঃ ভূমিছে অবিলখন অকরে বে ধর্ম শাস্থ আক্তর করিয়া লিবাছেন, এবং এই বিশ্ববিশাল প্রস্থান করে করিয়া লিবাছেন, এবং এই বিশ্ববিশাল প্রস্থান করে করিয়ালে, ভারাই অভায় মধার্থ করানিত বিশ্ববিশাল প্রকাশ এবং ভারাই মনুবা কাতিব অবলাগ ও উপসেবা যাহাতে উক্ত ধর্মের অবলাগ অলুসারে মনুবা কাতিব সমুদার ধর্মানুষ্ঠান সম্পূর্ণ কর্পে দোল বুলার ধর্মানুষ্ঠান সম্পূর্ণ করেপ দোল বুলার হেন্টা করিতে প্রতিজ্ঞান্ত ইনাছেন।

किछ (भो नागाजनरा याण्यामरशत कान-য়ে উক্ত প্রকার মহৎ ভাবের উদর হইরা-ছে, বাহারা ধর্মকণ অমূল্য রত্নকে দ্রম পঙ্গ হইতে উদ্ধার করিয়া উজ্জান করিভে ত্ৰতা হইয়াহেন, জাহাদিলের ইহাও একবার विद्वान्य क्रिया (भवा) श्राव्याक, त्य धर्म যেমন মনুষা জাতির ভূষণ স্বরণ, ঈশরো-পাসনা ভেমনি ধর্মোর অলকার বর্ণা, ম-নুবা বহন্ত সহত্য বিদ্যায় বুৰেপন হইয়া ধর্ম বিলান হইলে যেমন ভাতরে কিছু সাজ গৌরৰ থাকেনা এবং সে কন্মিন্ কালেও : সদপ্ৰ মনুধানামের উপয়াঞাহইতে পা-রে না ধর্মাও সেই রূপ সহস্রে প্রকার সং ক্রিয়া এ কর্ত্তব্যানুতান দারা পরি**পুরি**-ভ হইর। ঈশারতত্ত্ব বর্তিত হইলেও তা-হার কিছু মাজ'মহজু থাকে না এবং ভাহাকে কোন ৰূপে প্ৰকৃত ধৰ্ম বলিয়া গণনা করা যাইতে পারে না৷ ঈশার জী-जि बर्स्यात खान स्वतन, त्ये बर्स्य कन्नो-चंद्रदेव औष्टिवरमव कि है माजः अमझ मारे তাহার তুলা মাধুর্যা হী**ল ক**ঠোর ব্**স্থু সা**র কি আছে? প্ৰাণহীৰ মৃত কেহেই বেমৰ काम (बोक्सर्य)—रक्षमा प्राप्त येकाच शात्र ना). ঈশর প্রীতি শ্লামীরস ধর্মেরও সেই রপ किंद्रभाज देशीन्तर्या ७ कान माधुर्या थादक ना । जिल्हातीमानना मकल भट्यांत मुनागाता অতএব ধর্মের উল্লেখ্য সাধ্যম ও সৌন্দর্যা ক र्क्स 'कर्तिरंड वंद्रेजील 'इरेट्स जर्ममध्येष्ठा मेर्टिन द्रीवी चोर्वशाक हमें, मार्क्टिक मर्ज्यूक क्र নদীৰ্থানে ই প্ৰেণ্ডি-জালা হৈছিল কৰা আৰু ভাৰিছ

শীভিন্ন শুধিকা হন্ত, এবং বদ্ধারা আমরা অহরহ ওঁছার প্রতি প্রকাত প্রীতি প্রকাশ পূর্ র্মিক ভাঁছার উপাসনায় নিযুক্ত থাকিতে পারি, কোন ক্রমে বেন ভাহার পক্ষে কোন ব্যভিক্রম নাখাটে 1 ক্রমে ঈশরকে বি মৃত হও গা ও ভাঁছা ছইতে আপনাকে দুরস্থ করা কথন ধর্মোন্নভির চিত্র নহে, ঈশরেব শারণ মনন ও নিদিখ্যাসন বর্জিত ধর্মাই ধদি প্রোভ ধর্মের লক্ষণ হইত ভাহা ইইলে নান্তিকের ধর্মাকেই সর্ব্বাহ্রগণ্য বলিয়া প্রাথ কবিতে হইত 1

নিয়ম প্রবাক কতিশয় সাংসারিক কর্ত্ত-वा সাধন कहारकहे गोहाता प्रम्म न धर्म माधन भरन कतिता जाथितारहम-धैरहाता गत्न कर्द्रन त्य भन्ता कचा धादन कदिंश क-তক গুলি লৌকিক ও বৈষয়িক বিষয়ের স-যন্ত্র বিচার পুর্বেক কার্য্য করিতে পারিলেই প্রকৃত বৃদে মনুব্য নামের উপযুক্ত ইওরা ঘাইতে পারে এবং সক্ত'র্ণ রূপে ধর্মা সা-ধনও করা হয়, পিতা নাতা প্রভৃতি ভক্তি -ভাঙ্গন গুরুজনদিগকে ভক্তি করা, পুত্র ক-ন্যা প্ৰাকৃতি স্নেহ্ন পাত্ৰ বৰ্গকে যথোচিত স্নেহ করা এবং ভ্রাভূবকু অমাতা প্রভৃতি প্রণ-য়াস্পদ ব্যক্তিদিগের প্রতি উপযুক্ত প্রতি প্রকাশ করা ইত্যাদি ক্তিপয় কর্ত্তব্য সাধন কেই যাঁখারা ধর্ম সাধনের সীমামনে ক-বিয়া রাখিয়াছেন এবং আক্রম ঐ প্রকার কর্ত্তব্য সাধন ও তক্তনিত সুখ ভোগ বিষয়ে च्यनुताशी इरेशारे काल यापन करतन, छाहा-দিলের ভ্রান্তির আর শেব নাই। ইহা সভ্য बर्टि (ग सनुषा खचा थात्र । कतिशा मकल বিষয়ের সম্বন্ধ বিচার পূর্বেক কার্যা করিতে পারিলেই ধর্ম সাধন করা হয়, কিন্তু কেবল পিতা, মাতা দ্বী পুত্ৰ ভ্ৰাতৃ বন্ধু প্ৰভৃতি পরিকার বর্গ ও কঠিপয় বাহ্য বিষয়ের স-**হিত আমাদিগের সম্বন্ধ রক্ষা করিয়া কার্য্য** করিতে পারিলেই যে সম্প ন্রপে ধর্মাপালন করা হর, এমত বছে। যে ক্রণান্য আদি-পুরুষ আমাদিধের মনে পিতা যাতা এত্-তি গুরুজনের জন্য ভক্তি ভাব প্রদান ক-রিয়াছেন, ্যাহার নিকট হৃইতে আমরা भूजारिक बादेसका काव आख हरेसाहि ध-

বং মাঁহা ছইতে প্রিয় তম বর্গের প্রথম সম্বন্ধ উৎপদ্ধ ছইরাছে ও বাঁছার প্রদন্ত জ্ঞান ছারা আমরা বাহ্য বিষয়ের সহিত আমাদিনের সদ্ধন্ত কির করিতে সমর্থ ছইতেছি, তাঁছার সহিত বে আমাদিনের কি প্রমাসম্বন্ধ মন্ত দিন আমরা সুক্তরক্ষেপ তাহা জ্ঞাত ছইতে না পারি এবং সেই সম্বন্ধামুদারে কার্য করিয়া অনুপ্রমাস্থা মুর্থী নাছই, তমদিন আমাদিনের কেনে প্রকারেই সম্পূর্ণ করে বাধ্য স্থান করা হর না । ওতদিন আমারা কেবল ব্যামরিপ অমূহ কলের স্থাকরই আমাদ প্রহণ করিতে থাকি, তাহার মুর্ধানার নলের কিছু মাজ রস ভোগ করিতে পারি না।

আমাদিগের ক্রফা, পাছা ও পুর্থদাছা জগদীশবের সহিত যে আমাদিরের কি সম্বন্ধ ভাষা তিনি মনুযোৱ নিকটি কোন প্র-কারে ছুড়োর করিয়া রাপেন নাই, ভিনি সে বিষয় সকল মনুষ্টেট গ্রন্থ হয় হিব মুগে হয় পন করিয়া রাখিয়াছেন। অভিন্যু কৌশল সম্পন্ন এই বিশাল বিশ্ববাহা সন্মন্ত্ৰ ক রিলে ইহরে একটি অন্যু জান্মণ কার**ণের** সভা প্রতীপি হওয়ামনুধা জাভির যেমন বভাৰসিক, সেই ৰূপ এই জগৎকতা প্র-মেশ্বরের অমস্ক্র শক্তি, অপার ক্রুণা ও জ-मुशम (मोन्सरवात विगत आहरूहिमा कर्ति-শেও ভাঁছার প্রতি আপনা হুট**তে দৃ**ঢ় ভক্তি, প্ৰবাঢ় প্ৰভিত্ত ঐকান্তিক প্ৰদ্ধাৰ উদয় হওয়। মনুধা নাজের ই **প্রেক্তি মুলক**। গঁটোর বুদ্ধি ক্তিকোন প্রকার বিশ্বস্থারা বিভান্তনা হয় এবং ঘাঁহার ধর্মা প্রান্ত প্র-কুভাবস্থায় ঘাবস্থিত থাকে, ভাষার আর কথন পূর্বোক্ত সভায়ে প্রতি সংশয় জ্ব-ঝিতে পারে না। অতএন জগদীশরের স-হিত আমাদিগের যে কি সংক্ষা এবং কি প্রকারে ভাঁহার সহিত সম্বন্ধ রক্ষা করিলা তাহার উপাসনা করিতে হয়, তাহা আমর। को स को स मनत्क जिल्हाना कति तह मिन-শেষ জ্ঞাত হইতে পারি, সে বিষয়ে আর ষন্য কোন উপদেষ্টার আবশাক হয় না। আমরা যথন জাহার দয়ার বিবয় আনলো-চলা, করিয়া দেশি, তথ্য কি আরু আম-

র। ভাষার প্রতি কুভজতা প্রকাশ না করি-য়। কোন মতে নিরস্ত থাকিতে পারি, য**গন** জামরা একাপ্র চিত্তে ভাষার অসীম শক্তি চিয়া কৰত সেই প্ৰব্ৰগান্ত অনস্ত জ্ঞান স-ৰজে আপনার মনকে সলিবেশ করিতে পাকি, তখন আমাদিণের ক্ষুদ্র মন ভাহার কোন সীম: না পাইয়াকি উচ্চৈংশ্বরে ও अक्शि छाटव अहे वाका छेळात्रव कटत ना মে, লাজগদীশ, তোমার জামের সীমা কোগাম: এবং তৎকালে কি স্বভাবতই আমারদিংগার মন হইতে এক আক্র্যা ভ-ক্তি প্রবাহ উপ্তিত হুইয়া সেই পরম পুরু-বের মাহ্মা সাগরে মিপ্রিত হইতে গ মন করে নাটু এই কলে মনুধোর মনে দে ममर्व क्रवनिश्वदित अनुषम श्रीजित मुधा-ময় ভাব উদয় হয়, তথনকি আর সে কোন প্রকারে ভাগাকে প্রতি না করিয়া নিরস্ত शांकिएक शास्त्र मन्या यथेन विस्वहना कतिया एएकः एव शृथिबीत मस्यास ममन् भन्दद शमार्थ अन्त्रभन कतिहा बाहात मन्न चा मानति व चानत्मन मक्ष्मन इस धवर द्य म-মল প্রতিকর প্রিয় পদার্থ অবলোকন ক-লিয়া দে অনুপম সুথ লাভ করে, বিশকর্তা कत्रमी बत्रे (प्र प्रमुमात्र मिक कतिहार्डन, তথ্য তালার দ্র আপনা হইতেই প্রেমের সাগর ও সৌন্দর্যোর আকর ঈশরেতে গ্রী-ভি করিতে উদাত হয়। **অতএব জগদী**শ-বুকে প্রাতি করা ও ভক্তি করা যে মনুযা জাতির স্বভাব-সিদ্ধ তাহাতে আর সন্দেহ এবং ভাঁহাতে প্রস্কা ভক্তি ও কুত-ততে শন্য ছইলে যে কোন ৰূপে মনুষ্য প্রকৃত মন্ধা নামের যোগা হইতে পারে না ভাতাতেও কোন সংশার নাই। যিনি বি-শেষ ৰূপে ঈশ্ব প্ৰণীত প্ৰকৃতি মূলক সতা ধর্মোর তাৎপর্যানুসন্ধান করিয়া দেখি-বেন এবং অকপট ৰূপে ভদ্ধাবলয়ৰ পু-ক্ষক আপনাকে কুডার্থ করিছে ইচ্ছক হ-উবেন, ভিান সুস্পান্তৰপে দেখিতে পাই-Cवन, (व क्रेश्ट्याशामना धट्यांत थान चन्न, विना कशमीयद्वत छेलामना कथरे धर्मा मा-গন পূৰ্ণ হইতে পাৰে না এবং তিনি আপ-ना इहेट अन्ना एकि अभी क महकारत

অন্বরত জগদীবরের উপাসনা করিতে বি-যক্ত থাকিবেন।

ঈশরোপাসনা ঘেষক ধর্মের প্রাণ ছ-बुल, मिरे बुल छेड़ा मनूबा काकित मुख बन জ্লতা ও মহত্ত্বে মূল কারণ ৷ বে ব্যক্তি गर्तना कशमीयदत्रत चात्रन, प्रवन अ विविधा-সন ভারা ভাছার মহৎ ভাব সকল আপ-নার মনে জাগ্রত করিয়া রাখিতে সমর্থ হয়, মর্ত্রা লোকে তাহার তুলা মহস্কুবান্ আর কে আছে? এবং যে ভাগ্যবান লাধ পুরুষ স-বিদা ঈশ্বর প্রানে মগ্ন থাকিতে পারে গ হয়, ভাহার ভুলা সুধীব্যক্তিই বা আর কোধা-য় প্রাপ্ত হওয়া যায় ? যে সাধক সর্বজ্ঞ সর্বব্যাপী পরমেশ্বরকৈ সর্ববদা সর্বতে সা-কী স্বৰূপে বিরাজ্যান দেখে, সে কাষ্যত কোন কুক্রিয়ার অনুষ্ঠান করা দুরে থাকুক. ভাहाর মন भर्धा । একটি কদর্যা চিস্তার উদয়হয় ৰা৷ সে ব্যক্তি জনাকীণ নগর মধ্যে যে প্রকার মত্রের সৃহিত ধর্ম পদ-वीट्ट शम्हालन करत, धनम्बा अतुना म-ধ্যেও তজ্ঞপ সাবধান হইয়া ধৰ্মানুষ্ঠান ক-রিতেরতথাকে, সে অতি দুরুত্ব নক্ষত্র ম-গুলে জগদীৰরের গাদৃশ প্রকটিত প্রভা সন্দর্শন করে, আপনার জ্বর ধামেও তাঁ-হার দেই ৰূপ সুস্পতি আবিভাব অবলো-কন করিয়া সুখী হয়, সে বাজিক সঞ্চত আপনার পরম পিতা পর্যেশবকে বিরাজ-মান দেখিয়া সকল স্থানে তাহার আজ্ঞা পালন করিতে উৎসাহাত্মিক হয় ৷ ভাহার मग्रदक्क मकल प्रावहे भूगा कर्मा माधरवर्त म-मान हान हम এवः जकन व्यवचाई धर्म माधरमत काल इन्या छेटा । समामेश्वरतत উপাসৰা করিবার জনা তাহাকে কোন স্থান वित्यारव अभन कतिरक इंग्र ना अवश्काल বিশেষের জনাও ভাছাকে প্রভীকা করি-য়া খাকিছে হর না যে স্থলে ঘর্থন ভাছার চিন্তের একাঞ্রতা হর তথনই সেই স্থানে সে ৰান্তি আপন উপাস্য দেবের উপাসনা ক-রিয়া চরিভার্থ হইতে পারে । ভাহার নিক্ষট বিস্তাৰ্থ সাগৰ গাড়িও বেমৰ ভাৰ্ম, অভুচ্চে পৰ্বত শিবৰও সেই ৰূপ পুণা স্থান! অতএৰ ভাহার জুলা গৌচকাৰিত মহুৰ জ

। সুব্য এ ভূমগুলে আর কে হইতে পারে। विकाशवान् श्रुक्षव मर्समा मिरे मूर्थ मा-का भवरमन्तरक जाभन क्रमत्र थारम थात्व कदिएक मक्तम इत्र अदर मर्समा चानमारक ভাঁহার প্রেম লাগরে নিমগ্ন করিয়া রাখিতে পারে, ভাহার যে আর সুখের সীমা থাকে मा, এ कथा উল্লেখ कताई वार्छना । यागात দারা আমারদিগের ধন্মেঠে দৃত্তা জন্মে এবং সভাবের সমতা হয়, ধাহাছারা আ-মাদিগের শান্তির উন্নতি স্তমনের মহত্ত্ব উ ধ্পান্তি হয় ভাহার তুল্য সুধ্বের বিষয় আর সংসার নধ্যে কি আছে? সুখ দাতা জ-গদীশর আমারদিগের জন্য এ পৃথিবীতে থত প্রকার মুখের সৃষ্টি করিয়াছেন ভাঁহার উপাসনা করিতে হইলে ভাষার একটি সু-থও পরিত্যাগ করিছে হয় না, প্রভ্যুত তদ্যার) সেই সমস্ত সুখ আরও আমাদি-গের নিকট বিগুণী ভূত হইয়া উঠে। প্রির বজুর হস্ত হটতে কোন সুখদদ্রন্য প্রাপ্ত হ-ইলে সে দ্রব্য উপভোগ করিয়া যাদৃশ সু-গী ছওয়া যায়, সামানতে কোন সুর্থকর ব-স্তুর উপভোগ দ্বার। কি কখন দে প্রকার সুগ উৎপন্ন ছইতে পারে ? পিডা প্রসন্ন বদনে স্নেহ পূৰ্বক সন্ধানকে কোন প্ৰসাদ চিত্ৰ প্ৰদান করিলে, ভদ্যারা সন্তানের মনে যে প্রকার षानम करम, महस्म कान वेख वाता कि কথন তাহার মনে তাদৃশ আহলাদ জিমি-তে পারে? অতএব দেসমস্ত ধীর ব্যক্তি व्यक्तिनमञ् श्रद्धायद्भाय अर्द्धा श्राय्यन পরম বন্ধু ৰূপে প্রভাক করেন এবং ঘাহারা ভাছাকে ভক্তি ভাজন পিতৃৰূপে অহরহ माकार मन्दर्भन कतिया शास्त्रन, छाहाता এ পৃথিবীতে কোন বিষয়ে সুখ ভোগ করি-या (व श्वकात व्यानम्ब लाक करत्न, याशत ঈশবেতে ভাদৃশ ভক্তি ও প্রীতি না থাকে (म वाक्कि कथनहे (म क्ष. मूर्च (ভाগ कति-তে পারে না। ঈশরপরায়ণ প্রেমিক বাজি পুথিবী মধ্যে যে কোন প্রকার सूध मारे करतन, किनि उधनि छोहात म-(धा फाँशांत अवसम्भान भन्नदम्बद्धत काममृन **(अगरप कार मन्त्रीत करिया कर पाण्या** थ पीनक्रमीय जूटचे मूची स्टान, भण्यव

ভাহার সুধের সহিত কথন সামান্য সুখের তুলনা হইতে পারে না। অপিচ যে পুরুষ স-विषा कश्मीचात्रत्र ध्यारम काशन मनत्क নিমগ্ন করিয়া রাখিতে পারে, সে যে আর একটি প্রকার আশ্চর্যা সুখ ভোগ করে, তা-হার সহিত সংসারের কোন সুখেরই ভুল না **ভইতে পারে না** এবং যে ব্যক্তি কথন সে সুখ উপভোগ না করিয়াছে সেও ক-थेन क्विन अनुमान होता तम मूरश्त अनु-ভব করিতে সমর্থ হয় না। প্রাবদ্যেস্থিয় যেমন সুত্রাব্য সঞ্চ আলাপের মধুর ধুনি ত্র-বণ করিবার জন্য প্রস্তুত রহিয়াছে, রস্কা (गमन डेश्क्रके डेशारमध थाना करवात तम মাধুরী আসাদ করিবার জন্য বাঞ রহিয়াছে এবং ঘ্রাণেক্সিয় বেমন সৌগন্ধ কুসুম সৌর 🖷 ছারা তৃথ্য ইইবার জন। সভত ইচ্ছা. করিতেছে, সেই ৰূপ জগদীশ্বরের প্রেম: মৃত পান বারা ভূপ হইবার কানা আনব-রত জীবাত্মার একটি স্পৃহা উদ্লব চইতে ছে। এপৃথিবীর কোন পদার্গ দারা তা-হার সে স্পু হা পুর্ণ চইতে পারে না এবং যে প্রান্তনাজনিংখার উক্ত স্থাপুন চঃ. দে পর্যান্ত কোন মতেই আত্মার শা-তিহয়না মান, খশ, ধন সকপতি প্র-ভূতি কোন প্রকার পৃথিবীর বস্তুতে আত্মা-ব সে নির্মান শাভি সাধন করিছে পান রেনা এবং কিছুতেই আত্মার ভূপ্তি হয় না। মধুপানোদাত মধুকর যে প্রকার মধুহান পুলেপ চঞ্চা হইয়া জ্ঞমণ করে, ম-नूरगत आका ७ अपृथिवीत विवस्त महे क-প অস্থির ভাবে জমণ্ করিতেছে, ব্যাপক কাল কিছুতেই স্থির থাকিতে পারে না 1 কিন্তু যাহার আত্মা তৃপ্ত হুইবার জন্য এই कार्प खेंगन कतिएक कतिएक कश्मी शास्त्रत সহিত সংযুক্ত হয়, সেই প্রকৃত বাপে ভৃত্তি লাভ করে। অভএব সেই প্রেমসিন্ধু প্রমে-শ্বেতে মনোভিনিবেশ করিতে পারিলেই स्व सन्ता व्यक्त मूर्थ मूत्री इत फा-হাতে আর কিছুমাত সংশয় নাই! যা-হার আছা একবার সেই অনুসম সুধের काशान व्याख रुदेशात्र, तम जान मरमादन-র কোন সুখেনত হয় না, ভাহার মন ত্-

বিত চাতকের ন্যায় এক দূর্বে উদ্ধু রুখে সেই জগদীখরের প্রেমামৃত বিগলিত সুধা গারা প্রাপ্ত হইবার জন্য নিরস্কর একাত্র ইইবা কালবাপন করে এবং হেই প্রীতি ক্রপ সুবাপানে সবল ইইনা দিন দিন বিশ্বতি হ-ইতে থাকে।

ছে ব্ৰাফাণ্ড! িয়া একবাৰ আমাদি-গের বিবেদনা করিরা দেখা উচিত যে আ-মরা কোন্ধর্ম অবল্যন করিয়াছি এবং কোন প্রবেধনন করিতেতি, আমাদিগের অ-বল্যিত ব্ৰাল্ডম কেনে মূল হইতে উপিতে কর্রাহে এবং নেল্লক্লকা করিয়া অ-বস্থিতি করিচেত্রে । রাক্ষ্য স্থিয় করিয়া কার্য্য করা স্কালাই উচিত, লক্ষ্য স্থিয় না করিছে পারিলে সকল বিষয়েতেই বিভ্রান্ত হইতে হয় ৷ বাণিডা ব্যবসাবে থেমন লাভাল'-ভ স্থিয়কহিন্ধা কর্মা করিতে না পারিলে कु ७ काम है है है है लाइ। याच मी, धन्न विध्रहर उ (महे क्या कालमात क्या कित ना शाकि-লে ভাষার চব্দ ফল আপু হওয়া সাধ্য कत ना। आफता यनि यन भरता भन्नानां अहे লগা জির দুখি, যে আমরা চির কাল এ-পুথিৰীয়ত বাস কৰিছে আসিনাই এবং প্রিবার সাবভাগ সম্ভা কথন চির কাল দ্যমাদিগের সহিত লিগু থাকিবে না, কিন্তু धामता योहात दाटला वाम कांद्रेट हि. डि-মি মিতা ফালের অধিপতি এবং অনস্ত রা-ভোর স্থানী, ভালার সহিত আমাদিলের যে সম্বন্ধ আনুই চির কাল স্থানী থাকিবে এবং ভূঁচারই আশ্রেটের চির দিন আমাদি-গ্ৰেক ৰাস করিতে হুইবেক। আমাদিপের হলে যদি ইতানিশচর স্থিয় তর্ম দে আমর। যে স্ত্রী পুত্র পিতা মাতা ভ্রাতৃ বন্ধু গণের প্রবয় গান্দে মুগ্ধ ছওয়াতে ইন্থরকে ভূলিরা কাল-যাপন করিতেছি এবং দেধন মান যশ স-ম্পত্তির অনুরোধে এক এক সময় ধর্ম-কে পরিত্যাগ করিতে উদাত হইতেছি, সে ক্রীপুক্ত পিতা মাতাপ্রভৃতি পরিবার नन्तक अवनारे जान कृतिशा धक मिन ध-ধান হইতে আমাদিগকে গম্ম করিতে হ-हेरवक जबः जामानिर्शेत्र ज शृथिवीत्र धम मान, यम, मन्त्रकि मकल बनुविवीटकरे श

क्ति। शकिरतक किन्द्र व अभावतक विभाक्त হইয়া কাল বাণন করিতেছি, ভিনি আমা-দিগকে পরিষ্ঠাগ করিবেন না এবং যে ধর্মকে অবহেলা করিয়া ভ্যাগ করিছে উদাত इहेर डिइ, साहे धर्मा है कितल जा-मानिरात माम्ब मको इहै (वक, छाहा ह-हेला अहे पर छ व्याचापिरतात मरमत श्रीक ও কাৰ্যোর প্রকার আর এক ৰূপ হইয়া যা-য়৷ আমরা উৎসাত পূর্বাক ধর্মা সাধন করিতে প্রবৃত্ত হইতে পারি এবং প্রাণপণে ঈশবের শরণাপন্ন হটতে ইচ্ছক হই, খ-শের নিমিত্ত যদি আনাদিগকে অনেক প্র-कां देवस्थिक क्रांच चौकां के बिएंड इस তাহাতেও আমাদিগের বিশেষ ক্ষোভ উ-প্রিভ ইয়না৷ যে সুধ আমরা নিডঃ কাল ভোগ করিতে পারিব, অবশাই আম-রা সেই সুখ সঞ্জ করিতে উদ্যোগী হ ই এবং ভাহাতেই আমাদিণের অংকাও বিশেষ বত্ন উপস্থিত হয়৷ ১ ব্রাহ্মগণ! অবশেষে আমার এই নিদেশন যে আমরা যে বিশাদের প্রতি নিউর করিয়া ধর্ম পথের পথিক ছইয়াছি, তাহা মগত্ঞিকায় জল বোধের নায়ে ভ্রমবিশাস নহে, তাহার স্তু-গাসমূল ১ সভাবিশসি আর কিছুট নাই, আমরা ববার্থ সুধা সিম্পুকেই লক্ষা করিয়া ধাবিত হটরাছি, অতএব আমাদিগের আশা কথন বিফল) হইবেক না ৷''

ণরিশেষে চারিটি সুআবো বাদ্দার্শীত গীত হইরা সমাজ ভঙ্গ হয় !

## ঈশ্বরের মহিমা।

সমূদ্র

ভূমগুলে বে সমস্ভ বিকৃত পদার্থ দেবিতে পাওয়া বার, তাহার মধ্যে সমুদ্রের তুল্য আর কিছুই নাই। প্রায় পৃথিবীর তিন ভাগ সমুদ্রভারা পরিত্বত হইরা র-হিয়াহে। কোন সংগর তীরে লগাংখল রাজ্যর আহ্বালার বছ দুর বিকৃত অগাংখল রাজ্যর আহ্বালার মধ্যে বে প্রকার মহান্ত ভারের আহিতাহ হয়, পৃথিবীর কোন পদার্শ নিরীক্ষণ করি-

লে আরু মনেতে সে প্রকার ভাবের উদয় क्ष्रमा। এक श्वारत अविश्विक कतिया अ-প্রক্রিককে বেনন শাগরের বছদুর গ্যান্ত দেখিতে পাওয়া যায়, গ্রাম নগর পর্কাত কান-म क्षकृष्टि चार्त किছू है (मक्त्य मृष्टि গোচর ह রুলা৷ সমুদ্র যেমন ঘোরতর প্রশাস্ত তে-মনি মহা গভীর, সমুভের যে অপরিমেয় পভীরতার প্রবাদ শ্রবণ করা যায়, তালা নি-ভাত অসকত বোধ হয় না৷ এক নে পরি-মাণ দারা সমুদ্রের এক এক স্থানের যে গ-ভীরতা নিৰূপণ হইয়াছে, ডাফাতে ক-রিয়া গভার সাগর গর্মকে সহস্য অতল-**স্পান্ই বোধ হইতে পারে ৷** প্রেচ পরিশা-शक नाविक अवविविध छेपात घता श्रीक মাণ করিয়া কেথিয়ালেন, যে এক এক ডা-নে তিন চারি সহস্র হস্ত পরিমিত সুখীন জল মগ্ন করিলেও সমুদ্রতল আংল হওয়া যায় ন।।

করুণাকর জগদী,শ্বরের মহিমা প্রভাবে अभू खक्त कर्यन हाम दृष्टि गारे, उँहा हित দিনই সমভাবে স্থিতি করে: ইনা প্রার श्रास्त्रक्षे अवश्रक जात्ह्रम, रय मिवाकत स्रो র কর খারা প্রতিনিয়ত ই সমুদ্র হইতে জন ष्माकर्यत कहिया बाटक, किन्नु क्षेत्रण विद्या বাল স্বারা যদি সাগর জলেব ক্ষা হটত, काहा हहेरल এड भिरम श्रुपोवित जरमक নদ্দাও তড়াগ প্রভৃতি জালাশান সকল मुक्त इहेशा शाहेण अवश् अधि वर्ष सभी नि-করে ও প্রস্তবণ প্রভৃতির প্রবাহ দারা मसूख मत्था (य कल तानि পতি । हा, যদি তদ্যারা ক্রম্ সমুদ্রের কিঞ্চিৎ চুদ্ধি হইত, তাহা হইলেও এ পৃথিবীর জন-शम अबस এত मित्र खल मश रहेता वा-हेड, कि अव्यातत कत्ननी श्राप कानक-পেই गीनत करनत हाम दक्षि इहेटैं भारत न। अवर সংगादतत्र कान क्र्यविना व यति ना, क्या कित्र वाता व्यक्ति वर्ष नमूख क "रेट या अतियादन **जल क्य र**श, नम्मान सम समी चीत्र क्षवाह बाई। तिरे कि शृ-त्रम कट्रत, सुख्दार नागद कवा कित विनहे नव कादव शदक । অভএব বিল্মাণ প্রতি-शकः पूरेरेकटकः तव सूर्या वसा विधा वा-

য়ু প্রভৃতি মহান্ পদার্থ সকল যে বিশ্ব নিয়ন্ত্ বিশ্ব রাজের অনুশাসনে স্বীর শ্বীর
নির্দ্ধিত কর্ম নির্ধান করিতেতে, ভূমগুলশ্ব
প্রশন্ত সাগরও সেই পুরুষের অথগুনীর নিরেমের অথনি থাকির। সংসাবের কল্যাণ
সাগনে রত রহিয়াতে, সাধা কি নে সমুক্ত
শ্বীর নির্দ্ধিত দীমা উল্লক্তন করিয়া সংসারের কোন অকল্যান উৎপান করিতে পারে?

প্রথিবীর উগরি দেশক শৃক্ষ ভূমি র ভাগ গ্রমন নান৷ প্রকার খাত নিখাত ও নিরি গলের প্রভৃতি ভারা বন্ধুর ভার গ্রেস্ট্রাত্ত, সারর তলক্ষাল মগ্র ভু-बि भक्त । १ तहें श्राकतात है जेव छ अवन-ত হান হার। অসমান হইয়া রহিয়াছে। পুৰিবীর স্থল ভাগে শেমৰ প্ৰেত ৭ গিনি-ক সুর এবং খাত ও উপতাফা প্রভতি নান বিধ উচ নীচ স্থান দেখিতে পাওয়া যায় ; मस्ज गर्ड मधाउ धांवकम (महे बन वि বিধ প্রকার উন্নত ও এবনত হান বিদামান चारह। এठछित्र एन छारण (यसन नाना जाकीय छेडिए शमार्थ छेरलझ इर्मा थाटक, भागत बरवा अ (महे क्य बाबा का छोत्र ब्रूक जृग खना अनुमि छेश्भम इत बदर छ।-शता ध्रभःशा थकात कीरवत कीविका ध अन्यान्य कर्त्या निकाह करत । असूज मध्य এত शकात वृत्र अ क्ष की व कम शह्न क-রে, যে তংহার সংখ্যা করা ছুদ্ধর। মূদ্র নধ্যে অভিকায় তিমি ম**ৎস্য জন্ম এ**ছণ कतिता भूरथण कोवन याशन कतिरहरू, त्मरे मागत गार्डरे व्यक्ति कृत करान को है উৎপন হইরা জীবিত রহিয়াছে এবং উ-হারা প্রত্যেকেই স্বায় স্বীয় শক্তি অনুসা-त क्रमीयत्त्र धाका दश्म भूद्यक छ-গতের कार्या कরিছে नियुक्त तिशाहर। জগদ)শবের মহিমার বিষয় চিন্তা করিতে হইলে বিস্ময়াপন্ন হইতে হয়, তিনি যে কি উদ্দেশে কোন্ कीरवत मृष्टि कतिशास्त्रत, ভাহা জ্ঞান গোচর করাই কঠিন৷ সাগরস্থ षां क्ष थवान की है शुक्ष अक्तिक हहे-शा (य महान् कार्या नन्नामन करत्, महत्त्र म-रख महारम माष्ट्रमण अक्विक इहेन्नांड কোটি কেপে দে খ্যাপার সাধন করিছে ন- ক্ষম হয় নাঃ যে ভূতজুবিৎ পত্তিত ব্যক্তি कृतकत क्षवाल की है फाड़ा अगल बील न-কল উৎপন্ন হইবার বিষয় সবিশেষ আলো-চনা করিয়া দেখিলাছেন, তিনিই অনুভব क्तिएक भातिशाद्यत, त्य कशकीभाद्रत दर्गे-শল কি প্ৰায় বিশার জনক ! যে সমস্ত প্ৰ-শন্ত প্রশাস রমণীয় উপদ্বীপে বছ সংখ্যক প্রাণী বাস করিয়া সূর্বেতে প্রাণধারণ ক-রিতেছে এবং যে সকল শস্যশালী দ্বীপ পুঞ্জ হইতে আমরা নানা জাতীর সুখদ দ্রব্য প্ৰাপ্ত হইয়া অংশ্ৰ বিধ আনন্দ ভোগ ক-রিভেড়ি, বিশ্বপতি বিশ্বেষরের মহিমা ব-লে যৎসামান্য প্রবাল ক্রিট দ্বারা ভাষার অ-নেক দ্বীপ উৎপদ্ম চইয়াছে। অতএব স্থল कार्तात हकु किंकु नितीकन कतिरल आगता জ্বগদীখবের যে প্রকার মহিমার সাকী স-व्यक्ति कृति, कल महश्र अमरश्र शर्मा-র্থ অনবর্ভ ভারার সেই রূপ অতুল ঐশ-যোর মাহাত্মাবর্ণনা করে। সমুদ্র গর্ভস্ শে সমস্ত পর্বাত-সম স্তপাকার মৃত্তিকারা-। न करमा उ छेत्र इहेशा कल (छम शुर्वाक গাতোত্থান করে, ভাহারাই আমাদিগের নিকট দীপ ও উপদ্বীপ ৰবিয়া পরিগণিত হয়, সুভরাং দ্বীপোপরিস্থ সম স্থলকে এ-ক প্রকার সাগার গার্ভস্থ পর্কতের শিখার দে-শ বলিলেও বলা যাইতে পারে।

সমুদ্র অলের কারত্ব গুণ্ড এক প্রমা-মুত ব্যাপার, উচামনে করিতে হইলে স্পা-न्स् द्वविष्ठ ७ व्य १ हिन्द स्ट्रेट इस । है-ছা সকলেই অবগত আছেন, যে সমুদ্র স-লিল অতিশয় লৰণাক্ত; কিন্তু কি ৰূপে - কে সমুদ্র ক্লর এ প্রেকার স্বৰ মিক্সিড হইল ? छाहा अभवान करे निक्न कृतिछ পারেন নাই! কেছ কেছ অনুযান করেন যে নদ নদীর স্রোত ভারা থানিক লবণ ধৌ-ত হৃহত্না সমূদ্রে পরিত হওয়াতেই উহার জন এ প্রকার লবণাস্ত্র হর এবং কোন কোন ব্যক্তি এ প্রাকারও অনুমান করিয়া ধা-কেন যে সাগর পুর্ত্তাই শৈলক করণ তাবীশ कृत हरवारका छेत्रात सन्। सन्नास रहे-मा थारक । किस रेहा ह कान चानूनान र मध्यान बरहा पूर्वाक बकारत मार्ग्ड क

न नवनाक स्ट्रॉन कात्नाक कतिता जासा । কারত ধর্মের হাস বৃদ্ধি থকাশ পাইত। भेठ दरमत शृंदर्श मिकू गीतत (व अभ लब-ণাক্ত ছিল, একৰে ও সেই ৰূপ রহিরাছে, অতএব কি প্রকারে যে সিস্কু' সলিল লবণা-कु रहेत्र।एह रम विवय अकर्ण अक श्रकात মনুষ্য ৰুদ্ধির অংশচির বলিয়াই আব-ধারিত হইরাছে। কেবল এই মাত বলা যাইতে পারে, বে উহা সৃষ্টির ফল্যাণ সা-ধনার্থে স্থার অন্টার নিকট হইতে একশ সভাব দিদ্ধ কারত্ব গুণ প্রাপ্ত হইয়াছে। বযুদ্র জলে এ প্রকার লবণ মিপ্রিভ থাকা-তে যে সংসারের কত কল্যা**ণ উদ্ভব इইডে**-(ए, डाश वागता हेडि शृत्क **कल मधकी**त প্রস্তাবে সংফেপে কিঞ্ছিৎ বর্ণন করি-য়াছি এবং ভাষা একৰে বিশ্বস্থাপুলী মধ্যে প্ৰায় অনেকেই অবগ্ৰ আছেন৷ এক্ষণে क्वित हेड गांज वक्किता (य भागत **करन न**-বণ মিত্রিত নাথাকিলে সে জল জীৱ জ-স্কুর কোন উপকারী না হইয়াবরং অসং-খ্য প্রকার অপকারেরই কারণ হইত।

সমূজ এতাদৃশ মহানু পদাৰ্থ হইরাও विश्वत हिल्ला करानी शद्य दहना रेन भून थ-ভাবে দর্শক দিখের অসাধারণনেত্র সুখ সা ধন করে 1 সমুদ্র রচনা বিষয়ে জগদীশার এক क्ल (मोन्स्वं। ७ शासीयं। भरे करे जार म-ম্পাদন করিয়া যে কি পর্যান্ত আপনার মহিমা প্রকাশ ক্রিয়াহেন, ভাষা বর্ণনের অভীভূ ৷ व वाङि मून्त अमातिय म्यूफ कलात नी-লোজ্জুল বর্ণের শোভা সন্দর্শন করিয়াছে, मिर कारन (य विश्व अधि शहरमश्रद नानवरक কত দুর পর্যান্ত দৌন্দর্যা প্রদান করিয়াছে-ন ৷ সুনির্মাল সাগর ফল হস্ত ছারা উদ্বো-লন করিয়া দেখিলৈ তাহার কোল প্রকার বৰ্ণ ই জৈকাশ পায় না, অথচ সেই বৰ্ণীৰ बिर्मल मलिय मथि बाता मागरतत अर्था-দুশ্ অনোহর লোচা উৎপন্ন হওয়াবে কঙ দুর আন্দর্যোর বিষয় তাহা কি বলিব**ং** কা-शांद्र नोधा य जेंचेंद्र अभेड महूनाग्न कार्या কাৰণ নম্বন্ধ বোধ গমা কৰিছত পাৰে ? भावतीत्र मुनिमन नरकामश्रलक मोन्सर्गक महिना मू अगय राष्ट्रा लाखाः सिंह माव

क्षिका माहे, किंख हेशा बर्धा वित्नव चाक्या अरे (र कन्नीयत चाकान महल-কে বে প্রকার নক্ষর ৰূপ উজ্জল হীরকগণ্ড ছারা বিভবিত করিরাছেন, বারিপ্রোপ-জীবী সমুদ্র বাত্রিদিগের নেত্র সুখ সাধনার্থে मसुख स्टाउ (मरे ब्रंग वक धकात (का তিয়ান্ উজ্জল পদার্থ বিকীর্ণ করিয়া বাং থিয়াছেন। বাহারা সচরার্টর সমুদ্র পথে **ষাভা**য়াত করিয়া থাকেন, ভীলায়া সকলেই দেখিতে পান, যে রজনী যোগে সাগর ছলে নক্ত মালার ন্যায় এক প্রকার উজ্জলপ-मार्थ हेरुकु अमोल रहेशा पारक। उन्ना-নুসস্কায়ী পণ্ডিত গণ অনুসন্ধান করিয়া দেখিয়াছেন, যে গদ্যোতের ন্যায় এক প্রা কার জলায় কাট চইতে উক্ত প্রকার আ-লোকের উৎপত্তি হয়। নাবিক গণ ঐ স-मल की इंटक मिन्न श्रेटमां ठ विलया छे दुरु क-রে। ঐকটি পুঞ্জারা কর্মন কথন সামর মধ্যে এ প্রকার আলোকের উৎপ-তি হয়, যে তজারা তমসাহল রজনী কালে-ও বছ দুর গ্রাস্থ নিরাক্ষণ করিতে পারা यात । উद्ध की छो २ भन्न प्यात्मातकत्र स्त्री-क्या अक्तर्भन कतित्व अधकात्र (व'स इय, যে ভারাগণের সহিত আকাশ মণ্ডল যেন ভূতলে আসিরাপতিত হুইরাছে ৷ বাস্ত বিক সামান্য জলীয় কটি হইতে এ প্রকার অহত আলোক ময় উজ্জন শোভা উৎপন্ন হওরা যে কি গর্যান্ত আশ্চর্যোর বিষয় তাহ। महारह धावन कहा यात्र ना. हेहा क्वल ख-গদীখবেরই মহিমার নিদর্শন।

সাগরের সৃষ্টি করিয়া জগদীশর বে
আমাদিগকে কত সুখ বিতরণ করিতেভেন,
ভাহা বর্ণন করিয়া শেষ করা অসাধা। সমুদ্র
না ধাকিলে গেমন জীবনের জীবন করপ রফির সৃষ্টি হইত না এবং বৃতির অঞ্চাবে বেমন
বহু প্রকার শস্যাদিও অনায়াসে উৎপর হইতে পারিত না, সমুদ্রের অভাব হইতে
বেমন পৃথিবীর মধ্যে মদ নদারও
কভাব হইতে এবং সুতরাং নানা স্থাবে বহু সংখ্যক প্রাণীও জলাভাবে প্রাণভাগে করিত, সেই রূপ সাগরাভাবে প্রবিবীর অরেও-সহক্ষ প্রকার উক্তির স্ব-

ধে বাধা উপস্থিত হইত। বাণিক্ষা স্পারা य পृथिबीत भारतक छेन्निक निक इहेर्टिहरू এবংবাণিত্য ব্যবসায় অবলম্বন করিয়া বছ সং थाक बन्या (व जलाकामन आश इहेटलट ७ নংসার মধ্যে বাণিজ্য কার্যা প্রচলিত থাকাতে গে মনুষ্টোর বছা কউ নিবারণও বছা প্রকা-त भूत वर्षन १३(७८६, वक्षा छेत्सव क्रा ৰাছল্য, অপিচ বারি পথে পোত পরিচাল-ন দ্বারা এক দেশের উৎপন্ন বন্ধ দেশার্মরে উপস্থিত করিয়া শেমন উৎকৃষ্ট ব্রপে ব:শি का कार्या निर्दर्शर कहा याह, इन भए भक-টাদি ঘারা যে কোন ক্রমে সে প্রকাব করি-वात माथा स्त्र ना, देहा अ मक्टनरे व्यवश्रष्ठ আছেন, কিন্তু জগদীখন পৃথিনীতে সমুদ্র ए नम नमीत मुखिता कतिता कि क्षकात করিয়াই বা পোত পরিলালন কর। ঘাইত, এবং কি উপায় দ্বারাই বা সুন্দর নূপে বানিজ। कारो निकीष् इहेट, दोध हत थाछ पूर्व म्पान का किया करा मन्त्राह नक श्रकात **ষ্মদাধ্য হই**রা উ**ঠিত** এবং দূর ব্যবচ্তি এক স্থানের সহিত অনা স্থানের কোন প্রকার সঙ্কল থাকাও কঠিন হইত। সুতরংং ম-নুষ্য কোন প্রকারেই আর একণ্ডার মন্ত এক স্থানে বাস করিয়া সকল স্থানের রাভি নীতি অবগত হুইয়া অংশ্য বিষয়ে প্রবীন হইতে পারিত না এবং অফ্রেশে অতি দুর দেশে গমন করিয়াও স্তির বিচিত্র শােভা সদার্শন করিতে সমর্থ হইত না, স্থল প্রেথ ধান বাহনাদি স্বারা অতি দুর দেশ গমন করা যে কি প্রযান্ত জ্বঃসাধা ব্যাপার ভাহা প্ৰার অনেকেই অবগত আছেন। অতএব যিনি আমাদিগের অশেষ মঞ্ল উদ্দেশ ক-রিয়া মর্ভ্য লোকে বছরত্রাকর সমুদ্রের সৃষ্টি করিয়াছেন, আনরা মনের সহিত সেই ম-ফাল দাতা বিশ্ব বিধাতাকে বার বার নম-কার করি।

পৃথিবীর মধ্যে সাগরের সৃতি চওগাতে বেমন বাণিজ্যালি নানা বিষয়ের সুবিধা হই-রাছে, সেই কপ উচা দ্বারা মনুব্যের বস্তু প্রকার ব্যাধি নিবারণ ও স্বাস্থ্য সাধন হই তেছে। বৃক্ত, লতা ও তৃণ, গুলু এবর্থ মনুব্যালি কবি করু স্থারা পৃথিবীত বারু স তত্ই বিকার আগু হয়, কিন্তু সমুদ্র সেই বায়ুর বিকৃতাবস্থার প্রতীকার সাধন করি-য়া থাকে। সমুদ্র, বারু হইতে তাহার কো-ः (क: ब क्ए:श्म ट्यायन कतिहा लहेता श्री-মুগ্রে স্থিত ক্রিয়া রাথে এবং গ্রাম ास शको ७ मनुवानि कौर कहत निशान ক্রিণা দারাবারু হইতে তাহার অক্সিজন বা-জ্পের ভাগ অধিক করে ইইরা যায়, তথ্ন স্মুদ্র স্ব∫্য গর্র চইতে অক্সিজন উৎক্রেপ করিক সাহার সেই ভাগ পুরণ করে, সুত-রাং দেন কপে বায় আর বিক্রত হই-তে পার মা**া** পৃথিবী**র** महश्रा महास বিদ্যমান থাকাতে বায়ার প্রকৃতি সহতই সম ভাবে অধ্যক্তির পাকে, কোন কারণ বশত ৰায় যাগান এৰাপ উচ্চ হয়, যে ভাছা দেবন कवित्व केय करूब भी जा कियारक शास्त्र, সমুদ্র জন তথ্ন তাহার সমত। সাধন করি-ভে আরম্ভ করে এবং বায়ু **সম**ধিক **উঞ্** হইটেও সমুদ্রোথিক শীতল ৰায় স্বারা সে-ই উফতা নিবারিত করা সমুদ্র, শোধনের এক ঞরল করিণ, <mark>সমুদ্র না ধা</mark>-কিলে পুণিবীর বায়ু প্রাণী বর্গের পক্ষেবি-থন অনি উ দায়ক হইরা **উঠিত। মনুধ্য** व्यानकारनक उपकृति (द्वार्श भी पृष्ठ इहे. লে সমুদ্র বায়ু সেবন ছারা অনায়াদে আ-রোগ্য লাভ করে। কোন কোন রোগের পকে সমুদ্রবায়ু মহৌধধ স্থৰপ। শাহার। দীর্ঘ কাল রোগ ভোগ করিয়া সমুদ্র গমন পূর্বক অভিবে আরোগা লাভ করিয়াছেন, তাঁলার: বিশেষ অবগত আছেন, যে সাগর আমাদিবের কত কলাবের কারণ। স্বর্গদী-শরের আজ্ঞানুসারে সমুদ্র রোগির রোগ নিবারণও ভোগির ভোগ সাধন করিতে নি-যুক্ত রহিরাতে এবং তদারা কেবল সেই বিশ্বস্থা জগদীশবের অনম্ভান ও ম-ঞ্লাভিপ্রায় প্রকাশ করিতেছে।

# विद्धानवार्खा ।

১— ৷ গত ১৮৫৫ ব্রিকীর শাকের ও জু-ন দিবসে কোরের্স নাম্ক, স্থাবৈ জড়িস ভোবেটাই একটি পুতন শূমকেতু প্রকাশকরেন ৷ ভাজর ক্লিছর কিউল লাখেনও উচার প্রক্রিল উক্ত ইতকেতুকে পটিংগেন নামক স্থান ইইডে অবলোকন
করেন এবং পেরীস হইডে, ডাএন সাহেনও উক্ত শূমকেতুকে দেখিয়াছিলেন ৷ ডোনেটাই সাহেব উক্ত শূমকেতুর আলোকমর উক্ত্ ল পুষ্ঠ সুন্দর ৰূপে দেখিতে পান
নাই- ৷

২--- ৷ গত ৯ এবং ১০ আগক দিবলৈ আলেক জেণ্ডার টুইনিং, ক্রাইউফর সিরোপিন এবং এড ওলার্ড হেরিক নামক তিন কন বিখ্যাত সাহেব কর্তৃক আকাশ পাবে ৩৮৫টি উল্লাপিণ্ড দুইট হয় ৷ উজ্জ জলাপিণ্ড দম্পালের নথ্যে আনেক গুলি দেখিতে বিলক্ষণ উজ্জন এবং পরিদ্ধার ৷ উল্লিখিত দশক দিগের মধ্যে যিনি যে উল্লোপিণ্ডকে যে প্রকার দর্শন করিয়াছেন এবং যিনি যে সময় যে উল্লোপিণ্ডকে থে প্রকার দর্শন করিয়াছেন এবং যিনি যে সময় যে উল্লোপিণ্ডকে থে স্থানে দেখিয়াছেন, তাহা তাহাদিগের স্থায় স্বীর বিবরণ পাত্র মধ্যে বিশেষ করিয়া লিথিত হইয়াছেন।

#### রসারগ্রিদ্যা

১— । বর্থিলট নামক এক জন সাংহেব হাইত্রজন নামক বাজা হইতে আালকোহল নামক সুরাসার উৎপন্ধ করিবার এক মূতন পদ্ধতি প্রকাশ করিরাংছেন । প্রথমত অগ্নিপকু ও বিশুদ্ধ নাইত্রিক এসিড নামক পদার্থের সহিত-উক্ত হাইত্রজন বাজা একত্রিত করিবা পরিষ্কৃত জল মিপ্রিক করিবে তাহা তইতে উৎক্রকী মাদরারার নির্গত হইতে থাকে গা

২— ৷ কোন্ ত্রবা ভক্ষণ করিলে কি প্রিমানে শারীরের পুটি রাখন হইতে পারে, তাহা জাত রইবার অনা কভিপর বিচক্ষণ পাঞ্জিত একত্রিত হইয়াতিলেন ৷ তাহাদের প্রক্রা পারন্দা প্রক্রা আরা বাহা অবধারিত হুইয়াহে, তাহা প্রসাতে লিখিত হুইছেছে ৷

American Journal, No. 59.

T Literary Gazette, 5th January, 1856.

পরীক্ষা ছারা নির্পিত হইয়াছে, যে এ-ক মণ চতুর্দশ শের পরিমিত রুটির ম-(वा अक मन शुक्तिकत भनार्थ विनामान আছে, কিন্তু এক মন দশ শের পরিমিত মাংবের মধ্য হইতে গড়ে শান্ধ সপ্ত-দশ শেরের অধিক পুটিকর পদার্থ প্রাপ্ত হওয়া যায় না ৷ এক মণ দশ শের **করা**স दिन्नीय वत्रविति मध्य এक दैन छव भित्र, এক মণ্দশ শের মটিরের মধ্যে এক মণ্ সাড়ে ছান শের এবং এক মণ এগারো শের মস্থুরের মধ্যে এক মণ সাত শের পুর্ফিকর পদার্থ দৃষ্ট চইয়াছে ৷ এক নণ দশ শের শালগম এজতি মূল হইতে এক মণ জন্ধ-(मंत्र भुक्तिमाधक वक्ष निर्धाठ हरेगा थातक এবং এক মণ্ডম শের গোল আলু এইতে সাড়ে বার শের পুষ্টিকর পদার্থ প্রাপ্ত হওয়াযায়। পরস্ত আস্তে থেপরিমিত পুষ্টি সাধক সার গদার্থ আছে, তণুল হ-ক্রতে ভাষার ভিন গুল পাওরা যায়**।** ট

পুর্বের নাংস সর্বাদেশনা পুর্ফিকর বালিরা লোকের সংক্ষার ছিল, কিন্তু পরীক্ষাতিক মার ক্রান্ত প্রাক্ষা পরে না। পরীক্ষা দ্বারা যেন্দ্র সলানা বস্তু নাংসাপেক্ষা পুর্ফি সাধক বলিন। নির্বাধিক গঠন বিচার দারা নিরামিষ ভোজনই মনুষোর পক্ষে গ্রেয়াকক্ষ্ম বলিরা িওত দিপের প্রাক্ত জিলিবাতিত দিপের প্রাক্তি জিলিবাতিত দিপের প্রাক্তির স্থানিক স

#### ভুতত্ত্ববিদ্যা

১ — ৷ সুমের সমিছিত জনশ্না তুলার ময় স্থানে প্রায় এক কোশা নিমে এক
প্রকাণ্ড সমূরত বুক্তকক প্রকাশিত হইয়াছে ৷
ই, বেশ্চর নামক এক জন সাহেব ব্যক্ত করেন, বে পূর্ব্বোক্ত স্থানে কতিপার •পোত
পরিচালক মনুযা মৃগরার্থে বাজা করিয়া
স্থানে প্রতাগ্যন পূর্বক প্রকাশ করে, বে
ভালার স্ভিকার অধিক নিমুদেশে এক গাল্রের মধ্যে একটি সমূত্র পোতের গুণ বৃক্ত
দেখিতে পাইরাছে ৷ ভাল্তিগের ঐ বাভাানুশারে পর দিবস এক জন বিক্ত মনুযা

উক্ত ছানে গমন করিয়া বিশেষ অনুসন্ধান পূর্বক দেখিলেন 'যে গদার্থকে উহান্ত্রা গুণ বুজ মনে করিয়াছিল, তাহা গুণ বুজ নহে, একটি অভিকায় মহারুকের স্থল করে ছাণুর নায়র সমূলে দণ্ডায়মান থাকাতে তাছাকে গুণ রুক্ষের নায় বোধ হ-ইতেছে। ঐ পুরাতন বুজকন্ধ যে কতবালের তাছা দর্শক দিগের মধ্যে কেচই নিজেশ করিছে পারিলেন না। কিন্ধু ইহা নিঃসংশয়ে স্থির চইনাহে, যে কোন সাম উক্তান্থানের জল বায়ুর এ প্রকার প্রারুতি ছিল যে তাছাতে বুজাদি শাগা প্রধান করেতে থারিতে গ্

২—1 জন্ধ সকলি নামক একজন সাহেব আমিরিক; খণ্ডের অন্তঃপার্ডা কাস
কেড নামক পর্বাতের পূর্কাংশে কিরদ্ধর ভূ
মির মধ্যে ককক গুলি জীব জন্তর নারীরের
নিদর্শন প্রাপ্ত করিছেন। তল্লাধ্যে জ্বা পা
রী পশু জাতির জীবাছিই অগিক,ভূত্রর নি
তিত্ত ঐ সমক্ত অস্থির মধ্যে অসানানা রুংছ
রুইছ পশুরও ছাই এক বাও আছি দুবা হইয়াছে। বা স্থান হাইতে ঐ সমক্ত ভ্রমণী জলীবাছি আবিদ্ধাত হাইরাতে এক্ষণে প্রমান হাই
তেছে যে উন্তে রাম পুরে একটি সমুদ্রের
গর্মাছিল। আত্রবার ঐ সন্ত তলক্ত ভূর
তর্মা হইকে জীব জন্তর শরীরাছি প্রক্রাশ পাওয়াতে আনেকেই চমহক্রত হইরাছেন্টা

#### ধাতুবিদ্যা

১— 1 এলুমিনম্নামক মুপ্রসিদ্ধ থাতু ছা রা যে প্রকার উৎক্ষী থাতু পাত্রাদি নির্মিত হইতে পারে, তাহা ইতি পুর্বে লিখিত হই-য়াছে 1 সম্পুতি ডিউ ম্যাস্নামক একজন সাহেব দেবিরাহেন, যে উক্ত থাতু হইতে যে প্রকার মুক্তাবা শব্দ উৎপদ্ধ হয়, সের-প্রার্কোন থাতু হইতে হয়না<sup>ছ</sup> !

#### শিশ্পবিদ্যা

১— । ইউরোপের মহা মহা নিংপ কারী পণ্ডিতের! আটলাণ্টিক মহা পাগর ভেদ করিয়া এক অদ্ভুত ভাড়িত বার্তাবহ প্র-

<sup>\*</sup> Laterry Gazette, 5th January, 1856.

T Museum of Science and Art, By D. Lardner.

Literary Gazette, 8th December, 1856.

<sup>¶</sup> American Journal, No. 59.

চালিত করিবার উদ্যোগ করিয়াছেন। নি-উইয়ৰ্ক লন্ত্ৰ এবং নিউকাউণ লেল্ড নামক স্থানের তাড়িত বার্তাবছের অধ্যক্ষেরাম্ নোযোগী চইয়া অবিলয়েই আমিরিকার পুৰ্ব প্ৰাপ্ত হইতে নিউফাউন লেও না-মক স্থান পর্যান্ত এক তার সঞ্চালন করিবেল। সদ্পতি আমিরিকা হইতে নিউকাউণ্ড লেও পথান্ত তাড়িত বার্<mark>ডাবহ দারা সমাদ</mark> আসিবে এবং তথা ছটুতে বাজ্ঞীয় পোড সহকারে সাগরের পুরুতীরে সম্বাদ উপ-নীত ভইবে। পবে সাগরের পূর্বভীর গায়ায় ডার সঞ্চালিক হটলে অভি স্থলস কাংলর মধ্যে আমিরিকার সভাদাদি ই-উর্ব্বেপে আসিতে পারিবেক ৷ কেছ কেহ অনুষ্ট করিয় জেন, যে এই সমুদ্র ভেদী অনুত কাডিত ৰাজাৰ**২ প্ৰস্ত** হ-ইলে, লোকে আমিরিকায়ব্সিরা অর্দ্ধ ঘ-कीत माना हेल्दत राभव काला ज्वनक कहे-তে প্ৰতিবেক- !

: — । জাবাজ ও ফবাস এট উভ্য জাতি ধক্ত মিলিড চইলা এক অসামালা শিপ্সকা-া মশ্পন্ন ক্রিতে উলোগ্রিইটয়(জেন। ইৎ-াও ও কৰাৰ লাতেগত মধ্য ভাগে যে দা-ার বিদ্যান আছে, এ সাগরের তল দি-য়। এক স্বুরজ্ঞ প্রেক্ষ্ট জাইবার প্রেক্তার জন ট্য ছে এব উক্ত সুরক্ষ প্রস্তুত করিবার গুল নিকেশ করণাথ ইংলাও ও ফ্রাস ্টৰ 'য় শিলপ্তিদ। বিখান্তদ প্ৰিতেৱা মি-যু ও ইইড় ছেন ় এ সাগর ভলত সুর্ঞ पड़ स्टेल्ड फ्यांगडाझा ग्रंश्य थात्रा-ি কটাবেক এবং ঐ পথে বাজ্ঞীয়ত্তথ গ্ৰ-ारन भारताची अब लोक बच्चे अञ्चल क र्टिकः। के मुत्रक्त डेशन लोह उ श्र-অর মর দোখারা খিলান নির্মিত চইবেক, धर थिलात्मत भधा निशा मना इटेट ता-যু প্রবেশ করিবার পণ থাকিবেক : ইং-न ७ ७ काम्म अहे क्रोमिक इहेट ह ८कमा मुद्रस প্রস্তুত ছইতে আরম্ভ হই-टरक. এदः **डे**ळ कार्या मरशा मरशा विख्ळ হইয়া শতন্ত্ৰ শতন্ত্ৰ ৰূপেও সম্পন্ন হইতে থা-

কিবেক, ইহাতে উল্ল সুরক্ত পথ সভৱে সঞ্চার क्रेवार्त व्यानक ज्ञावना पृष्ठे क्**रेक्ट**ी উক্ত সুরক্ত প্রস্তুত করিছে মানাধিক দশ काणि छ।का वात्र इहेदवलकः

(Continued from the last number.)
And so go on for ever?—No:—not so, unless
the whole existence of humanity is to be an idle
game, without eignificance and without end. It cannot be intended that those savage tribes should always remain varage no race can be born with all the capacities of perfect humanity, and yet be destined never to develop these capacities, and never to become more than that which a sagsoious animal by its own proper nature might become. Those savages must be destined to be the progenitors of more powerful, cultivated, and virthous generations; -otherwise it is impossible to concerns of a purpose in their existence, or even of the possibility of their existence in a world ordered and arranged by reason. Savage races any become civilized, for this has already occurred, and the cost cultivated nations of modern times are the descendants of savages civilization be a direct and natural development of human society, or invariebly arise turough inservetion and example from without, and the primary source of all become altere must be sought in a super-human gudance. Ly the same way we which nations which once were savige have the erged icto civilization will those who are yet tacivilized gradually attain it. They must, no denbt, at first pass through the same dangers and corruptions of a merely sensual civilization, by which the civilized nations are still appressed. but they will thereby be brought into umon with the great a hot, of humanity, and be made espable of taking part to us farther progress

It is the vocation of our race to unite itself into one single body, all the parts or which shall be thoroughly known to each other, and all possessed of similar culture. Nature, and even the passions and vices of men, to from the beginning tended towards this and; a great part of the way towards it is already passed, and we may surely calculate that this end, which is the condama of all farther social progress, will in time be attained. Let us not ask of history if man, on the whole, have yet become purely moral! To a more extended, comprehensive, ouergetic free-dom to have certainly attained, but it has been haberto an almost necessary result of his position. that this freedom has been applied chiefly to evil purposes. Neither let us ask whether the æsthehe and intellectual culture of the meient world. concentrated on a few points, may not have ex-celled in degree that of modern times! It might happen that we should receive a humiliating answer, and that in this respect the human race has not advanced, but rather seemed to retrogade, in ils riper years. But let us ask of history at what period the existing culture has been most widely diffused, and distributed among the greatest number of individuals; and we shall doubtless find that from the beginning of history down to our own day, the few light-points of civilisation have spread themselves abroad from their contract

Chamber's Journal.

<sup>\*</sup>Englishman Supplement, 20th De

that one individual after another, and one nation after another, has been embraced within their eigenee, and that this wider outspread of culture is proceeding under our own eyes. And this is the first point to be attained in the endless path on which humanity must advance. Until this shall have been attained, until the existing outture of every age shall have been aftisated over the whole inhabited globe, and our race become capable of the most unlimited inter-communication with itself, one nation or one continent must purse on the great common path of progress, and wast for the advance of the others, and such must bring as an offering to the universal commonwalth, for the sake of which alone it critis, its right of apparent innobility or retrogression. When that first point shall have been attained, when every useful discovery made at one end of the earth shall be at once made known and communicated to all the rest, then, atthout farther interruption, without halt or regress, with united strength and equal step; humanity shall make onward to 2 higher culture, of which we can at present form no conception.

Within those amoular associations, thrown to gether by dur-asoning accident, which we call States, after they have subsisted for a fine in peace when the resistance excited by yet new outerston has been lailed to sleep, and the Semestation of contending forces appeared, giouse, by as continuouse, and by general surrounder, estimas a short a established form; and the ruling classes, in the incontested enjoym of fither exterted prolleges, have nothing more to 60 has to expose them firsher and to gave to the extension also the same establish d form. Urged by their prosterble desires they will continue from gen ration to generation their officials or popular wider and yet, with a providence and never case to it is enough to until in last opmession shall that rits limb, and become where many operable, and despair give back to toe oppresend that power which their courses extenquished by centuries of tyrauny could not procure for them. They will then no lores r on time any among them who council he satisfied to be on an equality with others, and so to come to order to protect themselves against unternal vio lence or new oppression, all will take on them-solves the same obligation. There I discertions, to which every man shall decide, whatever he decides, for himself. and not for one subject to him whose sufferings will never affect him and in whose fate he takes to concern; deliberations, according to which no one can hope that it shall be he who is to practise a permitted injustice, but every one must fear that he may have to suffer it .

deliberations that alone deserve the name of legislation, which is something wholly different from the ordinances of continued horize to the countless herds of their states, these deliberations will necessarily be goated by pictor and will lay the foundation of a true State, in which each individual, from a regard for his own serarity, will be irresistibly compelled to respect the security of every other without exception; since under the supposed legislation, every injusy which he should attempt to do to another, would not fall upon its object, but would infallibly recoil upon himself.

By the establishment of this only true State, this firm syundation of internal poace, the possibility of force on war, at least with other rew state, as out off. Even for its own advantage, oven to

prevent the thought of injustice, phinder, and violence entering the minds of its own citizens, and to leave them no possibility of gain, except by means of industry and diligence within their legitimate sphere of activity, every true state must forbid as strictly, prevent as carefully, compensate as exactly, or punish as severely, any injury to the entiren of a neighbouring state, as to one of its own. This law concerning the sestate that is not a robber-state, and by its operation the possibility of any just complaint of one state against another, and consequently every case of self-defence among nations, is entirely prevented. There are no necessary, permanent, and immediate relations of states, as such, with each other, which might be productive of strife; there are, properly speaking, only relations of the individual surgers of one state to the individual citizens of mother; a date can be injured only in the person of one of its citizens, but such injury will be immediately compensated, and the aggrection state satisfied. Between such states as these, there is no rank which one be insulted, no analytica which can be offended No afficer of one state is aethorised to interined dle in the isserted affairs of another, nor is there any temptation for her to do so, since he could not derive the suglitest personal advantage from any such influence. That a whole nation, should determine, for as sake of plunder, to make war area came, so a seaso in punner, to make war an a sergion area country is impossible, sor in a state where air or equal, the plunder contained accome the leagest a fee, but must be equally unided mones; all, and the share of no one midisclude coatio ever recompense him for the trouble of the war. Only where the advantage tills to the decoppensors, and the open, the fills to the terroppissors, and the apply, the fold the exp of cf. the considerable for slaves can war of polision possible, and concerning the front stream properties and concerning to the war; and for ensurement of the considerable for the considerable of skill to ensure experience of the considerable of skill to ensure experience. by post by impole from to rich Thenes ! plander overtier in the Luctions, driven by their accepts to a son from which they themselves will real new acceptance. D. they former case, econ mide can state most, through the arts or contention already be the stranger party; some the left of dan, er, the common adventage of at demands that they should strength in them-seless by mean. No free state can reasonably suff in its vicinity associations governed by raters whose interests would be promoted by the subjugation of adjacent nations, and whose yers existence is therefore a con to 6 source of diggier to their neighbours, a regard for their on 1 meanity compels all free states to frankform all around their into free states bk, them where and thus, for the sake of their own well to, so extend the empire of culture wer burberism, of freedom over slavery. Soon will the nations, cardiead or infranchised by them, and themselves praced in the same relation towards others still cuti culled by barbarism or slavery in which the earlier from nations previously aroad towards them, and be compelled to do the same things for these which were previously done for themselves, and thus, of necessity, by reason of the existence of some few really free states, will the empire of civilization, freedom, and with it universal peace, gradually embrace the whole world.

Thus, from the establishment of a just internal organization, and of peace between individuals

there will necessarily conditintegrity in the external relations of nations towards each other, are universal nease among them. But the exhibits ment of this just internal organization, and the omanipation of the first nation that shall be truly free, arises as a necessary consequence from the ever-growing oppression exercised by the ruling classes towards their subjects, which granually becomes manyportable, a progress which may be safety left to the passions and the idiadness of those classes, even although warned of side to life.

in these only true states all tempfation (o wil, nay, ever the possibility of a man resolving upon a find action with any reasonable hope of benefit to Fine-df, will be entirely taken away; and the strong an possible motives will be offered to ever, man to make write the solvedject of his

Will

There is no man was loves evil because it is cerl, it is only the advantages and enjoyments expected from it, and which, in the present condiffer of himmerity on actually an most cause, record from a that are in our Schong as this recoll from it that are loved. So long as this condition shall continue so long as a premium shall be set upon youre a fundamental improvement of marking as a whole, our survey be hoped for But in point society constituted as it ought to be, as reason requires it to be as the thinker may result describe it to himself although he may rewisers find it retually exeling of the present day and as a must be consured exist in the first aution that freally negative, true freedors dis such a state of successive, clawill present no advantages, but redon'the most certain disadvantages, and self-love itself will cestrain the excess of relf-love when it would ron out into minstee. By the interruct administration of such a state, every frand or oppression precticed upon others, all relf-aggent dizement at their expense will be rendered and neerly vain, and all labour so applied buildess but such artempts would even rem I upon their author, and assuredly bring home to himself the and which he would cause to others. In his own tand, out of his own band, throughout the whole world he could find no one whom be might nurs and yet so unpumished. But it is not to he expected, even of a bad man, that he would leterpione (pon exit pierely for the sake of such a resolution, although he had no power to earry t arto effect, and nothing could arise from it but numny to himself. The use of liberty for evil purposes is thus destroyed, man must resolve either to resonance his freedom altogether, and entionly to become a more passive wheel in the it for good. In soil thus prepared, good will easily prosper. When men shall no longer be divided by selfish purposes, nor their powers exhausted in struggles with each other, nothing will remain for them but to direct their inited strength against the one common enemy which still renains unsubducd, -resisting, uncultivated nature. No longer estranged from each other by private ends, they will necessarily combine for this comnon object, and thus there arises a body, everywhere animated by the same spirit, and the same over. Every misfortune to the individual, since it can no longer be a gain to any other individual, a misfortune to the whole, and to each indivisized member of the whole; and is felt with the same pain, and remedied with the same activity,

- ---- ---

by every member; -every step in advance made by one man is a step in advance made by the whole race. Here, where the petry, narrow self of mere individual personality is merged in the more comprehensive unity of the social constitu-tion, each man truly loves every other as himself, as a member of this greater self which now claims all his love, and of which he himself is no more than a member, only capable of participating in a common gain or in a common loss. The strife of cril spainst good is here abolished, for here no cril on intrude. The strife of the good among themselves respecting good, disappears, now that they and it easy to love what is good for its own sake alone, and not because they are its authors; now that it has become of all-importance to them that truth should really be discovered, that the useful action should be done, but not at all by whom this may be accomplished. Here each individual is at all times ready to join his strength to that of others, to make it subording to that of others; and whoever, according to the judgment of all, is most enouble of accomplishing the greatest amount of good, will he supported by all, and his success rejoined in by all with an equal toy

J G. FICHTE

### বিজ্ঞাপন

জীযুক্ত বারু রাজন:রায়ণ **বসু কলিক**া-তাও মেদিনীপুর ব্রান্স সমাজে যে সকল বজুভাকরেন, সেই সমস্ত বজুভা একৰে একত্র সংগৃহীত হটনা পুত্তকাকারে প্রকা-শিত হইলতে। খাঁহারা সাংসারিক কর্ম-জান হইতে অবস্ত হইয়া মধো মধো ঈ-শ্ব প্র সঞ্জারা মুখী হইতে ইচ্ছা করেন, তা-হারদিগের পঞ্চেউক্ত গ্রন্থ বিশেষ উপকা রী। বিশেষত যে সমস্ত তত্ত্বস।কাতৃদ্ধী ভগ-বস্তুক্ত, শুদ্ধ ভাবাবলয়ন পুৰ্বাক ক্লব্ৰু প্ৰো-মামূতপান করিতে অভিলাধ করেন, তাঁহা-রা ঐ পুত্তক পাঠ করিয়া প্রাচুর আনন্দ লাভ-করিতে পারিবেন, উহার মধ্যে একপ প্রস্তাব একটাও নাই যাহা পাঠ করিলে মনোমধ্যে পরমার্থ রদের সঞ্চার না হয় ! উক্ত পুস্ক-ক সর্ব সাধারণের প্রাপ্তি সুলভার্থে উহার মুল্য ৷৷ ত অৰ্দ্ধ মুদ্ৰা মাত্ৰ নিৰ্দ্ধারিত চইয়া-(इ । याँशाता के भुक्तक अहन क्रिक्ड है-फा करतन, जाहाता प्रला व्यवन कविताहर প্রাপ্ত হইতে পারিবেন।

আৰু এই তব্দবোধিনী পাত্ৰিকা, কলিকাছা নগৰেছে ধোড়ালানোছিত তব্দনোধিনী সন্তান কাৰ্যালয় ছ'ই-তে প্ৰতিমানে প্ৰকাশিত হয়।—ইয়ান মূল্য এফুটার্জী ও কাল্টন বৃহস্পতিবার সমুখ১৯১২তলিগভারীঃ১৯৬৬



বংলব নিতাং জ্ঞানমনস্তং শিবং শ্বতন্ত্ৰং বিষ্ণুব্যব্যমক্ষেবাছিতাগং দৰ্শব্যাপিদক্ষিনগঙ্গৰ্শপ্ৰেল্ডনক্ষিত্ৰ ।
বিং দৰ্শশক্তিয়াও ধ্বং পূৰ্ণমিতি ।

ত্যান প্রীতিশ্বসা প্রিথকাখাসাধনক তদুপাদনমেব।

# नेश्रदत गरिया।

की

হস্কী, অশ্ব, উব্লিপ্ত রহৎ বৃহৎ পশুর व्यक्त अकाक बहुन ! विधाय क्रशंनी बंद या को-मल क्षकाम। कविहारहर, तम (कोमल रामम অনাধানে আখারদিগের হাদখল্লম হইতে পারে এবং সে কৌশল সন্দর্শন করিয়া আ-মিরা ধেকণ আশ্চর্যা সাগেরে নিময় হই, ম-শক মকিকা পিণীবিকা প্রভতি কৃত্র কৃত্র কটি পত্রুদিব আকুতি প্রকৃতির ফুক্সা ফু-ক্ষা কৌশল কগনই সে প্রকার আমাদিগের (बाध गया इत बा। किश्व कलाकः की है भ-তঞ্চাদি কৃত্ৰ কৃত্ৰ জীব সৰস্কীর অদৃত কৌ-मन नक्स विद्यास अर्थ। द्याइना कविशा (म-विटल मन्या माज्यकरे विटमाहिङ इहेटड श्त्र'। य मम्ल अनुकात की है महर**ल आ**-मात्रिप्रत हक्त्व श्रीहत इस्मा. याही-पिश्टक इराडा जामता कान की वर्ता-রাই মনে করি না এবং যে সমস্ত কীটাুণু-দিপের মধ্যে শত শত কীটকে আমরা এ-তিনিয়ত পদতলে নিপীড়ন করিয়া গভায়া-उ कति, डाहात अकि। की है मर्याउ विश्व कोणल काली विस्थारतत रख तिहर को-শল কলাপের অভাব নাই। ভিনি এক এ-कि नी हे भक्षा व अनुभय को भूत थ-কাশ ক্রিয়াছেন, বিশ্বব্দার মধ্যে ভাহার

ভুলনা দিবার স্থার স্থান দৃষ্ট হয় না। বেনন কোন প্রভঙ্গ শরীরের অন্তুত কৌশল মনে হইলে সন্মুখন বৃহৎ সাতক দেহকেও ভূলিতে হয়।

কোন কোন প্রকার মন্ধিকার পুক্তার্থ-ভাগে বেধনিকা অস্ত্রের ন্যায় অভি ভীক্ষ্ এক প্রকার কৃত্র অন্তর্ন নংকর আছে , চীসদশ ঐ তীক্ষাগ্র অঞ্জ সামান্ত উক্ত मिक्का मिर्गत अक महना मिनिके थारक. কিন্তু প্রয়োজন মতে উল্বাং সেই অনু ই কানুসারে বহিগত করিয়া আপনাদিগের कार्या माधन कतिएक भारत। अ मिकका मि-श्वित भूक् मश्मध छेक खन्न मन्मर्भन कति-লে আপাতত কাহারও মনে বিশেষ আৰ্ক্ত र्य। विषया अनुष्ठ ३७३। अनुव महर, किन्न व्यानी विमा अवायन अखिएकता विद्रमा अब-সন্ধান করিয়া দেখিয়াছেন, যে উক্ত মক্তি-कांमिरशत विरम्ध श्राक्तन अधनार्थ ल-तम कोमनं काती शत्रमसत छेशांविद्यात शु-জ্লেশে ঐ প্রকার অস্ত্র প্রদান করিগুছেন, ঐ অন্ত্র এমন তীক্ষু ও এমন দৃঢ় যে উহায়া-রা ঐ মঞ্চিকারা বৃক্ষ পত্র, বৃক্ষ শাখা, বৃক্ষ कका, एक नाक ७ एक हमा शर्या है विक করিতে পারে এবং কগন কথন প্রয়োজন मटि हराता के पान हाता क्षत्रतानि कठिन भार्भ शर्यास विश्व कतित्रा थाटक । ये जल বারা উহারা পুর্বোক্ত প্রকার কোন পুদার্থ

বিজ্ঞ করিয়া সেই ছিল্ল মধ্যে আপেনার দিংগর ডিছ প্রস্ন করে। উজ্ঞ অন্ত্র মধ্যে আরও এই এক বিশেব কৌশল দেখিতে গাঁওবা নার, যে অসি গেমন কোন মধ্যে নিছিত থাকে, মন্দ্রিকার পুঁক্ত সংলগ্ন উজ্ঞ অনুত্রকেও ভাগনিয়ের সেইজপ এক প্রকার কোনাল্যারের রক্ষা করিষাছেন। যে চর্মান্মর কেয়ে সাধ্যে ঐ অস্ত্র নিহিত থাকে, সেই কোন মধ্য দিয়ে থাকে কার। আপেনাদিগের প্রস্তুহ ছিল্ল মধ্যে ভাগনির উক্ত অক্তরত হাক্ষ্য ভিত্র মধ্যে ভাগনির অবিভাগ সাম্বাক্র কার কার ভাল করে। উজ্জ্ব মধ্যে ভাগনির অবিভাগ সাম্বাক্র ভাগনির অবিভাগ সাম্বাক্র ভাগনির অবিভাগ সাম্বাক্র ভাগনির অবিভাগ ভাল বিশ্বাক্র ভাল বিদ্যান করা হওরা করিন হাত্য ভাগনির ভাগনির অবিভাগনির অবিভা

হক্ষীর শিরোদেশে যেমন বিলয়িত শুও मश्मश् बारह, त्कान त्कान की है भंबीरत्य সেই প্রকার ওলাকার লয়মান একটি অব-য়ৰ দেখিকে পাওয়া যায়৷ ঐ শুভু মধ্যে জগদীয়াই সে সমাধ অন্ত্ৰত কৌশল প্ৰানাণ कतियात्कम जबर जिमाबाता अमश्या काँछे লে জুকুত্ব কার্যা নির্বাহ করিয়া থাকে, ভাষা স্বিদ্যার জ্ঞালোচনা ক্রিয়া দেখিলে বিশ্ব-য়ালার নিমগ্র ছইতে হয় যে সকল কীট শরীরে উক্ত প্রকার শুকু সংলগ্ন আছে, তা-াৰা উভাব দাবা এমন সফল মহৎ মহৎ প্রধান্তর সিদ্ধ করে এবং তাহাদিপের পক্ষে উজ্জ শু ও এত আধশ্যক, যে উহা নাথাকি-লে তাহারা কোন বপেই জীবন ধারণ করি-তে পারিত না, কিছু ঐ সমস্ত কুত্র কাঁটের শ-বীয়ত্ব অচি ক্লম শণু এক ফুর্মাল, যে ভাষা সতভা নান: কারণে আছত বা জ্ঞা হইয়া বা-ইতে পারে, এই বিমিত্ত পরম দ্যাবান প-इटमध्र की है विरमंदर के ख अ तकांत्र चा-क्ट्या आकर्मा छेलाव निधान कविया विया-ছেন। মধ্ মকিকারা পুস্প গর্ছে যে শুগু স-मित्रण कृतिया अधुभाम करत्, छेरामित्रज সেই শৃও ছুইঅংশে বিভক্ত ৷ ওতের ম-था छार्त अकृष्टि अधि चाट्ट, मस्तक व्यवि এ এছি পর্যান্ত এক ভাগ এবং এছি অব্ধি শতের 'শেব পর্যান্ত আর এক ভাগ। উহা-बिटांत रेका एरेटन छहाता ७० मरेटकांड করিয়া ভাষার অভাতাত উপরি ভাষের বংগ

সমিবিষ্ট করিরা রাখিতে পারে এবং স-হজে কোন কারণ ভারা শুতেতে আর আ: বাত লাগিতে পারে না ৷ প্রজাপতি দিগের ग् ७७ चंचि चार्फ्या कोगटा दका शाह. উহারাও প্রয়োজন মতে স্বীয় স্বীয় শগুকে সংকোচ ও বিকোচ করিতে পারে, উহাদি-भात के मुख मक्तमा चिष्ठित छारत्त्र नाश क-গুলাকুতি হইয়া থাকে, কিন্তু প্রয়োজন মতে সরল করিয়া, ভদ্যুরা উহারা মধ্পানাদি ক্রিয়া সমাধা করিতে পারে চলনান্য জীব জন্তুর মুখ হারা দে কার্যাল লাল হয়, মধুকর জাতি শৃগুৰারা সেই কার্যা নির্বাহ ক-রিয়া থাকে. উহারা যে শুও দ্বার। পুল্প গ-র্ত্ত হইতে মধু আকর্ষণ করে, সেই শৃগুজারা: ই মধুপান করিতে পারে ৷ মধুকর দিথের মধুপান কিয়ার ভুনা অভুত্রীপার আব দেখিতে পাওয়া যার না। উভাদিগের এক শতে জগদী ধর দদি ঐ কণ দিবিধ প্রকার শক্তি প্রদান না করিতেন, তারা হট্লে আ র উচ্চদিগের ক্লেশের পরিশেষ থাকিত না। মধ্কর জাতি যে পুলপ মধুপান করিয়া জী-বন ধারণ করে, তাহা গভার পুশা গর্ম মধ্যে অতি সংকীণ স্থানে অবস্থিত থাকে; মধ্-কর দেই স্থানে স্থীয় স্থান শুও সলিবেশ করিয়া অপ্সেক্ত অপ মধু শোহত পূর্বাক ভাল जेनतक कतिएक भारत है भूत्मात मरधा तम স্থানে মধু থাকে, মধুকর দিগের শুঞ ভিন্ন অন্য কোন পদার্থ দ্বারা আর সে স্থান হই-তে মধু আছরণ করা সাধ্য হয় নাঃ আছে. এব বিলক্ষণ প্রতিপল্ল হুইতেছে, যে অসীয ब्बानाकत अभिनेत्रत समाद्याना कटन मनस কীট, পড়ক, পশ্, পক্ষী, প্ৰভৃতি জীব জ-ন্তুর অঙ্গ প্রজাঞ্জ নির্মাণ করিয়া সকলকেই मूथी कब्रिय़ाद्यन, काशंत्र कोशंत आखाद्य হক্ষী আপনার স্থল গ্রীবা, বিলম্ভিচ স্তু ও : সবল শরীর লইরা বেমন স্বঞ্জ পূর্ত্তক আপনার সমস্ত প্রেরাজন সিদ্ধ করিয়া সু-ধেতে জীবন বাপন করিতেছে, অভি কু-ত্র কীটাণু সকলও ব ব আছুতি প্রকু कि जरेबी रनदे बन मुख्यक जीविक ज হিয়াহে:৷ কোন কোন কীটের ক্ষবস্থান্তর व्याख रुषप्राठ जन्म जान्दर्गत्र विवेत वरही

ब्रीम मुक्त वर शामाना की हेटक विनि म নোহর চিত্র বিচিত্রময় প্রকাপতি রূপে প রিণত হইতে দেখিয়াছেন, তিনিই জানেন, যে কীটের অবস্থান্তরিত হওয়া কি পর্যান্ত অন্ত ব্যাপার! • বে.কীট পরিণামে সু-मुना अवाशिक क्षि शात्व करत, अवस्य का-হার যে প্রকার স্থবরৰ থাকে, তাঁহা দুটি कदिल काशंद अ अमन (वाथ अग मां, रव हेहा कान कारमहे भूपना क्षञांपठि क পে পরিণত হউতে পারিবে, উক্ত কাটের শরীর হইতে কেবল প্রফ মাত্র উপিত হও-য়াতেই যে উহার কপের পরিবর্তন ছয় ৩-मठ बहर, अंश्रम উश्राम ७ ६ म् युक মুখ খাকে, পরে ভাহার পরিবর্তে এক শুগু উৎপন্ন হয় এবং প্রথমে উক্ত কীটের যে স্ক লে ১৪ টি জল পদ সনদর্শন করা যাম, পরি-नाटम रमेरे ऋटन हुंगि र्स्का कका माउ वाध्य इत। कि व्यवानी करम य छेड़ व्य কার সাম্মা ক্টি হইতে অপুরে প্রজাপ-ভির উৎপদি হা? তাহা স্থির নাপে নি-ক্ষেন করা নিতান্ত ছংলাগা ব্যাপার। কোন কোন প্রাণী তন্ত্রবিৎ পণ্ডিতেরা অনুসন্ধান ক বিয়া দেখিয়াছেন, ষে, যে সকল কাট কাল ক্রমে পক্ত শৃগুদি যুক্ত উৎকৃষ্ট প্তক ৰূপ ধারণ করে, প্রথমে তাহাদিনের দেহ मर्रा ले गम्छ शक्कांनि खक्क প্রতাক্সের স-मुनाय हिंदू शृष्ट्र बार्ल अवश्विष्ट थारक, भन्नि-गारम (महे जमन्ड चक्र विस्तृ हहेन्नः ध-कान लाइरल लत छड़ा की है पिरगत वकि অপূৰ্ব্য ৰূপ প্ৰকাশ পায়। ইহার জুলা আ-শ্চর্যা ব্যাপার আর কি আছে এবং ইহার ভুলা অন্তুত কৌশলই বা আর কোথায় দৃ-खें इस ? कि चान्हमा कोमन करम करानी-শার সামান্য ক্টি শারীরে অপূর্ব্ব পডক্লের अक्र मकंत अबिदिखे क्रिया द्वारथन.

উন্নাভ ও তদ্ধ কীটের আকৃতি প্রকৃতির বিষয় আলোচনা করিয়া দেখিলেও
চমৎকৃত হইতে হয়। যে যন্ত্র বারা তার
প্রকৃত হয়, উহাদিধের উদর তাহার অবিকল অনুক্প। তদ্ধ কীটের উদর মধ্যে
অনুত কৌশল বিশিষ্ট ছুইটি চর্ম নয়কোব
আহে, ঐ কোব ব্যর উচ্চ ক্রিটের উদরক্ষ

অস্ত্ৰ বেউন ক্রিয়া অবস্থিত থাকে, কেং কেহ ঐ চর্মময় কোৰ পরিমাণ করিয়া দে-थितारहर, य छेड़ा रेम्टर्स धात २० हेक्नित मान नरह । के कांच मर्या এक शकात ना-লাবৎ আন্ত্ৰ পদাৰ্থ সঞ্জিত থাকে, সেই লা-লারারাই অপুর্বেরেসম উৎপন্ন হয়। যে কোৰ ব্যের মধ্যে উক্ত লালা থাকে সেই কোষের বত জিজমা চুইটা ছার আ-(इ. जे स्क्रम हिक्कमश्र कात इंदेरड (महे लाः) লা নিৰ্গত ইওয়াতেই প্ৰথমত অভি ফুদ্ধা ভূ-ক্ষা কেশের মত স্থার উৎপার হয়, পারে সেই मक्त रूका रूज धक्षिष ध्हेश छेरक्की रतमन हरेता डिटो । उद्य की है, बूग हरे एक সেই লালাময় তন্ত্রাহির করিয়া প্রথমে তাহার একাগ্রভাগ কোন একটি পদার্থে সং লগ্ন করিয়া ক্রমাগত ক্রায় শ্রীরকেম্বিত करत अवः क्रांच क्रमाता अधिकात डेब्ल-जि रहा।

वर्ग क्षीलानि शासू व्हेटच ए। क्षक ছওমাপেক। লালাবৎ এক প্রকার আন্ত্র প मोर्थ इटेटड উटकुछ (तमम উद्यक्त इश्रह्म যে কত আশ্চরে।র বিষয় ছহা লিখিয়া শেষ করা যায় না! ইহার জুল্য অন্ত শিংপ-কার্য্য আরু কি আছে ? কেবল পর্মেশরের মহিমা প্রভাবেই এভাদুশ অসমূর ব্যাপার मम्भन बहुना थारक, नजुना अमन अविश्वतीत অন্ত্ৰত বিষয় আপাতত সমূব বলিয়াও স নে করা সাধা হয় না। কোন ধাত ১ইছে কার প্রস্তুত করিভে হইলে কেবল সে ধা তুর স্বাকারের বৈলক্ষণ হয় তাহার স্বরূপের किছू माञ अनाथा इत्र ना किन्छ कह की दहेत উদরস্থালা ধ্রান রেসমেতে পরিণ্ড হর, **उथन छेळ नालाव सक्त**ालल धनावा हहे রাষায়। তথন ভালার আন্তর প্রভৃতি গুণের পরিবর্গ্নে দৃঢ় হা ও স্থিতি সাপকতাদি श्वरवद छेश्लाक इस्र

মধুমজিকারা বে প্রকার আশ্চন্য নৈপু গ্য প্রকাশ করিয়া মধুক্রম নির্মাণ করে এবং বে প্রকার অভু ত কৌশল ছারা তল্পধ্যে ম-ধু রক্ষা করে তারা মনে হই চেও বিশারাপর ইইতে হয় ৷ ইহা পারি মনেকেই অক্রণত আছেন, বে ভরিক্ষতে উপভোগ ক্রিবার

উলেশে মধু মক্ষিকার। বুক্তিমার ও মিত্রা-थी मन्तित नाम बङ्ग शूर्वक मधु मक्ष्य क-विहा बाट्य, किन्दु खशबीयत यमि छेशमिश-কে মধ্ক্ৰম নিৰ্মাণ করিবার অন্ত,ত শক্তি অ-প্র না ক্রিভেন, ভালা হইলে উল্দিণের পুৰ্শ্বেক্ত পরিধান দৃষ্টি কোন কার্যোরই হইত ন: ৷ মধ্মকিকারা যেমন মধ্কেম নির্মাণ ক-বিয়া তাহার কৃত কৃত হিন্ত মধ্যে পূকা মধ বিভাগ করিবা রাখে, সেই ৰূপ অংশ অংশ অংশে বিভক্ত না করিয়া একত্র অধিক মধ্-রক। করিলে ভাছা অভি শীঘ্ট বিক্লত হই-য়া যাইত। অভএৰ বিলক্ষণ প্ৰতিপন্ন হ-(छट्डा ए क्यमी खत खेशांमरभत्र विरमेश था-शास्त्र माध्य छेटम्हर्म छेश्मिगटक धक अ-कृषि अकुष्ठ मञ्जि ध्यमान क्रित्राष्ट्रम। म-ধমক্ষিকারী যে প্রেপ মধুপান করিতে গমন করে, সেই পুষ্প হইতেই ভাহার রেণু লই-शः अभुक्तम विमीत करता धृतिवर भूका-त्त्र हरेए दनाम मध्यक्त छेर पन हरुशा ধে কতদুর আশুবা ব্যাপার! পাঠক গণ ঞ ক্ষার ভাষাবিবেচনা ক্রিয়া দেখুন।

খলোতের পুত্ত দেশে আলোকের সৃ-টি করিয়া জপদীখর এক কালে কৌশল ও ক্ষুনার শেষ করিয়াছেন। প্রাণী তত্ত্ববিৎ প-গুতেরা পরীকা করিয়া দেখিয়াছেন, বে খ-দ্যোতের পুরুদেশে কস্কোরস্নামক এক প্রকার পদার্থ বিদ্যমান থাকাতে উল্ল দি-ধের শরীর হইতে দীপবৎ আলোক নির্গত হয়। ক্টি শরীরে উক্ত প্রকার আশ্র্যা উদ্দীপক পদার্থ সংস্থাপন করা যে কত দুর আক্রেয়ার বিষয় তাহাকি বলিব! তের মহারে উক্ত প্রকার আলোক প্রদান করিয়া জগদীশ্বর -যে কেবল উহাদিগের শ রীরের শোভা রুদ্ধি করিয়াছেন এমত নছে ভদারা আরও অধিকতর আক্রা কার্যা मन्नाब इहेशा थाएक। जजानुमकाशी পछि-ত গণ দেখিয়াছেন, যে খলোডিকা তাছার भूक (मनक आरमाक बादा कवाकीय शूक्रव की हे क्लिट्स आखान क्ट्र । (व की है पूरक এ আলোক থাকে ভাষায়া ত্ৰী ছাভি, তা-हामिरशत शृष्ट इरेटक वर कारन के न्यार्जी-क क्षकान भाव, एथम बाहाबिटमत भूक्राव-

রা সেই আলোক সন্ধর্ণন করিলা ভাছাত্বিপের সহিত একটা মিলিত হয়। জগদীখুর বদি ধংলাতের পরীরে উক্ত প্রকার আলোকের সৃষ্টি না করিতেন, তাহা হইলে কংশনই উহাদিগের ব্রীপুদ্ধরে একত্র মিলিত হইবার সন্তাবনা থাকিত না। অতএব পর্নার কৌশল কারী প্রম পুরুষ সামান্য কীটাশরীরেও অচিন্তনীয় কোশল সম্পন্ন করিয়া আপনার অ্লার মহিমা বিস্তার করিয়াছেন।

#### न ह धर्मार श्रीत्रहारक्र ।

नकल वियर्धाउटे अधावनास्वान अ पुर निष्टे इथ्या निष्ठास कर्डवा। निष्ठा मु-ना अनशावनाधी क्टेटल कान विष्टार्डिट কুতকার্য্য হওয়া যাইতে পারে না 1 মস্ত সভিদ্যাশালী বিচক্ষণ ব্যক্তির বিমা-জিত বৃদ্ধি ও উৎক্ষী ধর্মা প্রবৃদ্ধি প্রভাবে ধর্মের মনোহর মৃত্তি সন্দর্শন করিতে স-ক্ষম হইয়াছেন এবং ধর্ম জনিত মধর ক-লের রসাস্থাদন করিতে নিতাস্ত অভিলায করেন, তাহাদিগের মধ্যে অনেকেও কেবল এক নিষ্ঠার অভাবে বাঞ্জিত কলে বঞ্চিত হইয়া পুণা পথে পরি ভ্রমণ করিতে নিরুৎ-সংহী হইয়া থাকেন। এ পৃথিবীর মধ্যে অনেকে প্ৰথমতঃ অধৰ্ম জনিত নানা অভ্যা-চারে পীড়িত হইয়া তাহা হইতে পরিতাণ পাইবার প্রত্যাশায় ধর্মের শরণাপন্ন ছই-তে অভিলাষ করেন এবং চির জীবন ধক্ষের সেবা করিয়া ভজ্জনিত বিশুদ্ধ সুখ উপড়ো-গ ছারা আনন্দের সহিত আয়ুঃ শেব করি-তে इंक्ट्रक इरायन; किन्तु किन्नू मिन अन्यानू-গত কাৰ্য্যনুষ্ঠান করিয়া যথন তাহারা দে-থেন যে ধর্মোর সেবা দারা যেকণ পরিশৃদ্ধ সুথ প্রাপ্ত হ্ইবার প্রত্যাশা করিয়াছিলেন, সে প্রকার অভিলবিত উৎকৃষ্ট সুধ লাভ করিতে পারিলেন না এবং সংসারারণ্যের ক্টক স্থাপ পাপান্ধরের বেধন বজ্ঞণা হ-इंटिंख जन्म नंबर्भ स्क स्ट्रेंट जन्म र-इटलन मा, छश्चन छारात्रा करम करम पटक-তে আত্মানমা হইতে আরম্ভ করেন। প্রথ-ब्यांगरम गर्दमंत्र श्रीक काशांतरणत्र त्व थ-

করে শনুরাগ থাকে, পরে দিনে দিনে তানার আনক হাস হইয়া বার এবং অবংশিত ইইয়া বিষম যন্ত্রপা ভোগে করে ৷ কিন্তু যে সমস্ত ব্যক্তি উক্ত প্রকারে উক্তেজিত ও বিচলিত না হইয়া উপমুক্ত অধ্যবসায় অনলমন পূর্কাক একচিত্রে ধর্মের শত্রপাপর থাকিয়া কাল যাপন করে এবং প্রাণ পরে ধর্মের অনুজ্ঞা প্রতিপালন করিতে রত থাকে, তালারা কথনই নিরাশ হয়ানা। যথোপমুক্ত কালে অবশ্যই বর্মা সাধনের সুমন্বর কল প্রাপ্ত ইয়া তৃপ্ত হয় !

**४ मा (कदल किन्छ नी**स ४३**छ न**ए३, (कदल চিন্তা দারা ধন্মের সুখি প্রাপ্ত হওঃ৷ যায় सा। धर्मा आमामिरशत भाषामत धन, दिना সাধনে কথনই ধন্মের প্রকৃত মন্ম জানি-কে পারাযার না৷ ধর্মন বাল্যান্ধি উপ-যুক্ত যত্ন সহকারে সাধন না করিলে কোন विमाय व्यविकाव अटम ना, यथेन नानिका ७ क्रीय कार्य। अङ्डिमा:मात्रिक भक्त वि-बराइट है मुनीर्घ काल शतिखम मा कतिरलना কুতকার্য্য ২৩% যথে ন', তথন সকলের জে-ষ্ঠ ও সকলের সার রন্ধ ধর্মা থে বিনা সাধ-· (ब मिक्ष इहेर्द ७वः विवा यरङ्ग मूर्श क्षेमाव क्रिंदित ভाहाब अञ्चानमे कि ? तियां गाही হইয়া যেমন সুদীৰ্ঘ কাল যতু পূৰ্বকৈ ৫ ডি शामम ७ तक्षार्यक व कवितन, मानवाम द्र-ক্ষ হইতে কল আপ্তি হওয়া যায়, সেই ৰূপ मी**र्घकाल रे**पर्याप्रसम्बन्ध शुक्क अक्रिट्ड पर्या সাধন করিলে ভবে ভাঙাতে অবিকার জ-শে এবং তাহা হইতে সুখ প্রাপ্ত ছওয়া যা-য়। ধর্মাধন করা অতি কঠিন বাাপার, खेरा अव्हित ७ हक्षण हिस्कित कार्या नरहा

সকল বিবয়েরই চরমাবহা আছে। চ-রমাবছার পরিণত না হইলে কোন বিষয়েরই প্রকৃত কল উৎপন্ন হয় না, অতএব পুণালীল ধান্মিক ব্যক্তিরা সুদীর্ঘ কাল ধর্মা সাধন করিরা তাহার চরমাবছার যে সকল অনুপ্রমা সুধ বর্ণন করিরা গিয়াছেন, প্রথম উল্লেকে কোন সাধক সেই সমন্ত সুধ ভোগের প্রত্যালা করিলে কিন্তুপে সোধা সুর্ণ হুছিতে পারে ? ধর্ম ভূমিতে আরো-

হণ করিয়া ধর্ম নিষ্ঠান করিতে আরম্ভ ক-वित्त अवमान चिवरत त्य आकात ममर्थ इ-ওরা বায়, সাধন ছারা পরিণামে ততো-ধিক সহস্র গুণে অধিক সামর্থ্য জলে। কাম ক্রোধাদি যে সমস্ত ছুর্জ্জর রিপু অনবরত চরিতার্থ হইবার জন্য প্রথমত ম-হাবল প্রকাশ পূর্ব্বক পীড়া দিতে আরম্ভ করে, ক্রমে নিগ্রহ দারা ভাহারা বশীভূত হ ইয়া আর সে প্রকার ক্লেশ প্রদান করিতে পারগ হয় না, এথমত চেসমস্ত পূণ্ক কা অতান্ত কক্ট সাধ্য ও অনায়ত্ত থাকে, পরি-ণামে তাহারা বিলক্ষণ সুসাধ। হইয়া উঠে। প্রথমে ননোমধো যে সমস্ত সোহ ভর্কু স-বাদা উপ্তেচ্চতে থাকে, ক্রমে ভাচাদি-গের শনতা হ্ট্যা বায়, গ্রেগনে যে সকল অ-ধর্মা কমাকে সুধের বিদয় বোধ ছইয়া ত দ্মুষ্ঠানাভাবে কাতর হুইতে হয়, পরে সেই সমস্ত ব্যাপারকে নিভাস্থ দোলাগ্রিত তুঃখ জনক জানিতে পাৰায় আগনাকে তাহা ই-ইতে বতত্র দেখিরা সুখেতে ভাগিতে হয়। অতএব ধর্ম সাধনের চরমাবকার সুখের সহিত কথনই তাহার প্রথমাবস্থার সুথের তুলনা কইতে পারে না, এবং নিষ্ঠা পুরুক मोर्चकाल धर्मा माधन कतित्व (व मूर्थ था-পু হওয়া যার, ভাহাও কথন প্রথমে লাভ ক্রিবার উপায় হয় নং৷ মনোমত সুখ लक रहेर रहा विनया (४ अकल ५०० हिन्छ षश्चित शुक्तव अवस्यामारमहे थमा माधरम প্রাংমুখ হয়েন, তাঁহাদিলের আর কমিন্ কালেও শান্তি লাভ হয় না, ভাঁহারা চির কা-লই মোহ ভরক্তে ভাষিতে থাকেন এবং তাঁ-হারা স্বীয় স্বীয় অবস্থানুসারে ধন্মের বে সমস্ত গ্ৰামি শৃচক অপবাদ প্ৰকাশ করেন, ভাষাও কোন মতেই আছা হইতে পারে না।

ধশকে কট সাধ্য বিষয় মনে কা গ্রাপ্ত তাহা হইতে বিচলিত হওয়া কওবা নহে।
ইহা অবশ্য স্বীকার করিতে হইবে, যে একণে পৃথিবীর বে প্রকার অবস্থা ইইরার-হিয়াছে, এবং মনুষ্য গণও যে রূপ দোষা-প্রত অপূর্ণ স্থভাব লইয়া কালা যাপন ক্রিতেহে, ইহাডে বিলা কুকেই ধন্ম পদবীতে পরিক্রমণ করা কোলা বাপেই সহজ্ঞ নহে।

ছেব দত্ত মাৎসহা অহস্কার কাম ক্লোধ প্র-**कृ**क्ति जाना विश्व कात्र। धटर्माह **११४ विवस** क-केंकिल करेंगा दिन्हादक । किख सबन है-হাও প্রত্যক্ষ দৃষ্ট হইতেছে যে, বাহারাধ-चांत्क कर्छे माथा महत्र क्रिया अथमा क्रिकेड টিক্সি: সুধ লাডের প্রত্যাশাষ ধর্ম পথ क्ट्रेटफ भतारमुश क्ट्रेस अध्यात अनुगारी কর, তাহারাও বিকাতীর মন্ত্রণা ভোগ করি-য়া খালে তথ্য মনংকশ্পিত ছুংখ নিবৃত্তি ও সুখ প্রাপ্তির উদ্দেশে প্রাণ স্বরূপ পরম পদার্থ ধন্মকৈ পরিত্যাগ করা যে নিতাস্থ মুড় ও মোহান্ধ ব্যক্তির কার্য্য ভা**হাতে** আর प्रत्मक कि १ अभग्न विद्यादय ७ कवजा বিশেষে অনেকের মনে এক্স সোহের উ मत हहेरड शास्त्र , य यथ किश्विष व्यवसा স্বীকার করিলেই এ পৃথিধীতে ইচ্ছানুরুণ সুখ ভোগ করিয়া খনায়াসে কাল কেপ ক-**द्री भूगोधा रुष, ভাষা रुषेन** कांत्र कथन ছুঃধের লেশ মাত্রও স্পর্শ করিতে হয় না। কিন্তু এ প্রকার বিবেচনা কেবল ভ্রম মাত্র। বাহারা অবিচ্ছেদে সুখ উপভোগ कतिवात मानदम अवर्षावनत्रन शृक्षक मः শার যাত্রা নির্বাহ করিতে রত রহিয়াছে, ভাহারাও বিধি মতে কন্ট প্রাপ্ত হইতেছে, ভাছাদিগের তুংসহ যন্ত্রণার নিকট ধর্মা সা-ध्यात्र यद किविष्ट क्रिमेर्क क्रिमें विषय इश्र ना । कामीनिरभव मरधा रकड् रकड् चीत्र दा-ঞ্জিত সুখ ভোগের অভাবে কামানলৈ দক্ষ হইবা আত্মঘাতী হইছেছে, কেছ বছ-পু-রুষ পরায়ণা স্ত্রীর আসক্তিতে পতিত হুইয়া व्यभन्न नम्मेटिन इंट्ड क्षान भराम जान क-রিতেছে এবং কেছ অপরিমিত রূপে ই ক্রিয়া (अवा कत्र अवद्रभाष श्रीत अकिनविठ সুখ ভোগে অসমর্থ হইরা মহাছুংখে আ-য়ুঃ শেষ করিতেছে, লোভীদিগের নধ্যে কেহ অপরিমিত লোভ তৃকার শান্তি কর गार्थ होया वृद्धि भवत्रथम कत्रिया द्रायमध বারা নানা প্রকান্ন ক্লেল ক্লোগ করিতেছে. কেহ আপনায় অভিনিয় ও যতুসৰ পূৰ্জ ব-ন্সাত্রি হইতে রঞ্জিত হইয়া সহার্থ্য পীড়ার भौष्ठि व्देश्वाह, धन्द (क्व वर्षका क्रमान भूक्षक चल्लाङ नल्लांक चालावन अहिटक

वर्ष शक्तिवा जालब विवास कनदश्यक या-পন করিতেছে, অথবা কেছ কথন কোন্ श्रावल वास्त्रित रहन शिष्क हरेत्रा वद श-রোনান্তি শান্তি প্রাপ্ত হইতেছে, প্রবঞ্ক ও প্রভারক দিগের মধ্যে কেছ পুনঃ পুনঃ প্রবঞ্চনা করিয়ালোক সমাজে প্রসিদ্ধ হও-য়াতে অবশেষে আর স্থীয় ব্যবসায়ে ক্লছ-কার্য্য হইতে না পারিরা কেবল লোকের ঘণাও তিরস্বারের পাত হইরা চুংখের দ-হিত জীবন যাপন করিছে**তে হে** 1 বিশাস ঘা∹ তব এবং কৃত্যু ব্যক্তিরাও স্বীয় স্থীয় ছ-ষ্টাচারের বিলক্ষণ প্রাচিফল ভোগ করিয়া থাকে। যে ব্যক্তি বিশাস দাতকতা বুদ্ধি অবলয়ন দ্বারা সুপ ভোগ করিবার ইক্তা করে, অবশেষে তাহাকে এ প্রকার তুর্গড়ি ভোগ করিতে হয়, যে অপর বাক্তি ভাষার প্রতি বিশ্বাস করিরা মিত্রতা প্রকাশ বা কোন কার্য্যের ভারার্পণ করা দুরে পাকুক, रम वान्ति स जी भूख भद्रिवाद भगरक ध-তিপালৰ করিবার জন্য অন্যের নিক্ট বি-শ্বাস ঘাতকতা করিবা অর্থোপার্জন করি-রাতে, ভাঙারাও আর ভাগাকে কিছু মাত্র বিশাস করিয়া আপনাদিগের কোন গোপ-লীয় বিষয় ভাষার নিকট প্রকাশ করে না<sub>ল</sub> এবং সে ব্যক্তি আপনিও আর আপনাকে বিশাস করিতে পারে না । সেই বিশাস ঘা-कक छुद्राचाद गत्न प्रकारन (व दख्राह উদ্য হয় তাহা বোধ করি আরু কোন প্রকা-র ক্লেশেরই সহিত জুলা হইতে পারে না। পাপ কারী ক্তযু ব্যক্তিরা বে সমস্ত অস-ক্লত যক্ত্ৰণ ভাগ করে ভাহা কাহারো জা-निट अप्रिका नाई। य नद्रायम, उपकाती ব্যক্তির অপকার করিয়া স্বার্থ সাধন করি-বার চেটা করে, সে কি আর কলিন্কা-ति काहात निक्षे इरेट उपकात आश्र হর? ভাবেতে তাহার জীবন ওঠাগত হইলেও আর কেহ তাহার প্রতি দয়া ঞ্র-काम करत्र मा। ७ शृथिवीरक काशत्र अ-वचा विज्ञचाती नरह, विश्वष्ट अव्यक्ति अ-क्न क्षकाइ मनुगारकरे (काश क्रिएक इत्र, এবং সকলকেই পদ্ধানৰ প্রশালের মা-राया अर्ग कतिता विभाग सिवात् । जन्मान

ভোপ করিতে হইয়া খাঁচে, কিছ কুড ছু
ব্যক্তি একবার বিপদ গ্রন্থ ইইলে কে বিপদ
হুইতে ভাহার উদ্ধার হওরা সুক্রিন হয় ৷
সুবের ইক্ষা চরিভার্থ করিবার জন্য ঘাহারা অবন্দের শরণাপন হয়, ভাহারা এই
কপে নানা ক্রেন ভোগ করে, অভএব ছুঃখ ভোগ হুইতে গ্রাণ পাইবার জন্যও যদি
কথন ধর্মা পদবী প্রিভ্যাগ করিতে ইছা
হুয়, তবে সেও কেবল অম মান।

অনেকের মনে এ একার সংস্কার সা-८ছ ८ए, अनवत्र छ धर्म भावन कति ८० है है-ल रेख्नित्र निधर कतिशां अप्तिक मूर्य বঞ্চিত হইতে হয়, সুতরং ইন্দ্রির নিঞাহ ক্ষিবার আশক্ষাতেও অনেকে ধর্ম ভূমি । ≢ইতে বিচলিত হয়েন। কিন্তু বিচার করি-য' দেখিলে অধন্ম সেবা ধারাই অধিক সুখে বঞ্ত হওল। সম্ভব হয়। মাহার মন ধর্মাসন জারা বন্ধ না হয়, তাহার মনো-মধ্যে শততই ইন্দ্রিয় সেবার অপবিত্র ইচ্চা সকল চরিভার্থ হইবার জন্য মুধ বিস্তার क्रिया थारक। किन्छ এक कारल किन्हें क--খন সকল ই জিন্ধকে চরিতার্থ করিতে পা রেন:৷ যাহার মনে ধর্গন যে ইক্সিয়ের অ,ধক প্রাতুর্ভাব হয়, পে তথন তাহারই ত-প্ল করিতে নিযুক্ত হয়, সুতরাং অবশিষ্ট हे स्क्रिया जिंकत (महे बजुद्धार्थ बजुक्ष हरे-भा थात्क। हेहः नक्षमा मुखे इटेट्डिट বে, লম্পট ৰাজিয়া মান বৰ প্ৰভৃতি অ-ন্যান্য বিষয়ের অভিলাষ বিস্কৃত করিয়া কামে জিয়কে চরিতার্থ করে এবং লে:ভা-সক্ত পুরুষেরা অপরাপর সকল ইচ্ছার অ-মুরোধ ভ্যাগ করিয়া লোভেরই ভৃঞ্জি শা-ধন করিয়া থাকে ৷ অতএব ধান্মিক লো-क्त्रा धन्मीनूटताट्स व अमल हेस्सिय भःधम করিয়া থাকেন, অধার্মিক লোকদিগকে অ-भर्णात अनुद्राह्म (प्रदे प्रमुख इक्षित छ-নিত সুধে বঞ্চিত হইতে হয়। প্রজুত অধর্ম জ্রোতে ভাসিলে অসংঘত প্রবল ইঞ্জিয় কৰ্তৃক যে প্ৰকাৰ ৰাতৰা তোগ ক-রিতে হয়, ধর্মের শরণাশম হইলে কথক-के दम काकात बद्धन नक् किंद्रिक क्त्र मा, ध-र्था अवादन पूर्णात है लिए न नकन विभाजन

বশীকুত কইরা আইনে । অধাত্মিক নো-কে বে নমজ ইঞ্জির সংখ্য করাকে বিশেষ ক্লেণের কারণ মনে করে, ধাত্মিক ব্যক্তির। সেই সমজ ইঞ্জির সংখ্য করাকে সুখের হেজু জানিয়াই করিয়া থাকেন।

व्यथमाविषयन याता प्रःथ नितृष्ठि ও मू-খোৎপত্তি হওয়া দূরে থাকুক ধার্ম্মিক ব্যক্তি-র অপেক্ষা অধার্মিক লোকের সকল প্রকা-র ছংখই অধিক হয়। ধর্ম পরায়ণ সাধ্ বাজিরা এ পৃথিবীতে সহাদা আশানুত্রপ ফ-ল প্রাপ্ত হয়েন নাবটে, কিন্তু অধন্মাপ্তিত **भूक्रस्यता काम विवर्ध मित्राम इहेटल स्य** প্রকার যন্ত্রণা ভোগ করে, ধর্ম প্রায়ণ লো কদিগকে তাহার সহস্রাংশের একাংশাও ক্লেশ ভোগ করিতে হয় নাঃ যে ধর্ম প্র ब्रायन माथ् वाक्ति कन्नमाभाउतः व्याप कार्या माधन উरक्रटम कान भीनशीन विशय वास्कि. তুঃখ মোচন করেন, তিনি যদি গেই উপক্লত ব্যক্তির নিক্ট হইতে বিছুমাত ও খ্যুগ-কার ও রুভজ্ঞতার চিহ্ন প্রাপ্ত না হয়েন. প্রজ্যাক সেই উপক্লুত ব্যক্তি যদি জাঁহার অপকার সাধনও করে, তথাপি তিনি আ-প্ৰার কর্ত্তব্য সংধনকে নিক্ষল মনে করেন না এবং যদিকোন সভা ব্ৰহাবলয়ী পুনা-বান মনুষা ধকা। নুরোধে সভা কথা কহিয়া लाक ममारक मिथा। क-नाभवादम आका-ন্ত হয়েন, তথাপি তিনি তাহাতে মান হ-सब बा, जाँशव्यक्तितात मत्व खरे अकाद म-ক্ষেষ থাকে নে, তাঁহারা মহার প্রীভির ভন্য ধর্ম সাধন করিয়াছেন, তিনি সর্বাক্ত नद्वास्त्रवीमी, काँशत निकृष्टे व्यवि-দিত নাই, তিনি সকলের অস্তরত বিষয় স-ন্দুর্শন করিতেছেন এবং তিনি পর ম ন্যায়বা-ন পরম পিতা, তিনি সকলকেই স্ব স্কমের যথোচিত ফল প্রদান করিয়া থাকেন, ভাঁহার निक्रें किह्हे क्थन दक्षिण हम्रना। च-তএৰ তাঁহায়া ধৰ্মানুষ্ঠান করিয়া যদিও লোক সমাজে প্রতিষ্ঠিত না হয়েন, তাহাতে তাঁহার। কিছুমাত ভয়োৎসাহ হরেন না। কিন্তু অধন্ম পরায়ণ অসাধু ব্যক্তি আপ-নার অভিলয়িত কল কামনায় কোন কম क्षित्र निवाम स्रेटन काराज मध्य कर्यस्र

শুক্ত প্রকার সভোষ থাকিছে পারে না।
সুগাথা হইয়া ধন্দে লিজন পুর্বাক কোন
কার্যা করিয়া নিরপে চইলে পর সোঁকের
ছংগ হিপ্তবিভূত হইয়া উঠে। প্রথমত অনুষ্ঠিত কর্মা নিক্তল দেখিরা মনোমধ্যে মতা ক্রেরে সংগার হল, বিতীয়ত অধ্যানুতিন করা মনোধ্যে বিলাতীয় অনুহাপ উপতিত হইয়া দায়ণ যন্ত্রণ প্রদান করিতে

(स करता ७९काटन मनूरवात मन् মহা পোচনা উপস্থিত হয়, সংসারের কেনি বঙ্গাটো আর ভাচাকে সুখা করিতে পারে না, ভাছার নিকট সকল বিষয়ই বিষতুলা হুইয়া উঠে, ভাহার মনের শাস্তি এক কালে অনুষ্ঠিত হয় এবং তথন ভাষার স্বীয় জী-যনের ৫০তিও প্রাউপশ্বিত হইতে থাকে। ধন্ম পরিত্যাগ করিয়া অধক্ষেরি সেবা ক तिल कथनहे कान विचार मुनी २७३। यात्र मा, अलू उ गरून अकात छः यह विकां ठ इ-য়া অভগ্র ফুংখ ভোগের আশকাও সুখ চ্চেলের প্রভাশা করিয়াও কথন ধর্ম হই-তে ভিচলিত ছওরা মনুবোর কর্তবা নহে। গ্রাণ্ডিক অবিচলিত চিতের ধন্মেরি শরণা-ণয় চইয়া কাল মাপন করে, সে কথন নৈ-दान आहे हराया. यचा विश्वका स्वतनीयह অবশাই ডাহাকে ভাহার কল্মে পিযুক্ত কল প্রদান করেন। এই পৃথিবী মাত্র কেবল ধশ্ম সাধনের ফল ভোগ করিবার স্থান নছে এবং এ জীবন মাতুই কেবল ভাছার কল कारलत भौगा नरण। विनि आमानिरशत মনে ধরা শাসন প্রেরণ করিরাছেন, তিনি অন্তু রাজ্যের রাজা এবং ধানত্ত কালের অবিণতি, অতএব তাঁহার প্রেরিত ধর্ম শা-সন প্রতিপালন করিয়া আমরা যদি এ পৃ-থিবীতেও ভাষার উপযুক্ত কল প্রাপ্ত না হই, তথাপি তাহাতে আমাদিণের হতাশ হওয়া উচিত নহে এবং হতাশ হইয়া ধন্ম-কে পরিত্যাগ করাও কর্ত্তব্য মহে, আমরা व्यवस्थात अने इरेश व्यवस्थान भ-र्यास त्य धटक्त कन ट्यांग क्तिव णाशक चात्र मदम्बर्ग कि ।

्रियासन्। अर्थ्य शर्दत्र विषु नकत्त्र । त्रव कतित्रो रक्षामात्र वृथी मिल्लक्ष्मा स्टेबीव

কোন প্রারোজন নাই, ভূমি ভাহার শোভা ও সৌकर्र्यात्र विश्व जात्नाहमा कवित्रा तथ, এथित मुची इरेरवा जुनि धमा समिछ वि-শুক্ষ সুধের সহিত অবিশুক্ষ ইন্দ্রিয় সুধের জুলনা করিয়াকেন অসুধী হইতেছ। ত্-মি জগদীশরের প্রেম রাজ্যের প্রজা, তো-মার সুখের অভাব কি? ভূমি সেই প্রেম সিশ্ব পর্য বৃদ্ধর প্রীতির প্রতি নির্ভর ক-রিয়া ধর্মাপথের পণিক হও, এখনি কত সুখ ভোগ করিবে। তুনি আপনি পরিবাও পরিশৃদ্ধ হও, আপনার মনো মালিনা দুর কর, ভ!হা হ্ইলে আপনা হইতে সুখ আসিয়া ভোমাকে আলিঞ্চন করিবে। তথন আর ভোনার সুধের জনা অন্য কোন লোকের ष्यत्भका शांकिरव ना। लात्क यम ना क-1 রিলে কোন ক্ষতি বোধ হইবে না এবং लाइकर निकंड ममापत न। वाट्रवा कि कू গাত্র ফোড উপস্থিত হইবে না, ভোমার সুখ তোগারই হস্তে- তোমারই বশে অপিত থা-কিৰে। ভূমি বদি আপনি প্ৰক্লতাৰস্থায় থা-क, जारा हहे*रन প্র*ত্যেক ধন্ম কন্মের অনু-ষ্ঠানেতেই তেমার সুখ অনুভব ইইবে। কুধার্ড ব্যক্তিকে অল্পনান করিয়া তাহার ক্লেশ দুর করিতে পারিলে মনোমধ্যে তেএকটি ' অপূর্ব্ব আহ্লাদ জয়ে, তাহার নিকট কি লৌকিক যশ? ভৃষ্ণাৰ্ভ ব্যক্তিকে জলদান করিয়া তাহার অনহ্য পিপাসার যন্ত্রণা দুর করিতে পারিলেমনেতে বে অসাধারণ আ-নন্দ উপস্থিত হয়, ভাছার নিকট লৌকিক প্রেশংসা কোথার পাকে? বস্তু দান ছারা শীতার্ত্ত ব্যক্তির ক্লেশ দূর করিতে পারিলে আপনা হইতে মনে আনক্ষের উদ্ভব হয়, লৌকিক প্রতিষ্ঠার প্রতি দৃটি পাত থাকে না। ধার্মিক ব্যক্তিরা ধর্মানুষ্ঠান করি-য়া স্বভঃই সুথ ভোগ করেন, ভাঁহাদিগকে আর লোকের বাক্যে কর্ণ পাত করিয়া থাকিতে হয় না ৷ হে মানব ৷ জুমি এক সভা ব্রন্থ আচরণ করিয়া যে অনুপম সুখ লাভ করিবে, সহস্র প্রকার লৌকিক সমুদ্র काहात अक कर्गात्रल जुना हरेटर मा। जूनि · এयन तिरदाना कतिल्ला स्था, नूच कदल লান, বল ওবিষয় ক্ষেত্রণতেই সাবস্থ সাহে,



সুধ লাভা পর দেখর এমন সকলে স্থানে সুব লংকাপন করিরা রাতিরাছেন, যে জক্লেশে ভাচা চইতে সুধ জাকর্যণ করিরা
সকলে সুধী হইডে পারে ৷ অভএব ভূমি সেই ঈশ্বরে, এতি একান্ত নির্ভর করিরাধ্যা পথের প্রিক হও অবশ্যই জবশেষে সুধ ধানে উপনীত হইবে ৷

### বহু বিবাহ।

हेहा প্রমাহলাদের বিষয় যে এফাণে এ (मभीश कारतक श्रथान मनुषा चरमरणत कुट्री-ভি প্রবাহের প্রতি দৃষ্টি পাত করিয়া ভাইার উৎসেদ বিষয়ে বিশেষ মত্নশীল इटे आह्न । ফুরীতি সংশোধন করিতে যত্নশীল হওয়া মনুষা জাভির প্রকৃত মহজুের চিত্র এবং য-থাৰ্থ উন্নতিৰ কারণ৷ যথন নানাৰিও শি-ক্ষা ও নানা প্রকার উপদেশ দ্বারা মনুযোর জ্ঞান চকু উন্মীলিত হয়, তথন স্বভাবতই তাহার সকল একার শৃভাশুভের প্রতি দৃষ্টি পাত হটতে থাকে এবং স্কাগ্রেই স্বদেশের অশুভ সংখার করিতে ধতু উপত্তি হয়। পৃথিবীর পুরারম্ভ পাঠ করিলে দেখিছে পাওয়া বার, যে, বে মমস্ত সভা ভাতির আ-বাস স্থান একণে মহত্ত্বের আস্পাদ বলিয়া পরিগণিও ছইছেছে, কিয়ৎকাল পূর্বে সে-ই সকল স্থান রাশি রাশি পাপক্রিয়ার গু-রুভারে সতত পাঁড়িত হইত, কিন্তু ঐ সকল **प्रत्म फिन फिन यह ब्हान ब्ह्यांकि** विकीश हरेट बाइड हरेन এदः काटन काटन मठ জ্ঞানবান্ মহৎ মনুষ্যের আবিভাব হ-ইতে লাগিল ততই তথা হইতে অশ্-काती कमर्याणातः जकन क्राय क्राय **जित्राह्य इट्टेंट आयु इट्टेन**। এতদেশীয় কুৎসিত আচার সকল এখান श्रेष्ट पूर्वीकत्रण कतिवात कना श्राटन श्राटन উপায় স্থির হইতেছে, তথন বিলকণ প্রমা- १ व्हेटफट्ट, य अधुना अटक्टलाइ शटक वि-শেষ শুভ কণ উপস্থিত হইয়াছে, বোধ रम् अटमरमात मोकाना तृष्क श्रेवात था-त व्यक्षिक विशव नाष्ट्रे अक मिटनज्ञ शत्र वृद्धि ছৰ্তাগ্য বঙ্গভূমি ছুৰ্গণা ৰূপ চিব্ৰ বন্ধ কারা वानः हरेटच পরিজাণ আগু हरेटव ।

**य मुमक कर्ष कारव क्राम्य मामरक এक**-कारण **मृ**श्च कत्रिता स्मन्न এवং वि नमस चनकातंत्र ७ मकः वातकात कमा कुर्णाना वक अभित बलकारकालन कत्रिवाह नाशा नाहे, अकद्य खानतकहे (महे ममल कमर्या कर्णात श्रञीकात काधनातर्थ विद्याय महनात्वांनी इ-रेशारहन। याहारक अरमनीय विश्वा गरनत क्रान कित रेवनना यखना ७ कित देवथवा नि-वस्त्रम मामा चरेवध व्यालात्त्रम्न मिवाइवस्त्र, <u> শিবুক্ত ঈশরচক্ত বিদ্যাসাগর মহাশয় কতি-</u> পয় বিচক্ষণ বন্ধু বান্ধবের স্থিত মিলিত হ-हेश। ८७ विषदम् आनुभारत यञ्ज कतिराह्यस् বোধ হব জগদীশর তাঁহার শুভ সংকল্প সি**ন্ধ** করিবেন। আর যা**হাতে** এদেশীর लारकत मध्या काम अक सम शुक्रव दस्र জীর পাণি গ্রাহণ করিরা অংশ্র অভ্যাচার উৎপাদন করিতে না পারে, ভাষার নিমিস্তও অনেক প্রধান প্রধান লোকে মনোযোগী इटेशाटक्रम, वस विवाह निष्यंथक तास नि-১ম সংস্থাপন করাইবার জনা ইতি প্রকো কোন কোন মহাশর একত্রিজ চইয়া ভারত-বধায়ি ব্যবস্থাপক সমাজে এক আবেদন পত্ৰ অর্পণ করিয়াছেন ৷ কোন কোন মহাশয় के विषय भूनकात भुवक्काल चारवमन क-রণার্ধে সম্পৃতি আবার এক আবেদন পত্র প্রস্তুত করিয়াছেন, এই দ্বিতীয় আবেদন পতে বফ দেশ ৰাগী বছ সংখ্যক মনুধ্যের নাম স্বাক্ষর হইরাছে। এক বিষয়ের জনা ভিন্ন ভিন্ন স্থান **इट्रेट এই প্রকার বছ লো**-क्ति कि की विश्वति अवगृहे विस्मय यञ्ज छ বিশেষ উৎসাহের চিত্র বোধ হয়, অ্তএব दश मिन वाभी अधान मनुवा नितात त्य अ-ক্ষণে বদেশের ছ্রবস্থার প্রতি দৃক্তি পাত হইরাছে তাহাতে আর সন্দেহ নাই ৷ বি-ধৰা বিবাহ অপ্রচলিত খাকাতে এদেশের रयमन नाना ध्यकांत्र इक्लंभा रहेटल्ट्, अ-**थित्वम्द्रित्र अक्षा अहिन्छ वाकार्ड**७ (व वर्षात्म तमहे कुण वक्षविव असर्व छस्त इ-हेटलट्ड छाहाटक मश्मन्न कि? अद्वरमा वि-ধবাধিগের পুনর্বার পতি গ্রহণ করিবার नक्षि क्षात्रक वा बाकारक बबारम रव न-मात्रः नामा जोनित्रं व्यक्तः व्हेत्राः वाटकः अवस्

উক্ত পদ্ধতি প্রচলিত না থাকা দে কি পর্যান্ত অন্যায় এবং কত দূর পর্যান্ত অগদীশ্ব-রের অভি প্রায় বিরুদ্ধ তাই। এই পত্রিকাতে বারমার বাক্ত করা হইরাছে, একনে এদে-শে অবিবেদনের প্রথা প্রচলিত থাকাতে বে সমস্ত শোষ ঘটিতেছে এবং উক্ত কুণ-দ্ধতি এদেশ হইতে সন্তরে নিরাকরণ ক-রা যে কত দূর পর্যান্ত আবশ্যক হইরা উঠিয়াতে স্থানার্কাল তাহ; রই বিষয় কিঞ্ছিৎ বগন করা বাইতেছে।

এদেশের ব্যবহার পর্ফা রায় বজবিবাহ বীতির এমত প্রাব্যা হট্যা উঠিনাছে, যে সহজে তাহার স্রোত নিবারণ করিবার কো-न छेशाय पृष्ठे इस ना। आत्नकारनक प्र-(महे भूसम्बद्धांडि अत्तत् अधिक क्षी वि-বাহ করে বটে. কিন্তু এ ছভাগ্য বেশের তাল্য আরু কুলাপি বন্ধ বিবংহের এরপ এন क्रुफीव (मथा यात्र ना। ७६५८मात्र । उन्त কোন বর্ণের মধ্যে উক্ত র্ক্তির এত প্রাবন্য আছে, যে ঐ বর্গের এক এক হ্যাপ্তি শই।-ধিক নারীর পাণি গ্রহণ করিয়া থাকে; উ ছালিগোর মধ্যে ভাবেকে বিবাহকে এক গ্র-কার উপার্জনের পথ জ্ঞান করে। উহা-দিগের আচার বাবহার দেখিলে বে.ধ হয়, যে অর্থোপার্জন ডিল্উড্চের অপর জোন তাৎপর্যা উচাদিগের জ্বর্জন হয় নটে। **এই कुलक्का करा अरमभा**त गायात्रक्ताः কের মনে একপ বিরুদ্ধ সংস্কার জলিয়া। গি-য়াছে, যে প্রায় অনেকে কেবল স্থানোকৈর পক্ষেই সভীত রক্ষাও অব্যক্তিয়ের ধর্ম পালন করা নিতান্ত কউবা ও নিতাত্ত ভাৰণাক ৰলিয়া ৰোধ করে, পুরুষের গক্ষে উলার কোন প্রয়োজন মনে করে না। এড দেশীর ষে সকল ভন্ত কুলের মধ্যে উপ্ত পদ্ধতি প্রচলিত আছে, তাঁহাদিগের বুদ্ধিও অ পরাপর বিষয়ের ছোরাছোম বিবেচনা করি-वात्र मास्त्रि पुरुष्ठे क्यान करमरे विश्व हर्र त्रा, त्त जोहाज्ञा व श्रकात्र दिसन- शत्रण छेर-পাদক কুপ্ৰথাকে কোন, মতে যুক্তি সিম্ব ৰবিয়া মৰে করিতে পান্তেৰ, কিন্ত ইহার ম-(था जानती वह ता काल कात जनवान-ই ঐ কুগছতি জনিজানিক যুদিত বৌৰ বী-कात कतिएक रहवा बात्र 1

ু ম্যুনাধিক সহত্য বৃৎগর অভীত হুইল रेवशदररमास्त्र तांका दल्लान रमन व्यागम पूर्व পুরুষের আহত পঞ্জন ব্রাক্তবের যে সকল সস্তঃনদিগকে নবগুণ বিশিষ্ট দেখিয়া বিশেষ স্মান প্ৰদানাৰ্থে কৌনীন্য ভূষণে ভূষিত ক রিয়াছিলেন, এক্ষণে ভাঁহাদিগের বংশের মধ্যেই উক্ত অনর্থকর পদ্ধতির প্রাবল্য দৃ-ঊ হইতেছে। কুলীন কুলের মধ্যে এ-স্মন্তে এ পদ্ধতির এমত প্রভাব যে অনেকেই ইহার গরন্মর কল প্রতাক্ষ দেখিয়াও কোন মতে ভাষা ভাগে করিছে পারেন না। যদিও এতদেনীয় কোনবর্ণেট এক জ্রীস-ত্বেঅনা জ্রীর পাণি গ্রহণ করাকে গছিতু কর্ম বলিয়ামনে করে না তথাপি যাহার্য ঐ কৌনীনা পাশে বন্ধ নতে, ভাছারা কি-ঞ্ছিছ জ্ঞানবানু হইলে আর পার্যামানে ১ এনত ভয়ক্র পংপ তাপে দয় চুইতে ইজা করে না৷ অনেকেই ইলার বিষত্তাকা য়। সল্পনে ভাত হীয়া ক্রমে সতর্ক হই-তেতে ৷ একণে এ প্রদেশে গে প্রকার জ্ঞান বিজ্ঞানের প্রচার হইতেছে, সর্বাদাসদস্থ বিষয়ের বিচার আরম্ভ হইরাছে, বন্ধ মূল কুসংস্কার সকল উচ্ছেদ করিবার জন্য স্থানে 🔔 স্থানে যুক্তি, তর্ক ও ন্যায় সিদ্ধান্তের আন্দো-लन इटेर७८७, रेहार७ यपि এ সময় এথানে कु-লীন কুলোছৰ মহাসারা বর্তমান নাথাকি। তেন, তবে বোগ হয় যে অধিবৈদনের পদ্ধতি আর এত দিন এগানে স্থান প্রাপ্ত হইত না : কেবল কুণীন মহাশয়েরাই যত্ন পূর্বাক ভার-ভববের 🕮 নাশক ও হিন্দু জাতির কুল না-শক উক্ত প্রথাকে স্বাপনাদিগের হৃদরে ধারণ করিয়া রাখিয়াছেন। এই কুরীতি অ नुष्ठान विषया कूलीन पिरणंत निक्छे क्लांब অনুরোধই আছে হয় না. তাহারা এপকে মু-ক্তিতেও জ্রাতি পাত করেন না, শাল্পেও দু-টি পাত করেন না এবং ধর্ম্মের প্রতিও ম-**ब्ला**रवार्थ करतन ना, जाशनामिरशत कुल মর্যাদা রকা করিবার জন্য বাহার বধন যভ বিবাহ করিবার আবেশ্যক হয়, ভথনি সে তত বিবাহ করিয়া থাকে ৷ ইহাতে আ-शान अशान काम शासके कि वाज वि-**(ब्रुग्ने) क्षेत्र मा १ विभि हरीका** किनिय वर्ग जी नहस्त अक कारण स्वीवात

অন্য ভিন্ চারিটির পাণি গ্রহণ করি-তেছেন এবং বিনি দাতা তিনিও সেই ছু-ब्राम्मा छेबारहाशकीवी विश्वं तरक चटिंग्डरनंत्र নায় এক কালে আপনায় ভিন চারিটি ক-बा। अम्लो मान् कतिया धालनाटक **मतिषार्थ** वाध कदिएछहरू, हेहाटठ छेन्स भटक का-হারো মনে কোন ক্লেশের িত্র প্রকাশ পাই-তেতেলা, বোধ হয় এমত আক্রাও এমত অস্বাভাবিক বিষয় আর কুতাপি বিদামান না থাকিতে পারে। পুরুষের একন্ত্রী বর্ত্তমা-न थाकिएक जना जीत शानि दाहन करतात অংথা এদেশে এমত অংশ হটনার্হিয়াছে ষে, এতকেশীৰ লোকের মনে ভাগা এক প্র-কার কর্ডব্য কর্মের ন্যায় অবধারিত ইইরা আ-ছো যে সগজা শব্দ, বোধ হয় অন্য কোন দেশে কোন ভাষায় প্রচলিত না থাকিতে পা-त्त, अञ्चलकोत जोवदन्त महन्यमध्य दको-মারাবস্থাতেট সেই সপত্নীর ভাব উদয় ছয়, তথ কালাব্যিই তাহারা সপজ্লী ইবান স-পত্নাশক। অনুভৱ করিতে থাকে। সপ-জ্লীৰূপে কলে সৰ্পিধীর বিধ দুখিত দংশন **ফইতে বুকা পাটিবার প্রার্থনায় এ**ডজেশীয় কন্যাগণ শৈল্যবিতাহ ইইতেই নানা প্রকার দৈবানুষ্ঠান করিতে আরম্ভ করে। সপত্নী সস্তাপ পরিহার করাই তাহাদিলের অধি-কাংশ ব্রন্থ নিয়মাদি পালুন করণের মুগ্য **णार्थिश १ अस्पर्धात (गञ्जीतक यात्रज्जीवत्मत** মধ্যে নিদারুণ সপঞ্চীর যন্ত্রণা সহাকরিতে না হয়, সে আপনাকে নিভান্ত সৌভাগাব-তী মনে করে, তাহার ভাগ্যের আর স্বী-মা মাই, গৌরবের আর পার নাই।

এদেশে এই অনর্থকর কুপদ্ধতি প্রচালত থাকাতে যে এথান কার অশেষ বিধ
অনুপকার উৎপন্ন হইতেছে এবং ইয়া যে
সর্বতোজাবে যুক্তিবিক্তন্ধ এবং অগদীখরের অনভিপ্রেভ ভাষা ঘাঁহার কিঞ্চিন্দার
বৃদ্ধি আছে তিনিই বিলক্ষণ অনুভব করিতে পারেন ৷ তথাপি সর্ব্ধ সাধরেণের পুনসংখ্যে অন্য সে বিষর সংক্ষেপে কিঞিৎ বর্ণন করা কিভান্ধ অন্ধরেন্ননীর বোধ হয় লা।
সাহা জন্মেন্ডর কল্যাণকর ভাষাই কর্বোর

कर्षवा। किन्द्र अधिदवन्त्रतत्र शक्कि वात्रा সংসারের কোন হিত সাধন হওয়া সূরে ধা-कुक, कम्बोड़ी जातांत बद्धमदक क्रक कारण निश्चित्र कतिशा विश এवर लाक मृष्यनारक कक्वाद्ध विश्रवेशी कद्धा विषिध भरमा-रतत ममस की भूतरवत मश्क्षा निर्देश **कड़ा** ছুঞ্চর তথাপি নিঃসং**শদ্মে বলা ঘাইতে পারে** ষে এক এক জন পুনেয়ে এক একটি স্ত্রী**গ্রহ**-ৰ করিলেই সংগ্রের সমস্ত ক্রী পুরুষ উদ্ধান হ হুত্রে নিবদ্ধ প্রতির গ্রাউপসুক্ত ক্রেপ महमात याचा विकास कतिए ए एएई इब ७३९ रंग छेटकटम कशन बंद छी भू सरगत मृचि করিয়াছেন, তাহাও সমাক্ষিক্ষর ৷ য-थन श्राज्य रम्या सारे रजस्य, त्य श्रीस नाः-থবান্ পরমেখর পুরুবদেও যে সমস্ত শা-রীরিকও মানসিক প্রকৃতি খদান করিয়া-ছেন, ভূমারূপে ক্রীলোকদিগেরও দেই রূপ শরীরের ও মনের ধর্ম কডিয়া দিয়াছেম, ডা-**হার কোন অংশে** ইতর বিলেশ করেন নাই, তথ্য বিলক্ষণ প্রতিগল হইটেচেল, জগদ, ঘর জুলা নিয়মানুসারেই উহাদিলোঃ উভয়ের কর্তব্যাকউব্যের ও পাপ পুরণ্যর বিচার করি-য়া থাকেন এবং যে যে কাংকে পুক্রবের হর্ষ বিষাদ অনুরাগ বিরাগ প্রেম থেপ প্রভৃতি ভাবের উৎপত্তি হইতে পারে, অবশ্যই সেই সেই কারণের্ম্বানিগেরও তত্ত্ব ভাব উদ্ভব হ ७३। निद्यास मध्य । अन्तर्गयनि शक्या-রীর ছই পতি হওয়া নিহাম অস্বাভাবিক, নিতান্ত অমুক্ত ও অন্যায় বেংধ হয়, যদি জী এক পতি সত্ত্বে অনা পতি এছণ করিলে ভা হার সভীত্ব নাশ, ধর্ম ক্ষা, ব্যক্তিচার দোয প্রভৃতি পাপ সকল জন্মান নিশ্চণ বিচার সিদ্ধ হয় এবং ভক্তন্যু ভাগকে লোক সমা-জে কল্রিনী এবং পতি কুল ও মাতৃকুলের দুর গামিনী হই তে হয়। যদি এক পতি সভে क्वीत अना भू ऋदनत शानि धहन कता पूट्य था-কুক সে অপর পুরুষের সহিত সহাস্থম-নে কোন রহস্য ভাবের আলাপ করিলে কি অবিহিত ভাবে অন্য পুরুষের মুখাবলো-কন করিলে ভাহার প্তির মন বিব মৃক্তিত त्मक बाह्रो विष. हर, **जाबाटक बक्**काटल निक (बारम विक्रिका हरेएक रहा अवर क्षति- মিত ভাষার প্রাণ পর্যান্ত রক্ষা পাওরা ভার হর, তবে এক জীসত্ত্বে পুরুষ অন্য মুমণীর পাণি এহণ কৰিলে কেন না ভাষা নিভাস্ত 'बनाह 'अ घरगे खिक ह हेर्द ? किन बा स्म भुक्तरवत व्यवभारे धर्म कह, कर्खरवात हानि ও ব্যক্তিগর দোষ গুড়তি পাপ রাশি উৎ-लम हरेरन? कि कनारे वा ए।शहक लाक সমাজে নিন্দা ভাজন ও কলক এন্ত না ছ-ইতে হইবেক এবং কেন নাভাষার পদ্মী ভক্তনা মনেমেধো বিষম বেছনা বোধ ক-্বিক ৬ ৬ ডির প্রতি অবলাই অপ্রণয় ও অসদাৰ প্ৰকাশ করি বক ? কিন্তু এদেশের वाबकात मृत्ये विकाशंभाग इरेटक दश । ্তি সত্তে ন'র' খন্য পুরুষপ্রারণ হইলে নে অপ ভাষার পতির প্রাত ব্যক্তিচার করা s ম, এক স্ত্রী থাকিতে পুরুষক যে **অনান্ত্রী**র পানি গ্রহণ করিলে সেই রূপ ব্যক্তিচার দোক উদ্ভৱ হয়, বোধ করি এদেশীয় লোকের মবে এ সংক্ষার বর্তনান নাই । ইরাদিথের बावहात मृद्ये दाध हत, क्वीश्वामीत स्विक শমস্ক ও উভ**েরে মধ্যে যেপর**স্পরের কি ক-ভ্যা ভাষা এখান কার কোন লোকেই জা-उनहा हेश्रा द्वीरक की जमनी किका-राज्यक वननी व्यवता व्याशनामिरशत है सिन्त ्भवात डिलर्याली सह विरम्ध मत्न करत । है है। जकत्लात्र विभिन्न बारक, त्म अरमनीय খ্রীগণ পিঞ্চর বন্ধ পক্ষিণীর ন্যায় অনবরত এক গৃহের মধ্যে বন্ধ হইরা কাল যাপন ক-রে, পিতা, মতো, ভগিনী, ভাতা, বা হশুর ্দবর সামী শত্রু প্রভৃতিতে পরিবেটিত इर्गा नक्षा मण्डा काल इत्र कड़, हेहा-তেও যদি ভাহাদিগের কিছু মাত্র স্থ-৬স্ত ভাব প্রকাশ পায় ও কম্মিন্ কারেও খ-দি তাহারা গুরুজনের অন্ভিনতে নির্দিষ্ট স্থানের সামা অভিক্রম করিয়া পদক্ষেপ ক বে, ভবে তাহাদিগের লোক লাঞ্চনার স্নার পার থাকে না ও গুরু গঞ্জনার আর শেষ वादक ना, ७९ शतिबात्रक कान वानी थ-यास्य काशामित्तात क्षांकि चक्ता इस इत । কিন্ত পুরুবেরা একত্রী থাকিতে অবারালে जाना जी वादन क्षिएएटह, नार्बीका करन কড উপত্ৰী বাধিতেতে, সভাইট ক্ৰম

অক্টাচার করিতেছে, তথাচা তালাতৈ কেন্ট্র বিশেষ দেন মনে করে না এবং তথাজ্ঞনা তালালিচাকে লোক সমাজে তালাল নিলা তালা ক্টতে হয় না া কেবল এক অধিবেদনেল অধা প্রচালত থালাতে এখানকার অনেক লোকে জ্রী সভ্জে অপর জ্রীতে আগক্ত হওয়া এক প্রকার পুরুবের ধর্মা মনে করিয়া রাখিয়াতে ।

বাস্তবিক স্বামী প্রী এ উভবের সহিত্তই উভরের জুন্য সম্বন্ধ এবং উভরেরই জুন্য অধিকার ৷ যেমন স্বামীর প্রতি সর্বতো ভাবে বাভিচার শূন্য থাকা প্রীর কর্ত্তব্য এবং ঈশরের আজ্ঞা, সেইন্ধপ স্ত্রীর প্রতিও সংস্থান করে আজ্ঞান করে পতির নিতান্ত কর্ত্তব্য এবং জগদী, মরের নির্দিক্ত নিরম ৷ এক প্রার্হ ছট পতি যেমন অপাভাবিক এক প্রতির ছট প্রতি যেমন অপাভাবিক এক প্রতির ছট প্রতি যেমন অপাভাবিক এক প্রায়েশা চইকে যেমত ঈশরের শাক্ষাং আজ্ঞা লক্ত্রন ক্রিণাপানু ভাল করা হয়, এক স্ত্রী থাকিতে অন্য প্রী গ্রহণ করিলেও সেই প্রকার ঈশ্বারের নিরম হেলন করিবা পাপানু ভাল করা হয়, ইহাতে আরু সন্দেহ মাজ নাই ৷

ভগনিষ্টার ব্যবস্থাপিত অপরাপর কি য়ম লক্ত্রন করিতো বেমন অব্যর্থ ভাচার ফল ভোগ করিতে হয়, সেই ক্লপ্তাহার ৫ এত এ নিয়ম হেলন করিলেও নিশ্চয়তা হার প্রতিফল পাইতে হয় ৷

আক্ষ উদ্বাহ সুথে বঞ্চিত থাকা এনিয়ন লজনের এক প্রধান কলা প্রভাক
দেখা ঘাইতেছে যে, যেগানে যেখানে এক
স্থামার ছুই দ্রী আছে, সেই সেই স্থানেই
প্রক্রত দাম্পত্য সুখের নিতাস্ত অভাব ৷
মাহারা কেবল স্থানে স্থানে বিবাহ করিয়া
দ্রন্থ করেন, কন্মিন কালে দ্রী লইয়া গৃহাপ্রান্থ করেননা, তাঁহারা দাম্পত্য সুখের
স্থান্থাকি বুকিবেন, ত্রী পুরুষের সম্বন্ধই
স্থান্থাকিলের স্থান্তম্বন নাই, কিন্তু বাঁহারা এক
ক্রে ছুই বা অধিক পদ্ধা লইয়া সংসার
ধর্ম প্রভান করেন, তাঁহারা বিকক্ষণ কান্মন
ব্যান্থাকি বুকিবেন, তাঁহারা বিকক্ষণ কান্মন
ব্যান্থাকি বুকিবেন, তাঁহারা বিকক্ষণ কান্মন
ব্যান্থাকি বাহারণ কান্মির, তাহার কি

আর জুর্মণার শেষ আছে? তাহার প্রতি কি কাহায়ে প্ৰকৃত প্ৰেম উদ্ধুৰ হইতে পা-রে ? কেছই তাভাকে নিংসংখনে আমরে মূৰে ক্ৰিয়া ভাছার প্রতি মপার্থ নম্ভা জ-কাশ করি জ পাতে মা সে বজ্ঞ কালারও প্রক্রে সুগ্রহার ও জীতিরজন না হইলাকে दश जारणादि खालास (क्यानन ५ 🗇 प्रामन প্রজানিত ক্ষিতে থাকে। সভা প্রতিগতক পাত, জুলা ধন অনু সংগ্ৰ মধ্যে কিছুই নাই, এতএৰ ধৰ্ম সামান্য বনের বিভাগ (লং১ জোকে সহচেল স্থাত হাুনা, এখন মার্ট্রাদেশের পর্যুক্ত পতি লেখ্যের আংশাদেশ sal कि अल्बर्शकरण्ड सुराना हडेट० ९१ স্থার হৈ অবলা ড বির হালবে স · 新人 每48.44、 雪型的新年至新四年7分享不。 實有 沙河西县 面有个不实代的方面的 经现代分页 প্রাক্তির হাকে, মে পুরবার কলাই বিশাস कदर प्रतिकार सुद्देश कर । कि.स. पनि हा ন্ত্রপ্রতার প্রত্তা করে। 🕟 হার জাবিয়ারে হয়ে এইং মুখ্যে মাংক্ত ইয়াভাগে कर, भण ३, जिस्स ५ १७ के ज्यार एक স্থান্ত ক্রিটেডি র্ডান সংখ্যা বন গাড় হ শংখি স্ব উল্লেখন এইতে গ্রৈ পল্যন কৰে। সংভ্ৰত ভাষ্য বিশা মা। अमिनो अर्जननीत अक्य हे प्राजुनका ६% काल भटक राक्षत्य इंदेर्ड है 🖫 है है है है ্ধ। তিনি দেখনট অ'পন यावकोवस्थ चीत जेकानिक (शम आशु उईएम भारत ৰা এবং তিনিও কপন জীব প্ৰতি অকং টেট ত্রেমভার প্রকাশ করিতে সমর্গ করেন মা ! ষ্ঠাহার মনের যে অশান্তি, জীবনের গে অসুখ, ভাহা ভিনিট ফানেন, দে ভাব ভোগ ৰা করিলে অনুমান ছারা কথন সমাক্ বৰ্শ করা সাধ্য হয় না। ইছিলো এবি-यत्त्रत कुळाकाती काश्ताक विद्यवस्मा क-त्रिया **(मधून (य** ८क िस तथ खेरिक अक्रड দাস্পতা সুধ সম্ভোগ হইতে পারে কি না ? भारतक द्वारन व अक्तुत्र मृत्ते कडेल इंड एवं व-ৰু স্ত্ৰী লইয়া গৃহাত্ৰমের সুথ ভোগ করা দূরে থাফুক অনেকে অহরিশ সপত্নী কলতে তা-লাভন হইবা সংসার আভ্রম পরিভাগে পু-क्षंक रुमाखदी व्हेंद्राट्य ।

मश्मात माथा वास्तितात (पाम व्यवना क-ওয়া এই নিঃম ছেলনের এক প্রধান ফল। ায়নি মানৰ প্ৰকৃতি বিশেষ ৰূপে আলোচনা করিয়াছেন, তিনিই বিভাক্ষণ অবগত আ হেন যে এক পুড়েছ ছাৱা ৰজ্ঞ ছাৱ ধৰ্ম হ-नाइ अहा कि रुगं सुध्य भ्या । ता हो ह-য়তে িচিভবিধানে প্রতি প্রাপ্ত কটলে কৃষ্মির কালেও আমতীয় রূপ পাপ পাসে লিপু হুইড না, প্তিভ্রতা স্থা হুইবার জ-ল্যাহার নিতাভ বছুছিল, সেও চির 🖏 🤭 বন পতি বিজেদ কেন্দু সমধ্যাকে শার্থ-রিক বিকারে অটার্যা ইইড় সংখ্যাধকে जलाक्ष्मेल निया शहरू। १ वना भिराय कि অপরাধ ? জাহার, কন্ত দিন হভাবকে নিং रहाम कविया सत्याद्य र मुलीम दनार्शमात्रम भटका कार्टसटक विशास्त्र शह काह अवस्थान নের মধ্যে স্বামীর ব্রুথ স্ক্রান কবিটেল গালে না । (ব্যব) প্রস্থার ভাগে চির বিবস সম্ভাগে বিশেষ কি এইটার্টে আছালে যে বাজিটার (क्रांट्य लिश्र इंड्रेट्न, खाडाव कि व्यम्खादना ? ৭৩ ন বুজি বিশেষ এবংলা হললাম্ভন্তৰ মনকে নিজ্ঞান্ত তরে, ভগন ফে.পাচ শ্লান, কোধার প্রবোক্ত কোধায় বা ভা ও কোখান दा बाक्का थाएक । अक्टलरे खन्ना करता ভাত গ্রাক্ত জেল গৈয়ে সক্স তাললাদিলের কেন শিক্ষ নাই. কৌন ওপদে নাই, চির বিব্রাবস্থায় আহাদিতোর ধর্মা গাদ্ধী হসতে প্রচাতি ইউবাৰ অসম্ভাননাকি / বিশেষভঃ मध्यू क्रियालि भेडाय सार्वत यक श्रवान কারণা বছাস্ত্রীর এক নায়ক হটলো অ-বণাট সে পতির সকল ভাষ্যান প্রতি স্মা ন প্রেম হঙ্গা অসমুব হয় । সেই প্রি-প্রেমের তারত যা দেখিরা খানেকে তালা **সহ** ক্রিতে অশ্তুস হইরাও অপেনার ধর্মনিষ্ট **ক**রিয়া থাকে । তুই স্থীর প্রতিদিশের মধ্যে অনেকের এ প্রকার প্রণয়ের ও যত্নের ইতর বিশেষ দেখা গিয়াছে, যে ভাহারা এক স্ত্রীকে কেবল দাস্য ব্নতিকে নিযুক্ত রাখিয়া অপরকেই আপনার মন ধন এভতি সকল সম্পত্তির সক্ষমরী কত্রী করিয়া রাখিয়াছে ! অঞ্জির জীর শহিত হাস্যালাপ করা দুরে ধাকুক, প্রায় ভাহার সহিত বক্লিলাপ ক-

রেনা আপ্রান্তরীর ভাগা ক্রান যদি তা-হত্ত গ্ৰাফ হয়, ভাষাকেল সে স্বামী ध्य'ण्यः मञ्जल (व्याम कर्षुः मा) विभिक्तिकः खातता कर्या कि क खरिरांत मक कतिएक भाक र मुख्यां क्यांन कारे ७ छश्राम्य नारे निध्या प्रतामात्य क्रिमी नात्म आख्विक इंडे য়া পতিকে অধ্যেত্র করিয়ার ভাৎপর্য্যে ংকছংকঃ পর পুরুষ গোলিনীং ছয়া ৩০-দাশ বিষ্টেবিষয়ে যে আক্রাচার---মে অ-াবচার প্রাণশিত রহিমাছে, ইহাতে অন্য দেশ হইলে এত দিন কেহু আগুৰু একা নে গভীত্ব শেষিৰ নাম প্ৰৱন কাৰতেও পা-< ভাষা কিন্তু পদা আছেলের প্**তিরা**ক। মতীশা তে এক অভান্তামের শাল্যাদ তা-হার, প্রাদেপরে অন্নার্গপ নতী ক্লক ভাদ-রে শরেণ করিয়া রাগিনাছে। সাহি**রে**ত্য ्ध कि सर्पा, अलोक्ष्र राक्ति स्रव, लाहा अटम-বে শ আপুলালুহি মধার্থ জ্ঞান্ত হউয়াছে [ জ্ঞা-🕶 ভাগতি গর চুদ্শা মলে ইইয়া এখন অমার অলপাত হইতেছে এবং ভাহারি-গ্ৰহণত ্ল খার্ণ হইয়া শ্রীর পুল ল পুনু স্ইটেডজে ৷ ১০ ৷ ভারত ব্যায়া জনাশণ। ভোষরই পভিরেছাগ্রগণ্য ধন্য একা, তেমেরাই কামিনা কুলের কীর্ত্তি প-ানাকা ক্ষমণ্ড (কথল কোমাদিগ্ৰেক কেশস্থ :লাকে বিধিমতে ১৮ফা করিয়া ভোমাদিগকে অংশাগমিনী করিকেছে।

পৃথিধী মধ্যে আর হতা। বাল হত্যা দ্রী হত্যা, পানহত্যা প্রভাত অন্ধৃত অনুত্ত লাগের পানুত আরু ত লাগের পানের এক প্রধান কল। পুরেই উক্ত ই ইরছে, যে বুল জনে এক দ্রবাভিলানী ইটালে বভাবত ই লোকের মনে গরাম্পার জেও ভার উপান্তি চ্যু এবং যে স্থলে ঘে অসার অধিকার করে, সে স্থলে ঘে এক কালে প্রধান ভাবের অভাব হয়, তাহা কাহার না বিদিত আছে মনের কি আল্ডা বর্জা থকান লে পাক্লে যে ভাবের উদ্যা বর্জা বর্জা স্থলি প্রশান কালে প্রধান বিদ্যা আদি স্থা ভাবের ই বিজ্যে হই, ত বাকে। প্রির পদার্থা সম্পানী র সকল বেমন প্রির বোধ হয়, লেই মজ বাকার প্রথি বেমন প্রির বোধ হয়, লেই মজ বাকার প্রথি বেমন প্রির বোধ হয়, লেই মজ বাকার প্রথি বেমন প্রির বোধ হয়, লেই মজ বাকার প্রথিত বেমভার উপান্থিত হয়, তৎ প্রক্রীর

नकलाति উপর किश्विर किश्विर (महे दिव ভাব সঞ্চরণ করিতে থাকে, সুতরাং সপদ্ধী जैवी। क्वन जनजीत्वर जिल्ल बाह्य मा त्म क्रेंगा अभन्नी असाम । अभन्नी श्रिय পতি প্ৰান্তও ধাৰিত হয় এবং ক্ৰমে ক্ৰমে काहाता प्रकल्लाहे निवदश हरेश केटिं। स-ধন জীজাতির মনে অনবর্ত সপত্নীর প্ৰজ্বতি বেধানল জ্বিতে থাকে, তথ্ৰ ভাহার অনিউ সাধন করিতে উহারা আর निधिनिश् किष्टू मात्र विद्वहमा करत मा। পতির সর্বাস্থ নাউ করিয়াও সপত্নীকে দীন হীন করিবার চেত্রী করে, পতিকে নির্বাংশ কবিয়াও ভাহাকে পুজ্ঞ শোক দিবার মস্ত্রণা করে এবং অবংশণে ডুলভ পতি বড় নয় কৰিয়াও তাহাকে বৈধৰা যন্ত্ৰণা প্ৰদান ক विवाद मनन करत। मश्की क्रेयाद कहे कत्र (य (करत अनुगान कतिता (लशी गाहे তেছে এনত নচে, এ বিষয়ের রাশি রাশি প্রমাণ অনেকেই প্রত্যক্ষ করিবাছেন ৷ সং পত্নী ঈ্ষাার জাজরিত হুইয়া অনেক স্ত্রীতে প্ৰতি পাতিনী হইয়াহে এবং অনেংক যে উৰশ্বন বাবিব পানাদি ভারা আংগ হজা: कतिशाहक. व्यानतक द्वा व्यादवादम्य नाश्च ला मीत यथा मकंग्र बार्के कांत्रवात (५ की कति शहरू कवा प्यटनटक य सिर्मन निर्मन শাচরীর ভারে গোপনে সণাড়ী সন্তানের প্রাণ প্রায় নাশ করিষাছে, ইছার ভূরি ভূরি প্রমাণ ও নিদর্শন দর্শান গাইতে পা त्तं, किन्ह अन्दर्भ छाहाई क्यांन अत्यासन ৰাই 1

পরনেখন-প্রণীত উক্ত নিয়ম লক্ষন করিলে সংসার মধ্যে প্রক্লত বাংসলা ও ভক্তি
ভাবেরও অনেক অন্যথা হইয়া শার ৷ বছ রীর স্থামী হইয়া যে অনেকে এক স্ত্রীর বাজ্যে অন্যস্ত্রীর গর্জনাত সন্তানকে আপনার সমস্ত আদিপত্যে বিধিত করিয়াছে, ভাষাকে পুরু দৃষ্টিতে নিরীক্ষণ করা দূরে গাকুক ভাষাকে যে সামানা কপে আন বত্তা প্রদান পূর্মক লা-লম পালমও করে নাই এবং কোন প্রকাল শিক্ষা প্রধান করে নাই, ভাষার অনেক দৃ-ভাঙ্কা অনেক স্থানে বর্জনান আছে। এই কারণে ক্ষাপি এ কেশের এক ব্যক্তির ক্ষেম

म्हान अजुन क्षेत्रका एका कविटकार वरः कान मसान मीनडीरनव नाए छम्बारमब क মা লালায়িত হইয়া কাল কেপ করিতেটে। बस्त क्वी भवाग्रः भूक्टरहरः भक्त भू रखत थः তি বিভিত্ত বাৎসল্য ভাব প্রকাশ করিছে পারে না বলিয়া তাহাদিগের মধ্যে অনেকে পুজের নিকট হটতেও প্রকৃত ভক্তি ভাব भाश हम् म १ 2 खु ह ए ख आ आ । য় স্মানেক স্থানে পিতা পুজের সংখ্য বি वस देवताचाव छेट शत इंडेता बाटक । कि छा क्यों ता भूरलात का नव्यत मृश शक्तान , করিবার জন্য লেচকে প্রার্থনা করিয়া খাকে, জগদীখনের নিয়ম লজ্ঞন করাতে সে পুরুত लाहकस मज हरेगा हैटे, रेशा कहा ক্ষা আরু অধিক প্রত্যক্ষ কল বি আছে / हेडाएडल यमि (लाइक्ट महम छ।।वित्र कें-দয় ও লক্ষ্য বোধ না দয় এবং দিশচেও ভদি ভাতাদিয়েও একুগন্ধতি াবিভাগে क्षित्र अनुहाँ के बा काचा, कर्च भात छेना-

स्थान काम सुद्धि धमभाग एतिन । इ.स. धातभार करन ना दत्र। (केंच्य वेदानवेद चित्रकार करियाद अरम्भन मार्ग । उप कि জিল লিখিত হুটাল, ভাহারিত 🐎 সকলে দৃষ্টিপাত করিয়া দেখুন বে ১৯৬ ৬রা बक कुलक्षि अहे माखहे (मेर १८८७ मुद कता विद्यय कि मार जाका मि म जाका ए প্রভৃতি এ কুপদ্ধতি নিধারণ বরিবার স্ব **बिकारनक छेशात्र आहरू वटिंग, किन्द्र जम्हारा** मिवाबिक स्ट्रेटन आगानिताब क्लामत बाव কি মহস্তু রচিল এবং দেশস্থ লোকেরই বা কি मूर्य ऐक्क ल इरेन ? याहा कान म कि रे मुक्ति निष्क नटह, कथनहे मनूत्यात क ईवा नटह. त्य विषय कान अश्लाहे अस मगाल्यत आवः ষোগ্য নহে এবং যাহা প্রচলিত থাকাতে স-হত্র সহত্র অনিষ্ট ভিন্ন অন্য কোন ফল मारे बदः दहिङ कदित्य स्टब्स्य क्षकात छे-পকার বাতীত কোন হানি নাই, তাছাতে কি জন্য আমরা লিগু থাকিয়া রুখা ছুর্না-स्त्र काशी हहे, लाटक्द्र निकं**डे निक्त**ीत अवदात निकछे भाभ काकन हहे ७ काभ-নাদিগের পরসার্থ পথে কণ্টক প্রদান করি।

ইহারহিত করা কিছু বন্ধ আগ্রাস কি বন্ধ বার সাধ্য নহে, কেবল পরশার আপনার সকলে মনোগোগী হইলেই এইকলে এ বিবরে কুডকার্য হওগ্রা থাইতে পারে। অজ্যার একলে দেশস্থ মহায়া দিগের সমীপে নিন্তভাবে আন্যাদিগের এই নিবেদন খেলাকুগ্রহ করিবা এ বিদরে ওঁছারা কিঞ্জিন নানোগোগী হউন, আব বিলাস করা কোন মতেই গ্রেয়া নহে।

্ৰান্ধৰ্মঃ প্ৰথমখণ্ডৎ

প্ৰথম কোন্ধ বাং বিং

নাবিরতোদ শ্রেতাদাশাতে। নাব্যাহিতঃ। নাশান্ত্যানসো বাশি প্রজ্ঞানেনেনমাপ্লযাৎ।

নে সংক্রিপুর্ম ক্টাতে সিরত কয় নাট, ইক্রিয় 5. শল্প ১৮ তে শার্কণ নাইন আহার চিন্তু
স্থাচিত হয় নাই এবং কম ফল কামনা প্রস্ক্রেযালার নন শান্তে কয় নাই, সে সাধ্যি কে
প্র জ্ঞান মাঞ্জার, প্রমানাকে প্রাপ্ত হয়
না

প্রিয়তন প্রমায়াকে জানিলাম, কিন্ধ ভাষতে মনঃ সমাধানের অনুপম দুখ কথন আয়াদন করিলাম না; তাঁগাকে মহং ও বি-শুদ্ধ জানিয়াও আপনার চরিত্রকে মহং ও বিশুদ্ধ করিয়া তাঁগার সহবাসের উপযুক্ত চ্ইলাম না; তাঁগাকে আমরা নিয়ন্তা ও বি-ধাতা জানিবাও তাঁগার প্রদর্শিত পুল পথে কগন বিচরণ করিলাম না; কেবল স্বান্ধ্র প-রতাকে চরিতার্থ করিবার নিবিত্তেই আজ-ম্বাল নিযুক্ত রহিলাম; তবে তাঁগাকে প্রা-ক্ত ইবার আর কি সন্তাবনা রহিল।

্রেয়শ্চ প্রেয়শ্চ মন্ধামেত স্তে সম্পরীত্য বিবিন্তি ধীরঃ ৷ डायाः (अयवानमानमा माथ छ-বতি হীষ্তেহখাৎ যউ প্রেষোক্ গোন কর্মণা ভবতি भीएउ।

भ 'किशास्त्रासः ह' 'ल्ल्ब्यः' विकास्त है ं तकः भाषाकः C<sup>®</sup> (अगः(भारः भगार (विश्वा स्वाध्यसमार्थाका छल-र रिकारित विश्वीक करवर्त र अधिक विश्वीक व्याप्त कि ্যাল, প্ৰেম্ব কান্সান্সা উপায়ান্ত কুদৰ ाका भिन्न सर्वा मध्के प्रस्तु (एप्ट.) न्तरे । नान साध्युवस्थी विद्वारी होशस्त्री . तम । प्रतीम ज्ञानवादाव भारतम्पिकाः शहराहकाम

প্রেয়াও প্রেয় মন্যায়েক প্রেপ্টের্যা, ডিলি মন মান্ত্ৰ (১৯ নাম) কবিছা এই মুছতে প্ৰথণ কাত্ৰ ग । हिंद्यार आप्रांति कि (मात्री के माद्या का देव ভাগাৰ ন্যাল হল তেনে বিশ্ব তেলাক ে সংখ্যা তিলি গ্রেমার্থান্ট ভা ভটিত যেন।

উদয়াবের পথ ভার্লন্ত্র**ন ক**রা প্রেয়, আরু হাত রয় সূত্র নিশ্ম হওয়া কেয় যা কা श्रः क्रेमण्य शर्थ व्यवसम्ब कहिएक ज्लाही স্তু, কথন সাংসাদ্ধিক মুখ মনকে আকৰ্মন করে। ইচার মধো দিনি ঈশ্বরের পথ ভারল-এন কারেন, ভীলার পর্য নঞ্লা হয়, আরু বি-ति मा॰मःतिक भूटथं निमधं थारकन, **चिनि** क-নাপি সেই প্রম প্রিত্রজ্ঞানন্দ লাভের উ পাযুক্ত হন ন' ৷ যিনি ঈশরকে প্রীতি কয়েন, তিনি দেই পরন প্রেমাস্পদের অভিপ্রেড थार्गा विलिशा भारभा द्विक कार्या निकार करत ন, আর যিনি সংসারেতে আসক্ত থাকেন. ভিনি সা<sup>দ</sup>সারিক। **সুখের উদ্দেশে** পরম স-জলালয় ঈশরের উপাসনা করেন। সংসা রাসক্ত খার্থপর বাব্তিমনের সহিত কদাপি এ বাকা বলিতে পারেন না যে 🤔 হে পরুমা-থন্ তোমার আজানুসারে লোকের হিতের নিমিত্তে এবং ভৌমার প্রীতির নিমিত্তে সং-लाइ योजः निर्दाष्ट्रं कद्रिएक श्राप्टुक हरे ।" य-বন উৎসাহ পুৰুষ এই বাকা বলিতে পা-রিবে এবং তোমার সমুদয় কার্যোর এই এক माज लका हहेरवं, कत्त्र काबिटवं स्व छात्राज्ञ अग्राक मधाक्यरिण अवनवन कंद्रा ह देवारिह ।

স্থাকারী যথাচারী তথা ভ-বতি। সাধকারী সাধর্ত্তবতি পা-ণকারী পাপোভবতি । পুনাঃ প্-(2) 1

স্থা অনুধ্য হথাড়লি হুল ধীক্ষয় সালেচ্চত সন্মান কল শাকালী সংগ্রাকুলী সভা রুগা ক্রাক্রী। । সাল্ডারী নাওত क्षर्राति शान्तकार्वे शान्तवः सर्वात् १० । सुनाद शानामः सङ्गलः सहित्र कार्ज, अध्यस ॥

মনান্ধেছন কমা সাবেল আগেলেমন জন ६८० करटमा 'छ।इ.४८ (महोद्धान गाँउ हाथू- गिमि ভাগ কড় কলেল তিনি সাধাহনেল, আহ বিভি প্ৰাথ কৰা ব্যাল , এনি আপুলি এক্ষেত্ৰ প্ৰাথ क्या काम काम गरिक देश जार लाज क्या अत्य प्रमुख्या क्षाप्रकार करा।

আয়াকে প্ৰিম না কৰিলে ঈণ্ডবেক লাভ কা, মায় লা এবং ভালার স্থিত সহ-ধাস জানত ব্ৰেকানক্ষেত্ৰ উপড়োগ হয় নাং অভ্যাৰ পাপ কথা পৰিত্যাল ছারা এবং পুল্ কল্মের অনুজ্ঞান ছারা আয়াত্তক পৰিত্র সং-বিয়া ভাষাৰ সহবাদের উংযুক্ত হলকে ৷

যন্ত্রিজ্ঞানবান ভবতাযুক্তের তন্যোক্তিয়াগ্যব-यनमा माना শ্যানি দুর্নীশাইব সারথেঃ।

'शः उ'' करिकाम नाम 'काविदवको' अर्राष्ट्र ' **कार** দোন`কংগ্রাংডন হনদাস্থা<sup>\*</sup> সুকোভবভি∵ জন্ম **७**ळूमनमा 'हे स्थिमःवि' अहमानि ' अमका विराहशाबि ' क्कोनाः ' अमाश्राचाः ' वेष ' मात्रशः ' कटक्षि ।

(स र) कि व्यन्तिरकी असलित गत अरची-उठ, जाहार्त है लिस रकत मात्रियत वर्गे अरब्र नाम् तम् शक्तमः।

মনের কামনা সকল বুদ্ধির আব-नीजृष्ण इरेटन मिट्रे क्लाना शुक्रमक धर्म-शव रहेट विश्वशामी करत्र अवर कलेक: মন্ত্র পাপারণো নিপাতিত করিয়া ভাছাকে অ-শেষ বন্ধাপ্রস্ক করে। অতএব সাবধান. मन ७ रेखित एम तृष्त्रिक्त वावनीकुक

## যন্ত্যু বিজ্ঞানবান ভবতি যুক্তেন মনসা সদা। তদ্যোক্তিয়াণি ব শ্যানি সদ্খাইব সার্থেঃ।

সংস্থাপুর, পথকাদ্রাক্তির বাছত অবর্থি গালজন ভালা বিবেশবান গ্রেক্তাল্যালা থেকাব্দেশ্য কল । কলা কলে তথা প্রাথমি তথক তত্তি নির্মীত্র কলাক্ষার তথ্য বিকাশ্যেতি ।

হ, জেল (এল চনা হল জালাইছেল ও বালি ত ভাৰত সংস্কৃতিক আলি আলি তুলি জালাইলে নিজন গোলাইছিল পালাহ ।

গাঁহতে আমন ও জন্তি মান্ত বৃদ্ধি মুনির গৈক্ষেত্র জান স্বৰ্ধ । সংকাশ আন্দান স্থীন ব কাজিকি স্বস্থা গোল বহুলা লাগ এবং ভাইন স্কান ক্রাণি সাধিন সংস্থা

সমূহিজানবান ভাৰতাননধা সদাশুটিন । নুত্ৰপদ্ৰতিপুঁ তি সংগাহিজ্যবিগলতি :

ing the program of the second of the second

লার ঈশ্বরে বিশুক্ত স্বর্থ জানের নির্মিন জাপেনার গলকে স্থান বাদে কালিছে প্রায়েশ নার কিন্তু প্রায়েশ নার কিনি লাপ চিন্তা, খাপেলালালা, পা অনুধান ভারে। সকলে জপনি না বাবেকনা ভানি সংসাবেবং কটিল পারেছেই পারি এই ক্রেন, সংসাবেবং পার যে অভঃ একপেদ ছাই। প্রায়ে ইনা না।

যন্ত বিজ্ঞানবান্তবতি সমন-ক্ষঃ সদা শুচিঃ। সত্তৎপদমা প্রোতি যন্মাৎ ভূষোন জাযতে।

'ধাতু হিজাননান্ত হতি 'সমস্কা' মৃত্যুকাা স লালচি:'। 'সাজুত ২পদ' আন্তেতি 'ব্যাং আ আন পদাং প্রচাড সন্'জুলা' প্রা'ন ভাষতে 'সং সারে ধ

বিনি জানহান স্বাশাও সর্বদা আছচিও-ডিনি সেং দুজ্জন লাখাল্যসন, হালা হ্ইনে উন্তঃ আন প্রচাতি ক্রান্য

য়িতি সমারে আলার করিছ। বিশুক্তিত হত্তের, স্থাতি হার প্রতার পুষ্ঠ ইয়া তাঁহাকে ক্রুড় করা বিশ্বের প্রতার করি। পানে, বেশারের বাহিলা তিনি বিভাগ ভ্রতান্দর উপ্রভাগ করি।

বিজ্ঞান্ত্রিথান্ত্রনাঞাঞ জবাহনে। শেগস্থা পার্মা প্রেটি ডিফোলসম্মন পার্ম

(2) ないことを表えて、「all milestiff in the service ( measure and ) 「has a service ( measure and ) 」 「has a ser

ার । মেগ্রান্তর মনকে উটানাও **ধন্দের** বুলাপ্তি বাই নে, এতনি নগন্তরি**ব জ্ঞা**র কোতা চাতা পুলাকবিল সকলঃসেত্র ব্<mark>রুক্তি</mark> কোতা তাই কোটা

্তি নাকান্যে তে লোক।অক্ষেন জন্ম বৃত্ত । ভাগতে প্রেভ্যাভি গছে তি অবিদ্যাৎসাব্ধোজনাঃ।

অন্তন্ত্ৰা অন্তন্ত্ৰ অভ আহা লিছেল চি প্ৰেলিছ আন্তন্ত্ৰ আন্তন্ত্ৰ লেছে বিজ্ঞান আনুষ্ঠা উম্প অনু ভাতুল আনুষ্ঠা কৰি বিজ্ঞান বিজ্ঞান কৰি কৰি বিজ্ঞান কৰি আনি ভাতুল আনুষ্ঠা কৰি অভিনাধ বিজ্ঞান কৰি কৰি আনুষ্ঠা আনু

দেন (১ শ্রু নাজ না ২) হিসাং (নাই স্মৃত্র) ব্যাক প্রাপ্ত জয়া হো সক্ষা (বা,ক প্রানামাশ্র) একং (না,সাচ আহ্বর্গের স্থান্ত্র)

নাংবার এই ভ্লোকে জ্ঞান ও ধর্ম উ-পার্জনের প্রতি অবহেলা করিয়া প্রিজ ব্র-ক্ষানফ্ষত্রগভোগ নাত্রিলেক,তাহারা মৃত্যু-র পরে ভাহা লাভ করিবার ম্মিকারী হইল না।বে অনুসারে এখানে ব্রকানক্ষ উপভোগ ছইবেক, সেই অনুসারে তালারদিগের উথকৃটি গতি ছইবেক। অকগৰ এখানে থাকিয়াই পৰিত্র হইয়া ঈ্থবের সহিত সম্বল
নিৰ্দ্ধ করিবেক . উৎকৃটি গতি প্রাপ্ত
ক্রীর আর অন্য উপায় নাই !

इंडि व्यथमश्रद शक्कारमाश्यायः।

## 

#### বিজ্ঞাপন

যে অক্ষরে ভত্নবোরিনী গতিক। মৃত্তিত চইতেছে, ঐ অক্ষর বিদ্রু করা নাইবেক। বাদাণ প্রযোজন দ্যু উচিত মূল্যে প্রাপ্ত চইবেন।

### বিজ্ঞাপন

ধারারা ভজুবোনিনী সভার সভা হাট্ বার মানস করেন, ভারারা, অনুগ্রহ পুরুক সভা প্রবেশ দক্ষিণা; এক টাকা প্রের্ব ক-রচ মাসিক দাতবা নির্দিষ্ট করিয়া পত্র-দ্বারা অবগত করিলেই সভা প্রেণাভ্রু চ শ্রা নিয়মানুসারে পত্রিকা প্রাপ্ত হইবেন।

## বিজ্ঞাপন

নানাবিদ পুস্তক বিক্রা

শ্রীযুক্ত বাবু রাজনারায়ণ বসু এণী চ বান্ধ সমাকের বজাতার মূলা ··· 11°

শান্তর ভাষা, আনন্দগিরিক্ত টীকাও । শীধরস্বামিকত টীকা এবং বাকলা অনুবাদ সহিত ভগবালীতার দশ অধ্যায় পর্যান্ত মুক্তিত হইয়াছে, তাহার মূল্য ..... ৪৯০ :

শ্রমুক্ত বারু চরিশ্চন্তে নন্দি কর্তৃক অনুবালিত চাহার দরবেশ, ডালাবাধা ১৯০

ন সামান্য বাধা

টানস্পেন্ 
শ্রীরাম চরিত
রামপ্রসাদ সেন প্রনিত্ত কালী কীর্তিন । ০

ক্র ১৮৯৯ কাল খব্দি ৯৩ সাল প্রত্তি কালাক কোকদর দেওগুলী আলোলাকে নিশ্বর কোকক্রাম রিল্লোম্ট

কারছ দীপিকা ···· সংগীতানন্দলহরী …	*****	ile
वालक ब्रह्मन > छ।श		
र्ज २ छात		ەل
মনুষ্যের যথার্থ মহত্ত্ব কি		1000
-		> 11-
মাল সংক্ৰান্ত আইন		

## বিজ্ঞাপন

#### বৈরাগ্য শতক

শীযুক্ত ব'লেখন বিদ্যালকার ক্বত প্রতি পদের বাক্তনা অর্থ প্রসাক্তর অনুবাদ সনিত উক্ত পুস্থান মুদ্রিত হইয়া বিজয়ার্গ প্রস্তুত খাছে, মুখ্য যাত আটা আনা মাতে ; যাথ, র প্রয়োজন দান তক্ত্রোধিনী সভার কাইলেয়ে ফুলা প্রের্থ কারলেই প্রাপ্ত ভূ ইংরন।

### বিজ্ঞাপন

ধর্মনীতি

ংশিনীতির প্রথম ভাগ মুদ্রিত হইরাছে। - মূলা ১ এক টাকা।

श्रीवक्षक्यात परः

## বিজ্ঞাপন

বাহ্ বস্তুর সহিত মান্ব প্রকৃতির সমস্ক বিচার

ঐ পুত্তকর দিতীর তাগ পুনর্বার মুদ্রিত হইয়াছে ৮ এবার ইকার মূল্য ১ টাকানি-ন্ধারিত হইয়াকে মুদ্রিত

बिधकशकु मात्र एक।

### বিজ্ঞাপন

ু আগাদী ৪ চৈত্ৰ রবিবরে**প্রাভঃকালে** মা-নক ত্রাক্ষসমাল হইবেক 1

# ভত্তবোধিনী পত্রিকার চতুর্থ কলেপর প্রথম ভাগের নির্ঘণ্ট পত্র

े २३ जरबा शृष्ठे	১৪৭ সংখ্যা পৃষ
ব্ৰাক্ষণদাকে পঠিও প্ৰস্থাৰ —ভবাৰীপ্ৰ · ১	স্ট বস্তু মাতেই ঈশ্বর আবোধনার
জন্ম নীতি প্ৰয়োগ প্ৰপ্ৰ প্ৰতি প্ৰাৰ্থ	পক্ষে অনুকৃষ ৮৫
ana waatu	ঈশ্বনেস মহিমা—শাস্ত্ ⋯⋯ ৮৯
, ১৪२ मरचाः	নৈস্থিক কম্পবের শোভা · · ৮৯
नुक्रांग्रह ५१	বিজ্ঞানবার: :- :- ৯০
भगाँनी जिल्ला \cdots \cdots 💛 💛 💢 🔾 💆	माइर महिक नामाम माम- मिल्हा
উলকাপিও ২২	28P±:41;
्राक्षमयार बत् तक्षा-क्ष्यनगर २ ६	श्रद्धाम्बद्धत् <i>द (क.</i> मंजे ७ भ्रष्ट्रभ ः ५
১৪ ৩ সংখ্যা	অসম্ভাশু সর্বি ••• • ১০০
	বিপ্র-বিশার বিষয়ক দ্বিভাগ প্রকের
- अस्म मुद्धार रागारा । रागार रागार ३ ह	উপক্রেমভাগ ··· ১০২
शक्रामिरेडि • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	नो हेलमः हात्र छात
বাদদেবন ও গৃহ পেরিমজেল . ৩	विकासवाडी ५५०
সভ্যক্তান সঞ্চারিশী সভা-ভেলনিপির 🕟 ২১	ু৪৯ শংখ্য
३88 <b>भ</b> ६५%।	ঈশ্ব প্রিই প্রতম্থ ১৯১
	अन्तरतन प्रक्रिश-वन्त
प्रकृष्ण्या १९८	की तरमत सामका ३३३
প্রমান গাঁড়ি সালে স্থান স্থা	रिकासराक्षा । १६३
চিল্ডিস্পাণিত কৰাজি উপাগেশন - · · · · পান	भटवा / ड अम्मार्थि ।
(বজানস্থে) চাল	্টি, পার্কন সংখ্যের হাত্ত হাত উদ্ভাগে ১৯৫
নিজ্যেন্নস্থাবিশীসভা-্লেড্জে, ৫৫	>a • শংখা;
্বিপ্ৰয় প্ৰথম প্ৰত বিভাগ বিষ্	Z@rs+>
১৪৫ সংখ্যা	अन्तिहरू । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।
	्राक्षित्रम् अक्षर्यक १६ क्षमाधि २०३
SMIRITE	ফর্টানটি নাজেবের বন্ধ এইবেড উদ্ধৃত ইং ১৪৩
পদার্থ বিদ্যাল-বারি বিজ্ঞান · · ৷ ৬৩	>162 FC \$77
প্রমেশ্বের মহিল্য	ন ফিনুস্বিক বুজেস্মাভ যাড়লিং <b>শক্ষ</b> লিক ও.১৪৫
বিজ্ঞানবার; ৬ল ১:নহজাতির অমর্থের্বিক্য ইংবালিতে: ৭১	अचारत्व भारत्या— मन् व
स.सद्भारिकः आस्तर्रहाययम् इत्तारकः ५३	्तिकासवार्थः १००
>8 <b>७</b> भ <b>ং</b> शः	क जिक्ते मारह (२० शाव शंतर एक इ है? 506
नेश्वरहत छेष्राप्तमा 👑 😁 😬 १७	১৫২ সংখ্য:
हिन्द्रमस्य \cdots 🔐 🔐 १७७	केसरतत भहिमा-काँग्रे . ५७५
कमश्कात १९	নচধ্যং পরিভাজের ১৯৮
विकासवार्थ। 🌝 , 😶 ৮১	रहिताहें
. माइर महिक मसांब् कुर्बीब् छतानीशृट	ताकार <b>म</b> ्द्राच्याचे <b>ल</b> ५००० हाः ह ५००

# অকারাদি বর্ণজ্ঞান ভত্তবামিনী প্রীজ্ঞার উভূর্য কর্তেশর প্রথম ভাগেন্ত নির্মক পত্ত

	<b>म</b> १थाः	अक्ष	्र <sup>क्ष</sup> ्ट्र मरच्या श्रे
অধ্যয়াতুমবি	181	500	ব্যক্তস্মালের বজ্ডা—ক্রমগর ১৪২ . ২৫
सेग्काशिक	\$ 85	રર	Primaricas offers
केशहरत एक अभाग	283	9.0	প্রস্তান ভূমনিপ্র ১৪১ ১
ইয়ার প্রতিই প্রত দখ	285	330	শক্ষম হেলর কর্ত ভানি প্রু
<del>ইবা</del> রের মহিল, তাল :	589	· 64	সংহৎসবিক সভা বৃতীয় ১৪৬ ৮:
के जुल	202	550	যানর জাতির ভানরছের ডিবয
the second second	000	326	5:315:3 · 5:415:5
	545	\$ 6 3	mina # " " " 205 202
, "_	.43	5.95	াধ্নেম্ম ও গুল প্রিম্জেন - ১৯০ - ১৯
	. K.B	91	(A WIT 213) >88 65
ু টিবডিদিশারি কৃতিভিন্তি ধানা গু		سادو	d >80 >10
A see consider	2 K D	115	4 345 P.
वि वात्रमायकार सम्बद्धाः	, ,	,	4
A man at the second sec	585	234	# ··· 28b 250
man fact	W 1	10	a 389 553
5	, at		20 505 505
•	, F.A	393	বিহ্বাবিত্ত বিষয়ক ছিতীয়পুর,কর
	44	× 35	ভিস্তালম জাল ১৯৮ ২০x
শ্রেক হক্ত জ্বান্ত্র প্রকার প্র	94	32.8	क्ष च्लामश्य ,त छ,अ ५५৮ . ०५५
	, <b>2</b> 4.	2.5	বিভালমজের এর৬ ও৬
	.07	>5.	दरहाल भिजाकान मकारिनी मन् रेस्क ६॥
काम कि कमात्र कार्कः	, H 1	* >	গ্রেপ্রিক প্রেস্মাস
and the second second	186	25	संबंदिश्या कोच्छाडा १९५ ३४०
	' 8h-	29	সভঃজান সঞ্চলিতী সভা-জ্বানীপ্রস্তুত ১০
	80	36	সাম্বর সারক বা কসমাজ (অপ্র) ১৪৭ - ১৩
कारेक है संबद्धारन शब्द र ए			भूको प्रसु भाळ १ २४ त
	fe ~	555	জারুলেনার পথেচ ভ্রকণ ১৯৭ ৮৫
•	e ;	Site	
	2 d <	54	
	588	8.0	
	. 80	. 6.	্ৰিক এই ভঙ্কংহোধিনী পত্ৰিকা, কলিকাড়া নগুৱেব
	3 15 11	12.3	
	. 8 K	(C)	মোড়ারীবিচ্ছাবিত ভজাবেংখিনী গভার কার্যালয় হট-
· · ·	g o	3,54	रह शहिराक शहानिक वर्षाः हेशाह यूगा अक हेकि।।
	85	390	े रेडब वृश्काकि बाह्य सुमुक्तिक >२ कांकवाका सः १००७ ।
Mercanica in and an	* 344		

ক্ষাপ্রবেশমাস eবতে কর্মানে ধিনী সভার প্রতি সভা প্রা<sub>নিজ্ঞ</sub>া ক্<sup>ছ</sup> পরিকার ক্রিনির্মার বুলো প্রাপ্ত হংহর